कसांद्रा दाग़



चिंगीज़ आइत्मातोव

कसांद्रा दाग़

समय

कसांद्रा दाग़

चिंगीज़ आइत्मातोव

रूसी से हिन्दी अनुवाद

अ. चारुमति रामदास

साहित्य अकादेमी

किर्गीज़ गणतंत्र के यशस्वी और शीर्षस्थ रचनाकार

श्री चिंगीज़ आइत्मातोव

की

सत्तरवीं वर्षगाँठ के अवसर पर

अपने असंख्य भारतीय पाठकों के लिए

साहित्य अकादेमी की विनम्र

प्रस्तुति

जब कसांद्रा ने अपोलोनियस के प्रेम को ठुकरा दिया
तो उसने उसे शाप दिया कि
उसकी भविष्यवाणियों पर कोई भी
विश्वास नहीं करेगा।

—प्राचीन ग्रीक कथा

उन दोनों में से अधिक सुखी वह है
जिसका अभी तक कोई अस्तित्व नहीं है
जिसने वे बुरे काम देखे नहीं
जो सूरज की रोशनी में किये जाते हैं।

कसांद्रा दाग़—एक रचनात्मक भविष्य-संकेत

बीसवीं सदी के अवसान के साथ-साथ विश्व के वे सभी बुद्धिवादी विचारक और विभिन्न वैचारिक संस्थान इस बात को लेकर चिन्तित हैं कि हमारी अगली सहस्राब्दी की नियति क्या होगी? यह एक ऐसा यक्ष-प्रश्न है जो किसी भी विचारवान व्यक्ति को झकझोरने के लिए काफ़ी है। हम सदियों से अपने साहित्य-सर्जकों को और कृतिकारों को भविष्यद्रष्टा कहते आये हैं, यह अकारण नहीं था। ऐसे भविष्यद्रष्टा अपनी समसामयिक लोकचेष्टाओं, परिवर्तनों और बदलाव के संकतों से यह अच्छी तरह समझ लेते थे कि आगामी काल की स्थितियाँ और चुनौतियाँ क्या-क्या होंगी? इनसे भी आगे बढ़कर, वे अपने समय की आहटों और सुगबुगाहटों का आने वाली संतति पर क्या प्रभाव पड़ेगा—इसका पूर्व संकेत देने में सक्षम थे। प्रदत्त या प्रस्तुत काल का अतिक्रमण किसी भविष्यदर्शी रचनाकार के लिए कठिन नहीं बल्कि हम सदियों से उनसे ऐसी अपेक्षा करते रहे हैं और वस्तुतः ऐसे ही साहित्यकार को 'कलाकार' कहा जाता है जो हमारे 'कल' को 'आकार' देता है।

किर्गीज़स्तान के शीर्षस्थ कथाकार श्री चिंगीज़ आइत्मातोव ऐसे ही महान कलाकार हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं से एक ऐसे नये समाज और विश्व का स्वप्न संकेत दिया है जो उन्हें एक अप्रतिम और भविष्यद्रष्टा कथाकार की श्रेणी में बिठा देता है। पिछले दिनों प्रकाशित उनका सुप्रसिद्ध और चर्चित उपन्यास, जो हिन्दी में **कसांद्रा दाग़** शीर्षक से साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित हो रहा है, निश्चय ही उन्हें विश्व के उन तमाम स्वप्नद्रष्टाओं के समकक्ष खड़ा कर देता है जो एक नये मानव के निर्माण का स्वप्न देख रहे हैं। बहुत संभव है, यह मानव जो भ्रूणावस्था में आकार ग्रहण करते ही उस नारकीय पृथ्वी पर जन्म लेने से इनकार कर दे तो उसके लिए महज़ यातना-शिविर होगा। श्री आइत्मातोव ने इन्हीं प्रश्नों के आलोक में उपन्यास का ताना-बाना रचा है और जिसमें समकालीन जीवन के यथार्थ,

स्वप्न, सूचना-संजाल, वैज्ञानिक आविष्कार, राजनीति और मानवीय नियति को निर्धारित या नियंत्रित करने वाले दुश्चक्र सम्मिलित हैं।

कहना न होगा, सोवियत रूस के पतन-पूर्व का जो राजनैतिक परिदृश्य अपने वैज्ञानिक वैभव के साथ विश्व की दूसरी शक्ति के साथ विद्यमान था—लेखक उसके खोखलेपन को भी यहाँ निर्देशित करता जाता है। इस उपन्यास में ऐसे कई प्रश्न एवं प्रस्थान हैं जो मानव जाति की उत्पत्ति, उसके संवर्धन, विकास, उसके विनाश और फिर एक नई प्रजाति के रूप में—उसके निर्माण से जुड़े मिथकों, गाथाओं, रूपकों और फ़ैण्टेसी के माध्यम से अभिव्यक्त हैं—वे केवल अभिव्यक्त ही नहीं हैं बल्कि इसके द्वारा आइत्मातोव मानव जाति की सत्ता, स्थिति और परिणति को भी संदेहास्पद और प्रश्नाकुल बनाते जाते हैं। श्री आइत्मातोव ने इस संकट को फ़िलोफ़ेई के माध्यम से रोमन कैथोलिक के शीर्षस्थ पादरी को लिखित पत्र में संकेतित किया है। उसका संबंधित अंश यहाँ उद्धृत किया जा सकता है—

"भाग्य ने मुझ नाचीज़ को चुना—अजन्मी आत्मा के एक गुण, मानवीय भ्रूण की प्रतिक्रिया, को जानने के लिए—जिसकी खोज एवं जिसके अस्तित्व का अहसास शायद हमें ईश्वरीय व्यापार के निकट ला सके। मुझे सौभाग्यवश, रहस्य की परतों में छिपी इस प्रतिक्रिया को प्रयोगात्मक विधि से प्रकट करने में सफलता मिली है और मैं समझता हूँ कि यह एक अवसर है मानव जाति के विकास को परिपूर्णता तक ले जाने का।

मैं ऐसा महान आविष्कार कर सका हूँ जिसका मानव जाति के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। मैं अपने बारे में इतना बढ़ा-चढ़ाकर इसलिए कह रहा हूँ कि अब तक कोई भी इस उपलब्धि का मूल्यांकन करने की स्थिति में नहीं है क्योंकि इस अद्वितीय आविष्कार के बारे में किसी की कोई धारणा नहीं है।

मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि माँ के गर्भ में अवतरित होने के आरम्भिक कुछ सप्ताहों में भ्रूण को इस बात का पूर्वाभास हो जाता है कि उसका भविष्य कैसा होगा, और वह उसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर सकता है। यदि वह प्रतिक्रिया नकारात्मक हुई तो भ्रूण ईश्वरीय संसार में प्रकट होने का विरोध करता है।

मैंने वह संकेत ढूँढ़ निकाला है, जिसके द्वारा भ्रूण जन्म लेने के प्रति नकारात्मक सन्देश देता है। यह संकेत एक छोटे-से रंगीन धब्बे के रूप में

गर्भवती महिला के माथे पर उभरता है। मैंने इसका नाम रखा है, **कसांद्रा दाग़** *और उस भ्रूण को जो नकारात्मक संकेत देता है मैं कसांद्रा भ्रूण का नाम दे रहा हूँ।"*

उपन्यास की पृष्ठभूमि में फ़िलोफ़ेई नामक वैज्ञानिक अन्तरिक्ष में बैठकर पृथ्वी पर मानव जाति के उद्भव, विकास और विनाश—तीनों को एक साथ देख रहा है। वह जीवन के प्रादुर्भाव को हर शिशु-भ्रूण में देखकर जीवन के शाश्वत और अनवरत प्रवाह को लक्ष्य करता है। वह अतीत में जन्म 'तत्सम' जीवन को उसकी 'तद्भव' संभावना में ढूँढ़ता है और उसे ऐसा प्रतीत होता है कि यदि इसके क्रम में किसी तरह का अनावश्यक हस्तक्षेप किया गया तो यह योजना अपनी स्वाभाविक गति से पथभ्रष्ट हो जायेगी। चूँकि रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा शिशुओं के गर्भपात को अवैध और ईश्वर की पवित्र इच्छा के प्रतिकूल बताया गया है—इसलिए भी यह प्रश्न हमारे समय का यक्ष-प्रश्न बन गया है।

श्री चिंगीज़ आइत्मातोव ने इन सारे संकेतों को एक विराट परिभूमि प्रदान की है। इसमें अन्तरिक्ष की रचनात्मक उपस्थिति की भी एक निर्णायक भूमिका बन गई है क्योंकि अब विश्व के कई वैज्ञानिक यह दावा करने लगे हैं कि यदि निकट भविष्य में पृथ्वी रहने लायक़ नहीं रही तो मानव जाति का श्रेष्ठांश किसी दूसरे उपग्रह पर जाकर रह लेगा। प्रस्तुत कृति के द्वारा हम विश्व के उन अजन्मे तथा भावी नागरिकों से रचनात्मक संवाद कर सकते हैं। यह महत्त्वपूर्ण और विवादास्पद किन्तु कालजयी कृति—जो श्री आइत्मातोव की क़लम से निकली है अपने भविष्य कथन के नाते विश्व में फैले अपने तमाम पाठकों और प्रशंसकों के बीच बहुत कम समय में समादृत हो गई है।

हमें प्रसन्नता है इस कृति का प्रकाशन साहित्य अकादेमी द्वारा हो रहा है—और वह भी श्री चिंगीज़ आइत्मातोव की 70वीं वर्षगाँठ पर।

साहित्य अकादेमी ने इसके पूर्व भी, वर्ष 1997 में महान किर्गीज़ महाकाव्य ***मनास*** का सचित्र प्रकाशन किया था जो भारत और किर्गीज़ गणतंत्र की अटूट और सुदृढ़ मित्रता का प्रतीक बन गया है। वह कृति अपनी विषय-वस्तु, कथा-प्रवाह और भव्य प्रस्तुति के नाते किर्गीज़स्तान के साथ भारतीय पाठकों के बीच पर्याप्त प्रशंसा अर्जित कर चुकी है। उसी क्रम में हम साहित्य अकादेमी द्वारा श्री चिंगीज़ आइत्मातोव की महान कथा-कृति ***तावूरो कसांद्री*** का हिन्दी अनुवाद **कसांद्रा दाग़** शीर्षक से प्रकाशित कर

रहे हैं। श्रीमती चारुमति रामदास ने इस महान कृति का हिन्दी अनुवाद किया है—उन्हें अकादेमी से हार्दिक साधुवाद। साथ ही, हिन्दी एवं रूसी के सुपरिचित लेखक एवं अध्यापक प्रो. डा. वरयाम सिंह विशेष धन्यवाद के पात्र हैं—जिन्होंने इस उपन्यास को आद्यन्त देखकर सामग्री को व्यवस्थित तथा समायोजित किया। आशा है, मनुष्य के भविष्य को संबोधित यह कृति एक नये विश्व की संभावना को आकार देगी और पाठकों को अपनी ही नियति से रचनात्मक संवाद करने का अवसर प्रदान करेगी।

1

इस बार भी आरम्भ शब्द से ही हुआ। जैसे पहले कभी हुआ था। जैसे उस अमर कथा में है।

और उसके बाद जो कुछ भी हुआ वह उस सुनाये हुए का ही परिणाम था।

हालाँकि अनेकों को, जिनका इस अप्रत्याशित घटना से सामना हुआ था, यह ख़याल भी नहीं आया कि समय आने पर अपने संस्मरणों में उन्हें इस हादसे का जीवन की सबसे अधिक चौंका देनेवाला घटना के रूप में वर्णन करना होगा। और वे सब, प्रत्यक्षदर्शी, अपने-अपने संस्मरणों को एक ही वाक्य से आरम्भ करने के लिए बाध्य थे : "उस दिन की अविश्वसनीय घटनाएँ ऐसे घटती गईं मानों किसी जासूसी उपन्यास में घट रही हों।"

वास्तव में ऐसा ही हुआ था। 'ट्रिब्यून' अख़बार के कर्मचारियों को अचानक मुख्य निदेशक का आदेश प्राप्त हुआ जिसके अनुसार सम्पादकीय मण्डल की अतिशीघ्र आयोजित की गई आपात बैठक के दौरान कहीं भी, किसी को भी टेलीफ़ोन करने पर, टेलीफ़ोन एवं फ़ैक्स का जवाब देने पर और किसी भी आगन्तुक के सम्पादकीय भवन में प्रवेश करने पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया गया था।

शुरुआत इस आपात बैठक से ही हुई थी। अख़बार के पन्नों पर इस तरह के प्रार्थना पत्र को प्रकाशित करना—ऐसा तो सिर्फ़ सपनों में ही होता है। मगर निर्णय तो लेना ही था, आगे कार्रवाई भी करनी थी। सवाल सीधा-सादा था : हाँ या ना। और 'ट्रिब्यून', जो सभी महाद्वीपों पर बुद्धिमानों की पसन्दवाली अपनी छवि को जोर-शोर से सँभाले हुए था इस प्रलोभन (शायद, शैतानी प्रलोभन, जैसा कि बाद में विरोधियों ने कहा) से अपने आपको दूर न रख सका, बड़ी आकर्षक थी बाजी—पूरे विश्व में सनसनी फैलानेवाली। सम्पादक मण्डल ने इस सामग्री के विशेष अधिकार प्राप्त कर लिए और ख़तरा मोल लेने का निश्चय करके अपना सब कुछ दाँव पर लगा

दिया और बिजली की गति से मानव इतिहास के इस अभूतपूर्व दस्तावेज़ को प्रकाशित कर दिया।

उस समय, घटनाओं के आरम्भ में, सम्पादकीय मण्डल के एक समालोचक ने अनेक व्यक्तियों के स्मृति-पटल पर अंकित हो जानेवाले शब्द कहे : "तो, साथियो बात यह है"—हाथों में पत्र की गीली प्लेट पकड़े हुए उसने कहा, "इतिहास समझ-बूझ की सीमा से परे जा रहा है। हमारी बदौलत, हमारे 'ट्रिब्यून' की बदौलत! इस सीमा को अब कोई पार नहीं कर सकता, इससे ऊपर कोई छलाँग नहीं लगा सकता, और बाक़ी सब देख लेंगे, ज़िन्दगी खुद ही दिखा देगी। इस सबका अन्त क्या होगा? देखा जाएगा।"—उसने सिर हिलाते हुए अर्थपूर्ण स्वर में कहा, "मगर, साथियो, माफ़ कीजिए, आपको सावधान कर दूँ कि अब हर कोई अपने ही बारे में सोचे—एक घण्टे के बाद क्या होगा—पता नहीं?"

सच कहा जाये तो डरने जैसी कोई बात तो थी ही। इसे सभी समझ रहे थे। प्रकाशन-गृह में लोगों के मिजाज़ हर घण्टे बदल रहे थे, कभी मुख्य सम्पादक से लेकर अगले रिपोर्ताजों की तैयारी में लगे पत्रिका विभाग के चपरासी तक, जो सब पूरी तरह मायूस नज़र आते—सब दरवाज़ों के पीछे छिप जाते, मेज़ों के पीछे से बाहर न निकलते, एक-दूसरे से आँखें चुराते, या फिर बेकार ही उत्तेजित प्रतीत होते, सभी गलियारों में निकल आते, यूँ ही केबिनों में आते-जाते। मगर एक और बात के बारे में भी निर्णय लेना था—क्या क्रुद्ध भीड़ के अन्दर घुस आने की सम्भावना को देखते हुए दरवाज़ों और खिड़कियों पर बैरिकेड लगा दी जाये, क्योंकि भीड़ ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं करेगी, इस बात की भी पूरी आशंका थी कि उमड़ती हुई भीड़ (जिसे कोई भी पुलिस बल नहीं रोक सकता था।) शीशे चूर-चूर कर दे, टेलीफ़ोनों को फ़र्श पर पटक दे, फ़र्नीचर और दफ़्तर का सामान तोड़ दे और इस लफड़े की ख़बर सूँघते ही पहुँचनेवाले टेलीविज़न कर्मचारियों के कैमरों के सामने ही क्षणभर में पूरी दुनिया को हिलानेवाले, मानव को ईश्वर से संघर्ष करने के लिए उकसानेवाले अख़बार के कर्मचारियों को गिरेबान से पकड़कर झकझोर दे...

मगर अभी तो इस सबसे अनजान, शोर मचाती, लोगों की भीड़, अपनी आदत के मुताबिक, इस विशाल अमरीकी शहर की सड़कों पर चली जा रही थी, गगनचुम्बी इमारतों के निकट से एक जीवित सैलाब के रूप में गुज़र रही थी, उनके साथ ही चमचमाती मोटरगाड़ियों का काफ़िला

अविरत गति से चलता जा रहा था, सिरों के ऊपर चकाचौंध करते हेलिकॉप्टर मँडरा रहे थे। अभी कोई भयभीत नहीं हुआ था, कोई चौराहों पर खड़े होकर विद्रोह भड़कानेवाले उस अख़बार को हाथ में लिए नारे नहीं लगा रहा था जिसने जीवन की प्रक्रिया के रहस्यों की तह तक घुसकर उनका अपमान किया था, जिसके बारे में कभी भी किसी को भी कोई सन्देह नहीं था, अभी तक किसी ने सबको साथ लेकर नरक की राह पर चलने की चुनौती नहीं दी थी।

प्रतियोगिता के डर से 'ट्रिब्यून' ने बड़ी फुर्ती दिखाई। सुबह के अंक को सिर्फ़ आधे घण्टे के लिए ही सही, रोककर, अन्तरिक्ष से आये इस पत्र को कोई भी दूसरा अख़बार, विश्व के किसी भी भाग में छाप देता, चाहे इसका नतीजा कुछ भी निकले। 'ट्रिब्यून' इस मौक़े को हाथ से नहीं जाने देना चाहता था, चाहे पूरी दुनिया में प्रलय ही क्यों न आये, जिसमें पृथ्वी पर उपस्थित सभी जीव-जन्तु बह जाते, जिसके बाद कभी भी, किसी को भी, कहीं भी, किसी भी अख़बार की ज़रूरत ही नहीं पड़ती...।

और महासागर, शीघ्र आनेवाले एवं अपरिहार्य प्रलय का आगार, उस दिन महाद्वीपों के मध्य, पूरी ताक़त से हिलोरें ले रहा था, पृथ्वी को हिला रहा था, विराट लहरों से खेल रहा था, उत्तेजित होकर उफन रहा था, अपनी अन्तहीनता में चमचमा रहा था।

भविष्यवेत्ता ने बड़ी प्रसन्नता से अटलाण्टिक के ऊपर उड़ते अपने हवाई जहाज़ से लावे की भाँति उफनते सागर को देखा और इस उजली धूप में उसने जो कुछ देखा उससे उसकी तबीयत खिल गई, हालाँकि उस दृश्य में कोई ख़ास बात थी नहीं—हवाई जहाज़ों में उड़नेवाले सैकड़ों यात्रियों के लिए वही घिसापिटा-सा दृश्य था—नीचे सागर, जल, लहरें, एक-सा सपाट क्षितिज। उसे तो इस ख़याल से खुशी हुई थी कि मानव की नन्ही-सी आँख विश्व के इस असीमित विस्तार को देख सकती है। यह यूँ ही नहीं होता। किसी को भी, बादलों के नीचे उड़नेवाले गरुड़ को भी, वैसी दृष्टि नहीं मिली है। वैज्ञानिक उपलब्धियों की बदौलत, मानव के हाथों से जो दूसरी वास्तविकता निर्मित हो गई है, उसने मनुष्य को उसकी सुप्त सामर्थ्य से अवगत कराया है, जिसने उसे ईश्वर के समान शक्तिशाली बना दिया है। हाँ, सिर्फ़ ईश्वर ही समूची पृथ्वी को देख सकता है, विश्व के ऊपर अदृश्य ऊँचाई पर, अदृश्य बवण्डर की भाँति विचरण करते हुए। इस ऊँचाई पर हवाई जहाज़ के एकरस शोर में भविष्यवादी इसी बात पर विचार कर रहा

था। अपने आप में खो जाना कितना अच्छा लगता है...बड़े-से जाम में बर्फ़ के टुकड़ों पर छलकती सुनहरी ह्विस्की पीने के बाद हल्की-हल्की खुमारी में उसने अपने खून में प्यारी-सी उत्तेजना महसूस की, और इस पर क़ाबू पाने के बदले उसने चाहा कि यह सुरूर, यह अपने आपमें खो जानेवाला ख़याल, इसी तरह बरक़रार रहे। बग़ल की कुर्सियाँ ख़ाली थीं, बातचीत में उसे खींचनेवाले कोई मुसाफिर नहीं थे, यह भी आम बात नहीं थी।

भविष्यवेत्ता यूरोप की यात्रा से लौट रहा था। फिर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, बुद्धिजीवियों का जमघट, कभी न ख़त्म होनेवाले संवाद, जो इस सर्वदेशीय समाज के जीवन का अंग बन गये थे, लगातार एक के बाद एक होनेवाले, विचार-मन्थन करनेवाले वाद-विवाद। बहस हो रही थी विश्व सभ्यता की सम्भावनाओं पर, प्रगति की विभिन्नताओं के ख़तरे के बारे और ऐसी ही अनेक सम्बन्धित समस्याओं के बारे में, जिसका समाधान ढूँढ़ने में हारवार्ड के वैज्ञानिक का पूरा जीवन गुज़र गया, और जैसे-जैसे वह ओरेकल[1] के इस जंजाल में गहरे पैठता जाता, उसे अब तक के ज्ञान की—दिन-प्रतिदिन जीवन ढोती हुई मानव जाति की सम्भावनाओं के अध्ययन की अज्ञानता का आभास बड़ी तीव्रता से होता जाता।

कभी-कभी लगता, क्या बोरियत है—हमेशा भविष्य को मात देने की चालें सोचना, हमेशा जीवन के अर्थ की खोज में लगे रहना, वह अर्थ जिसका रहस्य कोई भी ढूँढ़ नहीं पायेगा—न आज, न कल, न ही सहस्रों वर्षों बाद? मगर भविष्य में पैठने के विचार की इस असहनीय होड़ से इन्कार भी करके देखो तो क्या क्षितिज पर डोलते हुए उस दृश्य से आँखें फेर सकोगे, उससे बौखला न जाओगे, हताश न हो जाओगे? भविष्य की कल्पना के बिना भाग्य निरर्थक है। मगर कभी-कभी कितना कठिन होता है वैज्ञानिक स्थितप्रज्ञता का चोला पहन कर, 'शिकार फाँसने' वाली स्थिति में होते हुए, भविष्यवाणी करना कि इतिहास का चक्र किन खाइयों में प्रवेश करनेवाला है, शायद चक्र ही है यह, या शायद कुछ और है, जो गति के योग्य ही नहीं है, पिचका हुआ, कमानियों रहित साइकिल का पहिया—जिसकी गति को विज्ञान अभी तक कोई निश्चित नाम नहीं दे सका है। अनुमान, मसौदा, घोषणा—चिरन्तन विशेषताएँ हैं 'दोलायमान' भविष्य विज्ञान की, जो अनुभव-मूलक एवं नाटकीय होने के साथ-साथ सभी घटनाओं की व्याख्या करके

1. ओरेकल—ग्रीक मन्दिर, जहाँ देवता द्वारा भविष्यवाणी की जाती थी।

उनके बारे में पूर्वानुमान भी लगाता है। कभी-कभी तो इस अस्थिर, दोलायमान 'वाद' की सहायता से की गई भविष्यवाणियों से दूर भाग जाने को जी करता है, जैसे काले वर्षा देनेवाले बादल से, स्वयं को भी अपनी ही भविष्यवाणियों से डर लगता है, इतिहास के दुर्भाग्यपूर्ण मोड़ों के आभास से और सबसे ज़्यादा ख़ौफ़नाक है उन दुर्दम शक्तियों के आगमन का अहसास जो सर्वत्र धृष्टतापूर्वक सत्ता और केवल सत्ता हथियाना चाहती है, एक बुराई के बदले दूसरी बुराई को जन्म देती है, क्योंकि हर प्रकार का शासन, चाहे वह अपने उद्देश्यों के बारे में कैसी भी घोषणाएँ करे, राज्य करने के लिए खून की नदियाँ ही बहाता है। इस दृष्टि से, आत्मा के लिए, सत्य और अप्राप्य आदर्श की प्यास के बावजूद, भविष्य विज्ञान पीड़ा और सन्ताप का ही प्रतिरूप है। मगर फिर भी, भविष्य को जानने के निरन्तर प्रयासों से, जो बाबा आदम के जमाने से चलते आ रहे हैं, इनकार करना, इस पूरी तरह निःस्वार्थ अध्ययन से मुँह मोड़ना और शायद, आनेवाली पीढ़ियों को भविष्य की घटनाओं के बारे में न बतलाना. भविष्यवेत्ता के लिए उतना ही कठिन था जितना अपने अस्तित्व को नकारना। कितने वर्षों की तपस्या है यह। इस यथार्थवादी (व्यवहारवादी) दुनिया में ऊँचाई पर बने रहना, भविष्यवेत्ताओं के लिए आसान नहीं है। वे सुहाने प्राचीन दिन लद गये जब डेल्फ़ी की पुजारिनें[1] भगवान् के नाम पर विजय एवं मृत्यु की घोषणा करती थीं। आह, बीसवीं सदी में भविष्यवेत्ताओं को कुछ और अधिक व्यंग्यात्मक और हीन दृष्टि से ही देखा जाता है।

मगर यह इतनी परेशानीवाली बात नहीं है। भविष्यवादी एवं उसके सहयोगी अपने व्यावसायिक हितों सहित अपनी ही दुनिया में रहते थे, उदाहरण के लिए उसकी यूरोप की यह यात्रा केवल कॉन्फ्रेंस से ही सम्बन्धित नहीं थी, माइन नदी पर स्थित फ्रैंकफ़र्ट से प्रकाशित उसकी पुस्तक का विमोचन भी होना था। इस सन्दर्भ में किसी ने जर्मन शब्द 'माइन' के साथ खिलवाड़ करते हुए मज़ाक़ के लहज़े में कहा था कि 'माइन' पर स्थित महान् शहर में छपी है महान् पुस्तक 'माइने खेराउसफोर्देरूंग'[2],

---

1. प्राचीन ग्रीक कथाओं के अनुसार पैर्नासस पर्वत पर स्थित डेल्फ़ी में अपोलो का मन्दिर है, जहाँ भविष्य के देवता अपोलो के नाम पर पुजारिनें गन्धक की भाप को सूँघकर भविष्यवाणी किया करती थीं।
2. खुद को चुनौती।

जिसका लेखक के सिवा कोई और खण्डन नहीं कर सकता। और उस पुस्तक में वामपन्थी विचारधारा को ऐसे झटक दिया था, जैसे उसका हाथ किसी चिपचिपे पौधे पर पड़ गया हो। यह वास्तव में चुनौती ही तो थी–स्वयं को, जवानी की रंगीनियों को। उग्रवाद के संक्रमण से अगली शताब्दी को बचाने के लिए आरम्भ स्वयं से ही करना होगा।

कॉन्फ्रेंस में अपने विचार प्रकट करने के बाद उसने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया, 'ऑटोग्राफ़' दिये और फिर हुई राइन नदी की एक छोटी-सी सैर। वहीं, उस सैरवाले जहाज़ पर ही, उसने 'शिपगेल' को भेंटवार्ता भी दे डाली। राइन नदी की पाषाण-शिलाओं की पृष्ठभूमि पर वृद्धावस्था की ओर झुकते इस भविष्यवादी देवदूत की तस्वीरें खींची गईं। एक बार फिर–एक हल्का-सा मज़ाक़–उसके व्यक्तित्व से प्राचीन शिलाएँ कितना मेल खाती हैं, और वह स्वयं भी उतना ही प्रसिद्ध है जितनी ये प्राचीन शिलाएँ। जवाब में उसने मुस्कुराकर कहा, "भेंटवार्ता को यही शीर्षक दे सकते हैं–'प्राचीन शिला का चिन्तन' और 'प्राचीन शिला' को बहस करने के लिए बोलना ही पड़ा।" हर तरह के सवाल पूछे गये। 'स्वयं को चुनौती' देने से क्या तात्पर्य है–विज्ञान के क्षेत्र में एवं शायद जीवन में भी? क्या यह स्वयं के अनुभवों एवं धारणाओं का पुनरावलोकन है? क्या निराशावाद जीवन का अवश्यम्भावी परिणाम है?–देवदूत की क्या राय है? भविष्यविज्ञान में साहस का क्या स्थान है? अन्त में, उसका मिजाज़ एवं तबीयत कैसी है? राइन की शराब के बारे में क्या ख़याल है? ओह, बस भी करो। अमरीकी हमेशा ऐसे ही होते हैं। ख़ासकर जब वे जर्मन मूल के हों।

और इस समय, एक कठिन मैच के बाद वस्त्र बदलने के लिए भागते हुए खिलाड़ी की तरह, जो उस सबसे दूर जाना चाहता है, तनाव से मुक्ति पाना चाहता है, रॉबर्ट बोर्क भी हवाई जहाज़ में उन बातों के बारे में सोचना नहीं चाहता था, जिनके बारे में सदैव चिन्तन किया करता था। मगर फिर भी ख़याल आ ही जाते थे। शायद नये लेख के बारे में। अभी तक अधूरी पड़ी अपनी–'सर्वोत्तम रचना' को पूर्ण करना था। बेशक, यदि सम्भव हो सके तो। यदि सम्भव हो तो अनेक वर्षों की खोज के आधार पर इस विचार को नई वैज्ञानिक भविष्यवाणियों से संबद्ध करना है। रॉबर्ट बोर्क के अनुसार आधुनिक मानव को अनेक अनपेक्षित समस्याओं से जूझना होगा, उसे ऐसी अग्निपरीक्षाओं से गुज़रना होगा, जिनके बारे में अब तक सुना भी नहीं था, जैसे यदि सूर्य अचानक ठण्डा हो जाये या इसके विपरीत और अधिक गर्म

हो जाये तो इसका प्रभाव सभी व्यक्तियों और स्थानों पर एक-सा ही होगा। इन नई समस्याओं पर विचार करते हुए मानव को स्वयं में ऐसी योग्यता उत्पन्न करनी होगी जो उसे न केवल अपनी पीड़ादायक मृत्यु का अहसास कराये, अपितु, यह बहुत ज़रूरी है, इसी योग्यता के आधार पर जीवित रहने के नये उपायों एवं प्रगति के भावी रूपों को खोज निकाले, जो एक नये जीवन का, नई विचार प्रणाली का सन्देश देंगे। इसके बारे में लिखना, आगामी प्रगतिपथ के बारे में भविष्यवाणी करना—यही तो था सपना, 'सर्वोत्तम कृति' उसकी, यानी रॉबर्ट बोर्क की...मगर क्या यह सम्भव हो पायेगा? काम इतना बड़ा है...और समय निष्ठुर...

जहाज़ के पंखों के नीचे समुद्र वैसे ही अपनी असीमता में डोल रहा था। सूर्य, मेघरहित ऊँचाई, आकाश का असीम विस्तार, एक निश्चित दिशा में उड़ता हुआ जहाज़—गति मानो सागर के ऊपर सदा के लिए थम गई हो...लगभग डेढ़ घण्टे बाद पृथ्वी का किनारा दिखाई देगा, तब इस आकाशीय विश्राम की स्थिति के समाप्त होने पर हलचल आरम्भ हो जायेगी और हवाई अड्डे पर पहला क़दम रखते ही वह फिर से मानवीय भँवर में डूब जायेगा।

उसे फोटोग्राफ़ी का भी शौक था, अच्छी तस्वीरें खींच लेता था और हमेशा कैमरा अपने साथ रखता था, जिससे वह बिना सोचे-समझे फटाफट तस्वीरें खींचा करता। आकाश के दृश्यों पर तो उसने काफ़ी रीलें बर्बाद कर दी थी। उसकी पत्नी जैस्सी तो इन बेकार की तस्वीरों को देखकर जलभुन जाती थी, जिनसे उनका घर भर गया था। गुस्से में वह उसे कचरा फोटोग्राफर कहती और धमकी देती कि एक दिन वह बढ़िया आग जलाकर सारी तस्वीरें उसमें झोंक देगी, मगर इससे उसका शौक कम नहीं हुआ था। कभी-कभी अपने आप पर व्यंग्य कसते हुए वह कहता, "मैं समताप मण्डल का अन्वेषक हूँ, विज्ञान में—कल्पना में उड़ान भरता हूँ, और तस्वीरें—बादलों की लेता हूँ।" इस बार भी उसने सोचा कि किसी ख़ूबसूरत बादल की तस्वीर ली जाए, जो क्षितिज के निकट मस्ती में यूँ चहलक़दमी कर रहा हो जैसे कोई बालक चलता है सुहाने मौसम में, और कैमरा तैयार करके वह खिड़की के पास झुक गया। मगर अफ़सोस ऐसा कोई नज़ारा उसे दिखाई नहीं दिया, दूर, नीचे की ओर कुछ बड़े-बड़े बादलों के झुण्ड भटक रहे थे।

तभी, जब हवाई जहाज़ मुड़ रहा था उसने नीचे समुद्र में तैरती ह्वेल मछलियों के एक बड़े समूह को देखा। उसने अवकाश और गति में एक

हो गये इस समूह को बड़ी स्पष्टता से देखा। यह अनुभव इतना हृदयस्पर्शी था कि उसके दिल की धड़कनें थम गईं। हाँ, ये ह्वेल मछलियाँ, अकसर उसके सपनों में आती थीं। सागर में तैरती उनकी धुँधली आकृतियों को वह सपनों में देखा करता था। मानो उसे अपने साथ बुला रही हों। और, अब तो ह्वेल मछलियों को वह प्रत्यक्ष देख रहा था। अविश्वसनीय दृश्य! ह्वेल मछलियाँ आकाश में उड़ते सारस पक्षियों के झुण्ड के समान त्रिकोण बनाती तैर रही थीं। लगभग बीस। जहाज़ सीधे रास्ते पर उड़ने लगा, मगर मछलियाँ अभी भी दिखाई दे रही थीं। पूरी ताक़त से जल को उछालती, सिरों से टकराती फेनिल फ़व्वारों की धार को धकेलते, कभी भँवर में घिरतीं, कभी दुबारा अपने पर्वत जैसे शरीरों से तैरने लगतीं, वे एक निश्चित दिशा में बढ़ी जा रही थीं, बगैर किसी अनुशासनहीनता के।

ह्वेलों के समूह की इस प्रबल इच्छा एवं शक्ति को देखते हुए रॉबर्ट बोर्क सब कुछ भूल गया। उसे ऐसा लगा, मानो वह भी इस विशाल समूह में, ह्वेलों के मध्य बहता जा रहा है, मानो वह ह्वेलमानव हो, मानो पानी की चमचमाती धाराएँ उसकी पीठ से बह रही हों जैसे तूफ़ानी बारिश का पानी पहाड़ी से नीचे की ओर बहता है। उफनते सागर में तैरते हुए वह अपनी अन्तर्दृष्टि से समझ गया कि अब जीवन की अन्तिम साँस तक वह ह्वेलों के साथ एक अटूट बन्धन में बँध गया है, इस मुलाक़ात का रहस्य उसे मालूम हो गया : मछलियों का भाग्य उसके भाग्य से जुड़ गया है, जो उसके साथ होना है वही ह्वेलों के साथ भी होगा...।

वे बेकार ही तो उसके सपनों में नहीं आती थीं? नहीं, बिलकुल नहीं। मगर इस समय, इतनी शीघ्रता से वे कहाँ जा रही थीं? वे अपने साथ उसे कहाँ बुला रही थीं, किस उद्देश्य से? इतनी दूर से कुछ हासिल नहीं होगा, यह जानते हुए भी वह कैमरे का बटन दबाता रहा।

अगले ही क्षण उसने अपनी सीट के हत्थे में छिपे हवाई टेलीफ़ोन का चोंगा उठा लिया–घर में फ़ोन करने के लिए। जल्दी-जल्दी बैंक एकाउण्ट नम्बर शहर का नम्बर और घर का नम्बर दबाते हुए वह किसी एक अंक पर चूक गया और फिर से उसने सभी अंक दुहराये। जो कुछ वह देख रहा था, उसे पत्नी को बताना ज़रूरी था। वह ऐसी मानसिक स्थिति में था जब मनुष्य ख़ामोश नहीं रह सकता, अपना भेद किसी से बाँटे बिना नहीं रह सकता। "मगर, यह जैस्सी इतनी देर तक टेलीफ़ोन क्यों नहीं उठा रही? कहाँ है वह? शायद, घर से निकल पड़ी? मुझसे मिलने आ रही होगी, मगर

इतनी जल्दी? कार में फ़ोन करना होगा।" पत्नी को वह ह्वेलों के बारे में फ़ौरन बता देना चाहता था, जैसे घर पहुँचने पर बता नहीं पायेगा। भविष्यवेत्ता के घनिष्ठ मित्र यूँ ही उसका मज़ाक़ नहीं उड़ाया करते थे कि वह सपने में भी पत्नी के साथ विश्वासघात नहीं करेगा।

अब ह्वेल मछलियाँ समुद्र में छिप गई थीं, दृष्टि से ओझल हो गई थीं...

"जैस्सी!"—जैसे ही पत्नी ने फ़ोन उठाया, वह चीख़ा—"याद है, मैंने तुमसे कहा था कि मुझे ह्वेलों का सपना आया था?"

"हाँ, तो? तुम्हें हुआ क्या है? कहाँ हो?"

"मैंने अभी उन्हें देखा है। मैं उनसे मिला, सागर में। समझ रही हो न, वह सब इतना भव्य, इतना विशाल था, जैसा मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा...वह..."

"रुको, रुको, इतने उतावले क्यों हो रहे हो? भगवान् के लिए शान्त हो जाओ...घर पहुँचकर बता देना। ह्वेल!...यहाँ तो इतनी गड़बड़ हो रही है, कि समझ में नहीं आता तुम्हें कैसे बताऊँ! सब भौचक्के रह गये हैं। सभी 'ट्रिब्यून' पढ़ रहे हैं। क्या वहाँ तुम्हारे पास आज के अख़बार हैं? मगर, कैसे होंगे...जब तुम उड़ रहे हो, यहाँ न जाने क्या-क्या हो रहा है। यह 'ट्रिब्यून' का आपात अंक है, उसके बारे में अभी-अभी रेडियो और टेलीविज़न पर बताया गया है...सभी उसे पढ़ने के लिए झपट पड़े हैं..."

"क्या है उसमें? कोई राजनीतिक सनसनी?"

"नहीं। अगर वैसा ही होता! समझ में नहीं आता, तुम्हें कैसे समझाऊँ। अभी मैं पढ़ ही रही हूँ। यह—कुछ और ही है।"

"फिर भी, किस बारे में है? क्या है?"

"अन्तरिक्ष के पादरी का पत्र है, रोम के पोप के नाम! यह सबके लिए है, सभी लोगों के लिए..."

"क्या—क्या? कैसा अन्तरिक्ष का पादरी? मज़ाक मत करो, प्लीज! क्या अन्तरिक्ष में पादरियों की कोई संस्था है?"

"मैं समझा नहीं सकती। यह बहुत बड़ा पत्र है। सभी पढ़ रहे हैं।"

"किस बारे में है पत्र? सारांश क्या है? दो ही शब्दों में बताओ न!"

"यह अन्तरिक्ष पादरी विश्वास दिला रहा है कि उसने एक महान् वैज्ञानिक आविष्कार किया है। ऐसा लगता है, मानो अब लोग स्वयं ही निर्णय ले सकेंगे कि उन्हें पृथ्वी पर जन्म लेना है अथवा नहीं।"

"क्या कह रही हो, जैस्सी?"—भविष्यवेत्ता चहका।—"कुछ भी समझ नहीं पा रहा। बकवास है सब। यह कैसे कह सकता है वह, दावे के साथ? भगवान् कहाँ है?"

"मालूम नहीं। शायद भगवान् भी उससे सहमत है।"

"शाबाश। क्या बात है? क्या कह रही हो? कुछ समझ में भी आ रहा है? क्या हो रहा है वहाँ?"

"आओगे तो पढ़ लेना। सभी एक-दूसरे को फ़ोन कर रहे हैं...सभी बदहवास हैं, कुछ लोग तो इतने उत्तेजित हैं कि 'ट्रिब्यून' का नामोनिशान मिटा देना चाहता हैं। दोस्त कहते हैं कि इसके बारे में तुम्हें ही कुछ-कुछ कहना होगा। विश्लेषण करके बताना होगा कि इस सबका क्या मतलब है और आगे क्या होगा..."

"और, कौन है यह अन्तरिक्ष पादरी? क्या पृथ्वी की कक्षा में छिपा हुआ कोई अन्तरिक्ष यात्री है?"

"हाँ, यह वही अन्तरिक्ष यात्री है, जो वापस नहीं आया था, याद है एक बार अख़बार में छपा था कि अन्तरिक्ष अनुसन्धान स्टेशन के एक सदस्य ने पृथ्वी पर वापस लौटने से इनकार कर दिया था?"

"बिलकुल याद है। लिखा था कि वह रूसी था, एक अमरीकी और एक जापानी के साथ अन्तरिक्ष यात्रा पर गया है। सिर्फ़ उसका नाम नहीं याद आ रहा।"

"पत्र में उसने अपना नाम पादरी फ़िलोफ़ेइ लिखा है।"

"फ़िलोफ़ेइ? यह उसका असली नाम है?"

"मालूम नहीं।"

"यह रूसी नाम है। आजकल रूसी कुछ भी कर सकते हैं। इस शताब्दी में उन्हें बहुत कुछ देखना पड़ा है। सन्त है, शायद, अन्तरिक्ष में अकेला रह गया है और वहीं से अपने विचार भेज रहा है? एकदम नई बात है!"

2

रोम के पोप की सेवा में,

परम पवित्र पिता, अन्तरिक्ष में स्थित दूरदराज के ठिकानों में से एक—पृथ्वी के निकट की कक्षा से, जहाँ मैं पिछले तीन सालों से अन्तरिक्ष वैज्ञानिक-अन्वेषण अभियान में रत हूँ, आपको कष्ट देने के लिए क्षमा माँगने से पहले मैं, ख़यालों में आपके सामने घुटने टेककर अभिवादन करता हूँ और आपके हाथ को चूमता हूँ। कृपया मेरी पापी आत्मा को क्षमा करें और यदि सम्भव हो तो अवलोकनों एवं विचारों के आधार पर निकाले गये मेरे निष्कर्षों को सुनने का कष्ट करें, जो ऐतिहासिक-नैतिक अनुभवों के आधार पर पहली नज़र में शायद कपोलकल्पित एवं हानिकारक प्रतीत हों और जिनके कारण, शायद ईश्वर की इच्छा से मुझे अपार कष्ट पहुँचा है। वरना मैं आपको कष्ट नहीं देता, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरा यह पत्र मेरे दुस्साहस का प्रतीक ही है। मगर, आशा है कि पत्र को सही सन्दर्भ में देखने पर आपसे मुख़ातिब होने के उद्देश्य स्पष्ट हो जायेंगे।

तो, मैं असली बात से ही आरम्भ करता हूँ।

भाग्य ने मुझ नाचीज़ को चुना—अजन्मी आत्मा के एक गुण, मानवीय भ्रूण की प्रतिक्रिया, को जानने के लिए—जिसकी खोज एवं जिसके अस्तित्व का अहसास शायद हमें ईश्वरीय व्यापार के निकट ला सके। मुझे, सौभाग्यवश, रहस्य की परतों में छिपी इस प्रतिक्रिया को प्रयोगात्मक विधि से प्रकट करने में सफलता मिली है और मैं समझता हूँ कि यह एक अवसर है मानव जाति के विकास को परिपूर्णता तक ले जाने का।

इसीलिए आपसे विनम्र निवेदन करता हूँ कि कृपया मेरी बात सुनें।

मैं अपनी बात दोहराता हूँ कि मैं ऐसा महान् आविष्कार कर सका हूँ जिसका मानव जाति के भविष्य पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। मैं अपने बारे में इतना बढ़ा-चढ़ाकर इसलिए कह रहा हूँ कि अब तक कोई भी इस

उपलब्धि का मूल्यांकन करने की स्थिति में नहीं है क्योंकि इस अद्वितीय आविष्कार के बारे में किसी की कोई धारणा नहीं है।

मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि माँ के गर्भ में अवतरित होने के आरम्भिक कुछ सप्ताहों में भ्रूण को इस बात का पूर्वाभास हो जाता है कि उसका भविष्य कैसा होगा, और वह उसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर सकता है। यदि वह प्रतिक्रिया नकारात्मक हुई तो भ्रूण ईश्वरीय संसार में प्रकट होने का विरोध करता है।

मैंने वह संकेत ढूँढ़ निकाला है, जिसके द्वारा भ्रूण जन्म लेने के प्रति नकारात्मक सन्देश देता है। यह संकेत एक छोटे-से रंगीन धब्बे के रूप में गर्भवती महिला के माथे पर उभरता है। मैंने इसका नाम रखा है कसांद्रा दाग़ और उस भ्रूण को जो नकारात्मक संकेत देता है मैं कसांद्रा भ्रूण का नाम दे रहा हूँ।

भविष्य के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने की एवं दुर्भाग्य के संकेत देने की यह विस्मित करनेवाली योग्यता मानव भ्रूण में गर्भ धारण करने के बाद कुछ ही सप्ताहों तक रहती है। तत्पश्चात् वह लुप्त हो जाती है, जो इस बात का सूचक है कि भ्रूण धीरे-धीरे अपने भविष्य से समझौता कर रहा है।

मानव जीवन के इतिहास में कसांद्रा भ्रूणों द्वारा आगामी जीवन को अनेकों बार नकारा जाता रहा है। मगर कभी भी, किसी ने भी कुछ गर्भवती महिलाओं के माथे पर निकल आये दाग़ को कोई महत्त्व नहीं दिया, आज भी वही स्थिति है। मैंने न केवल ऐसे दाग़ के गूढ़ सन्देश को स्पष्ट किया है, बल्कि ऐसा भी तरीका ढूँढ़ निकाला है जिससे वह दाग़ अधिक स्पष्ट दिखाई दे। इसके लिए मैं अन्तरिक्ष से पृथ्वी पर कुछ विशेष प्रकार की किरणें भेजता हूँ। पृथ्वी की कक्षा में स्थित उपग्रह से भेजी गई ये किरणें माँ के गर्भ में स्थित कसांद्रा भ्रूण के आवेगों को सुस्पष्ट करती हैं। और नन्हा-सा रंगीन दाग़, जिसे पहले लोग मुहाँसा समझते थे, इन किरणों के प्रभाव से धड़कना शुरू कर देता है। वातावरण में इन विशिष्ट किरणों को देखा नहीं जा सकता एवं वे मानव शरीर के लिए हानिकारक नहीं है। मैं उन्हें अन्तरिक्ष से पृथ्वी के सभी महाद्वीपों पर भेज रहा हूँ। उद्देश्य है—कसांद्रा भ्रूणों का दर्शन कराना। भ्रूणों के साथ अन्तरिक्ष से जिरह' की जा रही है। कसांद्रा भ्रूण का सन्देश संक्षेप में इस प्रकार का है : "अगर मेरे वश में हो, तो मैं जन्म लेने से इनकार करना चाहता हूँ। आपके प्रश्न के उत्तर में मैं संकेत

भेज रहा हूँ, जिन्हें आप आगामी दुर्भाग्य का, पूर्वानुमान समझ सकते हैं, उन दुर्दिनों का, जो रहा देख रहे हैं मेरी ओर भविष्य में मेरे निकट सम्बन्धियों की। और अगर आप ये संकेत समझ रहे हैं, तो जान लीजिए कि मैं, कसांद्रा भ्रूण, बिना जन्म लिए, बिना किसी को कोई कष्ट दिये, लुप्त होना चाहता हूँ। आप जिरह कर रहे हैं—मैं जवाब देता हूँ : मैं जीना नहीं चाहता। मगर, यदि मेरी इच्छा की अनदेखी करके मुझे जन्म लेने के लिए बाध्य किया जाता है, तो मैं अपने भाग्य को, जैसा भी वह है, स्वीकार करूँगा, जैसा कि अन्य सभी लोग सदा से करते आये हैं। अब आप ही, विशेषकर मुझे गर्भ में ग्रहण करनेवाली माँ ही, तय करें कि आगे क्या करना चाहिए। मगर पहले मेरी बात सुनने और समझने की कोशिश कीजिये। मैं कसांद्रा भ्रूण हूँ! अभी मुझसे विदा लेने में देर नहीं हुई है, और मैं भी इसके लिए तैयार हूँ। मैं, कसांद्रा भ्रूण, अपने बारे में काफ़ी दिनों तक जानकारी देता रहूँगा, मैं, कसांद्रा भ्रूण, आप तक अपने संकेत भेजता रहूँगा, मैं, कसांद्रा भ्रूण, जन्म लेना नहीं चाहता, नहीं चाहता, नहीं चाहता, नहीं चाहता...मैं—कसांद्रा भ्रूण!"

कसांद्रा भ्रूण के संकेतों का यह स्पष्टीकरण किसी को भी किसी भी निर्णय के लिए बाध्य नहीं करता। गर्भवती महिला के माथे पर धड़कता यह कसांद्रा दाग़ शीघ्र ही धुँधलाकर लुप्त हो जाएगा—बिना कोई निशान छोड़े। और यदि कोई भुलाना चाहे तो सब कुछ भूल जायेगा, कन्धे झटककर किसी भी बारे में कुछ भी नहीं सोचेगा...।

मगर विज्ञान तो कन्धे नहीं झटक सकता। अन्तरिक्ष के कम्प्यूटर पर प्राप्त आँकड़े यह सिद्ध करते हैं कि कसांद्रा भ्रूणों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है।

क्या कारण है इस बढ़ते हुए अदृश्य ख़तरे का—भ्रूणों की जीवन प्रवाह से छिटककर मिट जाने की इच्छा का, अस्तित्व के संघर्ष से मुँह मोड़ लेने का, और इसके क्या परिणाम होंगे? क्या हमारे दैनंदिन अनुभवों के परे, दूर कहीं छिपे, रहस्यमय प्रवाह का अध्ययन करने से कोई लाभ है? यदि हाँ, तो अभी-अभी अंकुरित हुए जीवन में वास्तविक जीवन के प्रति भय को बाहर से प्रविष्ट कराना क्या उचित है? क्या यही जीवन माँ की कोख में बीज के अस्तित्व का ज्ञान नहीं कराता? माँ-जीवन का प्रतिरूप है। क्या वही माँ, अनजाने में अपने शिशु पर आसपास के वातावरण के ख़तरनाक प्रभावों की संवाहक न बन जायेगी?

ये सभी प्रश्न उत्तर माँगते हैं। मगर आगे बढ़ने से पहले, मैं यह स्पष्ट

करने का प्रयत्न करूँगा कि इस बारे में मैं आपसे, परम पूजनीय व्यक्तित्व से, रोमन कैथोलिक चर्च के प्रमुख से, क्यों मुख़ातिब हुआ हूँ।

देवदूत समान आपके व्यक्तित्व से मुख़ातिब होने का केवल यही कारण नहीं था कि आप ईसा मसीह के प्रतिनिधि और सेंट पीटर के अनुयायी हैं, और इस कारण आपको पूरे विश्व में आदरणीय एवं अधिकारयुक्त स्थान प्राप्त है, बल्कि इसीलिए भी कि आपके व्यक्तित्व में पृथ्वी पर बड़े असंख्य लोगों की नैतिक धारणाएँ एवं आत्मिक शक्ति परिलक्षित होती है। इसलिए, आपके माध्यम से मैं अपने सभी समकालीन और क्या पता, शायद भावी नागरिकों से भी, संवाद साध रहा हूँ।

आप मेरे इस निवेदन को बेसिर-पैर का, धृष्टतापूर्ण इत्यादि...इत्यादि कह सकते हैं, मगर हर परिस्थिति में उपरोक्त 'भ्रूणीय निराशावाद' की समस्या का अवलोकन करना अनजाने ही कैथोलिक मतों के निकट प्रतीत होता है, जो जन्म के रहस्य को ईश्वरीय इच्छा की अभिव्यक्ति मानते हैं।

मैं कैथोलिक तो नहीं हूँ, मगर यह बात कैथोलिक मत के बारे में मेरे आदर को ज़रा भी कम नहीं करती। मेरी राय में हर धर्म, जो अपनी विशिष्टता का ढिंढोरा न पीटे, अनेकानेक विचारों की प्रस्तुति का माध्यम बन सकता है, जैसे आकाश विभिन्न प्रकार के पक्षियों को उड़ने का स्थान देता है... । इस दृष्टि से यदि मैं कैथोलिक क्षितिज पर उड़ता हुआ पक्षी होता, तो अपने आपको सौभाग्यशाली मानता... ।

हाँ, मैंने अपने हृदय में कैथोलिक नैतिक सिद्धान्तों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, क्योंकि वे मुझे सर्वसाधारण रीति-रिवाजों को समेटे, जीवन के तर्कों को सन्तुष्ट करनेवाले और फलस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में मान्य प्रतीत होते हैं। ख़ास तौर से जब आत्मा को सदैव कष्ट देनेवाले सन्देहों और पीड़ाओं की—गर्भपात की समस्या की—बात होती है। यही आमूल परिवर्तनकारी प्रश्न जो इतना मामूली बन गया है जितना मुरब्बे के डिब्बे को खोलना, हमारे लिए पीड़ादायक भविष्य के रूप में क्यों प्रकट होता है—इतनी सहजता से, इतनी आसानी से, निर्णय लिया जाता है कि मनुष्य रहे अथवा न रहे। जन्म लिया जाये अथवा जन्म न लिया जाये, जिया जाये या न जिया जाये। सब कुछ निर्भर करता है, अनेक प्रकार के विभिन्न कारणों पर, विशेषकर दुनियाबी झूठ पर। और—कई लोग कहते हैं—भगवान् की क्या ज़रूरत है? भगवान् की कोई ज़रूरत नहीं है। भगवान् ने एक खुशनुमा ज़िन्दगी की शुरुआत कर दी। आगे के निर्णय हम खुद ही लेते

हैं, हमलोग, जिन्हें जीवन बचाने का या उसे नष्ट करने का अधिकार प्राप्त है। इस निरन्तर चली आ रही 'बहस' में गर्भपात पर बिना शर्त प्रतिबन्ध लगाने की अपनी बात पर अड़े कैथोलिक चर्च की भूमिका मुझे तर्कसंगत प्रतीत होती है। यह जीवन की आरम्भिक अवस्थाओं के अनुरूप है, उस अवस्था के, जब जीवन का प्रादुर्भाव हुआ था, क्योंकि हर नन्हे-से भ्रूण में, हर नई आवृत्ति में चिरन्तन की गति का अद्वितीय गुप्त संकेत निहित है, हर जन्म लेनेवाला अंश समय के प्रवाह में भविष्य में अवतरित होनेवाले तत्सम जीव से सांकेतिक रूप से जुड़ा होता है और इस सबका आरम्भ किया था उस निर्माता ने विश्व का निर्माण करते समय...।

इसीलिए कैथोलिकों की लीक पर चलते हुए मैं यह याद दिलाना चाहता हूँ कि गर्भपात का अर्थ है ईश्वरीय संकल्प का विनाश। कई बार पहले भी कहा जा चुका है कि गर्भपात बलात् कराया गया कृत्य है, योजनाबद्ध हत्या के समान है, गर्भपात प्रथम शिक्षा–'हत्या न करो!'–के विपरीत है, बाइबिल के मूलमन्त्र 'जन्म लो और वृद्धि करो!' के विरुद्ध है।

शायद, सब कुछ यही है। मगर एक दूसरा पहलू भी है। क्या जगह-जगह पर नारे नहीं सुनाई देते कि गर्भवती स्त्री के निर्णय में दखलन्दाज़ी मत करो, आन्दोलन करनेवाले–मानो व्यक्ति एवं समाज के हित में–बिना किसी दुविधा के गर्भपात का सहारा लेते हैं...। और आपत्ति करना भी कितना कठिन है यदि अभी-अभी उदर में अवतरित हुए जीव के भविष्य का फ़ैसला पहले ही कर चुकी हैं...उसकी ताक में बैठी अनेक विपत्तियाँ–ग़रीबी, बीमारी, बलात्कार, पाप, अपमान...और इसीलिए आन्दोलनकारी महिलाओं के सिरों के ऊपर उठे पोस्टर, जैसे 'मेरा उदर मेरा है!', जिसका सीधा-सादा अर्थ यह हुआ कि 'सब मुझसे दूर हटो!' कुछ ही लोगों को आघात पहुँचता है, घृणा होती है जब शराब के नशे में धुत लेबर रूम में पड़ी औरत बड़बड़ाती है, कि और पिऊँगी और कल इस गन्दगी को, निकम्मे को, बाहर फेंक दूँगी और सजधज कर, घूमूँगी-फिरूँगी, कोई समस्या न रहेगी...। मुझे क्या लेना है तुम्हारे भगवान् से, और तुम्हारे पाप से? अगर सब मुझ पर थूकते हैं, तो मैं भी सब पर थूकूँगी! भावी मानव को एक क्षण में ऐसे बाहर फेंक देते हैं, मानो वह कूड़ा-करकट हो...और इसके लिए सफ़ाई भी देते हैं जिनमें सर्वाधिक क्रूर तर्क भी सम्मिलित हैं।

प्रजनन के विरुद्ध आन्दोलन दिन-प्रतिदिन तीव्र होते जा रहे हैं, संसदों में घोषणा-पत्रों के माध्यम से, महिला आन्दोलनों में शोर मचाकर, गलियों

में, चौराहों में, भीड़ में वे अपने बारे में बढ़-चढ़कर बताते हैं... । अनेक देशों में मानव जाति को आगे बढ़ाने से मुक्ति की न केवल माँग की गई है बल्कि उसे हासिल भी कर लिया गया है। क्या जीवन अन्धी गली में पहुँच गया है?

साथ ही उन गर्भवती महिलाओं की विडम्बना भी दृष्टिगोचर होती है, जिन्हें तकदीर के भरोसे छोड़ दिया जाता है। उनके गर्भ में पल रहे शिशुओं की किसे ज़रूरत है? ऐसा काफ़ी लोग सोचते हैं, बहुत बड़ी संख्या में, अफ्रीका के रेगिस्तानों में और जगमगाते शहरों की सड़कों पर। आवश्यकता एवं सम्भावना के मध्य खाई गहरी होती जा रही है। साथ ही...साथ ही हमारे सन्देह एवं मानसिक पीड़ा भी शान्त नहीं होती—क्या हम मानव जाति को अन्त से बचाने के लिए कुछ कर रहे हैं, क्या इस उद्देश्य के लिए जी रहे हैं?

मगर अपने ख़यालों में हम किस हद तक शिकायत कर सकते हैं, कितनी दयनीयता से प्रश्न कर सकते हैं—क्या भावी पीढ़ी को पृथ्वी पर आने से रोकना होगा क्योंकि पृथ्वी पर सुख नहीं मिलेगा या दूसरे ग्रहों पर जाना होगा—यदि ऐसा सम्भव हो तो? ये सवाल भी उत्तर के मोहताज ही हैं।

इन सब बातों के बारे में काफ़ी सोच-विचार और बहसबाज़ी हुई है, मगर सब भ्रमित से प्रतीत होते हैं। मगर मुझे इस बहस को दुबारा शुरू करना होगा, क्योंकि मैं सचमुच चाँद से टपका हूँ। आपके माध्यम से मैं पूरी मानव जाति से संवाद साध रहा हूँ, क्योंकि सभी पर एक नई विपत्ति के बादल मँडरा रहे हैं, जिसके बारे में किसी ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी : हमें पता चला है कि भ्रूण हमें आवाज़ दे रहे हैं और अब इस तथ्य से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता।

हो सकता है, यह केवल आपत्ति न होकर आत्मा की एक नई अग्नि परीक्षा हो, जिसे मानव जाति के भविष्य का निर्धारण करने के लिए ऊपर से लिया जा रहा हो। इस अनजान राह पर चलकर हम कहाँ पहुँचेंगे? हमारा भविष्य क्या है? कसांद्रा भ्रूण की आवाज़ से बचकर कहाँ जायेंगे, जो हमारे भीतर, हमारे बारे में कुछ बता रहे हैं? न जाने कहाँ से एक अन्धा कुआँ प्रकट हो गया है, जिसके बारे में किसी ने कुछ भी सोचा न था। समूचे विश्व के लिए परीक्षा की घड़ी आ पहुँची है...क्या हम सत्य को झुठला सकते हैं?

परमपूज्य पिता, इसीलिए मैं आपसे मुख़ातिब हुआ हूँ कि यदि आप आवश्यक समझें तो मेरे इस आविष्कार का उचित मूल्यांकन करें, क्योंकि यह सत्य मानव जाति के लिए उतना ही अप्रत्याशित है जितना आकाश

में अन्तरिक्ष की गहराइयों से एक सूर्य के निकट दूसरे सूर्य का प्रकट हो जाना...

मैं बड़े असमंजस में हूँ। इस केन्द्र के प्रकाश-उपकरणों की बदौलत मैं पृथ्वी के इतने निकट हूँ कि वहाँ घटित हो रही घटनाओं को स्पष्ट देख सकता हूँ, मगर फिर भी शारीरिक रूप से मैं अन्तरिक्ष में हूँ। और इस समय, जब मानव को अचानक वास्तविकता का आभास हो गया है, मैं सोचता हूँ काश, हमारी पापी पृथ्वी पर मैं भी लोगों के बीच होता! मगर मेरा कर्तव्य है कि मैं यहीं से अपना दायित्व निबाहूँ। मुझे कक्षा में ही—वैज्ञानिक अनुसन्धान केन्द्र पर ही, रहना होगा क्योंकि मैं—अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेड अपने सभी कार्यों के लिए उत्तरदायी हूँ, ख़ासकर अदृश्य 'ज़ोन्दाझ' किरणों को पृथ्वी पर भेजने के लिए, जिससे कसांद्रा भ्रूण भलीभाँति नज़र आ सके। कसांद्रा दाग़ को प्रकट होने के लिए 'जोन्दाझ' किरणों की मार करने की विधि पूरी तरह मैंने ही बनाई है, अपने पूरे होशो-हवास में, अपनी आत्मा की आवाज़ पर।

पृथ्वीवासियों की सम्भावित प्रतिक्रिया की कल्पना से मैं बेचैन हूँ। लोगों का इससे पूर्व कभी भी इस स्पष्ट एवं दृढ़ आह्वान से सामना नहीं हुआ था। और लोग अपने आप से संघर्ष करेंगे...।

मैं लोगों की मानसिक स्थिति की कल्पना करके बेचैन हूँ। मुझे डर है कि जब उन्हें भावी माता के माथे पर धड़कते इस छोटे-से दाग़ का अर्थ समझ में आयेगा, तो उन्हें बड़ा आघात पहुँचेगा।

कमज़ोरी के क्षणों में मैं अपने ख़यालों में ईश्वर से रोते हुए शिकायत करता हूँ कि इन शापित भ्रूणों का रहस्य समझने के लिए, कसांद्रा दाग़ को, दुर्भाग्य के इस दुर्दैवी निशान को पहचानने के लिए, जो अब तक आनुवंशिकी की रहस्यमय परतों के नीचे दबा था और अब प्रकट हुआ है, उसने मुझे ही क्यों चुना। सभ्य शैतानियत की आँखों में आँखें डालकर देखनेवाले फ़ाऊस्ट को भी मुझसे ईर्ष्या न होगी। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझ कमज़ोर इन्सान को इस असहनीय बोझ से मुक्त करे। मगर यह मेरे ही साथ क्यों हुआ?...हे परम पूजनीय, आपसे मुख़ातिब होकर जो मैं अब करने जा रहा हूँ उसके लिए मुझे किसी ने भी बाध्य नहीं किया है। शायद यदि मैं अपने होठ सी लेता, इस भेद को अपने साथ क़ब्र तक ले जाता, तो बेहतर होता? अगर मैं ऐसा करता, तो उसके बारे में कौन जानता? कौन मुझे दोष देता, मेरा तिरस्कार करता?...

तो फिर मैं यह बकवास क्यों कर रहा हूँ? कहीं इसलिए तो नहीं कि लोगों के दिमाग़ों में व्यर्थ ही उथल-पुथल मचाऊँ, आत्मा को लज्जा एवं अराजकता का अनुभव कराके परिवार नष्ट कर दूँ, हरेक के मन में सन्देह के बीज बोकर उन्हें इस बात से भयभीत होकर सोचने पर मजबूर करूँ कि जीवन की डोर आगामी पीढ़ियों तक ले जाना उचित है या अनुचित, और शायद, समूची पृथ्वी पर अराजकता फैलाऊँ? आगे क्या करना चाहिए? आदम और हव्वा से विरासत में मिले जीवन की स्थिरता के ह्रास को रोकने के लिए क्या करना चाहिए?

कई बार मैंने अपने आपसे पूछा और स्वयं ही जवाब भी दिया...किसी भी हालत में, किसी भी कारणवश मुझे यह अधिकार प्राप्त नहीं होता कि भ्रूण की प्रकृति का जो रहस्य मुझे ज्ञात हुआ है उसके बारे में मैं ख़ामोश रहूँ–क्योंकि, मैं फिर से कहता हूँ, कसांद्रा भ्रूणों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। इसका कारण यह है कि विश्व के चिन्तन की प्रक्रिया में मानव जीवन में व्याप्त पाप एवं विनाश की भावना का अहसास बढ़ता जा रहा है। कसांद्रा दाग़ एक भ्रूण की आवाज़ है जो माँ के गर्भ में बड़ी बेचैनी एवं तनाव की स्थिति में विश्व के अन्त की राह देख रहा है जो शीघ्रता से निकट आ रहा है। इस भय ने उसके भीतर की जीवन की ललक को ही नष्ट कर दिया है।

क्या इस युग में, उत्तर औद्योगिकीरण के युग में, ऐसी वस्तुस्थिति को छिपाना क्या उचित है? नहीं। उल्टे ऐसा करना मानवता के विरुद्ध, अपने आपके विरुद्ध अपराध होगा।

हम आत्मज्ञान के नवयुग की दहलीज़ पर खड़े हैं क्योंकि अब से हम, चाहे कितनी ही कोशिश क्यों न करें, उस सच से आँखें नहीं मूँद सकते कि भ्रूण इस तथ्य के प्रति सजग है कि किस आनुवंशिक क्षेत्र में वह भविष्य में मानव के रूप में अवतरित होगा, अर्थात् उसे इस बात का पूर्वानुमान होगा कि हम कौन हैं, क्या हैं–जीवन रचयिता, युगशक्ति या इतिहास पुरुष! वह बेचैनी से अपने भविष्य के पैरिस्कोप में देख रहा है दर्पण के पीछे की पनडुब्बी को, जो दर्पण के पीछे के भावी जीवन रूपी समुद्र में तैर रही है। क्या हमारा भी यह कर्तव्य नहीं है कि हम कसांद्रा भ्रूण के पैरिस्कोप में झाँकें? कहीं हमारे विनाश के लिए उद्यत इन तूफ़ानों का कारण स्वयं हम ही तो नहीं हैं?

सोचते हुए डर लगता है, कहीं कसांद्रा भ्रूण पूर्वनियति से हमारे मुँह

मोड़ लेने का परिणाम तो नहीं है? हम, वैचारिक स्तर पर ईश्वर स्वरूप प्राणी, कैसे इस पतन के गर्त में धँसते गये? कितना किया होगा लोगों ने वैचारिक और प्रायोगिक स्तर पर, जिससे जनन-प्रक्रिया भ्रूण के स्तर पर ही एपोकेलिप्स[1] की भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध करने जा रही है!

इस तथ्य से वह सब उजागर होता है जो वर्षों से, शताब्दियों से 'जीन्स' में एकत्र होता रहा है, जैसे संगणक की स्मृति में (कम्प्यूटर की मेमोरी में)। आज हम भ्रूण की—कसांद्रा दाग़ की—प्रतिक्रिया का प्रतिबिम्ब परदे पर देख सकते हैं। और भाग्यवश इस दाग़ को सुस्पष्ट करनेवाली किरणें अन्तरिक्ष से मैं भेज रहा हूँ। और इसलिए आज मेरी बारी है। और मैं, अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेइ, अपनी बात पूरी-पूरी कहूँगा। मेरा यह कर्तव्य है।

परम आदरणीय, आपके बहुमूल्य समय को यूँ बेकार में नष्ट करने के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ। कृपया मुझे अपना यह विस्तृत बयान पूरा करने की इज़ाज़त दें।

अब, जब हम जान चुके हैं कि कसांद्रा के दाग़ का क्या अर्थ है, हमें आगे क्या करना चाहिए? यह समझने के लिए हमें अन्ततः स्वीकार करना होगा : किसी व्यक्ति द्वारा किया गया कोई दुष्कृत्य उसके शरीर का नाश होने के साथ नष्ट नहीं होता, अपितु आनुवंशिकी वन में एक विषैले बीज के रूप में उपस्थित रहता है और राह देखता है उस घड़ी की जब वह अपना प्रभाव दिखायेगा—एक धीमी गतिवाली बारूदी सुरंग की तरह।

ज़िक्र निकला ही है, तो मैं वास्तविक धीमी गतिवाली बारूदी सुरंग के बारे में बताऊँगा। यह घटना अफ़गानिस्तान में घटी, जब वहाँ तथाकथित सीमित सोवियत सैन्य टुकड़ियाँ तैनात थीं। कुछ ही वर्षों पहले घटी घटनाओं के पीछे निहित राजनैतिक मंसूबे अब रहस्य नहीं रहे, और मैं ठोस प्रमाण दूँगा कि कैसे युद्धरत विदेशियों ने मृत देहों का 'चारा' डाला। दुश्मन के मृत शरीर को उसके गाँव के निकट फेंक दिया जाता था, मुख्य रास्ते के निकट, जहाँ से वह साफ़ दिखाई दे सके, मृतक के नीचे विशेष प्रकार की बारूदी सुरंग छुपा दी जाती थी। चारा डालनेवाले, कैमरों सहित, निकट ही झाड़ियों में छुपे रहते थे, जिससे पूरी घटना की सिलसिलेवार तस्वीर खींची जा सके। लाश के निकट इकट्ठा होनेवाले लोग उसे दफ़न करने के लिए

1. एपोकेलिप्स :—यहूदियों एवं ईसाइयों के प्राचीन ग्रन्थ—जो विश्व के विनाश की भविष्यवाणी करते हैं।

उठाने की नीयत से उसे छूते, तभी सुरंग फटती और आगन्तुक वहीं धराशायी हो जाते। और अत्यन्त संवेदनशील कैमरे की रील पर ये अन्तिम क्षण जैसे के तैसे उतर आते...मृत अफ़गान के निकट दौड़ती आ रही है उसकी पत्नी। पड़ोसी उसे रोकने की कोशिश करते हैं, मगर वह डबडबाई आँखों से पति के मृत शरीर पर झुकती है और एक शक्तिशाली विस्फोट ढक देता है उसे और उसके साथ आये लोगों को। और लोगों का नामोनिशान मिट जाता है। सब विस्तारपूर्वक कैमरे पर आ जाता है। दूसरी फ़िल्म में हैं भयभीत बच्चे। वे रोते हुए ज़मीन पर अस्त-व्यस्त पड़े पिता के पास आते हैं और एक धमाका खून से लथपथ शरीरों को इधर-उधर फेंक देता है...। एक मुसाफ़िर रास्ते में पड़े मृतक के निकट से उदासीन होकर नहीं गुज़र सकता। घोड़े से उतरता है, झुकता है, मृतक के शरीर को पलटता है, यह देखने के लिए कि वह है कौन, और फिर वही चकाचौंध करता विस्फोट। और फिर एक मौत। और घोड़ा, फटी हुई खोपड़ी से, लड़खड़ाती चाल से, आगे की ओर भागता है, फिर नीचे गिरता है, तड़पता है और दम तोड़ देता है। और तस्वीर उतारी जाती है इस सबकी...इस प्रकार मृत शरीरों के 'चारों' के कुछ प्रभावशाली दृश्य सदा के लिए अमर हो जाते हैं। और यह सब कुछ, जो कैमरे पर अंकित हो चुका है, प्रमाण बन जाता है युद्ध से सम्बन्धित कर्तव्यों को पूरा करने का। इन तस्वीरों को देखनेवाले उनमें अपनी आज्ञाओं एवं उद्देश्यों की पूर्ति देखते थे। मगर, व्यावसायिक सन्तुष्टि से परदे पर दिखाई जा रही घटनाओं को देखनेवाले ये लोग हैं कौन? और वे, जो मृत्यु को इस तरह 'चारा' डालकर, अपने कार्य के प्रमाण को कैमरे में क़ैद करते थे, वे कौन हैं, कहाँ से आये हैं? उनका वंश-इतिहास अज्ञात है, उनके पूर्वजों को ढूँढ़ना असम्भव है। सिर्फ़ अतीत की धुन्ध में जाते कुछ पदचिह्नों को देखकर ही कुछ अन्दाज़ लगाया जा सकता है।

और दिमाग़ में यह सवाल उठता है कि वे कौन हैं जो सदा उस सर्वशक्तिमान ईश्वर के समकक्ष ऊँचाई पर आसीन हैं, जिसकी दयालुता का फ़ायदा उठाते हुए हम केवल कुछ प्रार्थनाओं के सहारे उसे सदा अपना मददगार मान लेते हैं। कौन है वे जिनसे हमारे अन्दर उपस्थित बुराइयों की एक अमिट लकीर गुज़रती है? कहाँ से आये? किसके वंशज हैं? जवाब शायद सवाल में ही छुपा है...मगर इससे राहत नहीं महसूस होती। यह सिलसिला कहाँ से चला है? कहीं हमारे प्रथम पूर्वजों से तो नहीं, जो क़ैदियों को ज़िन्दा जला देते थे, या उस मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्ति से, जो

अपने शिकार का गला घोंटते समय उसे हो रही पीड़ा से प्रसन्न होते थे, या शायद उस शैतानी अन्धे कुएँ से जिसमें हज़ारों वर्षों से निराशा और क्रूरता संचित होती रही हैं; और उन व्यक्तियों की लम्बी फ़ेहरिस्त को कैसे भूल जायें जो सिंहासन पर बैठे अपने ही समान क्रूर जल्लाद के क़दमों में झुककर जल्लाद का काम करते हैं, या उन्हें, जिन्हें हम अपने अनुभव से भली-भाँति पहचानते हैं, हाँ वहीं, पार्टी की भीड़ में संयत क्रुद्ध नेता, जो मंचों और सभाओं में चीख़ते हैं, क्रान्तियों और युद्धों का ऐलान उतने ही जुनून के साथ करते हैं, जितनी रहस्यात्मक और वीभत्स ढंग से हथियाई हुई सत्ता का उपभोग करते हैं।

ख़ून और सत्ता यही वह क्षेत्र है, जहाँ सदियों से बुराई के बीज अंकुरित होते हैं...बुराई का स्थान लेती है बुराई और पीछे उगने के लिए छोड़ती है आगामी बुराई के बीज...

अतीत के मलबे पर घूमते हुए, मृतकों के चेहरों पर रोशनी डालना क्या उचित है, जबकि अनेक व्यक्ति उस कालखण्ड को अभी तक नहीं भूले हैं जो इस बारे में काफ़ी कुछ बताता है—हाँ, स्टालिन-हिटलर का कालखण्ड, या यूँ कहिये कि हिटलर-स्टालिन का कालखण्ड। इस दोमुँहे ख़तरनाक, विचित्र जीव के कारण मानवता इतना खून बहा चुकी है कि अनेक दशकों के उपरान्त भी उनके मध्य जीवन के लिए न होकर मृत्यु के लिए हुए ख़ूनी विश्वयुद्ध में मारे गये लोगों की संख्या का सही अनुमान अब तक नहीं हो पाया है। क्या बोल्शेविज़्म के बग़ैर फासिज़्म का अस्तित्व हो सकता था? क्या स्टालिन के बग़ैर हिटलर या हिटलर के बग़ैर स्टालिन की कल्पना की जा सकती है? बीसवीं शताब्दी में जी रहे व्यक्तियों का खून बर्फ़ हो जाता है स्टालिन-हिटलर और हिटलर-स्टालिन की याद आते ही, जो जन्मे तो अलग-अलग स्थानों पर, मगर जिनकी बपतिस्मा एक ही तरह से हुई और जिनका नामकरण भी एक ही तरह से स्टालिन-हिटलर या हिटलर-स्टालिन...हुआ।

और कौन कह सकता है कि उस समय कसांद्रा भ्रूण ने, जिसे विश्व में स्टालिन या हिटलर के रूप में अवतरित होना था, कोशिश नहीं की होगी दुनिया को और उसे जन्म देनेवाली माता को, कसांद्रा दाग़ के माध्यम से, अपने भविष्य के पूर्वज्ञान के बारे में बताने की? क्या उस बदनसीब का दिल काँपा न होगा उस दुर्दैवी, क्रूर व्यक्तित्व की कल्पना करके जिसकी भूमिका भविष्य में उसे निभानी थी? क्या इस सबसे मुँह मोड़ने की उसकी इच्छा न हुई होगी?

यह कहना मुश्किल है कि अगर वे जन्म न लेते तो क्या होता...ऐसे मौक़ों पर अकसर कहा जाता है कि इतिहास बदला नहीं जा सकता। मगर फिर भी क्या उसे हिटलर या स्टालिन द्वारा खींची गई ख़ूनी वक्र-रेखा के अनुरूप ही घटना था, जो क्रूरता और अमानवीयता की सभी सीमाएँ पार कर गया था? बुराई के इन दोनों सखाओं ने करोड़ों लोगों को एक-दूसरे से और अन्ततोगत्वा मानवता को अपने आपसे इस तरह झगड़ने पर मजबूर कर दिया, मानो इस ग्रह के तत्कालीन वासियों ने मानव से घृणा करने के अन्तहीन व्यापार की निरर्थकता को प्रदर्शित करते हुए आत्मनाश का, आत्मघात का इरादा कर लिया हो। यदि इतिहास को इस परिणाम तक लानेवाले सभी कारणों की मीमांसा न की जाये तो भी इस बात पर तो विचार करना ही होगा कि इस क्रूर संयुक्त तानाशाही के सफल कार्यान्वयन के लिए तत्कालीन लोगों के साथ-साथ तत्कालीन विश्व विचारधारा भी कितनी ज़िम्मेदार है जिसने अपने ही लिए विनाश का कारण बननेवाले 'स्टालिनवाद' और 'हिटलरवाद' के गुण गाये, उसे फलने-फूलने दिया।

वह समय बीत चुका है। कोई नहीं बता सकता कि प्रगति और भलाई के कितने अवसर इतिहास के हाथों व्यर्थ गये, मानव के कितने दुःखों को, कितने दुर्भाग्य को रोका जा सकता था, उनकी जड़ को आरम्भ में ही काटा जा सकता था, यदि लोगों को भविष्य में झाँकने की वैज्ञानिक विधि का ज्ञान होता, यदि उन्हें कसांद्रा भ्रूणों के बारे में पता होता जो कसांद्रा दाग़ के माध्यम से अपने सन्देश भेजते हैं। आह, अपनी आनुवंशिक रचना के गर्भ में क्या रहस्य छिपा है, इसका ज्ञान मानवता को कितनी देर से हुआ...।

मगर अब भ्रूणों की गूढ़ शक्तियों के बारे में नया आविष्कार हुआ है। क्या इन आविष्कारों के परिणामस्वरूप नये चमत्कार देखने को मिलेंगे? नहीं। कोई भी मानवजाति के लिए पूर्वप्रेषित अच्छाई और साथ-ही-साथ बुराई की ताकत को बदल नहीं सकता। उनकी सामर्थ्य एक समान है। मगर मानव को ईश्वर ने शाश्वत की ओर अविरत गति से ले जानेवाली बुद्धि प्रदान की है, और यदि मनुष्य को अपना अस्तित्व बनाये रखना है, सभ्यता की चरम सीमा पर पहुँचना है, तो उसे अपने अन्तर की बुराई पर विजय पानी होगी। क्योंकि लोगों का सारा जीवन इन्हीं निरन्तर प्रयत्नों में बीतता है, और यही हमारी नियति है।

अब प्रकट हुआ है अब तक अज्ञात रहस्य, जो स्वयं हममें (हमारे अन्दर) विद्यमान था। कहीं यह आत्मा की अब तक अज्ञात स्थलों पर उड़ान

तो नहीं? आन्तरिक विश्व के नये कणों की खोज़ तो नहीं हुई है?

वस्तुस्थिति यही है अथवा नहीं—कहना मुश्किल है, मगर मैं समाज का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ कि कसांद्रा भ्रूणों के आविष्कार के फलस्वरूप हमारे जीवन में अनेक ऐसी समस्याएँ उत्पन्न होनेवाली हैं जिनका पहले अस्तित्व नहीं था।

कौन कह सकता है कि कसांद्रा भ्रूण द्वारा भेजे गये सन्देश को किस प्रकार ग्रहण करना चाहिए? माता-पिता की कैसी प्रतिक्रिया होनी चाहिए? क्या कसांद्रा दाग़ को अशुभ माना जाये? या इसे दिमाग़ से निकाल दिया जाये? हाथ झटक दिये जायें, क्योंकि रातों को, जब उसे धारण करनेवाली माता निद्राधीन होती है, हौले-हौले धड़कनेवाला यह विचित्र दाग़ लगभग दो सप्ताह बाद अदृश्य हो जायेगा, अपने आप मिट जायेगा और भगवान् ने चाहा तो सब कुछ भुला दिया जायेगा।

हाँ, शायद ऐसा ही होना चाहिए। मगर फिर भी, अनचाहे ही माता-पिता को कभी-कभी उसकी याद आयेगी, जब नया जीव निर्धारित समय पर विश्व में प्रकट होगा, तब उसकी याद आयेगी। और शायद भविष्य में भी वह अपनी याद दिलायेगा, बचपन में अनेक कठिन परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी, माँ की किस्मत में, परिवार के जीवन में और हर बार दिल को कचोटती जायेंगी पुरानी यादें, अनेक ख़याल आयेंगे उस नन्हे से दाग़ के बारे में और पैदा होंगे अनेक सवाल। सोचेंगे, शायद, कि यह दाग़ केवल उनके, बच्चे को ही क्यों लगा। क्या दूसरी माताओं के माथे पर भी ऐसा ही दाग़ उभरा था और यदि हाँ, तो क्या उन्होंने भी उसे औरों से और ख़ुद अपने आप से छुपाया, क्या वे भी उसे याद न करने का, एक रहस्यमय घटना समझकर, भूल जाने का प्रयत्न करती रहेंगी? और क्या होगा तब, यदि बालक को भी उसके बारे में सन्देह हो जाये, उसके अन्तर्मन में धुँधले से, एक भूले-बिसरे स्वप्न की भाँति, छिपे रहकर कहीं यह उसकी मानसिकता को तो प्रभावित नहीं करता?

मगर यह तो सवालों और सन्देहों की पहली लहर है। भविष्य के गर्त में इनसे भी जटिल अनेक प्रश्न छुपे हैं। ऐसी स्थिति में क्या माता-पिता (जन्मदाता) अपने बारे में, अपने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष दोषों के बारे में नहीं सोचेंगे? शायद सारा दोष उन दोनों का, या माता का, या पिता का ही हो? और यह सबसे दुःखद स्थिति है, क्योंकि स्वयं के दोष हमेशा विकराल प्रतीत होते हैं। और तब अनायास ही वह पीड़ादायक प्रश्न उपस्थित होता है,

आख़िर क्या कारण था, कि उनका ही बीज दुर्भाग्य के संकेत देता रहा—इसी बारे में माता-पिता सोचते रहेंगे। तब यह कल्पना करना कठिन न होगा कि सभी सम्भव कारणों के मध्य, जो किसी न किसी प्रकार से भ्रूण को प्रभावित कर सकते थे, वे न केवल जन्मदाता के रूप में स्वयं को ढूँढ़ेंगे, बल्कि उस सबको भी जो उनके दैनंदिन जीवन से जुड़ा है—उनकी सामाजिक स्थिति, झूठे दावे, महत्त्वाकांक्षाएँ, वैचारिक स्तर—संक्षेप में वह सब जो मानव जीवन को आकार देता है, उसे सजाता-सँवारता है और उसे आघात पहुँचाता है, जीवन सम्बन्धी सभी धारणाएँ—न्याय, अन्याय, अच्छाई, बुराई इत्यादि।

जीवन के इन विभिन्न अंगों का परस्पर समन्वय उस तथ्य के कारण सम्भव है कि जीव का जन्म स्थान एवं समय की परिधि में केन्द्रीय घटना है, यह प्रकृति के प्रतिरूपों में इतिहास का बीजाणु है।

कसांद्रा भ्रूण के पास असाधारण तीव्र पूर्वाभास, काल के पूर्वानुमान की विशेष शक्ति है। अतः उसके भावावेगों की विश्लेषण-कुंजी है विश्व के अध्ययन की, जिसे हम आन्तरिक और बाह्य रूप से बदहवास होकर अस्त्र-शस्त्रों से सजा रहे हैं। इस दृष्टि से कसांद्रा दाग़, शायद, उस सर्वोच्च शक्ति की इच्छा से हमारे सम्मुख प्रकट हुआ है जीवन के अर्थ को नई दृष्टि से देखने की प्रेरणा के रूप में, अब तक अज्ञात क्षेत्रों के विश्लेषण की दिशा में। और हर व्यक्ति अपनी समझ तथा अपने इरादों के अनुरूप निष्कर्ष निकाल सकता है।

इसी अधिकार का प्रयोग करते हुए मैं, अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेइ, पृथ्वी की कक्षा में स्थित उपग्रह केन्द्र से अपने परीक्षण करते हुए आपसे बात कर रहा हूँ। पृथ्वीवासियों से मुख़ातिब हूँ। आइये, ईश्वर द्वारा प्रदत्त जीवन के अज्ञात अर्थ के बारे में सोचें, यह जानने का प्रयत्न करें कि जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसमें आने से कसांद्रा भ्रूण जीवन के आरम्भिक दिनों में ही इनकार क्यों कर रहा है?

सारे अनुमान इसी पर निर्भर हैं। मैंने भी कुछ अनुमान लगाये हैं। उपग्रह केन्द्र पर लगे हुए उपकरणों की सहायता से मैं पृथ्वी के सभी महाद्वीपों पर विभिन्न समयों में प्रसारित हो रहे टेलीविज़न प्रसारणों को देख सकता हूँ। अवलोकनार्थ लगाये गये उपकरण पृथ्वी की सतह पर हर चीज़ को सभी बिन्दुओं, सभी कोणों से दिखा सकते हैं। पृथ्वीवासियों की दिनचर्या मेरी आँखों के सामने है, शायद मैं पृथ्वी पर होता तो सब कुछ इतनी स्पष्टता से न देख पाता। मैं निरुद्देश्य अवलोकन नहीं करता हूँ, मेरा

कार्यक्रम अन्तरिक्ष से पृथ्वी के लिए है—मैं बिना किसी झिझक के कहता हूँ कि मैं वह प्रयोगकर्ता हूँ जो मानवता के वर्तमान एवं भविष्य के प्रति उत्तरदायी है। मैं यह बात बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहा, यह वास्तविकता है। इसलिए मैं एक भी शब्द ऐसा नहीं कह सकता, जो मेरी समझ में, सत्य से सम्बन्धित न हो। मुझे विश्वास है कि मेरे अन्वेषण हमारे हृदयों में हमारे ही द्वारा निर्मित विश्व के अन्त की कल्पना की चेतावनी हैं। मैं खुलेआम वह बात कहना चाहता हूँ जिसे कहने से हमारा अहंकार और पाखण्ड हमें रोकते हैं।

मैं कसांद्रा भ्रूण के क्रमशः प्रत्यक्षीकरण की दिशा में प्रयोग करता हूँ, मासूम महिलाओं को इस बारे में कोई भी जानकारी नहीं देता। क्योंकि यह तो ऐसा ही है जैसे एक ही बारिश के नीचे सभी खड़े हों। और हालाँकि ये अदृश्य 'जोन्दाझ' किरणें स्वास्थ्य के लिए ज़रा भी हानिकारक नहीं हैं, इस ख़याल से कि मैं लोगों को मानसिक कष्ट दे रहा हूँ, मेरी रूह काँप जाती है।

मगर मैं उन परिस्थितियों में उनको पीड़ा से न बचा सकूँगा, जब अन्तरिक्ष 'पूछताछ' के उत्तर में कसांद्रा भ्रूण की प्रतिक्रियास्वरूप धब्बा प्रकट होगा। यह अपना-अपना भाग्य है, जिससे बचना असम्भव है। यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि यह भाग्य, हर व्यक्ति के लिए पृथक् एवं विशेष होते हुए भी, सभी के लिए, पूरे समाज के लिए समान है, क्योंकि इस दुर्भाग्य के कारण विश्वव्यापी हैं।

हम चाहें या न चाहें, कसांद्रा भ्रूण एवं कसांद्रा दाग़ वास्तविकता हैं। इसीलिए मैं घोषणा करता हूँ कि अपने अन्तरिक्ष आविष्कार निरन्तर ज़ारी रखूँगा, उनके प्रति सहानुभूति रखते हुए, जिनका पृथ्वी पर इससे सम्बन्ध या तो हो चुका है या होनेवाला है। लोगों को अपने बारे में सत्य का ज्ञान होना ही चाहिए। मैं इसे ईश्वर के सम्मुख अपना कर्तव्य मानता हूँ। मगर, मेरे पवित्र पिता, इससे मेरे लिए नारकीय मानसिक यातनाओं का आरम्भ हो चुका है, जिनके बारे में मैं ख़ामोश नहीं रह सकता और इसीलिए मैं चाहता हूँ कि सभी उनके बारे में फ़ैसला करें।

मैं फिर से दुहराता हूँ—मुझे इस बात का पूरा-पूरा अहसास है कि मैं जवाबदेह हूँ कसांद्रा भ्रूण के सामने, जिसका भेद, मैंने जान लिया है और जिसका प्रचार मैं कर रहा हूँ (वह स्वयं भी तो यही चाहता है!) और उसे धारण करनेवाली माँ के सम्मुख, क्योंकि यदि उसे कसांद्रा दाग़ का अर्थ न मालूम होता तो वह चैन से रहती।

और अभी भी, जब मैं कम्प्यूटर पर फुदकती इस इबारत को लिख रहा हूँ, मुझे बड़ी उलझन महसूस हो रही है। यह विचार, कि क्या मुझे ऐसा करने का अधिकार है, मुझे अन्दर-ही-अन्दर कचोट रहा है।

मैं अन्तरिक्ष कक्षा में स्थित कम्प्यूटर के परदे को देखता हूँ, कम्प्यूटर से दूर हटकर भारहीनता की स्थिति में उड़ता हूँ, उड़ती हुई नज़र इधर-उधर डालता हूँ, जैसे कुछ ढूँढ़ रहा हूँ—कुछ ऐसा जो मेरा ध्यान आकर्षित करे, मेरा आत्मविश्वास बढ़ाये, मुझे ये बताये कि विश्व को अपने आविष्कार के बारे में बताकर मैं कोई गलती नहीं कर रहा, और मेरी नज़र केन्द्र के टेलीविज़न के परदों पर पड़ती है। सभी परदे जगमगा रहे हैं, जीवन का आभास दे रहे हैं, विभिन्न देशों के विभिन्न भाषाओं में टेलीविज़न कार्यक्रम चल रहे हैं। यह है पृथ्वी का जीवन अपनी समस्त विभिन्नताओं सहित, इश्तिहारों से खेलों तक, अदालती रिपोर्ताज़ से हवाई अड्डे पर सरकारी अफ़सर के स्वागत तक और भी ऐसा ही बहुत कुछ... ।

विश्व के इन अनेक दृश्यों में से एक परदे का दृश्य मुझे आकर्षित करता है, जहाँ है शोर मचाता, उत्तेजित जुलूस। और न जाने क्यों मुट्ठी भर पुलिसवाले भी आन्दोलनकर्ताओं के साथ-साथ चल रहे हैं। सभी रास्ते खचाखच भरे हैं, तस्वीर अनेक कोणों से ली जा रही हैं, ऊँचाई से भी, उत्तेजित नारे गूँज रहे हैं। रिपोर्टर की आवाज़, जो घटनास्थल से रिपोर्ट दे रहा था, उद्घोषक की आवाज़ जो स्टूडियो के अन्दर था, डूब गई हैं भीड़ के शोर और चीख़ों में। यह सब कहाँ हो रहा है? शायद, इटली में। कितनी दूर...और फिर भी कितने पास, सब कुछ निकट ही है : आँखों की चमक, हावभाव, चेहरों पर निराशा के भाव। हाँ, यह सिसली में है। लोगों के सिरों पर बड़े-बड़े अक्षरोंवाले पोस्टर हैं। हाँ, बेशक! फिर वही, माफ़िया! फिर, आतंकवादी! इस बार मारा गया है मुख्य न्यायाधीश, प्रोसेक्यूटर के बाद। कायरता से, दिन-दहाड़े, और बेरहमी से। दूरी से नियन्त्रित बम का धमाका हुआ और सड़क पर बिखर गये टुकड़े-टुकड़े—जल गया—सब कुछ और हर कोई जो इस मनहूस क्षण में वहाँ उपस्थित था, जब कार में बैठे न्यायाधीश और उनके अंगरक्षक वहाँ से गुज़र रहे थे। षड्यन्त्र भली-भाँति रचा गया था, सबकी नज़रों के सामने।

आन्दोलनकारी बदहवास होकर चीख़ रहे हैं...नदी की धारा के समान बढ़ते जा रहे हैं। मगर किसके विरुद्ध है ये आन्दोलन? लोगों का यह विशाल सागर क्या कर सकता है? क्या आन्दोलनकारियों के मध्य ही माफ़िया के

गुर्गे नहीं हैं, जो मन-ही-मन उन पर हँस रहे हैं? जुलूस एक-दो घण्टों बाद तितर-बितर हो जायेगा और वे अपने-अपने स्वार्थों में लिप्त हो जायेंगे, ज़ोर-ज़ोर से कहेंगे स्वयं को माफ़िया सिंडिकेट के सदस्य और तानाशाह भी। उनके गुप्त शासन के आधीन हैं पूरे-के-पूरे देश, माफ़िया सरगनाओं के अधीनस्थ प्रदेश!...

आन्दोलनकारी चल रहे हैं...उनके सिरों पर है एक हेलिकॉप्टर, जो परचों का एक पुलिन्दा भीड़ पर फेंकता है और फ़ौरन मकानों की छतों के पीछे गुम हो जाता है। यह मेरी ही आँखों के सामने हुआ। लोग ऊपर से गिरे परचों पर झपटते हैं। परचों पर तस्वीर है मौत की—खोपड़ी और दो हड्डियाँ...माफ़िया बेशर्मी से मौत का ऐलान कर रहा है। सभी को, जो माफ़िया के विरुद्ध हैं, मिलेगी मौत! असन्तोष के कारण, अपमान के कारण उठा शोर लोगों को हिला देता है। अनेकों की आँखों में आँसू हैं। मैं अपनी नज़र पुलिस की वर्दी, शिरस्त्राण पहने एक युवा महिला पर टिकाता हूँ, जिसकी टाई खुल चुकी है। यह महिला सिपाही, जिसके हाथ में वीडियो कैमरा है, फिल्म खींच रही प्रतीत होती है। उसने हेलिकॉप्टर की तस्वीर खींच ली है। मगर इससे फायदा? माफ़ियावाले इतने बेवकूफ नहीं होते—हेलिकॉप्टर का रंग बदल दिया जायेगा, शायद उसके पुर्जे-पुर्जे अलग कर दिये जायेंगे, जो भी ज़रूरी हो, किया जायेगा। यह रहे उसके सहयोगी, हाथों में माइक्रोफ़ोन लिए। वे जल्दी-जल्दी, उत्तेजनापूर्वक कुछ बोल रहे हैं। मैं उनका दर्द समझ सकता हूँ। दुनिया में प्रतिदिन माफ़िया के हाथों कितने पुलिसकर्मियों की मृत्यु होती है। इन पर भी यह खतरा मँडरा रहा है। उस पर भी। मगर, यह मैं क्या देख रहा हूँ : उसके खुले माथे पर है विशिष्ट दाग़—कसांद्रा दाग़! हाँ, मैंने पहचान लिया। मैं इस दृश्य को स्थिर करके, निकट लाता हूँ, उसे स्पष्ट करता हूँ और मुझे विश्वास हो जाता है कि मैं ग़लती नहीं कर रहा। हे भगवान्, हालाँकि उसे, पुलिस अफ़सर को, अभी इससे कुछ लेना-देना नहीं है, मगर क्या उसे मालूम है कि उसके दिल में दुनिया के प्रति जो नफ़रत है, जिसके ख़िलाफ़ वह इस समय आन्दोलनकारियों के साथ संघर्ष कर रही है, वह उसके भावी शिशु तक पहुँच गई है। यह रहा, दुर्भाग्य का संकेत, उसके माथे पर। हाँ, अदृश्य किरणों द्वारा अन्तरिक्ष से कसांद्रा भ्रूणों की प्रतिक्रिया जानने के लिए जो प्रयोग मैं कर रहा हूँ, यह उसी का परिणाम है।

और मैं सोचता हूँ कि यदि इसे या किसी अन्य कसांद्रा भ्रूण को जन्म

लेना ही पड़ा, तो समय के साथ-साथ वह एक जघन्य अपराधी बन सकता है। वह अनेक व्यक्तियों और समूचे समाज को दुःख एवं पीड़ा पहुँचायेगा, अनेक भूमिगत अपराधों में लीन हो जायेगा, अन्य कारणों के अलावा इस कारण से भी कि उसके भीतर छिपी प्रतिशोध की भावना प्रकट हो रही है—उसे जन्म लेने पर मजबूर किया गया, उसे इस विश्व को स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया! उसे तो माँ के गर्भ में अपने नाटकीय जीवन की स्मृति न रहेगी, मगर प्रतिशोध की भावना ख़तरनाक परिणामों को जन्म देगी। यदि वह सौभाग्यशाली है तो यह कसांद्रा बालक ऐसे वातावरण में पलेगा जो उसके नकारात्मक 'जीन्स' को कुछ ऐसा मोड़ दे दे जिससे वे उदासीन हो जायेंगे, अन्यथा बुराई के विस्तार के लिए किसी भी प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है—ठीक उसी तरह जैसे पहाड़ से लुढ़कते हुए पत्थर की गति अपने आप बढ़ती जाती है, वैसे ही भाग्य के इस विपरीत मोड़ पर सब कुछ अपने आप ही घटित होता है।

कसांद्रा भ्रूणों के संकेतों को सुनते हुए मैं उनके भविष्य के बारे में सोचने लगता हूँ ओर उनके प्रति सहानुभूति अनुभव करता हूँ। इनका जो परिणाम होगा वह—उल्टी प्रतिक्रिया ही होगी, यह हम ही होंगे, अपने निरन्तर अपराधीकरण के फलस्वरूप बढ़ते भय की भावना से ग्रस्त। इसीलिए ये संकेत—कसांद्रा भ्रूणों की आवाज़—पृथ्वी पर सुननी होगी और उनके सन्देश को समझना होगा।

नहीं, यह क्षणिक व्यवस्था नहीं है, मैं चिरन्तनता की बात कर रहा हूँ। चिरन्तनता स्वयं में चिरन्तन है, और मानव को चिरन्तनता प्राप्त करने के लिए जन्म-जन्मान्तरों तक प्रयत्न करना पड़ता है। चिरन्तन की प्राप्ति का उपाय सिर्फ़ एक ही है—आध्यात्मिक परिपूर्णता। प्रगति-विचार पर चिपकाया गया तकनीकी परिशिष्ट है। इसका सटीक उदाहरण है उस पागल तानाशाह के हाथों में अणु अस्त्र दे देना जिसे अगर ज़रूरत हुई तो पूरी दुनिया को नष्ट करने में संकोच नहीं होगा।

क्या पृथ्वीवासी कसांद्रा भ्रूणों के सन्देशों से सन्तप्त होंगे, क्या वे इसे आनुवंशिक तत्त्व और शायद मानव सभ्यता के अन्त की भविष्यवाणी मानेंगे?

पूर्वानुमान करते हुए डरता हूँ। मुझे डर है कि हर कसांद्रा भ्रूण से जुड़े हुए प्रश्न एवं सन्देह भिन्न होंगे और हरेक का अपना-अपना निष्कर्ष निकलेगा...।

मुझे डर है कि अधिकांश महिलाएँ—और शायद उनके पति भी उन्हें नहीं रोकेंगे—कोशिश करेंगी। बहुत जल्द इस असाधारण बीज से छुटकारा पाने की। सबसे पहला उपाय जो उनकी समझ में आयेगा, वह है—गर्भपात। नैतिकता की दृष्टि से भी निश्चय ही इस कदम का समर्थन किया जायेगा—सच ही तो है, अभागे व्यक्तियों को जन्म ही क्यों दिया जाये? वैसे भी दुनिया में उनकी कमी नहीं है। और गर्भपात का निर्णय लेनेवालों पर कौन मुक़दमा चलाने की हिम्मत करेगा? कौन? समाज? इतिहास? नैतिकता? सामाजिक इतिहास में बुराई की जड़ें आनुवंशिक भय के कारण उत्पन्न होती हैं, और नैतिकता अकसर वहशी वास्तविकता के सम्मुख घुटने टेक देती है।

यहाँ, परम पवित्र पिता, मैं अपनी स्थिति स्पष्ट करना चाहता हूँ। कैथोलिकों के गर्भपात विरोधी मत का समर्थन करते हुए भी, मैं उन लोगों के ख़िलाफ़ नहीं जाऊँगा, जो कसांद्रा भ्रूण को देखने के बाद गर्भपात के पक्ष में सोचेंगे, क्योंकि यह कदम स्वयं कसांद्रा भ्रूणों की इच्छाओं के अनुरूप ही होगा।

परिणामतः हम परस्पर विरोधी परिस्थितियों को सम्मुख पायेंगे। यह स्वाभाविक क़दम (गर्भपात) विश्व चेतना की मूल समस्याएँ हल करने के स्थान पर उन्हें और उलझा देना—वे कारण जिनके फलस्वरूप भ्रूण में जीवन के प्रति भय उत्पन्न हो गया है अनछुए ही रह जायेंगे।

ये हैं कुछ समस्याएँ, जिनके बारे में भावी माता सोच ही नहीं सकती :

—भूख,

—गन्दी बस्तियाँ,

—बीमारियाँ, जिनमें एड्स भी शामिल है,

—युद्ध

—वित्तीय संकट

—सामाजिक उथल-पुथल,

—अपराधीकरण,

—वेश्या व्यवसाय,

—नशीली दवाएँ; उनकी लत एवं माफ़िया

—जातीय दंगे,

—वर्णभेद, रंगभेद,

—पर्यावरण एवं ऊर्जा सम्बन्धी संकट,

—आणविक परीक्षण,

—काले छेद

इत्यादि...इत्यादि...

ये सब मानव निर्मित आपत्तियाँ हैं। पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानव के दुर्भाग्य की सीमायें बढ़ती जाती हैं। हम सभी इसके लिए ज़िम्मेदार हैं। आख़िरकार भविष्य हमको विनाश के कगार पर ले आया है, जो कसांद्रा भ्रूण के माध्यम से अपने बारे में बता रहा है...

मैं फिर से दुहराता हूँ कि कसांद्रा भ्रूणों के संकेतों को उजागर करने सम्बन्धी मेरे अन्तरिक्ष अन्वेषणों का उद्देश्य लोगों को सिर्फ़ यह समझाना है कि—जीवन के इस तौर-तरीक़े पर नियन्त्रण लगाना होगा, आगे ख़तरा है पतन का। सिर्फ़ हर व्यक्ति द्वारा, समाज द्वारा, समूची मानव जाति द्वारा दुर्भाग्य और पापों को जड़ से मिटा देने पर ही जीवन की सम्भावना पुनर्जीवित हो सकेगी। आदर्श समाज की कल्पना? फिर युटोपिया समाज? नहीं, यह कोई नया युटोपिया नहीं है। यह ह्रास के कगार पर खड़ी आत्मा को बचाने की राह है, अन्य कोई राह नहीं है।

मुझे विश्वास है कि ऐसे बहादुर व्यक्ति ज़रूर होंगे जो पीछे नहीं हटेंगे, कसांद्रा भ्रूणों से तत्काल पीछा नहीं छुड़ायेंगे : इन वीरों को ये घातक संकेत बहुत कुछ बतायेंगे। ज़िम्मेदारियों के बारे में—हर व्यक्ति की और सभी व्यक्तियों की—जीवन जीने के तरीक़े के प्रति, आगामी पीढ़ियों के प्रति; मानव के स्वयं से अवश्यम्भावी अकल्पनीय संघर्ष के बारे में...ऐसे लोगों को बेहतर जीवन प्राप्त होगा।

मुझे इस बात का पूरा विश्वास है।

और अब अपने बारे में संक्षेप में

ज़ाहिर है कि मेरे केश कटवाकर मुझे किसी ने पादरी नहीं बनाया, मैं स्वयं अपने आपको इस नाम से बुलाता हूँ, सांकेतिक अन्तरिक्ष पादरी, अपना नाम भी मैंने सांकेतिक ही चुना है, फ़िलोफ़ेइ, रूस में इस नाम के पादरी हो चुके हैं। मैंने अपने आप ही यह घुमक्कड़ भगोड़ी ज़िन्दगी चुनी है। जब हमारा अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष दल—अमेरिकी, जापानी और मैं (कुछ समय पूर्व तक सोवियत वैज्ञानिक और अन्तरिक्ष अनुसन्धानशाला में वैज्ञानिक निदेशक), अपना कार्यक्रम पूरा करके पृथ्वी पर वापस आनेवाला

था—तो मैंने कक्षा में स्थित अन्तरिक्ष केन्द्र को छोड़कर अन्तरिक्ष यान में आने से इन्कार कर दिया। मैंने इस बारे में घोषणा करके व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की माँग की । गले पर तेज़ धारवाला चाकू रखकर, मैंने अपने साथियों को मुझे अकेला छोड़ देने पर मज़बूर किया। मुझे अपने उद्देश्यों में सफलता मिल गई...।

यह पाँचवाँ महीना, एक सौ सैंतीसवाँ दिन है जब मैं, नितान्त अकेला, पृथ्वी की कक्षा में स्थित अपने परीक्षण कर रहा हूँ। जीवनोपयोगी वस्तुओं का भण्डार मुझे यहाँ काफ़ी लम्बे समय तक जीवित रख सकेगा। और यदि यह सच है कि बुराई-अच्छाई के बिना नहीं रह सकती, तो यह मेरे बारे में भी सच है। सोवियत साम्राज्य के पतन ने, जिसके कारण पूरा विश्व सिहर उठा था, मुझे एक मौक़ा प्रदान कर दिया। उस अराजकता में भूतपूर्व सोवियत अफ़सरों को मेरा और अन्तरिक्ष के 'वोस्खोद-27' का स्मरण न रहा। मुझे डर है, कि उन्हें शीघ्र ही याद आयेगी भी नहीं, उन्हें मेरी ज़रूरत ही नहीं, हो सकता है वे अन्तरिक्ष से सम्बन्धित सम्पत्ति के नये देशों के मध्य बँटवारे के अप्रिय कार्य में काफ़ी समय तक व्यस्त रहेंगे, शायद कक्षा में स्थित केन्द्र का भी बँटवारा करें, जिस पर मैं मौजूद हूँ, और हो सकता है, पूरे अन्तरिक्ष का ही विभाजन कर दें...मगर यह उनका काम है। मैंने अपना मार्ग चुन लिया है और अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूँ। मैं मानव जाति से पूछताछ कर रहा हूँ—कसांद्रा भ्रूणों के संकेतों को सुस्पष्ट करने का प्रयत्न करता रहूँगा—अन्तिम साँस तक...

पृथ्वी पर किसी को मेरा इन्तज़ार नहीं है। दुनिया में मेरा कोई है ही नहीं। मैं स्वयं भी परित्यक्त हूँ, अनाथालय में पला-बढ़ा हूँ। अनाथालय के द्वार पर मुझ नन्हे शिशु को छोड़ने के लिए मेरी माँ को किन्हीं कठिन कारणों ने ही मज़बूर किया होगा। मेरा जीवन कैसा था, मैं अन्तरिक्ष में क्यों आया, अभी नहीं बताऊँगा—यह एक अलग विषय है, अलग कहानी।

परम पवित्र पिता, आपके ओजस्वी मुखमण्डल के सम्मुख एक बार फिर शीश झुकाता हूँ। मुझे ग़लत न समझिये। सिर्फ़ एक ही बात, जो मैं आपके माध्यम से लोगों तक पहुँचाना चाहता हूँ, वह ये है कि—लोग सत्य को समझें।

फ़िलाफ़ेइ, अन्तरिक्ष पादरी
पृथ्वी पर—आन्द्रेइ क्रील्त्सोव

रोम के पोप को अन्तरिक्ष कम्प्यूटर से भेजे गये पत्र के साथ एक परिच्छेद भी था 'ट्रिब्यून' के सम्पादक के नाम :

"आदरणीय सम्पादक महोदय,

हमारे बीच हुए समझौते के अनुसार 'ट्रिब्यून' को इस पत्र के प्रकाशन का एकाधिकार सौंपता हूँ।

मुझे इस बात का भली भाँति ज्ञान है कि इस निर्णय को लेकर 'ट्रिब्यून' एक बड़ी जोखिम उठा रहा है। आपकी बहादुरी की क़द्र करता हूँ।

यदि सम्पादक मण्डल इस पत्र के बारे में दिलचस्प प्रतिक्रियाओं से मुझे अवगत कराये तो मैं आभारी रहूँगा। पृथ्वीवासियों की प्रतिक्रिया जानना मेरे लिए अत्यन्त आवश्यक है।

धन्यवाद सहित।

—फ़िलोफ़ेड, अन्तरिक्ष पादरी,
अन्तरिक्ष केन्द्र PX."

3

उसने फिर से सपने में ह्वेलों को देखा। वह बड़ी देर तक उनके मध्य समुद्र में तैरता रहा। उसने लहरों से धुली उनकी आँखों में देखा और ह्वेल की आँखों का भाव समझ गया। वह स्वयं भी ह्वेल के रूप में ही था और वे एक कोण बनाती हुई तैर रही थीं, वैसे ही जैसे उसने हवाई जहाज़ से देखा था। एक अदृश्य, अज्ञात शक्ति उन्हें आगे की ओर...क्षितिज की ओर आकर्षित कर रही थी, जैसे वहाँ कोई उनकी राह देख रहा हो। क्षितिज दूर हटता रहा और वे तैरती रहीं, अपने शक्तिशाली शरीरों से लहरों को काटती हुई। समुद्र का पानी लगातार गरम होता जा रहा था। लहरों का मार्ग शरीर को मानो जला रहा था। और इन उष्ण लहरों में आगे तैरना कठिन और ख़तरनाक होता जा रहा था। अचानक उसकी दृष्टि ऊपर उठी और वह समझ गया कि सागर इतनी बेचैनी से क्यों उबल रहा है? सागर के ऊपर अचानक दो सूरज प्रकट हो गये थे। दो भूरे-लाल आग के गोले आकाश में अपनी लपटें फेंक रहे थे, मानो प्रोजेक्टरों का एक जोड़ा हो। इनमें से कौन-सा सूरज असली था, शाश्वत था और कौन-सा—कहीं से भटकता हुआ, असली सूरज से स्पर्धा करने, चला आया था, समझना कठिन था। वह भयभीत हो गया और अपने साथ तैरती ह्वेलों से चीख़ते हुए कहने लगा, "देखो, देखो, ह्वेलो, मेरे भाइयो! आकाश में दो सूरज हैं! एकदम दो-दो सूरज! सुन रहे हैं? यह बुरा शकुन है! सागर उबल रहा है, और हम सब मर जायेंगे! दो-दो सूरज—कितने भयानक!"

रॉबर्ट बोर्क उबलते-उफनते समुद्र में निश्चयपूर्वक आगे बढ़ती ह्वेलों के बीच तैरते हुए बड़ी देर तक उत्तेजना से चिल्लाता रहा और गर्म पसीने से तरबतर होकर उसकी आँख खुल गई, दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था, मानो कानों को बहरा कर देगा। बड़ी देर तक वह समझ ही न पाया कि यह सब केवल सपना था। चकाचौंध करती लपटें समुद्र पर फेंकते हुए दो सूरज उसके मनमस्तिष्क पर इस प्रकार छा गये थे मानो उसने उन्हें प्रत्यक्ष

देखा हो। ऐसा नहीं था कि ह्वेलों को उसने पहली बार सपने में देखा था, मगर ऊपर से आग उगलते दो सूरज! असम्भव, असहनीय!...

और तब वह समझ गया कि उसके सपने में दूसरा सूरज कहाँ से आ गया था। वह कुछ उत्तेजित हुआ, सब कुछ स्पष्ट था। उसे आश्चर्य हुआ कि वह पहले क्यों न समझ पाया। "उठना होगा!"—भविष्यवेत्ता मुस्कुराया और उसने आईने के निकट लगी घड़ी की ओर देखा। सुबह के छह बज चुके थे। पत्नी बग़ल के कमरे में अभी भी सो रही थी।

बोर्क खुले बरामदे में निकल आया, जहाँ वह अकसर प्रातःकालीन व्यायाम किया करता था। मगर इस समय उसके विचार कहीं और केन्द्रित थे। और शहर से बाहर स्थित उनके घर के आसपास का वातावरण हमेशा की तरह दिलचस्प नहीं लग रहा था। स्विमिंग पूल के निकट पत्थरों पर बनाया गया उद्यान, जो बड़े चाव से जापानी तरीके से बनाया गया था (विश्वास करना पड़ता था—सितारों की स्थिति के अनुरूप), उसकी बीवी जैस्सी मज़ाक़ में फुसफुसाया करती थी कि वहाँ सुबह भविष्यवेत्ता जादू किया करता था, और उसके अपने मतानुसार वह रेत में जादुई चिह्न बनाया करता था, आज वह इस बारे में भी भूल गया था। पूरे अख़बार देखना शेष था, और आज उनका एक बड़ा ढेर पड़ा था, अनेक व्यक्तियों को टेलीफ़ोन करना था अनेक कारणों से—स्थिति का जायज़ा लेना था।

कसांद्रा भ्रूणों के कारण भय हर जगह व्याप्त था। यह तो होना ही था, रॉबर्ट बोर्क को इसमें ज़रा भी शक नहीं था। उसे अपने भीतर उत्तेजना की, उत्साह की एक लहर महसूस हो रही थी, जैसे ज़वानी के दिनों में उठती थी, जब विश्वविद्यालयों में आधुनिक सभ्यता से सम्बन्धित समस्याओं पर ज़ोरदार बहस हुआ करती थी, तब उन्हें विश्वास था कि मानव के भविष्य को तत्कालीन बुद्धिजीवियों के 'रोमन क्लब' के नमूने पर रचना सम्भव होगा, केवल रूढ़िवादी विरोधियों को विश्वास में लेना होगा। कसांद्रा भ्रूण से सम्बन्धित घटनाओं ने बोर्क को याद दिला दी, उस भूली हुई उमंग की, ख़तरों का सामना करने की ललक की, सिद्धान्तों के लिए खुल्लमखुल्ला विद्रोह करने की चाह की।

घटना-क्रम ने बोर्क को हवाई अड्डे पर ही दबोच लिया। निर्गम के निकट भीड़ में खड़ी जैस्सी ने मोटे से अख़बार को हाथ में लिए उसका स्वागत किया। उसने भेदभरी मुस्कुराहट से, कुछ झेंप, उत्तेजना, ललक के भाव चेहरे पर लिए अख़बार को हाथ में ऊपर उठाकर यूँ हिलाया जैसे वह

गुलदस्ता हो। मगर वह कुछ अधिक जवान नज़र आ रही थी, मानो अचानक आई बौछार ने उसे नहला दिया हो। जैस्सी बोर्क से नौ वर्ष छोटी थी, मगर कभी-कभी परेशान हो जाती थी ब्लड प्रेशर से, और इस कारण बुझी-बुझी प्रतीत होती थी। मगर उस समय, हवाई अड्डे पर, पति को लगा मानो उसमें नवीन ऊर्जा का, गति का, संचार हो गया हो, ऐसी वह अपनी युवावस्था में प्रतीत होती थी। ओह, उन दिनों उसने उसके महान् संगीतज्ञ बनने में कितनी बाधा पहुँचाई थी। वह अच्छा वॉयलिन बजा लेती थी। अगर वह, जाम खनकानेवाला, उससे चिपके रहनेवाला बोर्क न होता तो शायद जैस्सी का कैरियर आर्केस्ट्रा के गढ़े तक सीमित न रहा होता। मगर हर एक का अपना-अपना भाग्य होता है।

हवाई अड्डे पर उससे मिलते ही, उस भीड़-भाड़ में, जो पहला वाक्य उसने कहा वह उससे मिलने की खुशी के साथ-साथ बेचैनी भी प्रकट करता था :

"मालूम नहीं, रॉबर्ट, जाने से पहले तुमने कौन से जादुई चिह्न बनाये थे अपने बेवकूफ़ पत्थरों के बीच, वरना इस सबका मतलब क्या है? किसी हालत में नहीं, किसी भी हालत में नहीं, रॉबर्ट, चाहे सिर फोड़ लो! इसका कोई मतलब नहीं। ऐसा कभी सुना नहीं। विश्वास करो, इससे पूरी दुनिया काँप उठी है!"

"मतलब, मेरे संकेतों का कुछ तो मतलब है?"

भविष्यवेत्ता ने उसी अन्दाज़ में जवाब दिया।

"हाँ, साफ़-साफ़ कहें तो, मेरे प्यारे भविष्यवेत्ता, तुम खेल चुके, खूब खेल चुके हो जादू का खेल...अब इस पहेली को सुलझाओ।"

कार में, जिसे जैस्सी ही चला रही थी, बोर्क ने अख़बार खोला, मगर उसके कॉलम देखकर वापस रख दिया।

"नहीं, इसे घर पर, शान्ति से, ध्यान से पढ़ना होगा।" और उसने चश्मा उतार दिया।

"तुमने ठीक ही सोचा।" समझने के अन्दाज़ में मुस्कुराई जैस्सी–"अगर अन्तरिक्ष के स्थान पर नुक्कड़वाले किसी आदमी ने यह लिखा होता तो उसका सिर ही तोड़ देते! जरा सोचो : भ्रूण, अभी-अभी माँ की कोख में, सोचना भी नहीं जानता! सुझाव दे रहा है। और कह रहा है कि धरती पर जन्म लेना नहीं चाहता। पूरी संजीदगी के साथ! कैसे सम्भव है?"

"शायद, सब कुछ ऐसा ही नहीं है," सोच में डूबे बोर्क ने कन्धे हिलाये। उसे लगा कि पत्नी व्यंग्य से कह रही है, जो उसके लिए नया था और न जाने क्यों उसने चाहा कि उसका अनुमान सत्य न हो। शायद गर्भस्थ भ्रूण की प्रतिक्रियात्मक शक्ति को ध्यान में रखकर कहा गया है। मगर कुछ भी हो, सोचने के लिए बहाना तो है। मान लो, अगर, इस पापी दुनिया के मूल्यांकन एवं नियन्त्रण का कोई पैमाना निकल आये..."जानती हो, मैं अचानक इस दिशा में सोचने लगा हूँ। और यह केवल भ्रूण अवस्था में ही सम्भव है। और वह भी काल्पनिक दशाओं में। अगर ऐसा कहें तो। ख़ैर, अभी इस बारे में बात नहीं करेंगे। घर पहुँचकर मैं पढ़ूँगा फिर बात करेंगे, यदि कोई गम्भीर बात है तो...और अब, मालूम है मैं तुम्हें थोड़ा हँसाऊँगा।"

और भविष्यवेत्ता ने पत्नी को जर्मनों की अतिसतर्कता एवं अतिसिद्धान्तवादिता के साथ-साथ यूरोपवासियों की आन्तरिक आज़ादी के बारे में बताया, जो उन्हें अमेरिकावासियों के निकट लाती थी। एक बार बड़ी सुबह राइन नदी के सुनसान किनारे पर डुसेलडोर्फ में, उसने एक साइकिल सवार को देखा, जो खुली आवाज़ में कोई प्रसिद्ध गीत गा रहा था। साइकिल सवार ने सफ़ेद कॉलर पर टाई बाँध रखी थी, चमचमाते जूते और शेरवानीनुमा कोट, मानो वह अभी-अभी थियेटर से स्टेज पर गाकर आ रहा हो। उस वक़्त नदी के किनारे पर कोई नहीं था, जो उसके गीत की प्रशंसा करता। साइकिल सवार को किसी की ज़रूरत थी भी नहीं। वह अपने आप में मग्न था, साथ में थी पानी से लबालब राइन, जिस पर सुबह-सुबह सामान लदे जहाज़ और स्टीमर चल रहे थे...गर्मियों का सूरज बस उगने ही वाला था। वह सब कुछ इतना अद्‌भुत था, कि उत्तेजनावश बोर्क उस साइकिलवाले गायक के पीछे-पीछे भागने को तैयार था। यह थी पूरी आज़ादी, पूरा सुख। जी चाहा कि राइन में कूद पड़े और तैरते हुए उस गायक से मुलाक़ात करे, जो अन्तहीन किनारे पर चला जा रहा था ; उसका हाथ हिलाकर अभिवादन करे, पानी से चिल्लाकर उसे कुछ खुशनुमा बातें कहे; उसके साथ-साथ दौड़ने को, दुनिया की सब समस्याओं को भूल जाने को जी चाहा।

वे हँस पड़े उस मनमौजी पर।

"अब घर जाना है, घर। अब होगा काम, काम और काम, शैतान के समान।" बोर्क ने अपने आपसे कहा इस कल्पना से खुश होकर कि शीघ्र

ही वह घर पर होगा, अपने अध्ययन कक्ष में, लिखने की मेज़ पर। इस बारे में सोचते हुए हमेशा की तरह दिल में दुहरी भावना जागी—चैन की, राहत की, जो हमेशा ही घर लौटने पर, जैस्सी को हवाई अड्डे पर देखने पर, महसूस होती थी; और साथ ही अपने आपको उलाहना देनेवाली—एक सप्ताह तक घर से दूर रहने के लिए, व्यर्थ गँवाये दिनों के ख़याल से, जिनका मूल्य इन्सान को काफ़ी देर बाद मालूम होता है।

इस बार, इस जानी-पहचानी मनःस्थिति में एक और भावना जागी थी, उस बात के फलस्वरूप जो उसे हवाई जहाज़ में पता चली थी। शायद इस विचित्र घटना द्वारा उत्पन्न सनसनी का भी वही हश्र होना था—फैलना और ख़त्म हो जाना। मगर जैसे-जैसे बोर्क उस बारे में सोचता रहा, उसे अधिकाधिक आश्चर्य होने लगा एक ऐसे अहसास के कारण, जो उससे कह रहा था कि जो कुछ घटा है उससे उसका सम्बन्ध है यह अहसास इतना तीव्र हो गया कि वह इस घटना को, जिसका उससे ज़रा भी लेना-देना नहीं था, भुला नहीं पाया, दिमाग़ से निकाल नहीं पाया। कुछ ऐसी अनुभूति हो रही थी मानो वह संयोगवश न्यायालय में चला गया हो, जहाँ अप्रत्याशित और अभूतपूर्व सज़ा सुनाई गई हो, जिसके अन्तर्गत न केवल अपराधी, बल्कि हॉल में उपस्थिति सभी को सिर्फ़ इसलिए दोषी ठहराया गया, क्योंकि वे मुक़द्दमे के दौरान वहाँ मौजूद थे। और इस फ़ैसले को बदलना सिर्फ़ इसलिए सम्भव था, क्योंकि वह सुनाया जा चुका था...। एक अजीब-सी हालत हो गई उसकी अन्तरिक्ष से आई ख़बर सुनकर, अजीब-सी, अप्रत्याशित, जिसे समझाना असम्भव था। जैस्सी भी, जो स्टीयरिंग ह्वील पर थी, लगता था, इसी ख़बर के प्रभाव में थी। यह उसने उसके चेहरे की ओर, आँखों की ओर देख कर जाना। प्रकृति ने जैस्सी को चमकती हुई आँखें प्रदान की थीं, जिनके बदलते भाव बोर्क को बहुत कुछ बता देते थे। उनकी पहली मुलाक़ात में, जब एक 'चैरिटी शो' में युवा संगीतज्ञों के मध्य बोर्क ने उसे देखा था, और जैस्सी ने उसे देखा, स्टेज के निकट के दर्शकों में जिसके बाद उनकी मुलाक़ातें अकसर होती रहती थीं, उस प्रथम दर्शन से ही वह उसकी आँखों में देखकर 'जीवन की धूप छाँव' पढ़ना सीख गया था और उसके दिल का भेद भी जान गया था। उसे भी बोर्क के बारे में सब पता था। और उनकी यह विशेषता, आधे शब्द से, आधी चितवन से एक-दूसरे को समझ लेना, उनके पारिवारिक जीवन के सुख एवं सहमति का मूलमन्त्र बन गई।

उसने सोचा कि पत्नी का ध्यान अपनी बकवास से नहीं बँटायेगा। वह ख़ामोश, एकाग्रता से कुछ सोच रही थी, जो अजीब बात थी। उसकी परेशानी का कोई ख़ास कारण नज़र नहीं आ रहा था। उनके जीवन की डोर, जैसा कि उम्र के इस मोड़ पर आम तौर से होता है, मजबूती से एक-दूसरे से बँधी हुई थी, सिर्फ़ एक ही बात जिस पर उनका बस नहीं था—वह थी, ईश्वर की इच्छा, जिसने हरेक व्यक्ति को एक विशेष समय, विशेष आयु प्रदान की है। अभी तो वे अपनी-अपनी योग्यताओं का पूरा-पूरा विनियोग कर रहे थे, जब तक समय और स्वास्थ्य का 'कोटा' पूरा नहीं हो जाता। और बोर्क समझ रहा था : अगर जैस्सी अपने आपमें नहीं है, तो इसका कारण यह है कि वह अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेइ द्वारा भेजे गये सन्देश से काफ़ी विचलित है।

"घर पर बात करेंगे," रॉबर्ट बोर्क ने सोचा। "क्या रास्ते में विश्वविद्यालय के किसी मित्र से फ़ोन पर बतियाऊँ?" और वह टेलीफ़ोन उठाने ही वाला था, मगर रुक गया। "अभी नहीं, पहले ध्यान से इस अन्तरिक्ष के भविष्यवेत्ता का सन्देश पढ़ लूँ, तभी..."

"रेडियो लगाऊँ?" पति के विचारों को ताड़ते हुए जैस्सी ने पूछा।

"नहीं। मुझे उस शोर मचानेवाले रेडियो की क्या ज़रूरत है? तुम्हारे साथ मैं वैसे ही खुश हूँ।"

"मैं विश्वास करती हूँ, पूरी संजीदगी से," उदासी भरी मुस्कुराहट से जैस्सी ने जवाब दिया और सफ़ाई से आगेवाली कार को 'ओवरटेक' किया।

और यदि, जो वहाँ से भेजा गया है, बोर्क ने आँखें ऊपर उठाईं—सचमुच में सही है, तो उससे कोई भी अछूता न रह सकेगा।

"कहीं तुम यह तो नहीं सोच रहे, कि 'वैसा' वास्तव में सम्भव है?"

"मालूम नहीं। मगर यदि ऐसा है तो इसकी बड़ी प्रलयंकारी प्रतिक्रिया होगी।"

"जिस जुबान से यह शब्द निकले, उसमें आग लगे, भविष्यवेता!" जैस्सी सचमुच बड़ी परेशान हो गई। "बड़ी भयंकर बात है, जब लोगों की पूरी आबादी पर असर होता है।"

"अगर लोग स्वयं को इस बेरहम दुनिया में देखेंगे, तो आनुवंशिकी जीव विज्ञान के रहस्यों से निकलकर राजनीति में परिवर्तित हो जायेगी।"

"तुम तो हद करते हो रॉबर्ट," उसकी निरन्तर बढ़ती उत्तेजना को शान्त करने का प्रयत्न करते हुए जैस्सी बोली—"मगर कौन जानता है," वह

विश्लेषण करते हुए बोली, "मेरे हवाई अड्डे आने से पहले श्नाएर, आर्थर और एलिज़ाबेथ ने फ़ोन किया था, वे भी बड़े परेशान हैं। और हमारे जॉन कोशूत ने अटलांटा से फ़ोन किया, वहाँ नाटक करने गया है और अचानक उसे याद आया कि फुकुयामा के इतिहास के अन्त के सिद्धान्त पर हुई बहस में तुमने एक नई दुर्घटना, नई यातनाओं की भविष्यवाणी की थी जो मानवता की राह देख रही है।"

"लो," वह बोला, "तुम्हारा भविष्यवेत्ता काँव-काँव कर रहा था, दुनिया की बुराइयों के संग्रह से वह विश्वयुद्ध के बदले मानव के भीतर स्वयं से होनेवाले युद्ध की माँग कर रहा था। जैसे पुराने कपड़ों की गठरी से एक-एक कपड़ा छाँट रहा हो। उसने विषय चुना क्या मानव को जन्म लेना चाहिए? वह कह रहा था अच्छा होता, तुम्हारा भविष्यवेत्ता चुप रहता तो यह दिन देखने को न मिलता। यहाँ तो उसने अन्धी गली का दरवाज़ा खोल दिया है। अन्धी ही है यह गली, अंतहीन।" मैं उससे पूछता हूँ—" 'वह' क्या है?" और वह बोला—"वह वही है। उसका कोई नाम नहीं है।"

"हाँ, जानता हूँ, खूब जानता हूँ कोशूत को," —बोर्क ने व्यंग्य से कंधे उचकाये—"मज़ाक़ कर रहा है, हमेशा की तरह, खुद तो थियेटर में ट्रैजेडी दिखा रहा है, दुनिया को उलट-पुलट कर रहा है : शेक्सपियर, एस्खिल और न जाने कौन-कौन, और मैं, मैं तो कौआ हूँ न, जो बाड़ पर बैठा-बैठा काँव-काँव कर रहा हूँ। धन्यवाद! बहुत अच्छे, मेरे गंजे दोस्त...।"

"ओह, नहीं, ऐसा न कहो, बड़ा प्यारा है वह। याद है, कैसे एक दिन बोला था : मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है, तुम्हारी बीवी भी खूबसूरत है, और सिर के बाल भी ग़ज़ब के हैं। और मेरे पास क्या है? और तुमने कहा था; बीवी तो तुम्हें अभी भी मिल सकती है, मगर बाल, सफ़ेद ही सही, झबरे ही सही,...असंभव।" उसकी आँखों में आँसू तैर गये, जैसे हँसते-हँसते रो रहा हो, गज़ब का कलाकार है!

बोर्क ने सोच में डूबकर जवाब में सिर हिलाया। वह पहली बार घर लौट रहा था आत्मा पर एक अनजान, असहनीय बोझ लिए, जो उस पर न जाने कहाँ से टपक पड़ा था, अदृश्य, अर्थहीन मगर फिर भी अस्तित्व की अनुभूति कराता हुआ।

"बॉब, क्या तुमने सचमुच ह्वेल मछलियों को समुद्र में देखा था?"—जैस्सी ने उसकी विचार शृंखला को भंग करते हुए पूछा।

"तो फिर! इसीलिए तो मैंने तुम्हें फ़ोन किया था,"—फिर से उत्साहित

होते हुए वह बोला। "तुम कल्पना कर सकती हो? शब्दों से बतलाना असम्भव है। समुद्र में, सोचो, चल रहे हैं शक्तिशाली और भव्य प्राणी, जैसे जहाज़, तैर रहे हैं, जैसे आकाश में सारस, त्रिकोण बनाते हुए। क्या दृश्य था! और साथ में तुम नहीं थीं। यह तो अच्छा हुआ कि तुम्हें फ़ोन कर सका।"

बोर्क ने कुछ देर चुप रहने के बाद आगे कहा, "तुम्हें कैसे समझाऊँ, जानती हो, मैं अब सोचता हूँ कि वह सब अनायास ही नहीं था। सुनो! फ्रैंकफ़र्ट में, इस बार, मेरे अन्य परिचितों के अलावा एक नया व्यक्ति भी आया था, ऑस्ट्रेलिया से। मेलबोर्न विश्वविद्यालय से। ऑस्ट्रेलियाई, अन्य सब लोगों से कुछ अलग ही होते हैं, न जाने क्यों, शायद इसलिए कि वे विश्व की कगार पर हैं? या शायद केवल वही व्यक्ति वैसा था? मैंने उसका नाम रखा—डेल्फ़िनवादी—क्योंकि उसे डेल्फ़िन मछलियों में विशेष रुचि है। यह उसका शौक है। वह बड़ा ज़िन्दादिल व्यक्ति है, पैनी बुद्धिवाला, बातें भी बड़ी दिलचस्प करता है। तो, हमारे बीच बात चली, यूँ ही, संयोगवश, ह्वेलों के बारे में, जबकि शुरुआत हुई थी डेल्फ़िनों से। ह्वेलों के बारे में यह बातचीत, तुमको शायद मज़ाक़ लगे, हमें एक दूसरे के निकट ले आई। ओह, इतनी दिलचस्प थी वह बहस। विज्ञान अभी तक इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया है कि ह्वेलों की सामूहिक आत्महत्या का क्या कारण और क्या अर्थ है?"

"यानी, जब वे किनारों पर अपने आपको फेंक देती हैं? तुम्हारा यही मतलब है न?"

"हाँ, बिलकुल यही। आख़िर ऐसा क्या है जो शक्ति एवं बुद्धि से भरपूर ह्वेलों को यूँ ही, अचानक मानो आपस में सलाह करके, रात को किनारे की ओर तैरते हुए जाकर उथले पानी में अपने आपको फेंक देने पर मजबूर करता है, जहाँ पानी केवल घुटनों तक होता है? क्या आत्मघात के लिए? और वहाँ, वापस समुद्र में जाने के प्रयत्न भी न करते हुए ह्वेल मछलियाँ मर जाती हैं। वे ऐसा क्यों करती हैं, किसलिए?"

"रुको," जैस्सी ने उसे रोकते हुए कहा। उसकी आँखों में चमक थी। इस बारे में अख़बारों में कितनी बार लिखा गया है। "और क्या, तुम्हारे उस ऑस्ट्रेलियन को पता है कि ऐसा क्यों होता है?"

"यही तो बात है। हम दोनों किस निष्कर्ष पर पहुँचे, पता है? यह घटना—ह्वेलों द्वारा सामूहिक आत्महत्या—जीवशास्त्र के अपनी प्रजाति को

सुरक्षित रखने के नियम के विपरीत है। यानी प्रकृति के विरुद्ध जानवरों में यह घटना नहीं देखी जाती।"

"मगर मनुष्यों में तो चाहे जितनी देख लो।"

"वह एकदम अलग बात है। बिलकुल भिन्न है। इस बारे में बहस ी नहीं है। वह एक अलग ही दृश्य है जैस्सी।"

रॉबर्ट बोर्क ख़ामोश हो गया, आँखों से जंगल से भागते उस राजमार्ग को तौलते, जिसके किनारों पर परिवहन सम्बन्धी चिह्नों वाले बोर्ड लगे थे, उसे अनेकों बार देखे इस दृश्य पर फिर प्यार आ गया। एक क्षण के लिए उसने अपने आपको बहुत भाग्यशाली महसूस किया—कार चलाती जैस्सी की बगल में घर जाते हुए, ह्वेलों के बारे में इस महान् रहस्योद्‌घाटन के लिए तत्पर, पहले से ही खुश होते हुए, यह सोचकर, कि सुनने के बाद उसकी प्रतिक्रिया क्या होगी, वे अनेक बार इसी विषय पर लौटकर आयेंगे, अनेक कोणों से उस पर बहस करेंगे। यही तो है सुख। वास्तव में सुख—आत्माओं के एक हो जाने में ही तो है। उसका जी चाहा कि घर पहुँचकर दोनों ही बरामदे में बैठे-बैठे जैस्सी द्वारा लगाया हुआ संगीत सुनें, (वह शास्त्रीय संगीत को ही सर्वोत्तम मानती है—उसे सुधारना मुश्किल है) और अपनी प्रिय सफेद शराब घूँट-घूँट पिये...। मगर तभी अन्तरिक्ष पादरी का ख़याल दिमाग़ में तैर गया और उसने सोचा कि आज फ़ुर्सत के क्षण न मिलेंगे।

"चुप क्यों हो गये, बॉब, मैं इन्तज़ार कर रही हूँ। मुझे छेड़ रहे थे?"

"नहीं तो। सिर्फ़ विचारों को सिलसिलेवार रख रहा था। तुम पूछती हो—क्या वह ऑस्ट्रेलियाई किफ्फेर ह्वेलों के आत्मघात के कारण जानता है। तुम्हें कैसे बताऊँ? वह ऐसे कारण बताता है जिनका औरों को ख़याल भी नहीं आता। यह कोई तर्कसंगत बुद्धि द्वारा लिया गया निर्णय नहीं है। मैं तो कहूँगा कि यह विशेष नैतिक-दार्शनिक पूर्वाभास है। हाँ, हाँ। हँसो मत और चौंको भी मत। ऐसा ही है। ऑस्ट्रेलियाई विश्वव्यापी योजना की बात करता है। सभी स्तनधारी प्राणियों में, डोल्फ़िनों के साथ-साथ, ह्वेल मछलियों की बुद्धि अति विकसित होती है। अफ़सोस इस बात का है कि उन्हें बोलना नहीं आता, यही उनके और हमारे बीच की खाई है, जो पाटी नहीं जा सकती।"

"हे भगवान्, तुम्हें भाषण और लेख पढ़ने की आदत हो गई है, रॉबर्ट! मगर मैं ज़रा भी समझ नहीं पा रही कि तुम किस नैतिक-दार्शनिक पूर्वाभास की बात कर रहे हो?"

"कोई भी वैज्ञानिक इस विचित्र घटना को नहीं समझा सका, और किफ्फेर ने अचानक मेरे सम्मुख विश्वव्यापी स्तर की तस्वीर खींच दी।"

"फिर उसकी परिकल्पना का सारांश क्या है?"

"वह एक चौंकानेवाले निष्कर्ष पर पहुँचा है। ह्वेलों की इस सामूहिक आत्महत्या की प्रक्रिया में वह देखता है पृथ्वी की घटनाओं पर विश्व मानस की प्रतिक्रिया।"

"यह तो एकदम काल्पनिक है, रॉबर्ट।"

"ऐसा न कहो, ऐसा न कहो, मेरी जान। मैं इस परिकल्पना में खो गया हूँ। मानव को एक अत्यन्त विशेष वरदान मिला है—बुद्धि का वरदान समूचे ब्रह्माण्ड से सम्बन्ध स्थापित करने का मिशन, और यदि हम आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित नहीं होंगे, यदि सक्रिय रूप से ब्रह्माण्ड पर अधिकार नहीं करेंगे, जिसकी हमसे अपेक्षा की जाती है और जिसके लिए हम इस पृथ्वी पर जन्मे हैं, तो शायद, हम—परजीवी सिद्ध होंगे, जो अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये, यूँ ही बेकार की चीज़—एक सड़ा-गला चीथड़ा सिद्ध होंगे। माफ़ करना, मैं कुछ बहक गया। मैं बस इतना ही कहना चाहता था कि जितना हमें, यानी मानव-जाति को, मिला है, उतनी ही बड़ी ज़िम्मेदारी हम पर लादी गई है। सबसे पहला हमारा उत्तरदायित्व है : सौहार्दपूर्वक रहना, जीवन को परिपूर्ण बनाना, विचार और व्यवहार दोनों में जीवन की सौहार्दता। मगर, इस एक मुद्दे पर कितने महान् एवं निकृष्ट विचार जन्म लेते हैं, कितनी दृष्टता एवं नीचता का हमारे अन्तर में, प्रादुर्भाव होता है, हर क़दम पर, क्योंकि सौहार्द—स्वयं को सीमित करने में आत्मा की भटकन से संघर्ष करने में निहित है। और तब उठता है एक वास्तविक प्रश्न कि अंतःकरण क्या है? जिसका उत्तर अनन्त युगों से, हर कोई अपने-अपने ढंग से ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रहा है, और जब, जैसी उचित जान पड़े परिभाषा दे देता है, तो वह है क्या, प्रकृति के परिप्रेक्ष्य में, इतिहास के परिप्रेक्ष्य में, विश्व के भविष्य के परिप्रेक्ष्य में और ईश्वर के परिप्रेक्ष्य में, जिसने हमारा निर्माण किया और जिसका हम निर्माण करते हैं?"

" 'रॉबर्ट,', पत्नी स्वयं को रोक न पाई, "सचमुच तुम्हारे अन्दर किसी जोशीले मत प्रवर्तक का प्रवेश हो गया है। तुम्हें तो मध्य युग में होना चाहिए था। मगर तब, यह सम्भव था कि तुम्हारी इस बकवास के लिए जिज्ञासुजन तुम्हें ज़िन्दा जला देते। भगवान् का निर्माण कैसे होता है?"

"ओह, यह हुई न बात! तुम भी, जैस्सी, कट्टर रूढ़िवादियों जैसी बातें कर रही हो। यह कैसे सम्भव है? कैसे सम्भव है? मुझे ज़िन्दा जलाना सम्भव न होता। निर्माण होगा शब्द से। हाँ, हाँ इसीलिए तो हमें उस सर्वशक्तिमान ने शब्द का वरदान दिया है।और, वह सब जो हाथों द्वारा निर्मित है—अंत में शब्द की ही निष्पत्ति है। नदी पर पुल—आरम्भ में शब्दों द्वारा ही बनता है। मैं और भी बड़ी बात कहूँगा, शब्द हमारे भीतर निहित चिरंतन की सम्भावना है, सामर्थ्य है। हम मर जाते हैं, मगर शब्द रह जाते हैं। इसीलिए वह ईश्वर है। भटकते रहते हैं हम शब्दों में—कभी पंख लगाकर अनन्त में उड़ते हैं कभी शब्दों की लगाम हमें इधर-उधर हिलने नहीं देती, टट्टू की तरह...। मगर मैं तो कुछ और ही कह रहा हूँ। जीवन के एकदम विपरीत पहलू के बारे में—शब्द की अस्तित्वहीनता के बारे में। और यह है—समूची प्रकृति। उदाहरण के लिए वे ही ह्वेल मछलियाँ, इस दृष्टि से अभागी जीव हैं। शब्द के वरदान से वंचित, उन्हें मिली है एक अद्वितीय पूर्वाभास की शक्ति, एक विशेष शक्ति, वैचारिक एवं आत्मिक स्तर पर, पूर्वसूचना ग्रहण करने की सामर्थ्य। इस बारे में, उनके छोटे भाई जैसी, डोल्फ़िनों को देखकर आश्वस्त हुआ जा सकता है।"

"फिर भी, रॉबर्ट, तुमने क्या खोज की है?"

रॉबर्ट बोर्क आगे कुछ कहने से पहले कुछ रुका। जो वह कहने जा रहा था, वह उसके लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था। उसने सोचा कि हर बार हवाई अड्डे पर जाते समय या वहाँ से लौटते वक़्त ही उन ख़ास, दैनन्दिन जीवन से अलग, विषयों पर बातें करने को उसका दिल चाहता है, जिनके बारे में घर पर आसानी से नहीं बताया जा सकता।

"समझ रही हो,"—उसने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "केप्फिर का मत है, मुझे भी वह तर्कसंगत प्रतीत होता है, कि ह्वेल मछलियाँ खुले समुद्रों में 'राडार' के समान हैं, वे अन्तरिक्ष से प्राप्त संकेतों को ग्रहण करती हैं, शायद सबसे पहले उन्हें, ह्वेलों को ही, ज्वालामुखी के होनेवाले विस्फोटों का ज्ञान होता है, और वे पृथ्वी के गर्भ में हो रही इस भयंकर हलचल के फलस्वरूप मौन चीत्कार करती हैं, मगर जो सर्वाधिक दुर्भाग्य की बात उन भयानक समुद्री तूफ़ानों का सामना करनेवाले जीवों के लिए है—जिनका मुक़ाबला जहाज़ भी नहीं कर सकते, वह है वह स्थिति, जब उन तक मानव द्वारा किये गये पाप-कर्मों के, विनाशकारी कृत्यों के संकेत पहुँचते हैं, जिनसे विश्व के चिन्तन में असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। शायद यही

उनके लिए सर्वाधिक पीड़ादायक बात है, जैसे आल्प्स पहाड़ों से चलनेवाली गर्म हवा—तुम जानती हो, मैं क्या कह रहा हूँ, इसके बारे में पूरा साहित्य उपलब्ध है।—हवा, जो पहाड़ पर रहनेवालों का मनोबल तोड़ देती है। मगर, ज्वालामुखी का विस्फोट कितना भी भयंकर हो, लावा उगलकर शान्त हो जाता है, बुझ जाता है। मगर लोगों के पाप कर्मों की आँधी कभी शान्त नहीं होती। यही सारांश है। हमारे जीवन में यही व्यवस्था है—भले व्यक्तियों का सदा अकाल रहता है, पापी—बहुतायत से मिलते हैं, अपेक्षाकृत कहीं अधिक। और, कल्पना करो, जब पृथ्वी पर कुछ ऐसी घटना घटती है जिसे रोकना हमारी सामर्थ्य के बाहर है और जिसका औचित्य हम ढूँढ़ने का प्रत्यत्न करते हैं आत्मा के अँधेरे में, मनोबल के हनन में, स्वयं को मारते हुए, आहत करते हुए, दमन करते हुए, धोखा देते हुए, तो ह्वेलें भय और बदहवासी में हम तक तैर कर आती हैं। क्योंकि विश्वचेतना आतंक फैला रही है विनाश का, आत्मघात का, अर्थात् अन्तहीनता के गर्त में जाने का, लुप्त हो जाने का। विश्व का हर मूक प्राणी, चाहे वह कितना ही क्षुद्र क्यों न हो, भयभीत हो जाता है। जीवित प्राणी इसके पूर्वाभास से डर जाते हैं। क्या कारण है कि डूबते हुए जहाज़ से सबसे पहले चूहे भागते हैं? सिर्फ़ इसीलिए। वाक्‌शक्ति से वंचित ह्वेलें बता नहीं सकतीं कि हमारे कारण उन्हें कितना दुःख उठाना पड़ता है, और यह एहसास अन्दर-ही-अन्दर उनका दम घोंटता है, भीतर से नष्ट कर देता है, एक विकल्प, मुक्ति का रास्ता खोजने की माँग करता है। तुम समझ सकती हो, कि यह कितना पीड़ादायक है। याद है, किसी ने हमें सड़क पर मिली एक गूँगी लड़की के बारे में बताया था? उसके नीच पिता ने उसकी माँ को मार डाला था और वह अभागी, घर से भाग निकली थी, लोगों को बता नहीं सकती थी कि हुआ क्या है, और अपने आपको चलती हुई ट्रामगाड़ी के नीचे झोंक देना चाहती थी। कुछ इसी तरह, सिर्फ़ विश्वव्यापी स्तर पर अवश्य घटता होगा ह्वेलों के साथ। शायद वे बड़ी जीवट से जंगलों में लगी आग से उत्पन्न उत्तेजना का मुक़ाबला करती हैं, पहाड़ी चट्टानों के खिसकने से दहल जाती है, जब पर्वतारोही फिसलकर मर जाते हैं, मगर मानव के व्यवहार, पापकर्मों, पीड़ा देकर आसुरी आनन्द प्राप्त करने की प्रवृत्ति, विश्व चेतना को जीवित रखनेवाले मानव की इन दमनकारी विनाशकारी लालसाओं को बर्दाश्त करना उनकी सामर्थ्य से परे है। क्या हम कभी सोचते हैं कि विश्व चेतना की ज़िम्मेदारी हम पर है, जो चिरन्तनता की कुंजी है? मुझे सन्देह है। कहीं हमारे भीतर, हमारे

जीवन में, कुछ टूट रहा है, हमारी नैतिकता छटपटा रही है, भय और पाप की अदृश्य किरणें इस टूटन से उत्पन्न रिक्त स्थान से निकलकर समूचे विश्व में फैल रही हैं, ब्रह्माण्ड की न्याय्यता का उल्लंघन हो रहा है, मुझे विश्वास है कि ऐसी किसी न्याय्यता का अस्तित्व है, जीवन की सौहार्दता पर कालिख पुत रही है, और तब ह्लेलें सह नहीं पातीं और छिटककर किनारे की ओर तैरने लगती हैं, फट से बाहर छलाँग लगाकर अपने आपको मृत्यु के मुख में झोंक देती हैं, आत्महत्या कर लेती हैं। और, कल्पना करो, अभी-अभी मैं अटलांटिक पर उड़ रहा हूँ और देखता हूँ, जब हवाई जहाज मुड़ रहा था—ह्लेलो का बड़ा झुण्ड! मैं मूक हो गया, जब मैंने देखा कि वे लहरों के मध्य सारस पक्षियों के समान त्रिकोण बनाती हुई तैर रही हैं, मेरी साँस रुकने लगी, और न जाने क्यों, तभी मैंने सोचा, कहाँ जा रही हैं वे, कौन-सी शक्ति उन्हें खदेड़ रही है, किस गन्तव्य तक, क्यों?"

"अब मैं समझी कि तुमने मुझे अचानक हवाई जहाज़ से फ़ोन क्यों किया। मैं सोच नहीं पाई, कैसी ह्लेल मछलियाँ, क्या हो रहा है? बेशक, तुम्हारे मन में हो रही उथल-पुथल के चलते तुम फ़ोन कैसे न करते?"

"अच्छा, अच्छा,"—पत्नी मुस्कुराई;—"मेरे प्यारे, प्यारे भविष्यवेत्ता!" उसने कुछ उलाहने से उसकी ओर देखा।" तुम्हारे साथ ऐसा होता है। मगर है यह बात दिलचस्प, बड़ी ही दिलचस्प! और शायद यही उनका अपना तरीक़ा हो विरोध प्रकट करने का? क्या पता! ओह, रॉबर्ट हमें मुड़ना है, देखो—पेट्रोल ख़तम हो चला। जब तक हम चलते रहे और ह्लेलों के ख़यालों को समझने की कोशिश करते रहे..."

"सोचता हूँ कि मेरा विश्लेषण यूँ नहीं है।"

वे पेट्रोल पम्प की ओर मुड़े और सब कुछ रोज़मर्रा के जीवन में वापस आ गया, वे भूल गये अन्तरिक्ष पादरी, और ह्लेल और सभी गूढ़, निरपेक्ष बातें। फिर वे बस्ती की सड़कों पर आ गये, घर नज़दीक आ गया था।

अचानक भारी थकान महसूस करके बोर्क ने कहा, "जैस्सी, आज टेलीफ़ोन का जवाब नहीं देंगे। ऑटोमेटिक मेसेज़ रिसीवर लगा देना। थक गया हूँ। आराम करना होगा।"

"एक टेलीफ़ोनवाले को तो मैंने पहले ही इजाज़त दे दी है। माफ़ करना, मगर आज शाम को ऑलिवर ओर्ड्राक तुम्हें फ़ोन करनेवाला है। मैंने

उससे कहा कि तुम आज वापस आ रहे हो, वरना वह तो तुम्हें यूरोप फ़ोन करनेवाला था।"

"ऑलिवर ओर्डाक?" उसने पूछा।

"हाँ। वह राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार है। तुम्हें मालूम है?"

"हाँ, मालूम तो है। वे सभी अभी पहले राउण्ड में हैं। मगर उससे बचना मुश्किल है। बड़ा ज़िद्दी आदमी है। जान निकल जाने तक बात करेगा?"

"अच्छा, माफ़ करो, बॉब। मैं मना न कर सकी।"

"करेगा तो करने दो। भगवान् मालिक है।"

ऑलिवर ओर्डाक! काफ़ी दिनों से उससे बातें नहीं हुई हैं। याद है, वह उपराज्यपाल था—विज्ञान, प्रदेश के शिक्षा और जनसंख्या विभाग सँभालता था। हमें अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गोष्ठियों के आयोजनों में मदद दी थी। हम साथ ही गये थे मास्को, याद है, गोर्बाचोव के 'पेरेस्त्रोयका' के आरम्भिक वर्षों में। तब वहाँ पूरे विश्व से आमन्त्रित किया था राजनीतिविदों एवं भविष्यविदों को। ओर्डाक अपने राज्य के प्रतिनिधि राजनीतिविद् के रूप में गया था। हाँ, पेरेस्त्रोयका, पेरेस्त्रोयका! हम सभी काफ़ी सक्रिय थे, बात हो रही थी कभी पूरब की, तो कभी पश्चिम की। क्या कहने। रोमाण्टिक ज़माना! वह मुझसे छोटा है, हालाँकि उमर उसकी भी काफ़ी है।

"छप्पन"—जैस्सी ने जोड़ा, "अख़बारों में ऐसा ही लिखते हैं छप्पन वर्षीय ऑलिवर ओर्डाक।"

"हाँ, ठीक है। मैं भी ऐसा ही सोच रहा था। बड़ा आदमी हो गया है हमारा ऑलिवर ओर्डाक। वह भाग्य आज़माने चला है। ओह, सत्ता का जादू। और अगर चुन लिया गया तो?...चुनावी भीड़, खुले समुद्र के समान है, लहरों के समान उठती है और देखते-देखते किनारे तक ले जाती है। यदि समाज में ज्वार ला सकें। भावनाओं को समझना चाहिए। ओर्डाक इस काम में पूरी तरह माहिर है! आदमी चालाक है, ज्ञान ज़्यादा नहीं है, मगर बेवकूफ़ भी नहीं है।"

"हाँ, मुझे वह समय याद है। अच्छी तरह याद है। तब, मॉस्को में, जब हम वहाँ थे, सन् 86 में, जब तुमने क्रेमलिन में भाषण दिया था, उस प्राचीन, भव्य हॉल में, 'फ़ोरम' में, गोर्बाचोव ने खुद उसका संचालन किया था। ओर्डाक भी हमारे साथ था। याद है? बोला भी ठीक ही था, विषय के अनुरूप।"

"ठीक ही था। बिलकुल सही है। उसमें ताक़त है, वक्ता का जोश

है। वह मौक़े का फ़ायदा उठानेवाला आदमी है। हाँलाकि, गहरा ज्ञान उसके पास नहीं है। शायद, ऐसे मौक़ों पर ज्ञान की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। जनता के सामने बोलते समय उम्मीदवार के कार्यक्रम की यथार्थता, समयानुकूलता ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है। और हाँ, व्यक्तित्व चुम्बकीय हो!"

"ओह, रॉबर्ट, बस करो, यह हम क्या कर रहे हैं—कभी हेलों के बारे में, और अब ऑलिवर ओर्डाक पर उलझ गये। जैसे हमारे सामने दूसरी कोई समस्याएँ ही नहीं है। जल्दी ही घर पहुँचेंगे। बहुत बातें हो गईं : ओर्डाक, ओर्डाक..."

"यही तो मूलमन्त्र है आधुनिक लोकप्रियता का, जैस्सी। एक ही व्यक्ति के पीछे सभी पागल हो जाते हैं, और मानो वह भी सबके पीछे पागल होने को तैयार है। अमेरीका में तुम और हम भी वैसे ही हैं।"

"समझ गई। मगर ऐसी भी क्या बात है जो वह तुम्हें यूरोप फ़ोन करने चला था? क्या कारण हो सकता है?"

"यहाँ अन्दाज लगानेवाली कोई-कोई बात ही नहीं है। सोचता हूँ, इस अन्तरिक्ष पादरी ने बहुतों को सिरदर्द दे दिया है। मेरे ख़याल में यही कारण हो सकता है। हालाँकि कुछ कहना मुश्किल है।"

"तो उसके लिए तुम्हें ही क्यों? इस अन्तरिक्ष घटना के बारे में तुम भी उसे फ़ोन कर सकते थे। नमस्ते बुढ़ऊ, अन्तरिक्ष से रोम के पोप के नाम भेजे गये पत्र के बारे में क्या राय है? याद है, रूसी लोग, मॉस्को में ऐसे मौक़े पर क्या कहते हैं? 'मालूम है कि यह सवाल किस चीज़ के साथ खाया जाता है?' तुम भी ऐसे ही पूछते इस सनसनी को किसके साथ खाऊँ, प्रिय ओर्डाक? क्यों नहीं?"

"बेशक। और फिर भी तुम कह रही हो कि काफ़ी लोगों ने मुझे फ़ोन किया था? लोगों ने ऐसा क्यों सोच लिया कि उस अन्तरिक्षवाले पागल की हरकत को मैं ही समझा सकूँगा? मुझे जल्दी ही देखना होगा कि यह सब आख़िर है क्या? कहीं यूँ ही आतिशबाजी तो नहीं?"

"अगर आतिशबाज़ी है, तो समझेंगे बेवकूफ़ बन गये, हँस देंगे, भूल जायेंगे।"

"ओह, ऐसा न कहो, जैस्सी। ऐसी आतिशबाजी का नतीज़ा अच्छा नहीं होता।"

"ओह, तुम्हें तो बस बहाना चाहिए। खुशनुमा फ्रांसीसी तुम्हें यूँ ही निराशावादी नहीं कहते। चलो, सब भूल जायें, घर पहुँचने ही वाले हैं।

एक बार के लिए काफ़ी मसाला हो गया—पादरी फ़िलोफ़ेई अन्तिम में, तुम्हारी हेलें समुद्र में और कल मेरी ऑर्केस्ट्रा के साथ गम्भीर रिहर्सल है...हे भगवान्...

"आज मेरा दिल भी चाह रहा है, जैस्सी कि यह शाम ख़ामोशी में तुम्हारे साथ बिताऊँ...लो, हम आ भी गये।"

4

मगर शान्ति से आराम हो ही नहीं सका। सात बजे के बाद टेलीफ़ोन की घण्टी बजी। खनखनाते हुए एक स्त्री स्वर ने इतनी शाम को परेशान करने की माफ़ी माँगते हुए पूछा कि क्या मिस्टर बोर्क राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार, मिस्टर ओर्डाक से बात कर सकेंगे। इसके बाद खुद ओर्डाक बातचीत में शामिल हो गया। शब्दों से खिलवाड़ करनेवाले और स्पष्टवादी ओर्डाक के स्वर में इस बार उत्तेजना स्पष्ट झलक रही थी। दोस्तों की यह बेतकल्लुफ़ी भरी बातचीत लगभग चालीस मिनटों तक चलती रही। रॉबर्ट बोर्क को बहुत-सी ज़रूरी, ग़ैरज़रूरी बातें सुननी पड़ीं, खुद भी बोलना पड़ा। आरम्भ हुआ मज़ाकिया लहज़े से : "हैलो रॉबर्ट, स्वागतम्, सुस्वागतम्। कहना पड़ेगा, कि इस बार मैं तुम्हारा इन्तज़ार इतनी बेसब्री से कर रहा था जितना तुम्हारी अर्धांगिनी के अलावा पूरे अमेरिका में और कोई नहीं कर रहा होगा, मैं तो खुद यूरोप आने के लिए तैयार था, इस उम्मीद में कि तुम मुझे राइन के किनारे फ्रैंकफ़र्ट की सुन्दरियों की भीड़ में कहीं नज़र आ जाओगे।"

"धन्यवाद, ऑलिवर। फ्रैंकफ़र्ट की लड़कियाँ सचमुच बड़ी सुन्दर थीं। मगर मेरा ख़याल है कि तुम सिर्फ़ इसी कारण से नहीं ढूँढ़ रहे थे। क्या कोई गड़बड़ है? बड़े दिन हो गये तुम से मिलकर।"

"ओह हाँ। काफ़ी गड़बड़ है, काफ़ी कुछ हो रहा है, उम्मीद से कहीं अधिक। तुम समझ सकते हो, शैतान ही मुझे इस सब में खींच लाया है। हाँ, शैतान से सम्बन्धित एक चौंकानेवाली घटना मैं तुम्हें सुनाऊँगा, जो कुछ ही दिन पहले मेरे साथ घटी थी—जब तुम यूरोप के दौरे पर थे, मैं चुनाव से पूर्व अनेक लोगों से मिला।"

"जानता हूँ, जानता हूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम इस बात को गम्भीरता से ले रहे हो।"

"बहुत ही अधिक गम्भीरता से। मुझे आर्थिक सहायता देनेवाले काफ़ी प्रभावशाली, गणमान्य व्यक्तियों की मदद से, जो मुझमें काफ़ी दिलचस्पी

दिखा रहे हैं। मगर बात यह नहीं है, ऑर्केस्ट्रा तो जैसा-तैसा है, मगर
तो मुझे अकेले को ही गाना है। इसका मतलब तुम्हें समझाने की ज़रू
नहीं है। कुछ लाभ होगा इससे? यही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। मगर पीछे तो
हटूँगा नहीं। लेकिन अपने हाथ-पैर अब लम्बे नहीं करूँगा। तुम जानते
हो। आम सभाओं में (भीड़ नहीं कहूँगा) 'रेटिंग' अर्जित कर रहा हूँ।
सभाएँ सामूहिक बौद्धिकता का ही रूप है, यह बात मैं ज़ोर देकर हर जग
कहता हूँ, कि मैं सभी स्तरों पर सामूहिक बौद्धिकता की उन्नति के पक्ष
हूँ। मगर तुम्हें अपने दिल की बात बताता हूँ, तुम्हारे लेखों में मैंने क
विभाजित स्वभाव के बारे में पढ़ा है, और मैं समझता हूँ कि जनता की रा
कुछ वैसी ही चीज़ है, जैसे विस्फोट की आशंकावाले क्षेत्र में प्रवेश करना
: उनकी अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य न करोगे, जवाब न दोगे, प्रतिक्रिया
दर्शाओगे, कुछ को सन्तुष्ट करोगे, शेष को—नहीं, और सभी तुमसे
किसी-न-किसी चीज़ की उम्मीद लगाये बैठे हैं, और तुम्हें हर प्रसंग के लिए
तैयार रहना है। मगर मुख्य बात है—जनता को किसी एक समस्या के बारे
अपनी राय सरल शब्दों में बताना। वे—चुनावकर्ता इसी बात का इन्तज़ार
करते हैं—समस्या का हल। हाँ, हाँ, समस्या का हल। हैलो, हैलो, तुम सुन
रहे हो न? माफ़ करना रॉबर्ट, तुम जैसे वैज्ञानिक को यह सब बताने में
मुझे भी अटपटा लग रहा है। मगर अब मेरी किस्मत में यही है। मुझे ऐसा
वर्ताव करना चाहिए कि सड़क चलता आदमी भी मुझे समझ सके।"

"घबराओ मत ऑलिवर! मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूँ।"

"धन्यवाद। मेरे कार्यक्रम की मुख्य बात यह है कि मैं वोटरों के सम्मुख अमेरिकी भविष्य के बारे में ठोस योजना ले जाने की कोशिश कर रहा हूँ, जैसा कि वह विश्व की वर्तमान संकटमय परिस्थिति की पृष्ठभूमि में लग रहा है। संकटमय परिस्थिति में, इस बात पर ज़ोर देता हूँ। और मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि जीवन कब संकटमय नहीं था? हमेशा, हर काल में। और हमेशा किसी-न-किसी को ख़तरा उठाकर लोगों का नेतृत्व करना पड़ा है। इस दृष्टि से संकट एक आवश्यक शर्त है यह सुनिश्चित करने के लिए कि लोग तुम्हारे पीछे-पीछे चलें, तुम्हारा विश्वास करें। भगवान् संविधान और वर्तमान कानून को सलामत रखे, मगर सोचो, अगर विश्व में अमन-चैन ही होता, तो कौन किसकी बात सुनता? संकट न होता तो कौन किसके पीछे चलता? मेरा ऐसा दृष्टिकोण है। इसलिए मेरी मुख्य विचारधारा इसी समस्या से उत्पन्न होती है—भविष्य में सबके लिए और हरेक

व्यक्ति के लिए जीवन कैसा हो। यह सच है कि हर व्यक्ति बेहतरी चाहता है, वह इस बात पर सोचता नहीं है कि यह कैसे हासिल किया जाये, मगर उसे फटाफट स्वर्ग के सुख मिलने की आशा रहती है। तुम इसे मज़ाक़ न समझना, मगर लोग समझते हुए भी अनजान बनते हैं, उन्हें विश्वास दिलाना पड़ता है, बस विश्वास। उन्हें यही चाहिए होता है।"

जब तक ओर्डाक इस विषय पर अपनी पीड़ा का, अपने निष्कर्षों का बखान करता रहा, बोर्क ने बड़ी होशियारी से भाँप लिया कि उसके भाषण में न केवल राष्ट्रपति के पद के उम्मीदवार की जानी-पहचानी चुनावपूर्ण घोषणाएँ हैं, मगर कुछ और भी है, कुछ छिपा हुआ उद्देश्य, जिसकी ओर वह बड़ी सतर्कता से बढ़ रहा है, जैसे कोई जहाज़ी बेड़ा किनारे की ओर बढ़ता है।

ध्यान से विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता था कि ओर्डाक सम्भाषणकर्ता पर अच्छा प्रभाव भी डालना चाहता है और उस ख़तरे के बारे में भी स्पष्ट करना चाहता है, जिसे वह जनता की भलाई एवं लोकतन्त्र के सिद्धान्तों की ख़ातिर मोल लेना चाहता था, और साथ ही शब्दों की बौछार से कुछ और भी समझाना चाहता था, जो उसे परेशान कर रहा था। इसीलिए उसने टेलीफ़ोन किया था, यही समझ में आ रहा था।

बोर्क ने टेलीफ़ोन के दूसरे सिरे पर बैठे ओर्डाक की कल्पना की—पार्टी के मुख्यालय में स्थित अण्डाकार खिड़कियोंवाले विशाल कमरे में, जिसमें पार्टी की स्थानीय शाखा का नेता होने के कारण वह आजकल बैठा करता था। काले चमड़ेवाली ह्वील चेयर में, बड़ी-सी मेज़ के पीछे जिस पर कई टेलीफ़ोन और दफ्तर से जुड़ी सामग्री रखी थी, कुछ पीछे की ओर झुका हुआ, जैसे उड़ने के लिए तैयार कोई पंछी; उड़ती-उड़ती नज़र से पन्द्रहवीं मंज़िल की खिड़की से सामने की ऊँची-ऊँची काँचवाली सीढ़ियों की ओर देखता हुआ। अपनी समस्त मिलनसारिता एवं स्पष्टवादिता के बावजूद ऑलिवर ओर्डाक के बारे में लोगों की भिन्न-भिन्न राय थी—उसके पक्ष में और विरोध में भी; उसकी परले दर्जे की कंजूसी इत्यादि के बखान के बिना उसके बारे में बात हो ही नहीं सकती थी। और यह भी कहते थे कि उसके पास जनवादी राजनीतिज्ञ की कुत्ते के समान सूँघने की शक्ति है। ऐसी बातें किसके बारे में नहीं होतीं? ख़ासकर तब, जब एक आदमी वकील की हैसियत से जीवन आरम्भ करके अचानक बिजली की गति से पूरे समाज का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर ले, दूसरों की ईर्ष्या का पात्र बनते हुए

और निकट परिस्थितियों की आलोचना का विषय बनते हुए, अपना शा
'कैरियर' बना ले।

ओर्डाक आरम्भ में व्यावसायिक संघटनों के क्षेत्र में कार्य करता फिर पर्यावरण सम्बन्धी आन्दोलनों में शामिल हो गया, और धीरे टेलीविज़न के पर्दे और अख़बारों में दिखाई देने लगा। उसकी प्रस्तुति काफ़ी बेहतर होती थीं, वह वर्तमान से सम्बन्धित, यानी उसके अनुसार आदमी से जुड़े प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत करता था। समाज के निचले व की मनोदशा की उसे अचूक पहचान थी, जैसे शिकार को सूँघकर उस पीछे-पीछे भागता हुआ कुत्ता, और इसी वर्ग की शक्ति पर प्रभाव डाल का प्रयत्न करता था, बुद्धिजीवियों की आलोचना के प्रति तटस्थ रहता था इसी तबके पर वह बाज़ी लगाता था। बेशक, सफलता की आशा जगाता आत्मविश्वास देता, व्यक्ति को बदल देता (उसमें परिवर्तन लाता)। ओर्डा के बाह्य रूप में भी जैसे अचानक परिवर्तन हो गया। सफ़ेद-भूरे विचि धब्बे, जिनसे उसका पंछी जैसा चेहरा और मज़बूत गर्दन भरी थी न जा कहाँ ग़ायब हो गये। कुछ ही दिनों पहले तक तो यह आभास होता था कि आँखों के नीचे काले घेरोंवाला, गोयबल्स की याद दिलाता, उसका चेह न जाने क्यों अचानक ऐसा लगने लगा मानो उस पर उबलता शोरबा गि गया हो। उससे जलनेवाले उसके एक डॉक्टर 'दोस्त' ने एक बार कहा थ कि ओर्डाक के चेहरे के धब्बे उसकी उच्च पद पाने की लालसा के, सत्ता की भूख के प्रतीक हैं। अगर भाग्य उस पर मेहरबान न होता तो ऐसे धब्बों से उसका पूरा शरीर, सिर से पैर तक, भर जाता और इन्हें साथ लिए वह अपनी कब्र में सोता रहता। बुरी ज़ुबानें यूँ ज़हर उगलती थीं। मगर समझदार लोगों को ओर्डाक से सहानुभूति थी, क्योंकि ये धब्बे एक बिरले स्नायुरोग 'विटीलिगो' के लक्षण थे। ओर्डाक के चेहरे से इन धब्बों का आश्चर्यजनक रूप से ग़ायब होना उसके अन्तर में हो रहे परिवर्तन का सूचक था, जो उसकी इच्छाओं के, उद्देश्यों की पूर्ति के फलस्वरूप सम्भव हो सका था। मसख़रापन लगता है, मगर ऐसा हुआ ज़रूर कि राजनीतिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ ओर्डाक की त्वचा की बीमारी दूर हो गई। यह बात और है, कि इस बात को लोग भूल चुके थे। अब ऑलिवर ओर्डाक पर्दे पर सामान्य दिखाई देता था, पिछले धब्बों का नामोनिशान तक नहीं था। वह हमेशा चुस्त नज़र आता, काली, चंचल, हमेशा कुछ ढूँढ़ती-सी आँखों में हमेशा मानसिक तनाव का भाव रहता, ओर्डाक यह स्वीकार करता

था कि उसे हमेशा अपने प्रतिद्वन्द्वी को देखने की इच्छा होती है। और तब वह सीधी चाल चलकर उस पर टूट पड़ता है। ओर्डाक एक अच्छा वक्ता भी था : सधी हुई आवाज़, स्पष्ट उच्चारण, उपयुक्त, प्रभावशाली हाव भाव। संक्षेप में, वह सब जो मंच से बोलने के लिए आवश्यक है, भीड़ को सम्मोहित करने के लिए काफ़ी है।

मगर सबसे ज़्यादा बोर्क को ओर्डाक की वह अकल्पनीय विरल विशेषता इतनी चकित करती थी कि विश्वास करना कठिन था। और सचमुच, किसी से भी ज़िक्र करके देखो, कोई विश्वास ही नहीं करेगा और कहेगा कि ऐसा हो ही नहीं सकता। बोर्क को इस बारे में लोगों से सुनकर पता नहीं चलता था, बल्कि उसे स्वयं को इसका अनुभव हुआ था, क्योंकि वे एक ही विश्वविद्यालय के स्नातक थे, हालाँकि अलग-अलग पाठ्यक्रमों के अलग-अलग वर्षों में पढ़ते थे—बोर्क कुछ पहले प्रविष्ट हुआ था, और वह कुछ समय बाद, बोर्क इतिहास विभाग में और ओर्डाक विधि विभाग में। तब से काफ़ी समय गुज़र चुका है, कई दशक, मगर विश्वविद्यालय की रोमाण्टिक बन्धु-भावना उन्हें एक-दूसरे के निकट लाती रही। ओर्डाक की विचित्र विशेषता यह थी कि उसे टेलीफ़ोन पर हुई हर बातचीत का एक एक शब्द याद रहता था, जो उसने जीवन के किसी भी क्षण में की होगी! ख़ासकर टेलीफ़ोन पर हुई बातचीत और सिर्फ़ टेलीफ़ोन पर हुई बातचीत! वह समय और दिन तक अचूक बता देता था उस टेलीफ़ोन वाली बातचीत का जो किसी छोटे-से विषय पर दस-पन्द्रह वर्ष पहले हुई थी, और किसके साथ हुई थी, जैसे कि हवाई अड्डे के पूछताछ विभाग में टेलीफ़ोन किया था, या उसे अचानक 12 अगस्त 1971 को पेट्रोल पम्प से फ़ोन आया था, दिन में तीन बजे। स्मरण शक्ति की ऐसी विशेषता, दिमाग़ में फ़ालतू कचरा जमा होते रहने की वजह कोई समझा नहीं पा रहा था। रॉबर्ट बोर्क इस बात को छिपाता भी नहीं था कि उसे ओर्डाक की इस विचित्र विशेषता पर ईर्ष्या होती है, मगर वह कभी-कभी इससे सिहर उठता था। कभी इस बारे में बड़ी गम्भीरता से विचार करता, कभी उसे हँसी में उड़ा देता और कभी उससे भयभीत हो जाता, आख़िर यह बेहूदी विशेषता इन्सान को मिली क्यों है, किसलिए? क्या यह ईश्वर की ओर से दिया गया इनाम है या नर्क से भेजी गई सज़ा है? किसे मालूम?

इस बारे में रॉबर्ट बोर्क को अचानक ख़याल आ गया, जब वह अपने लँगोटिया यार की लम्बी-लम्बी बातें सुन रहा था। अचानक एक और भी

ख़याल आया : "शायद दस वर्षों बाद, जीवित रहे, तो उसे आज की बातचीत याद रहेगी, और मैं इसके बारे में सब कुछ भूल जाऊँगा, लेकिन अगर किस्मत भी मेरे साथ मज़ाक़ करे, तो शायद मुझे भी सब याद आ जाये...मगर क्यों?..."

अब तक ओर्डाक अपने मुख्य उद्देश्य पर आ चुका था, "हाँ, तो, रॉबर्ट, माफ़ करना कि इस विषय पर मुझे तुमसे दूर से ही विचार-विमर्श करना पड़ रहा है; ऐसी घटना घटी है, जिसके बारे में जानना मेरे लिए बेहद ज़रूरी है, चलते-चलते ही सही। शायद अब तक तुम इस बारे में जान गये होंगे, पूरा देश सुगबुगा रहा है। यह अन्तरिक्ष पादरी, क्या नाम है उसका फ़िलोवेई, शायद? फ़िलोवेई?"

"फ़िलोफ़ेइ"—बोर्क ने सुधारते हुए कहा, "उसका नाम है फ़िलोफ़ेइ। मैंने अभी घण्टे भर पहले उसका सन्देश पढ़ा है।"

"मैं ऐसा ही सोचता था रॉबर्ट। यह कसांद्रा भ्रूणवाली समस्या मेरे सिर पर ईंट की तरह गिरी है। इससे तो अच्छा होता, अगर भूकम्प ही आ जाता। बेहतर होता, यदि...न जाने क्या...! मैं बुरी तरह मुसीबत से घिर गया हूँ, माफ़ करना। ऐसा तो मेरे साथ कभी भी नहीं हुआ था। मैं नहीं जानता था कि रसातल क्या होता है, और अब मैं उसके कगार पर खड़ा हूँ। मैं तो विरोधी को ढूँढ़कर सबके सामने उस पर झपटता हूँ, मगर यहाँ तो समझ में ही नहीं आ रहा कि क्या करूँ, किससे पाला पड़ा है, यदि तलवार लेकर भी दो-दो हाथ करना पड़े, तो किससे? मैं यह कहना चाहता हूँ कि यह अमूर्त है, रहस्यमय है। और, साथ ही उसका सम्बन्ध पूरे समाज से, और हर व्यक्ति से है, हम सब को मानो अचानक किसी ने दबोच लिया हो, शायद सिर्फ़ तुम, और तुम्हारे जैसे अतिविद्वान घबराये नहीं हैं।"

"माफ़ करना ऑलिवर" बोर्क ने उसे टोका, "मेरी भी वही हालत है, जो तुम्हारी है और अन्य सबकी है। मुझे साफ़-साफ़ बताओ कि इस बारे में तुम, ख़ास कर मुझसे ही क्यों बात करना चाहते हो? हम दोनों तो एक ही विश्वविद्यालय में गढ़े गये हैं, मैं तुम्हारी बात सुनने के लिए तो तैयार हूँ, चाहे जितनी भी देर बोलो, मगर फिर भी?"

"मैं कुछ नहीं छिपाऊँगा। यह विचार मेरे दिमाग़ में नहीं आया। सबसे पहला व्यक्ति, जिसने इस बारे में अधिक जानकारी पाने और इस विषय पर सलाह माँगने के लिए तुमसे सम्पर्क करने का प्रस्ताव रखा, वह है मेरा सहायक-एन्थोनी यूंगेर। यह नौजवान, न केवल जोशीला है, उसने काफ़ी

अध्ययन भी कर रखा है और उसे दर्शन शास्त्र में गहरी रुचि है। मैं उसकी क़दर करता हूँ। तो, जब मेरे सभी परामर्शदाता और सहायक विस्फारित नेत्रों से हाथों में 'ट्रिब्यून' लिए भाग रहे थे, बेवकूफ़ों की तरह, तो मैं बुरी तरह घबरा गया। कल मुझे एक विशाल जनसभा में भाषण देना है। तुम समझ सकते हो : प्रजातन्त्र और प्रजा एक ही हैं। और मैं तो हर चीज़ के लिए, हर तरह के सवाल के लिए तैयार हूँ, मगर जब मैंने सोचा कि मुझसे कसांद्रा भ्रूणों के बारे में पूछा जायेगा, तो ऐसा जान पड़ा, मानो नुक्कड़ पर घात लगाये शेर खड़ा है। कौन सोच सकता था कि अचानक अन्तरिक्ष से यूँ बिजली गिरेगी? आगे भी मतदाताओं से अनेक बार मुलाक़ातें करने का कार्यक्रम है। इसीलिए सोच रहा हूँ, कि क्या करूँ? हमारे अमेरिकी मतदाता, तुम तो जानते ही हो, बड़े उत्सुक होते हैं, एकदम बदनाम कर देते हैं। इस बारे में सब जानते हैं, पूरी दुनिया हमारी हरक़तों पर नज़र रखती है और अकसर, हमारी अमेरिकी बेसब्री का मज़ाक़ उड़ाती है। प्रजातन्त्र अपने आप में उद्देश्य है! बस यही! मगर, माफ़ करना, मैं फिर भटक गया। तो, मैं क्या कह रहा था? हाँ, कल, मेरे मतदाता न केवल यह जानना चाहेंगे कि मेरे दाँत सही-सलामत हैं या नहीं, मेरे दन्तचिकित्सक का प्रमाण-पत्र भी देखना चाहेंगे, और इस अन्तरिक्ष पादरी के पत्र के बारे में मेरी राय भी जानना चाहेंगे। मैं उन्हें क्या जवाब दूँ? क्या हाथों को हिलाऊँ—न हाँ, न ना? एक राजनीतिज्ञ के लिए यह शर्म की बात है।"

"तुम्हें विश्वास है कि इस बारे में वे ज़रूर पूछेंगे?"

"शक की कहीं गुंजाइश ही नहीं है। अन्दाज़ लगाने में भी कोई तुक नहीं है।"

"तब एक सुझाव है—फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार को अपनी आत्मचेतना का आक्रोश मान लें, मानो हमें अन्तरिक्ष से भूल सुधारने के बारे में कहा गया हो। मानो अन्तरिक्ष से भेजी गई किरणों द्वारा अन्तर्दृष्टि का नया सूक्ष्म चित्र प्राप्त किया गया हो। यही न?"

"शायद, ऐसा ही हो, मगर मालूम नहीं, अभी मैं ऐसी घोषणाएँ करने की स्थिति में नहीं हूँ। तुमसे बातें करते हुए तो अच्छा लगता है, मगर लोगों को कैसे समझाऊँ कि इसका अर्थ है, भूल-सुधार, जोड़-तोड़, आक्रोश, सूक्ष्म रूप। क्या अन्तर है इनमें? आसमान में बैठा-बैठा वह पादरी किस बात पर विचार कर रहा है—तथाकथित कसांद्रा भ्रूणों के बारे में, उनके जन्म लेने से इन्कार करने के बारे में, यानी उन अनसुनी बातों के बारे में, जो हमारे

अनुभव से परे हैं? हाँ, अगर यह केवल विज्ञान के क्षेत्र तक ही सीमित रहता तो भी दुर्भाग्य आधा ही होता। मगर फ़िलोफ़ेइ तो रोम के पोप से मुख़ातिब है, यानी पूरी मानवता से अपनी बात कह रहा है। हाँ, और स्वयं पोप क्या कहेंगे? क्या वह वाक़ई जवाब देंगे? मुझे न तो पोप से ईर्ष्या हो रही है न अपने आप से। पोप बैठे हैं वेटिकन में, पादरी अन्तरिक्ष में और मैं हूँ भीड़ के सामने!"

"सुनो, सुनो ऑलिवर, पहली बात तो यह है कि तुम अकेले नहीं हो," बोर्क ने परिस्थिति की सटीक व्याख्या करने का प्रत्यन किया, "यहाँ तो सभी...।"

"समझ रहा हूँ, समझ रहा हूँ, मगर, माफ़ करना, मैं अपनी बात पूरी कहूँगा। मैं जानता हूँ कि तुम क्या कहना चाहते हो। यही कि यह समस्या व्यक्तिगत है, कि हर व्यक्ति को केवल खुद ही निर्णय लेना होगा, कि क्या वह बिना किसी आपत्ति के इस आक्रोश को स्वीकार कर लेगा? मगर ऐसा सिर्फ़ पहली नज़र में प्रतीत होता है रॉबर्ट! हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वर्तमान समय सड़कछाप अपीलों का है, भीड़ द्वारा की गई माँगों का है, अपनी मुसीबत सरकारी मशीनरी पर थोपने का है। 'एड्स' का दोष भी सरकार पर थोपा गया है। आज का आदमी ऐसा प्राणी है, जो कोई भी विपरीत बात होने पर सबसे पहले दोष खुद को नहीं बल्कि प्रशासन को देता है। और ऐसे में यह ख़बर टपकी है अन्तरिक्ष पादरी से, कहाँ उसे फेंकूँ किसके माथे मढ़ूँ? क्या किया जाये? यानि इस बात पर विचार करना होगा। मगर इस बार भी कई लोग इसका फ़ायदा उठायेंगे—मैं अपने राजनीतिज्ञों की बात कर रहा हूँ—इस तरह फ़ायदा उठायेंगे कि यह घटना चुनावी रणनीति में उनके लिए लाभप्रद सिद्ध हो। खून की नदियाँ बहानेवाले युद्ध को भी अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। मैं इस बारे में कह रहा हूँ।"

"हाँ दोस्त, आज तुम ख़तरनाक 'मूड' में हो। और मैं तुम्हें समझ सकता हूँ, ऑलिवर! मगर ऐसा न सोचना कि फ़िलोफ़ेइ का पत्र मेरे लिए पहेली नहीं है। मुझे भी मानसिक आघात पहुँचा है। मगर यदि विरोधी फ़िलोफ़ेइ की मान्यताओं को अस्वीकार न कर सके, उनका पर्दाफ़ाश न कर सके, यदि वास्तविकता सचमुच में यही है और यदि वास्तव में कोई अद्‌भुत आविष्कार हुआ जो आत्मा के जन्म, भ्रूण की संवेदनशीलता, और अंशतः जीवन के प्रति भय की भावना के जीव मनोवैज्ञानिक पक्ष से सम्बन्धित है,

तो मैं इसे 'फ़िलोफ़ेइ कॉम्प्लेक्स' का नाम देते हुए कहूँगा कि अब से मनुष्य के जीवन में इसका वही स्थान होगा जो इच्छा और भय का, जन्म और मृत्यु का है।"

"ऐसा भी है? कोई बात नहीं, क्या कह सकते हो! सुधारवादी मार्ग!"—ओर्डाक के स्वर में आश्चर्य एवं निराशा की झलक थी। "तो ऐसी स्थिति में आगे क्या होगा?"

"तुम्हारा अभिप्राय क्या है?"

"मेरा क्या अभिप्राय हो सकता है? ये महान् चीज़ें, जिनके बारे में हम बहस कर रहे हैं, यह एक अलग बात है, मगर मुझे तो कल मतदाताओं के प्रश्नों का ठोस उत्तर देना है, 'फ़िलोफ़ेइ कॉम्प्लेक्स' के बारे में अपनी राय बताना है। इस बारे में कोई ग़लतफ़हमी न हो तो अच्छा है।"

"हाँ, मैं समझ रहा हूँ," बोर्क ने सहमति के स्वर में कहा, "सोचना पड़ेगा...।"

"क्या मैं तुम्हें घण्टेभर बाद दुबारा फ़ोन करूँ? सच रॉबर्ट, मैं अपने आप में नहीं हूँ। मैं तुम्हें हरगिज़ परेशान न करता, मगर यहाँ सिर्फ़ मेरी महत्त्वाकांक्षा—मैं इन्कार नहीं करूँगा कि मैं महत्त्वाकांक्षी हूँ—और मेरे आत्मविश्वास से, जिसके बलबूते पर मैं सभा में खड़ा होऊँगा—कुछ नहीं होने वाला। तुम्हारी बातों से अब मैं यह समझ रहा हूँ कि यह मानव जीवन की एकदम नई परिकल्पना है। और हम, अमेरिकी, तुम तो समझते ही हो, हर बात में अग्रणी होना चाहते हैं और हर चीज़ के बारे में अपनी स्वतन्त्र एवं दूसरों का मार्गदर्शन करनेवाली राय रखना चाहते हैं। और यदि, भगवान् न करे, आज आकाशगंगा से हम पर अन्य ग्रहों के निवासी टपक पड़ें तो कल हमें उनका आलिंगन करती हुई तस्वीरें छापनी पड़ेंगी। वरना हम अमरीकी न कहलायेंगे।"

"हाँ, बिलकुल ठीक कहा, ऐसा ही है," बोर्क मुस्कुराकर आगे बोला, "बेशक, यहाँ सिर्फ़ टेलीफ़ोन पर वार्तालाप से कुछ अधिक की ज़रूरत है, कोई मंच, कम-से-कम कोई विशेष सम्मेलन, सिर्फ़ एक नहीं, और सिर्फ़ अमेरिका में नहीं, बल्कि अन्य अनेक देशों में, घनी आबादीवाले देशों की जैसे रूस, चीन, भारत, जापान आदि की विशेष प्रतिक्रिया होगी। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि फ़िलोफ़ेइ के फेंके इस पत्थर से पानी में कितनी तरंगें उठेंगी। मगर हम अपनी बातचीत की ओर चलें। क्या करना चाहिए, कल का स्वागत कैसे करना चाहिए? ऑलिवर, तुम तो अपने चुनावपूर्ण कार्यक्रम

से सम्बन्धित भाषण ही देनेवाले हो न? फिर? तुम तो मतदाताओं से मिल ही चुके हो, तुम्हारी अपनी प्राथमिकताएँ, अपने निष्कर्ष, प्रभावित करने के अपने तरीक़े हैं, जैसा कि हर उम्मीदवार के साथ होता है। अख़बारों में 'रेटिंग' सम्बन्धी आँकड़े भी छपते रहे हैं। अनुमान, भविष्यवाणियाँ तुम्हारी हालत अच्छी ही है। मैं तुम्हारे प्रतिद्वन्द्वियों को भी जानता हूँ।"

"यही तो बात है। आँकड़े जबर्दस्त हैं, सशक्त हैं। उनके बारे में कभी नहीं भूलना चाहिए, ख़ास तौर से अब, जब इस खेल में ऐसा अप्रत्याशित तत्त्व कूद पड़ा है–"फ़िलोफ़ेइ कॉम्प्लेक्स।"

बोर्क ने उसे सान्त्वना देने की कोशिश की, "मगर मैं सोचता हूँ कि अभी, जब स्थिति का आकलन नहीं किया गया है, इस बारे में कुछ कहना जल्दबाज़ी ही होगी। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार होने के नाते इस समस्या से तुम्हारा सीधा सम्बन्ध नहीं है।"

"तुम सही नहीं हो, रॉबर्ट,"–उसने प्रतिवाद किया।

"यह सच है कि इस पूरी घटना की मुझ पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। मगर मुझे इस बात की चिन्ता है कि इस परिस्थिति का मेरे चुनावपूर्व कार्यकलापों पर तो असर पड़ेगा ही। अब मेरी बात सुनो रॉबर्ट! जहाँ तक मेरा इस बारे में तुमसे मुख़ातिब होने का सवाल है, तो, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, यह मैं अपने युवा सलाहकार एन्थोनी यूंगेर के परामर्श पर कर रहा हूँ, और इससे यह सिद्ध होता है कि आज की नौजवान पीढ़ी तुम्हें भली भाँति जानती है और हृदय की गहराइयों से तुम पर निर्भर करती है। मैंने तुम्हारा बहुत समय लिया है, और मैं यूँ ही ख़्वामख़्वाह फ़ोन नहीं कर रहा, बल्कि इसलिए कर रहा हूँ कि तुम एक जानेमाने भविष्यविद वगैरह हो और हम जैसे व्यावहारिक राजनीतिज्ञ तुम जैसे बुद्धिजीवियों से सलाह न माँगें तो फिर किससे माँगें? मेरे चुनावी प्रतिद्वन्द्वी अनुभवी राजनीतिज्ञ हैं, उनके बीच मैं नौसिखिया हूँ। अभी तो पहला ही 'राउण्ड' हुआ है, और यदि राजनीतिक चालों का पूर्वावलोकन न करूँ, तो मैं चुनाव से बाहर हो जाऊँगा। इस स्थिति में मतदाता किसे प्राथमिकता देंगे? कैसी चाल चलनी होगी, कौन-सी स्थिति अपनानी होगी? सच कहूँ तो मैं 'रूढ़िवादी' नहीं कहलाना चाहता, बिलकुल नहीं, मगर 'क्रान्तिकारी' दूसरा ख़तरनाक छोर है।"

"इस चुनावी दौड़ के पहले ही चरण में मैं किसी क्षुद्र कारण से बाहर नहीं होना चाहता, जैसे, इस अन्तरिक्षवाले क़िस्से की अनभिज्ञता से। यह

अपमानजनक है। लगता था कि मैं हर चीज़ के लिए तैयार हूँ, चुनावपूर्व संघर्ष के सभी विकल्पों पर विचार कर लिया गया है, ओलम्पिक की राह की सभी उलझनों को, कठिनाइयों को ध्यान में रखा है। और अब यह नया तोहफ़ा : अन्तरिक्ष पादरी का सलाम! क्या कहूँ—कि मैं उसके साथ हूँ या उसे अन्तरिक्ष के शैतानों के हवाले कर दूँ? क़सम से कहता हूँ, सपने में भी सोचा न था। मगर मुँह छिपाऊँ तो कहाँ? मैं इस बारे में तुम्हारी राय जानना चाहता हूँ, न केवल उत्सुकतावश, जैसा कि तुम समझ रहे हो, परन्तु आवश्यकतावश। बेकार ही गला सुखाने से कोई लाभ नहीं है। मेरी यही समस्या है।"

"अच्छा, ऑलिवर, शायद मैं सब समझ गया हूँ," रॉबर्ट बोर्क ने ओर्डाक की ताक़त और ज़िद से आश्चर्यचकित होते हुए कहा। (राजनैतिक अस्तित्व के लिए संघर्ष की—कुछ तो कीमत होगी?)

ख़ून मानो मस्तिष्क की ओर भाग रहा था। कान बजने लगे थे, जब बोर्क ने क्षणमात्र के लिए कल्पना की कि विश्व में कैसी भय की लहर दौड़ गई है, लोगों के मानस में इस अन्तरिक्ष पादरी के धूमकेतु के समान अप्रत्याशित आगमन से कैसी दरार पड़ गई है। इसका परिणाम अच्छा निकलेगा या बुरा? और सीधे-सीधे पूछे गये प्रश्न का उत्तर देना था।

"ऑलिवर अगर तुम इस चुनावपूर्ण मुक़ाबले में भाग न भी ले रहे होते"—बोर्क ने यन्त्रवत् सिर हिलाते हुए कहना शुरू किया मानो टेलीफ़ोन की तार के दूसरे छोर पर बैठा सम्भाषणकर्ता उसे देख रहा हो—"तब भी इस परिस्थिति पर विचार-विमर्श तो करना ही था। बात यह नहीं है कि मैं फ़िलोफ़ेइ के सन्देश से प्रभावित हुआ हूँ। दरअसल मैंने अपने अन्तर में सन्देह उठाने की चाहे कितनी ही कोशिश की, मगर मैं उसके निष्कर्षों को नकारने का कोई ठोस कारण न पा सका। उल्टे, उस पर विश्वास करने लगा हूँ।"

"विश्वास?...इस सबका नतीज़ा क्या होगा, रॉबर्ट?"

"वही, जहाँ हम समय के साथ पहुँचे हैं। अब सवाल यह उठता है—क्या हम फ़िलोफ़ेइ की जाँच को परखेंगे या हमारे पास मौजूद तथ्यों की सहायता से उसे ठुकरा देंगे, या फिर यूँ दिखायेंगे कि कोई ख़ास बात नहीं हो रही और फिलोफ़ेइ को इस तरह झटक देंगे जैसे परेशान करनेवाली किसी मक्खी को झटकते हैं। पहला, दूसरा और तीसरा, सभी विकल्प—अभी भी हमारे बस में हैं। हाँ, यदि फ़िलोफ़ेइ द्वारा उठाई गई समस्याओं से मुँह मोड़

लें, तब भी जीवन तो उसी तरह चलता रहेगा जैसे चिरकाल से चलता आ रहा है, मगर तब बात और थी जब हमें कसांद्रा दाग़ का ज्ञान नहीं था, कसांद्रा भ्रूणों की आनुवंशिक त्रासदी का गुमान नहीं था : और अब, बात और है जब हम इसके बारे में जान चुके हैं और उस पर विश्वास कर सकते हैं। क्या करना होगा? उदासीन रहें, ऐसा दिखायें कि हमें अपने आपसे कोई ख़तरा नहीं है, या फिर सत्य की आँखों में आँखें डालकर देखें, महसूस करें विश्व के विनाश की भविष्यवाणी को, कसांद्रा भ्रूणों की आवाज़ सुनें? क्या करें? कल तक मानव को इस बारे में ज़रा भी सन्देह नहीं था, आज वह सबकी जुबान पर है। यानी रोग का निदान हो चुका है। इसके फलस्वरूप मनुष्य अपने आपको अपने भीतर नये सिरे से ढूँढ़ेगा—कौन है वह अपनी वंशावली में, जन्म लेती हुई आत्मा में, पूर्वजों के पाप जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाते हैं उसे कहाँ ले जायेंगे, किस आनुवंशिक अँधेरे में ला छोड़ेंगे। क्या हम स्वयं को उस ख़ौफ़नाक आईने में देख सकेंगे? या फिर आँखें बन्द कर लेंगे और स्वयं को आगे, और आगे, एक कोने में ठेलते रहेंगे? मैंने फ़िलोफ़ेइ के सन्देश को इस तरह समझा है।

"हँ, हाँ"—टेलीफ़ोन के चोंगे में ऑलिवर ओर्डाक की अस्फुट आवाज़ सुनाई दी और वह चुप हो गया।

"मैं समझ रहा हूँ, समझ सकता हूँ कि तुम ख़ामोश क्यों हो गये? मगर मैं अपनी राय तुम पर थोपूँगा नहीं। सुन रहे हो, न?"

"हाँ। मगर फिर भी तुम्हारी राय जानना मेरे लिए ज़रूरी था, रॉबर्ट। और कोई चारा ही नहीं है—मैं जीत भी सकता हूँ या फिर हार भी सकता हूँ, यह इस बात पर निर्भर करता है कि मैं कौन-सा रुख़ अपनाता हूँ। समझ रहे हो? हारना मैं नहीं चाहता। पूछ सकते हो, किसलिए? मैं समझता हूँ, मान लो, मैं हड़ताल करनेवालों के पक्ष में हूँ, या इसके विपरीत रंगभेद की नीति का विरोध करनेवाले प्रदर्शनकारियों की पहली क़तार में हूँ, या फिर, इसके विपरीत, ऐसा करने में मुझे कोई तुक नज़र नहीं आता, वगैरह, वगैरह। मतलब उस स्थिति में तुम्हें मालूम है कि तुम क्यों जल रहे हो, भाड़ में जाये! किसी उद्देश्य के लिए। और यहाँ, किसलिए? अन्तरिक्ष केन्द्र के किसी सिरफिरे की कपोल-कल्पना की ख़ातिर देश के राष्ट्रपति के पद को दाँव पर लगा दूँ? कैसा पागलपन है! और यह भी अभी ही होना था, न पहले, न बाद में! माफ़ करना कि मैं अपने दिल की भड़ास निकाल रहा हूँ।"

"मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूँ, ऑलिवर। मगर मुझे ऐसा जान पड़ता है कि तुम फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार को बेकार में ही कपोल-कल्पना के रूप में देख रहे हो। ख़ैर, यह तुम्हारी मर्ज़ी है। मुझे डर है कि यह कोरी परिकल्पना न होकर वास्तविकता है। उस हालत में—इस घटना का सम्बन्ध पृथ्वी पर रहनेवाले सभी प्राणियों से है। फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार से सम्बन्धित जो घटनाएँ निकट भविष्य में घटने जा रही हैं उनके सामने कोई हड़ताल, या किसी शहर में कोई प्रदर्शन या ऐसी अनेक राजनैतिक घटनाएँ कुछ भी नहीं हैं। इसलिए हमें ज़िम्मेदारी लेना होगी, यह बताने की, कि किसका, किस चीज़ से क्या सम्बन्ध है?"

वे दोनों चुप हो गये, पल-भर को अपने-अपने ख़यालों में खो गये। फिर शुरुआत ऑलिवर ओर्डाक ने की : "शायद रॉबर्ट, तुम फ़िलोफ़ेइ के विचारों का समर्थन करने का सुझाव देते हो?"

"देखो ऑलिवर, तुम्हें तो केवल राजनैतिक निष्कर्ष निकालने की आदत है। यह समझ में भी आता है। मगर, इस मामले में मैं अपनी व्यक्तिगत कारणों से प्रभावित राय नहीं दूँगा। फ़िलोफ़ेइ के तथ्यों एवं तर्कों को अनदेखा करना मुश्किल है। अन्तरिक्ष पादरी का पत्र यह कहता है कि मानवता को नई अग्निपरीक्षाओं से गुज़रना होगा। इसलिए मेरी बात ठीक से समझो। तुम राजनीतिज्ञ हो, तुम्हारा उद्देश्य समस्या की यथार्थता को पकड़ना है। लोगों की मानसिक स्थिति को भाँपना है। और मैं वैज्ञानिक, भविष्यविद्। तुम्हें मेरी राय जानने में दिलचस्पी थी। अगर मैं तुम्हारे किसी काम आ सका तो मुझे खुशी होगी।"

"बहुत-बहुत धन्यवाद रॉबर्ट! मैं प्रेस पर नज़र रखूँगा। तुम्हें इस सम्बन्ध में अख़बारों और टेलीविज़न पर अपने विचार प्रस्तुत करने होंगे।"

"हे भगवान्, जैस्सी ने ठीक ही अन्दाज़ लगाया था कि अभी मेरे आने की ख़बर संवाददाताओं को नहीं देनी चाहिए।"

"मगर जैस्सी तुम्हें मुझसे, बोर करनेवाले ओर्डाक से, न बचा सकी। मगर नाराज़ न हो। मैंने तो दोस्ती के दम पर यह दुस्साहस किया था। बेशरम तो मैं हूँ ही, बकवास भी अच्छी कर लेता हूँ। मगर, हाँ, मैंने तुमसे शैतान के बारे में बताने का वादा किया था।"

"शैतान के बारे में? हाँ, याद आया। तो, क्या कहते हो शैतान के बारे में?"

"बड़ी दिलचस्प घटना है। तुम सोच सकते हो, मैंने अभी हाल ही

में मतदाताओं से चुनावपूर्व पहली मुलाक़ात की। विशाल हॉल में खचाखच भरे थे। लगभग पाँच हज़ार! मैं परेशान था। अपने कार्यक्रम रूपरेखा उनके सामने रखी। सवालों का सिलसिला शुरू हुआ। क्या-क्या तो नहीं पूछा होगा, अथ से इति तक। सैक्स से लेकर अन्तर्रा सम्बन्धों तक। क्या मैं खेलों में दिलचस्पी लेता हूँ, परिवार कैसा है, क्या-क्या हैं, वगैरह-वगैरह। और अचानक माइक्रोफ़ोन के पास एक हज़ आये और पूछने लगे : मिस्टर ओर्डाक, कृपया बताइये, शैतान के बारे आपका क्या ख़याल है? मैं बौखला गया। हॉल में सन्नाटा छा गया।"

"शैतान के बारे में? किस शैतान की बात चल रही है?"

"आपकी मिस्टर ओर्डाक। आप—शैतान हैं।" "मतलब?" "आप मिस्टर ओर्डाक, जन्म से हंगेरियन हैं। हंगरी भाषा में 'ओर्डाक' का मतलब है 'शैतान'। आपको यह याद रखना चाहिए मिस्टर ओर्डाक!" हॉल हँ से गूँज उठा। मैं तो गर्म पसीने में नहा गया। और यह हज़रत आगे बोले, "माफ़ कीजिए मिस्टर ओर्डाक। मैंने यह बात ख़्वामख़्वाह नहीं कही है। मैं चाहता हूँ कि आप अमेरिका के सबसे लोकप्रिय शैतान बनें।" हॉल में फिर हँसी गूँज उठी।

"तुम्हें कैसा लगा रॉबर्ट?"

"ऐसा तो मैं सोच भी नहीं सकता! मैं यह बात जैस्सी से भी कहूँगा।"

"कहना, ज़रूर कहना। वह भी हँस ले।"

"ओ. के."। ज़रूरत पड़े तो फ़ोन करना।

"बेशक," ओर्डाक ने ज़िन्दादिली से कहा और ऐसा लगा मानो वह विदा लेने जा रहा हो, मगर तभी बातचीत ने एक अप्रत्याशित मोड़ ले लिया।

"सुनो, रॉबर्ट, मेरे बचकाने दिमाग़ में एक अफ़लातूनी ख़याल आया है," ओर्डाक ने चोंगे में खिखियाते हुए कहा, "देखो, फ़र्ज़ करो, अगर मान लो; हाँ हाँ, मान लो कि कुछ ऐसा हो जाये : हमारे रास्ते में अचानक टपक पड़े अन्तरिक्ष पादरी के साथ कैसा सुलूक किया जाये, कोई नहीं जानता, तो अगर इस बारे में तुम हमारी टीम के प्रमुख परामर्शदाता बन जाओ तो, कैसा रहे? बेशक, चुनाव अभियान पूर्ण होने तक। मानधन बढ़िया मिलेगा। मगर यह मुख्य बात नहीं है, भगवान् के लिए, माफ़ करना, मुझे इस बात का जिक्र भी नहीं करना चाहिए था।"

"धन्यवाद ऑलिवर, प्रस्ताव के लिए धन्यवाद"—बोर्क ने जल्दी-जल्दी कहा जिससे यह अनावश्यक विषय आगे न बढ़े। मगर मैं फ़ौरन कहूँगा :

"यहाँ इतना काम पड़ा है, मेरा अपना, कि उसे पूरा करना भी मुश्किल हो रहा है। तुम्हारे साथ भाग-दौड़ करने के लिए नौजवान, फुर्तीले, समझदार लोग होने चाहिए, जो सुबह से शाम तक तुम्हारे निकट ही रहें। यह अभियान है, वोट पाने के लिए दौड़-धूप है। इसके लिए मैं तो बूढ़ा हो चुका हूँ।"

"यह नहीं चलेगा, रॉबर्ट, नहीं चलेगा। तुम अभी इतने बूढ़े नहीं हुए हो, जितना अपने आपको समझ रहे हो। तुम समय से पहले ही अपने आपको बूढ़ा बना रहे हो। मेरा विश्वास करो। यह बात मैं पूरे दिल से कह रहा हूँ। आमीन! अन्तरिक्ष के फ़िलोफ़ेड़ का सामना करने के लिए पृथ्वी पर भी एक फ़िलोफ़ेइ के तौर पर उत्पन्न हो! हाँ?"

"तब, समाचार देते-लेते, सोचते रहेंगे," बोर्क ने उलझन से कहा—"हमें फ़ोन करने से तो कोई नहीं रोकेगा, अगर ज़रूरत पड़ी तो।"

"ओ. के.। तुम ठीक कहते हो। शुभ रात्रि! जैस्सी को मेरी ओर से नमस्ते कहना।"

"अभी वह टेलीविज़न के सामने बैठी है।"

"समझ गया, इस समय सभी अपने-अपने टेलीविज़न के नज़दीक हैं। सभी संवाददाताओं के विचार सुन रहे हैं। मगर कल क्या होगा? हवा का रुख़ किधर होगा? अच्छा, विदा, रॉबर्ट!"

"फिर मिलेंगे!"

5

आख़िरकार टेलीफ़ोन का चोंगा यथास्थान रखकर रॉवर्ट बोर्क ने सि
हिलाया–ओह, कितना चकरा रहा था वह–फ़िलोफ़ेइ के पत्र ने सवके म
पर बोझ डाल दिया है। क्या पृथ्वी पर सदा से चली आ रही समस्याअ
की कोई कमी थी? और अब–यह कसांद्रा भ्रूणों की पहेली, मानो सिर प
ओले पड़ गये हों। विश्वव्यापी उन्माद का विस्फ़ोट होगा। कितने ही जी
नष्ट हो जायेंगे। वह घड़ी आ गई है। बचना मुश्किल है, भागना असम्भव
है। कुछ अनहोनी होनेवाली है, सिर पर मँडरा रही है, अवश्यम्भावी घटनाओं
के सर्वभक्षी जबड़े से फुत्कार रही है। फ़िलोफ़ेइ के अन्तरिक्षवाले पत्र प
क्रोध की भीषण प्रतिक्रिया जंगल की आग की तरह फैलेगी, जैसे भरे बाज़ार
में किसी का मानहरण किया गया हो, उसकी धार्मिक भावनाओं का अपमान
किया गया हो और पलक झपकते ही अकल्पनीय शोर-शराबा मच गया हो।
उम्मीद तो यही है कि फ़िलोफ़ेइ के विचारों को पूरी ताक़त से दूर ठेला
जायेगा, उनका उपहास किया जाएगा, उन्हें पापी, दूषित, शापित कहा
जायेगा जैसा कि पहले भी, अनन्त काल से होता रहा है उनके साथ जो
नई राह पर चलने का प्रयास करते हैं। नये ईश्वर की ओर ले जानेवाली,
आदर्श जीवन की नई कल्पनाओं की, सत्य के मसीहा तक पहुँचानेवाली
राह। ऐसा सदा से होता रहा है। मगर क्या इस बार भी इतिहास की वही
अन्धी पुनरावृत्ति होगी? और हमेशा की तरह, क्या इस बार बिना कुछ कहे,
बिना कुछ हासिल किये वह अपने आपमें सिमट जायेगा? पीढ़ी-दर-पीढ़ी
बढ़ते जा रहे पापकर्मों के फलस्वरूप, सदियों से संचित बुराई के कारण
जीवन से इन्कार करनेवाले कसांद्रा भ्रूण लुप्त तो नहीं होंगे, हाँ, फ़िलोफ़ेइ
के आविष्कार के परिणामस्वरूप उनके बारे में जो ज्ञान हुआ है, उसने मानव
के दर्दनाक भाग्य की भविष्यवाणी कर दी है, और उसके भाग्य में लिखी
है–विश्व के अन्त की प्रतीक्षा। क्षितिज पर मुक्ति की कोई राह दिखाई नहीं
देती।

इस सबके बारे में सोचते-सोचते रॉबर्ट बोर्क अचानक अपने आपसे पूछ बैठा कि उसके मन में इतनी बेचैनी क्यों है, क्यों अन्तरिक्ष में इतनी दूर स्थित फ़िलोफ़ेड की यह हरकत उसके दिल में घर कर गई है, क्यों वह उसके बारे में इतना परेशान है, क्यों वह कसांद्रा भ्रूणों के सिद्धान्त के प्रवर्तक का हमख़याल और ख़ैरख़्वाह है? इसका क्या मतलब है? सबसे ज़्यादा विस्मित किया बोर्क को इस ख़याल ने कि उसकी अब तक की ज़िन्दगी को, उपलब्धियों को, अनुभव और ज्ञान को मानो अपने वास्तविक उत्तरदायित्व का स्पष्ट ज्ञान हो गया है, जो फ़िलोफ़ेड के आविष्कार से ही सम्बद्ध है। इस अहसास ने उसके अन्दर परेशानी के साथ-साथ एक ऐसी खुशी भी भर दी जिसका अनुभव उसने पहले कभी नहीं किया था, यह था आनन्द अचानक चिरप्रतीक्षित राह पाने का, किसी शिखर समस्या का चिरप्रतीक्षित हल पाने का, जिसके सपने वह जीवन भर देखता रहा था, और इसीलिए अन्तरिक्ष पादरी के आविष्कार को तत्काल प्राथमिकता देते हुए उसका समर्थन करने का, उसकी तरफ़दारी करने का उसने निश्चय कर लिया। उसने अपने लेख पर विचार भी कर लिया। आँखों के सामने शीर्षक तैर गया "क्या कहता है कसांद्रा भ्रूणों का आतंक?"

उसके दिमाग़ में एक ख़याल तैर गया कि जीवन में कभी-कभी ऐसे अजीब क्षण भी आते हैं जब वर्षों से संचित, दिन-प्रतिदिन समृद्ध होते हुए ज्ञान के बारे में अचानक सन्देह होने लगता है। ऐसा अनेक कारणों से होता है—परिवार में आपसी सहमति का वातावरण, अपने वैज्ञानिक क्षेत्र में प्राप्त हुई मान्यता, संक्षेप में वह सब कुछ, जो मनुष्य की रोज़मर्रा की हालत में, उसकी कार्यक्षमता में परिलक्षित होता है और जिसे बिना किसी आडम्बर के बहुत छोटा-सा नाम—'सुख' दिया जाता है। इसे छोटा-सा सुख कहने पर भी वह कम महत्त्वपूर्ण नहीं हो जाता।

रात काफ़ी बीत चुकी थी। थकान की परवाह न करते हुए रॉबर्ट बोर्क ने अपने अध्ययन-कक्ष में जाकर कम्प्यूटर 'ऑन' कर दिया। दिल में इस वक़्त जो ख़याल आया है, उसे गँवाना उचित नहीं था। इस सबको काग़ज़ पर, शब्दों के माध्यम से प्रकट होना ही था।

अध्ययन-कक्ष के खुले दरवाज़े से ड्राइंगरूम में जलती अँगीठी दिखाई दे रही थी। पूरे साल, हर मौसम में जैस्सी अँगीठी जलाये रखती थी। उसे आग का संगीत पसन्द था।

पहले तैरते हुए वाक्यों ने आसानी से जन्म लिया। चमकते परदे पर

पंक्तियाँ विराजमान होने लगीं, एक के बाद एक, मानो खेत में हल चलाने से बनी मिट्टी की सतहें बन रही हों। अध्ययन-कक्ष की बग़लवाली खिड़कियों से शिशिर ऋतु की गहरी रात घना आसमानी रंग बिखेर रही थी। उद्यान में परिचित वृक्षों की धूसर आकृतियाँ नज़र आ रही थीं। चाँद की कोर बादलों से लुकाछिपी खेलती आसमान से झाँक-झाँक जाती।

कार्य की दृष्टि से उपयुक्त उस घड़ी में रॉबर्ट बोर्क के कल्पना चक्षुओं के सम्मुख पूरी पृथ्वी इस तरह प्रकट हुई, मानो वह कम्प्यूटर के परदे के पीछे किसी ऊँचे पर्वत से उस पर विहंगम दृष्टि डाल रहा हो। उस समय बोर्क लिख रहा था मानव की अपने जैसे अन्य मानवों के बीच जीवनयापन करने की कभी न समाप्त होनेवाली समस्या के बारे में, जिससे जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य को जूझना पड़ता है; और जीवन के अर्थ को समझने के प्रयत्न के बारे में मनुष्य जन्म से ही भला, परोपकारी नहीं होता, बिलकुल नहीं, इसके लिए निरन्तर, अविरत आन्तरिक प्रयास की आवश्यकता होती है, और हर बार, हर नये जन्म में, इस प्रयत्न में लीन हो जाना पड़ता है—जिससे अप्राप्य आदर्श की प्राप्ति हो सके। मनुष्य की समस्त ऊर्जा, उसका एक-एक अणु इस दिशा में प्रयत्नशील होने पर ही यह सम्भव होगा। तभी वह होगा—मनुष्य।

मगर, मनुष्य जीवन के बारे में विचार करते हुए रॉबर्ट बोर्क ने इस बात की कल्पना नहीं की कि वही जीवन, जिसका फ़िलोफ़ेइ से प्राप्त सन्देश के परिणामस्वरूप वह विश्लेषण कर रहा था, कितना अगम्य, अदृष्ट, एवं अनपेक्षित घटनाओं से परिपूर्ण है, कितना अंतर्विरोधी है, कितना बेईमान, कितना आकस्मिकताओं से भरपूर है। उसने कल्पना भी नहीं की थी कि उस घड़ी से, जब उसने राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार ऑलिवर ओर्डाक से बातचीत के दौरान पादरी फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार सम्बन्धी अपने विचार प्रकट किये थे, तभी से उसके भाग्य का फ़ैसला हो गया था। इस क्षण से उसका भाग्य ओर्डाक के भाग्य पर निर्भर हो गया था। दूसरी ओर, न जाने कैसे, फ़िलोफ़ेइ के भाग्य से भी जुड़ गया था, जो उस समय अन्तरिक्ष के एकान्त में किसी एक कक्षा में स्थित था, और जिसे बोर्क के बारे में ज़रा भी ज्ञान नहीं था।

मगर चाहे जो भी कारण रहा हो, हुआ वही जिसे होना था। भाग्यों की गाँठ बँध गई थी। इसके बारे में उस चाँदनी रात को किसी को भी पता न था। गाँठ में बँधे हुए किसी को भी...न इसे, न उसे, न ही तीसरे को...मगर भाग्य की गाँठ कसती जा रही थी...

और चाँद घूम रहा था, रात के गर्भ में धरती के ऊपर, अनादिकाल से निर्धारित अपनी राह पर, निर्धारित समय पर। और उस रात गर्भ में स्थापित अनेकों भ्रूण चाँद के गुरुत्वाकर्षण के कारण तत्क्षण जन्म-मृत्यु के अविरत चक्र में फँस गये थे। जीवन की अनश्वरता जाग उठी थी गर्भों में, नये अंकुरों में। उस रात के हर गर्भधारण में, भविष्य के व्यक्तित्वों का निर्णय हो चुका था। और उन सबके सामने, उन नवजीवियों के सम्मुख, खुले थे स्वतन्त्रता के द्वार, जन्म लेने के द्वार। उस रात पैदा हुआ हर भ्रूण आगे चलकर कुछ भी बन सकता था—कसाई, बधिक या बधित या निष्कलंक, अविवाहित संन्यासी या फिर कोई और...। मगर शाश्वतता के नियम के बावजूद, जीवन की पुकार से मुँह मोड़नेवाले, उत्पत्ति का निषेध करनेवाले कसांद्रा भ्रूणों ने भी उस रात अपने आगमन की घोषणा कर दी। गर्भवती महिला के माथे पर चमकते कसांद्रा दाग़ के माध्यम से उन्होंने अपने बारे में घोषणा की, सौतेलापन दिखाने को तत्पर भाग्य को ललकारा, फ़िलोफ़ेइ की अज्ञात किरणों की सहायता से गर्भ के अन्दर से बाह्य जगत् को अपनी मौन प्रार्थना भेजी—यह प्रार्थना कि उन्हें इस जीवन से मुक्ति दी जाये।

तैरती रही ह्वेल मछलियाँ उस रात, दीपस्तम्भ के निकट से होकर सुदूर ढलवाँ किनारे की ओर। चाँद की खिलवाड़ करती रोशनी में चमकता ह्वेलों का यह समूह अँधेरे में निश्चयपूर्वक बिना रुके, आगे बढ़ता जा रहा था। वे कहाँ जा रही थीं? कौन उन्हें अपनी ओर आकर्षित कर रहा था? कौन उन्हें खदेड़ रहा था? और समुद्र के पानी तथा ह्वेलों की आँखों में परावर्तित दीपस्तम्भ उनसे क्या कहना चाह रहा था?

और बैठा था उस रात कम्प्यूटर के सामने भविष्यविद् रॉबर्ट बोर्क, आशा और उत्तेजना के सागर में गोते लगाता। और तैर रहा था वह ह्वेलों के साथ समुद्र में और ह्वेलों को मालूम था कि वह उनके साथ तैर रहा है। और इस तरह वे साथ-साथ तैरते रहे, क्योंकि उसका भाग्य और ह्वेलों का भाग्य आपस में जुड़ता जा रहा था...। वह भी समुद्र में उसी तरह तैर रहा था, जैसे ह्वेलें तैर रही थीं। उफनती लहरों में और उसकी आँखों में भी दीपस्तम्भ का प्रकाश उसी भाँति परावर्तित हो रहा था, जैसे ह्वेलों की आँखों में...

× × ×

मॉस्को समय के अनुसार रात के ठीक तीन बजे, जब विश्वविख्यात क्रेमलिन के घण्टाघर ने चारों दिशाओं को साम्राज्य की महानता की याद दिलाते हुए

तीन घण्टे बजाये, तो स्पास्की बुर्ज़ पर बने घोंसले से एक उल्लू सीधा नीचे की ओर उड़ा। एक छाया की तरह, बिना आवाज़ किये अपने पंख फड़फड़ाते, चुम्बक के समान चमकती, गोल स्थिर आँखों वाला विशाल सिर तेज़ी से इधर-उधर घुमाते वह क्रेमलिन की दीवार के साथ-साथ उड़ता चला गया। वह हर रात इसी तरह ठीक इसी समय उड़ता था, जब स्पास्की बुर्ज़ से निकलकर निर्जन चौक पर, खट-खट करती, परम्परा एवं समारोहपूर्वक ठीक दो सौ दस क़दम गिनती पहरेदारों की जोड़ी लेनिन की समाधि की ओर आती। यह समाधि उसकी, उल्लू की, आँखों के सामने ही बनी, उसने अनेक नौजवान सिपाहियों के शोक को सहा और जिन्होंने समाधि पर पहरा देते-देते अपना जीवन समाप्त किया था, उस समाधि पर जिसकी सुरक्षा हर सेकेण्ड, हर दिन, हर साल, हमेशा की जाती थी।

पूरे चौक की परिक्रमा करके, चाँद की रोशनी में टिमटिमाते ग्रेनाइट की बनी समाधि पर कुछ चक्कर लगाकर, उसने समाधि के पीछे, सरो के पेड़ों के नीचे, ठीक क्रेमलिन की दीवार के नीचे दफ़नाये गये कुछ विशिष्ट सरकारी व्यक्तियों की कब्रों पर भी चक्कर लगाया और देखा कि जिनका उसे इन्तज़ार था वे दो, यहीं रहनेवाले भूत देखने में एक से, एक से मोट-नाटे, एक से सिरोंवाले, आधीरात के बाद प्रकट होनेवाले, शायद इस बार भी नहीं आनेवाले (न जाने कहाँ खो गये, कहीं फिर से तो लड़ नहीं बैठे?) पहरे पर प्रस्तर के समान जड़वत् खड़े पहरेदारों के बीच से होकर उल्लू आगे बढ़ा। उल्लू निराशा से उड़ रहा था, क्योंकि एक से मोटे-नाटे, एक से सिर वाले भूतों की वह अभिन्न जोड़ी, बतियाती, बहस करती लाल चौक पर टहलती, ज़िन्दगी के बारे में बहस करती, फ़तवे देती दिखाई नहीं दे रही थी। उस लोक के इन वासियों को करने को और बचा ही क्या था?

सचमुच, उन्हें बातें करना बहुत अच्छा लगता था, बहस करना इस बारे में, उस बारे में ख़ास तौर से राजनीति के बारे में। और कभी-कभी तो ऐसा भी होता था कि बहस में वे इतना खो जाते कि लफ़ड़े तक की नौबत आ जाती। वे गालियाँ देते, क्रोधित हो जाते। एक दिल पर हाथ रखकर कहता कि वह दूसरे से फिर कभी नहीं मिलेगा, वह उससे घृणा करता है, उस पर शक करता है, उसके निकट खड़ा भी नहीं होना चाहता; दूसरा जवाब देता कि उसके पास और कोई चारा ही नहीं है, अब इतिहास पर उनका कोई बस नहीं है, इसीलिए नहीं कि अब पहलेवाली बात नहीं है, बल्कि इसलिए कि इस तरह तैश में आना बेकार है, मरने के बाद वे

डाल से टूटे हुए पत्तों की तरह हैं, न जाने हवा कहाँ ले जाये, और इसी तरह बहुत कुछ...। भाग्य की इच्छा से इन लड़ाकू, चंचल भूतों को उनके उस लोक के पारदर्शी, अस्थिर रूप में देखना और उनकी बातें सुनना सिर्फ़ उल्लुओं के लिए ही सम्भव था...। अनेक वर्षों से देखते-देखते उल्लुओं को उनकी आदत पड़ गई थी, उनके बिना उन्हें अच्छा नहीं लगता था, लगता जैसे कुछ खो हो गया हो। मगर उन्हें मालूम था कि वह कहीं नहीं जायेंगे, देर-सवेर आ ही जायेंगे। जल्दी ही इस चौक पर बड़ी भारी परेड होगी, जुलूस निकलेगा और उसके बाद रात को वे भूत ज़रूर आयेंगे, उत्तेजित, उन्माद से चमकती आँखों से, जो देखा था उसके नशे में चूर। गरजते ढोल, परेड का संगीत, सैनिकों के धरती को गुँजाते क़दम उन्हें उत्तेजित कर देते, यह सब उन्हें बहुत प्रिय था। और युद्ध सम्बन्धी तकनीक की खड़खड़ाहट, और जुलूस, जुलूस कितना विचलित कर देते हैं—कितने ऽऽऽऽ लोग, कितना ऽऽऽ शोर करते, नारे लगाते, उनकी तस्वीरें लिए, जो इस समय समाधि के ऊपर खड़े हैं। भीड़ गुज़रती जाती है, जैसे मछलियाँ अण्डे देती हैं—सब एक ही दिशा में, सिर से सिर लगाये, "हुर्रे हुर्रे" कहते।

मगर भूतों को दिन के वक़्त प्रकट होना मना है, और उन्हें भी, समय की गति को लाँघकर, अस्तित्वहीनता की स्थिति से, इस क्षण की वास्तविकता में शामिल होने की, समाधि के ऊपर, उत्तेजित भीड़ के प्रवाह के ऊपर खड़े होने की इच्छा नहीं थी...। तब यह सब भी मानो अचानक थम जाता, जम जाता, कैमरे की फ़िल्म पर उतर जाता, हमेशा के लिए मूक दृश्य में बदल जाता, इतिहास की समझ में न आनेवाली मीठी कसक बनकर रह जाता...। क्रेमलिन के ऊपर उड़ते हुए हवाई जहाज़ थम जाते, आकाश में मुक्त विहार करते कबूतरों के झुण्ड हवा में थम जाते, जलती आँखें, चीख़ते चेहरे, समर्पित और अति निर्मल विचार भी थम जाते, मस्तिष्क की परतों में जम जाते...सूरज भी एक ही स्थान पर ठहर जाता...।

और दिन-प्रतिदिन की ज़िन्दगी में, ख़ासकर बरसात के मौसम में, लगातार गिरती बारिश में, बर्फ़ीली हवा में, जब चौक पर हवा से बचने की कोई जगह न होती, जब समाधि पर खड़े पहरेदार गर्म जूते और दस्ताने पहने रहते, कानों को ढाँकती टोपी और हाथ मोजे पहने मुँह से बर्फ़ीली भाप निकालते, जो उनकी कॉलर और बन्दूक़ के हत्थे पर तुरन्त ही सफ़ेद कणों के रूप में जम जाती, एक से नाटे-मोटे, एक समान सिरोंवाले भूत, शायद ख़राब मौसम की वजह से गुस्से में बड़बड़ाने लगते, कोनों में दुबक

जाते, कनखियों से चाँद को देखते, एक-दूसरे की बात का खण्डन करते और तब उल्लू को अक्सर ऐसे उत्तेजनापूर्ण वाक्य सुनाई पड़ते, "मुझे ऐसी बात का यक़ीन दिलाना बन्द करो, जिसका कोई मतलब न हो। मृत्यु के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं है, हो ही नहीं सकता, मृत्यु-सत्य है। और मैं अमर होना नहीं चाहता, मर जाने के बाद, जीवन का विकल्प नहीं चाहता। कितनी देर यह सब चलता रहेगा? मेरे लिए कहीं मुक्ति नहीं है, शान्ति नहीं है, पश्चात्ताप भी नहीं है। पहले तो इस बारे में कभी सोचा नहीं, मगर अब यह बात दिमाग़ से उतरती नहीं—मैं पैदा ही क्यों हुआ, मेरी माँ ने मुझे जन्म ही क्यों दिया? मैं तो नहीं चाहता था, जन्म लेना नहीं चाहता था। और अब मैं हूँ क़ब्र का क़ैदी! और यह तुम्हारे हाथों की करतूत है। यह तुम्हारा बेहद शैतानियत का, भलाई की आड़ में बुराई करनेवाला, अति नीचताभरा ख़याल है। मैं इस तथ्य को कभी मान नहीं सकता, कभी नहीं, याद रखो कभी भी यहीं।"

जवाब में साथी ने अपने बुझ चुके पाइप के कश लेते हुए भर्राई आवाज़ में कहा, "सुनो, मैं तुम्हें कई बार समझा चुका हूँ। यह पार्टी की इच्छा थी। मैं तुम्हें समझा चुका हूँ। पार्टी के लिए यह ज़रूरी था कि तुम उसके सामने रहते, शरीर के माध्यम से अपनी उपस्थिति का अनुभव कराते, समझ रहे हो न, विश्व-क्रान्ति के लिए पार्टी में आस्था की शपथ लेने के लिए पार्टी को तुम्हारी ज़रूरत थी मृत्यु के पश्चात्, मृत्यु के बावजूद। तुम क्रान्ति के सम्राट हो, और तुम्हारी हिफ़ाज़त की जायेगी, तुम्हारी सुरक्षा पहरा लगाकर की जायेगी, तुम्हारा तो शवपेटिका के सामने झुककर अभिवादन करते हैं।"

"नहीं, मैं साफ़-साफ़ कहता हूँ, कि मैं यह नहीं चाहता। मैं इसका ज़ोरदार विरोध करता हूँ। किसी को भी, बिलकुल किसी को भी मृत्यु की उपेक्षा करने का अधिकार नहीं है। यह बकवास है।"

....

एक उड़ता रहा उल्लू उनके ऊपर और उन बातों को सुनकर विस्मित होता रहा, जिनके बारे में वे बहस कर रहे थे, जिसके बारे में दुनिया में कभी कुछ सुनाई भी नहीं देता...

मगर, आज वे नहीं थे, अर्धरात्रि को बहस करनेवाले भूत...चौक ख़ाली था...

उल्लू क्रेमलिन की कंगूरेदार दीवार के ऊपर उठा और अपनी अपलक

दृष्टि चारों ओर डालते हुए आगे, प्रासाद के उद्यान की चौड़ी ख़ाली छतों पर उड़ता रहा। यहाँ शिशिर की घनी टहनियों के मध्य उसने 'ऊ...ऊ... ऊ..." किया और टीले की ऊँचाई से नदी की चमकती पतली धार को, नींद में डूबे घरों की काली छतों को अपलक निहारता रहा। पुल के नीचे कुत्ता रो रहा था। ठण्ड के मारे, शायद...।

उल्लू को लगा मानो वह दूर, कहीं बहुत दूर से, दुनिया के दूसरे छोर से एक आवाज़ सुन रहा है, जैसे अँधेरे सागर में ह्वेल मछलियाँ तैर रही हों, एक झुण्ड में, अपने पर्वत समान शरीरों से उफनती लहरों को काटती आगे बढ़ रही हों। ह्वेलों के आसपास का पानी उफन रहा था, गरज रहा था। पानी उनकी गति का विरोध कर रहा था, मगर वे तैरती ही जा रही थीं, न जाने किस ओर। ज्वालामुखी के समान तप्त उनकी साँसों से उत्तेजना की गन्ध फैल रही थी।

क्रेमलिन के निकट के टीले पर उल्लू ने महसूस किया–धरती पर कुछ-न-कुछ होनेवाला है। हमेशा ऐसा ही हुआ है कि दुनिया पर भयानक आपत्ति आने से पहले ह्वेलों पर उन्माद छा जाता है।

क्रेमलिन के उद्यान में, पीड़ा से उल्लू चीख़ा, और सवेरा निकट सरक आया...

× × ×

जो कुछ दूसरे दिन हुआ, वह रॉबर्ट बोर्क के लिए अप्रत्याशित नहीं था, उसे ऐसे घटनाक्रम की पूर्वकल्पना कर लेनी चाहिए थी। मगर, फिर भी, ऐसे नाटकीय, सनसनीखेज़ मोड़ की उसने कल्पना नहीं की थी...

सुबह, जब वह विश्वविद्यालय में लेक्चर देने जा रहा था, उसकी तबीयत ठीक थी। मगर बाद में...

दोपहर बाद बोर्क घर वापस लौटा। कार के स्टीयरिंग ह्वील पर बड़ी कठिनाई से क़ाबू रखते हुए लौटा। जी चाह रहा था कि जल्दी-से-जल्दी घर पहुँच जाये, जैस्सी से माँगे रक्तचाप नापने का यन्त्र,...क्या कहते हैं उसे...वह कभी-कभी अपना रक्तचाप नापती थी, और साथ ही उसका भी। अकसर उसकी तबीयत ठीक-ठाक ही रहती थी, शिकायत की फ़िलहाल कोई गुंजाइश नहीं थी, वह मुस्कुराते हुए उसे रक्तचाप नापने की इज़ाज़त दे देता, बीवी की ज़िद के आगे झुक जाता। मगर इस समय वह स्वयं इत्मीनान कर लेना चाहता था कि सब कुछ ठीक है। वह बैचेन था। एक विचित्र, चारों ओर की दुनिया के असन्तुलन के अप्रत्यक्ष अहसास ने उसे

दबोच लिया था। मानो जीवन में कुछ परिवर्तन आ गया हो, वह अपना सन्तुलन खो बैठा हो, जैसे हवा के थपेड़े उसे झकझोर रहे हों, अपने वर्षों से परिचित लोगों की आँखों और आवाज़ों में भी जैसे कुछ बदल गया हो, या शायद उसके भीतर ही कुछ हो गया हो?

राजमार्ग भी, जो तीव्रगति के वाहनों के लिए सभी छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर बनाया गया था, उसे अजनबी प्रतीत हुआ। वह डरते-डरते कार चला रहा था। सब कुछ बदला-बदला लग रहा था, वैसा नहीं, जैसा पहले था...सब कुछ अपने ही स्थान पर था, मगर हर चीज़ अपना पहलेवाला मतलब खो चुकी थी...अपने आपको समझाना मुश्किल था कि इस सबका मतलब क्या है...।

जैस्सी की कार घर के सामने ही खड़ी थी। दिल को राहत महसूस हुई। शायद बीवी अभी रिहर्सल के लिए निकली नहीं है।

"कहो, क्या हाल है?" जैस्सी ने उठकर उसका स्वागत करते हुए पूछा। वह हमेशा की तरह मुस्कुरा रही थी—क्या कुछ और हुआ है? तुम कुछ अलग से लग रहे हो—जैस्सी ने ध्यान से पति के चेहरे की ओर देखा और उसकी शरारत भरी मुस्कुराहट का स्थान अनचाहे ही गम्भीरता ने ले लिया—तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?

"हाँ, वैसे ठीक ही है, जैस्सी, तुम सोच भी नहीं सकती, लोग पागल हो गये हैं।" बोर्क ने बैग सोफ़े पर फेंककर कोट उतारते हुए कहना आरम्भ किया।

"कॉफ़ी पिओगे?"

"हाँ, पिऊँगा। कोई टेलीफ़ोन तो नहीं आया?"

"आया था। कई-कई बार... उनके बारे में बाद में। पहले यह बताओ कि शहर में हो क्या रहा है?"

"क्या हो रहा है? वही, जिसका ख़तरा था। भय था। सबके होठों पर बस फ़िलोफ़ेइ का ही नाम है। यही हो रहा है। मैं अख़बारों, रेडियो और टेलीविज़न की बात नहीं कर रहा। वहाँ काफ़ी गहमागहमी है, घटनाओं का सिर-पैर ढूँढ़ने की कोशिश हो रही है।"

"हाँ, वे फ़ोन कर चुके हैं, सी. एन.एन., वॉयस ऑफ अमेरिका, रेडियो 'लिबर्टी'। मैंने कह दिया कि तुम शाम को देर से लौटोगे। हाँ, तुम आगे बताओ।"

"विश्वविद्यालय में क़दम रखना मुश्किल है, सभी बेहद परेशान हैं।

चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही हैं। सब बस एक ही बात की चर्चा कर रहे हैं। और, शायद, यह बड़ी भयानक बात है, जब सब लोग उस एक ही बात में उलझे हुए हैं जो अक्षरशः सबको एक साथ उद्विग्न किये हुए हो। उन्मादयुक्त विचार सब पर हावी है। अब मैं समझ रहा हूँ कि हिटलर सभाओं में क्या करता था, कैसी उन्माद की लहर उत्पन्न कर सकता था।"

"शायद, तुम ठीक कहते हो। मगर तुम चाहते क्या हो रॉबर्ट, ये तो विद्यार्थी हैं। जवान, जोशीले, निडरता से सराबोर। और वहाँ है–फ़िलोफ़ेइ।

"हाँ, सही है। मुझे याद है कि कैनेडी की हत्यावाले दिन यही आलम था। आज भी वहशियत से भरे वैचारिक मतभेद, भगदड़, बदहवासी थी। कुछ लोग, उदाहरण के लिए कहते हैं कि फ़िलोफ़ेइ ने प्रकृति के रहस्य में पैठने की धृष्टता की है, मगर तभी अपने आपको ही झुठलाते हुए पूछते हैं कि क्या ऐसे कोई रहस्य हैं भी, जिन तक पहुँचना निषिद्ध है? दूसरे कहते हैं अफ़सोस किस बात का है, उस अन्तरिक्ष पादरी को कक्षा में ही नैतिकता की बातें करने दो, हमें कोई फिकर नहीं। मगर सोचो, माथे पर कोई फुंसी है। जवाब में कहते हैं, फ़िकर इसलिए नहीं है कि तुम आदमी हो, और वह औरत क्या करे जो यह जान चुकी है कि उसकी आनेवाली सन्तान जन्म लेना नहीं चाहती? और, वैसे भी, आगे क्या करना होगा, इस कसांद्रा दाग़ का क्या करें? अपने आपको उसे भुलाने पर, उस पर ध्यान न देने पर कैसे मजबूर करें जिसका अस्तित्व है? तीसरी श्रेणी के लोग कुछ ऐसी बात करते हैं जो समझ में ही नहीं आतीं। और चौथी, पाँचवीं, दसवीं वगैरह-वगैरह तरह के लोग भी कुछ-न-कुछ कहते ही हैं। और, आख़िर में सब एक ही राग अलापते हैं कि आनुवंशिकी के रहस्यों में प्रवेश ही क्यों किया जाये–यह तो पूर्वनियोजित भविष्य है, जिसमें कोई दख़ल नहीं दे सकता। हज़ारों वर्षों से लोग भविष्य के संकेतानुसार जीते रहे हैं, और अब, अचानक उसका पुनर्निरीक्षण करने की बात हो रही है जिस पर हमारा कोई वश नहीं है। और इसी तरह की अनेक बातें हो रही हैं। सब कुछ बताना असम्भव है। किसी के विचार में यह फुंसी, यह दाग़ बकवास है, कोई इसे विपत्ति की पूर्वसूचना मानता है। हाँ, सारी बात नहीं बता सकता। मगर सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि–कसांद्रा ने अपनी गतिविधियाँ आरम्भ कर दी हैं। कहते हैं कि विधि विभाग की एक छात्रा ने कक्षा में लेक्चर सुनते-सुनते अपने ..न्हे से आईने में देखा और चीख़ मारकर सभागृह से बाहर निकल गई।

उसके माथे पर वही दाग़ कसांद्रा भ्रूण का संकेत, उभर आया था। दूसरा क़िस्सा तो और भी बुरा है। सड़क दुर्घटना हुई, और कार चलानेवाली महिला ने स्वीकार किया कि उसने कार के शीशे में देखा तो उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके ललाट पर कोई सन्देहास्पद निशान है। यह तो अच्छा हुआ कि कोई हताहत नहीं हुआ।"

"हे मेरे भगवान्!" जैस्सी कुर्सी पर बैठते हुए बोली, "जैसे सबके सिर पर ग़ाज़ गिरी है। आगे क्या होगा? बाहर निकलने का कोई तो रास्ता होगा?"

"मालूम नहीं, जैस्सी, नहीं जानता। तुम मुझसे क्या चाहती हो? और फिर, तुम्हारे रिहर्सल पर जाने का समय भी तो हो गया है। वापस आओगी, तब बात करेंगे। मुझे भी दिल पर बोझ-सा महसूस हो रहा है।"

"कोई रिहर्सल...विहर्सल नहीं। रिहर्सल हो कैसे सकती है, शैतान जाने क्या होनेवाला है?"

"हाँ, शुरुआत हो चुकी है। और तुम भी! पूरा ऑर्केस्ट्रा तुम्हारी राह देख रहा होगा और तुम घर पर बैठे-बैठे फ़िलोफ़ेइ के बारे में सोच-सोच कर परेशान होती रहोगी।"

"मैं फ़ोन कर दूँगी, कह दूँगी कि तबीयत ठीक नहीं है। आख़िर मैं उन सबसे बड़ी हूँ। और वैसे भी, मैं तो जल्दी ही नानी बननेवाली हूँ। तुम्हें तो अच्छी तरह मालूम है।"

"मेरा भी यही भविष्य है, सिर्फ़ एक मर्दाना नानी,"—पति ने उसे हँसाने की कोशिश करते हुए कहा, "ओह, मुझे कितनी खुशी होगी जब हम अपनी एरिका के पास नाना-नानी बनकर शिकागो जायेंगे। मगर अभी, यह ठीक नहीं है, जैस्सी, रिहर्सल बरबाद न करो। कोई फ़ायदा नहीं है।"

जैस्सी डगमगाई, फिर बोली, "अच्छा, ठीक है। अभी मेरे पास कोई आधा घण्टा है—बल्कि कुछ ज़्यादा ही है। मगर, बताओ अब सबके साथ क्या होगा? हमारी एरिका को सातवाँ महीना चल रहा है। शायद, उसके माथे पर भी कसांद्रा दाग़ आया होगा? तब तो उसके बारे में कोई भी, कुछ भी नहीं जानता था। सोचो, अगर एरिका अभी हाल ही में गर्भवती हुई होती? मैं रातों को सो न पाती," जैस्सी ख़ामोश हो गई और कुछ शान्त होने के बाद आगे बोली, "अब तुम्हारे लिए कॉफ़ी बनाती हूँ, रॉबर्ट, उसके बाद मैं जाऊँगी।"

"मैं खुद भी बना सकता हूँ, तुम परेशान मत होओ।"

"नहीं, अभी लाई। वैसे, ओर्डाक की ओर से किसी एन्थोनी यूंगेर ने फ़ोन किया था।"

"यूंगेर? हाँ, समझा। क्या कहा उसने?"

"अभी आकर बताती हूँ।"

जब तक पत्नी रसोई घर में पुरानी—भाप पर चलनेवाली—एस्प्रेसो मशीन में कॉफ़ी बनाती रही, रॉबर्ट बोर्क हाथों को ढीला छोड़कर अजीब-सी मनोदशा में, थका-माँदा, कुर्सी पर बैठा रहा। उसे ऐसा लग रहा था, मानो वह यहाँ अजनबी हो। उसने चारों ओर नज़रें घुमाईं। यूँ देखता रहा, जैसे इस बड़े ड्राइंग रूम को, उसमें रखे भारी-भरकम फ़र्नीचर को, मेल खाते हुए झुंबर और अँगीठी पर लगे बड़े आईने को, जिसे जैस्सी ने बड़े चाव से वेनिस में ख़रीदा था, पहली बार देख रहा हो। पिआनो, वॉयलिन। काँच की शेल्फ़ में सुनहरी जिल्दवाली किताबें (वैसे अधिकांश किताबें पुस्तकालय में थीं, ऊपरी मंज़िल पर, अध्ययन-कक्ष की बग़ल में)। और यह पूरा घर और शीशे में प्रतिबिम्बित हो रहा वह स्वयं-चौड़ी हड्डीवाला, कन्धों तक लटकते सफ़ेद बालों वाला, जैसे बूढ़ा घोड़ा, जो जवानी में काफ़ी मज़बूत रहा हो—उसे अजनबी से लगे, मानो वह दूर खड़ा होकर अपनी बीती हुई ज़िन्दगी को, उससे सम्बन्धित वस्तुओं को, स्वयं से अपरिचित, गहरी सोच में डूबी, अपने आपमें सिमटी अपनी ही तस्वीर देख रहा हो। उसने यह भी सोचा, "मुझे ही औरों की अपेक्षा अधिक पीड़ा क्यों हो रही है, मानो सृष्टि का अन्त आ पहुँचा हो? मगर, शायद अब तक का मेरा जीवन मात्र एक प्रस्तावना थी, जिससे अब मैं अज्ञात में कूद पड़ूँ? गुप्त दरवाज़े की ओर एक अन्धे की तरह टटोलते हुए जा रहा हूँ? भविष्यविज्ञान की धुन में, आमतौर से एक शान्त, नियमित, सफल वैज्ञानिक पति का जीवन जीते हुए मैंने क्या पाया? अब-अन्तरिक्ष पादरी के रूप में भविष्य के नाटक का अन्तिम अंक का पहुँचा है। इसका क्या मतलब है? सत्य का क्षण? अग्रिम राशि का भुगतान? क्या ऐसा ही है? मेरे लिए फ़िलोफ़ेइ कौन है? कोई भी नहीं, अगर सोचा जाये तो। मगर मुझे चैन क्यों नहीं आता? मतलब, कोई चीज़ है, जो मुझे उससे जोड़ रही है? कभी सपनों में ह्वेलें आती हैं, और अब...।"

इन विचारों को वह झटक नहीं सका, सन्देहों से मुक्ति नहीं पा सका। अन्तरिक्ष पादरी के आविष्कार के सन्दर्भ के बग़ैर वह किसी भी बात के बारे में सोच न सका। सभी चीज़ों की तुलना करनी पड़ी—वह जो पहले था, और वह जो बाद में हुआ...।

जैस्सी कॉफ़ी ले आई और बातचीत दुबारा उसी विषय पर लौट। ऐसा मालूम होता था कि एन्थोनी यूंगेर ने जो रॉबर्ट बोर्क के कार्य सम्मान करता था, प्रेसिडेण्ट के पद के उम्मीदवार की 'टीम' से फ़ि विश्वविद्यालय फ़ोन किया था, मगर जब वहाँ बोर्क को न पा सका, तो यह सन्देश छोड़ा कि वह दोपहर बाद दुबारा फ़ोन करेगा। जब जैस्सी जानना चाहा कि क्या बोर्क उसे फ़ोन कर सकते हैं, तो यूंगेर ने जवाब दि कि आज उसे पकड़ पाना मुश्किल है, वह पूरा दिन घूमता रहेगा, आज उ लिए बड़ी व्यस्तता का दिन है, ओर्डाक की मतदाताओं से मुलाक़ात आयोजन करना है, जिसके पश्चात् बहुत बड़ी प्रेस कॉन्फ्रेन्स होनेवाली यानी कि काफ़ी काम है, मगर उसे बोर्क से बातें करने की तीव्र इच्छा है।

"काफ़ी दिनों से सपने देख रहा था उनसे बातें करने के, और अ मुझे बहाना मिल गया है। कृपया उनसे कहिये कि मेरे पास जानकारी के साथ-साथ सवाल भी हैं। बहुत जी चाह रहा है फ़ोन करने का।"

और जैस्सी के रिहर्सल पर जाने के तुरन्त बाद टेलीफ़ोन की घण्टी बजी। यह वही था, एन्थोनी यूंगेर।

"मिस्टर बोर्क, क्या आपको ऐसा नहीं प्रतीत होता कि हम दोनों का एक मित्र है—फ़िलोफ़ेइ और मेरा आपसे परिचय, टेलीफ़ोन पर ही सही, उस के पत्र के कारण हो रहा है?"

"ठीक कहते हो। यह अन्तरिक्ष पादरी अब हमारे जीवन में अनेक बातों का फ़ैसला करेगा।"

"यही तो बात है, मिस्टर बोर्क। मैं समझता हूँ कि किसी और की अपेक्षा आप इस बात को स्पष्ट रूप से देख रहे हैं। और अब समस्या यह है कि घटनाक्रम कैसा होगा, या, जैसा कि रूसी पूछते हैं, इतिहास कौन-सा मोड़ लेगा? मैं अपनी तारीफ़ कर दूँ, मैं रूसी अच्छी-ख़ासी बोल लेता हूँ। मॉस्को विश्वविद्यालय की डिग्री है मेरे पास। अगर इस दृष्टि से आपके किसी काम आ सकूँ तो मुझे बड़ी खुशी होगी।"

"ओह, यह तो कमाल की बात है," रॉबर्ट बोर्क ने आश्चर्य से कहा उसने एन्थोनी युंगेर के आत्मविश्वास एवं भाषा की प्रभावशीलता को ताड़ लिया था। "काफ़ी जोशीला स्वभाव है!" उसने सोचा—"उम्र कितनी होगी?" मैं भी गोर्बाचोव के समय में रूस गया था—उसने रूसवाले विषय पर आगे कहा, "मॉस्को, लेनिनग्राद, कीयेव। एन्थोनी, यह तो बताओ कि तुम्हारी उम्र कितनी है? मैं सिर्फ़ उत्सुकतावश यह जानना चाहता हूँ।"

"ओह, लीजिए। सरसरी तौर पर प्रभाव डालने के लिए कहना चाहता था—तीस, मगर, आपको ठीक-ठीक बताऊँगा—साढ़े अट्ठाइस," उसने जवाब दिया और कहा, "समय आ गया है बुद्धिमानों जैसी बातें करने का। और क्या कहूँ? मॉस्को में मैंने बहुत कुछ पाया—जीवन और ज्ञान का दूसरा ध्रुव है, मगर 'के.जी.बी.' में मेरा नाम नहीं था। अभी से बता देता हूँ।"

वे दोनों अमेरिका में प्रचलित इस नये चुटकुले पर हँस पड़े।

"माफ़ करना, एन्थोनी, उम्र में तो आप मेरे बेटे जैसे हैं। मैं यह इसलिए जानना चाहता था कि गम्भीर वार्तालाप में सम्भाषणकर्ता की उम्र का ज्ञान होना ज़रूरी है।"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ। मगर, आपके बारे में मैं सब कुछ जानता हूँ। आपकी किताबें पढ़ी हैं, और अभी हाल ही में आपका लेख 'भूमण्डलीय आवास के नौ द्वार' बड़े ध्यान से दुबारा पढ़ा है।"

"हाँ, यह भविष्य विज्ञान सम्बन्धी विश्व में प्रचलित विचार धाराओं को संयोजित करने का प्रयास था। धन्यवाद, मुझे बड़ी खुशी हुई—" बोर्क बड़बड़ाया।

"और मैं शैक्षणिक दृष्टि से, समझ में न आनेवाली चीज़ हूँ।" एन्थोनी ने हँसते हुए कहा, "ज्ञान के छोटे-छोटे टुकड़ों से बना हूँ, सब कुछ जानने की बेताबी से कोशिश करता रहा—दर्शन से ज्योतिष शास्त्र तक, कभी-कभी अन्तरिक्ष के सपने भी देखे। व्यावसायिक संगठनों सम्बन्धी काम भी किये, पत्रकारिता भी की। यहीं से मैं ऑलिवर ओर्डाक के निकट आया। वह लोकप्रियता पर बल देता है और यही उसकी शक्ति है। मुझे अभी चुनावपूर्व भाग-दौड़ में उसकी सहायता करनी है। वही कोशिश हम कर रहे हैं। मैं उनकी टीम में 'मीडिया' से सम्बन्धित काम देखता हूँ। उदाहरण के लिए, आज अब से तीन घण्टे बाद 'अल्फ़ा बेसबॉल' स्पोर्टस हॉल में आम सभा है। लोगों की भीड़ होगी। टेलीविज़न पर सीधा प्रसारण होगा। और उसके बाद, देर रात को, प्रेस कॉन्फ्रेंस है जिसका अनेक चैनलों पर सीधा प्रसारण होगा। ये सारी बातें, मिस्टर बोर्क, मैं आपसे यूँ ही नहीं कह रहा हूँ। शायद आपको दिलचस्पी हो यह देखने में कि हमारे ओर्डाक साहब कितने काबिल हैं। माफ़ कीजिए, आपके पास समय तो है न, मैं आपको अपनी बातों से परेशान तो नहीं कर रहा?"

"बिलकुल नहीं। मैं तुम्हारी बात सुन रहा हूँ, एन्थोनी।"

"इस सम्बन्ध में मुझे जो कहना है, मैं चाहता हूँ कि आप भी वह

जानें। सुबह हम सब ओर्डाक के कक्ष में जमा हुए थे, क़रीब पच्चीस लोग—सहायक, विशेषज्ञ और अन्य, और पहली बात जो उन्होंने बताई वह यह थी कि कल उनकी आपसे टेलीफ़ोन पर अन्तरिक्ष पादरी के पत्र के बारे में लम्बी बातचीत हुई।"

"हाँ, हुई," रॉबर्ट बोर्क ने पुष्टि की।

"यह तो बड़ा अच्छा हुआ कि ओर्डाक ने इस सवाल पर आपसे विचार विमर्श किया जो इस समय सबके दिमाग़ पर छाया है और सबकी जुबान पर है। वह राजनीतिज्ञ है, जोर-शोर से लोकप्रियता बटोरने में लगा है, मगर ज़रा-सी भी गड़बड़ हो जाये तो—"

"एन्थोनी प्यारे"—बोर्क ने उसे रोकते हुए कहा। "मैं जानता हूँ ओर्डाक को मुझसे सलाह लेने की बात तुमने सुझाई थी। मगर मैं कोई भविष्यवक्ता तो नहीं। क्या तुम समझते हो कि मुझमें पल भर में सब कुछ देख लेने की योग्यता है? मैं खुद भी किसी से भी इस सम्बन्ध में बात करने को तैयार हूँ, कोई भी, जो मुझे यह सब सुलझाने में मदद करे। तुम मुझसे इस तरह बातें कर रहे हो, जैसे सबकी नज़रों में मैं इस सबका ज्ञाता हूँ। मगर मैं अपने निष्कर्षों की सर्वमान्यता की गारण्टी नहीं दे सकता। इस बात को ध्यान में रखना ज़रूरी है।"

"मैं प्रसन्न हूँ कि ऐसी बात है!" एन्थोनी यूंगेर ने अपने उत्तर से चकित कर दिया। उसकी आवाज़ अपनी ओर आकर्षित करती प्रतीत होती थी।

"तुम क्यों प्रसन्न हो?"

"इसलिए कि मेरी संवेदना ने मुझे धोखा नहीं दिया। हालाँकि यह कहते हैं कि घर की मुर्ग़ी दाल बराबर, मगर मुझे पूरा विश्वास हो गया है कि आप ही वह विचारक हैं जिससे राष्ट्रपति की कुर्सी पर नज़र रखनेवाले राजनेता को सबसे पहले विचार-विमर्श करना चाहिए। आज ओर्डाक को भाषण देना है, पूरे स्टेडियम में जमा हुए मतदाताओं के सवालों के जवाब देने हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह नहीं है कि क्या जाते-जाते सामाजिक राय की गठरी वह अपनी पीठ पर लादकर ले जा सकेगा? महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपके विचार जनता तक पहुँचेंगे। मैं यह उस बात के आधार पर कह रहा हूँ, जो आज सुबह ऑलिवर ओर्डाक ने कही थी।"

"और उसने क्या कहा?"

"मोटे तौर पर जितना मैं समझा हूँ, आपके मूल्यांकन के आधार पर

वह यह टिप्पणी करना चाहता है कि फ़िलोफ़ेइ का आविष्कार वास्तविकता है जिसको समाज के सभी वर्गों के लोगों को, विश्व के सभी देशों के निवासियों को अनदेखा नहीं करना चाहिए। क्या यह सही है? मेरे ख़याल से, ऐसा ही है! ओर्डाक ने कुछ ऐसी ही बात कही है।"

"उपलब्ध तथ्यों के आधार पर यह एक निष्कर्ष है, यह आरम्भिक बिन्दु है। मगर आगे क्या? उसका क्या करें, जो कसांद्रा भ्रूणों की उत्पत्ति का कारण है और रहेगा? सामाजिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक स्तर पर? ऐसे अनेकों प्रश्न हैं।"

"आप ठीक कहते हैं, मिस्टर बोर्क," एन्थोनी के मुख से निकला। वह कुछ और कहना चाहता था, अपनी भावनाएँ प्रकट करना चाहता था, मगर बोर्क ने फिर से बोलना शुरू किया, "मैं इस घटना में पूरी तरह डूब गया हूँ, मुझे ऐसा लगता है कि अब मैं वह नहीं हूँ, जो कल तक था, कि जीवन का दुबारा आकलन करना पड़ेगा, जबकि मेरे लिए तो उसे सम्पूर्ण करने का वक़्त आ चुका है। फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार ने मानव के भविष्य के बारे में हमारे दृष्टिकोण को झुठला दिया है। जिसे हम स्वीकार करना नहीं चाहते थे वह हमारे सामने एकदम नंगा खड़ा है। हम सोचते थे कि प्रगति, सभ्यता उस नकारात्मकता को सत्य प्रमाणित करती हैं जो इनके साथ-साथ चलती है। जंगल कटता है—तो खपच्चियाँ उड़ेंगी ही। बिना अण्डे को तोड़े ऑमलेट नहीं बन सकता—रूसी में ऐसी कहावत है।"

"हाँ, बहुत लोकप्रिय है। उदाहरण के लिए स्टालिन ने अपनी आम दमनकारी नीतियों का ऐसे ही समर्थन किया था। मगर, आप कहते रहिये, मैं ध्यान से सुन रहा हूँ।"

"तो यह बात है। मैं क्या कहना चाहता था? फ़िलोफ़ेइ का आविष्कार बड़ी बेरहमी से उस तथ्य का पर्दाफ़ाश कर रहा है कि समूचे इतिहास में, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, लोगों ने बड़े सुनियोजित तरीके से एक-दूसरे को एवं उस दुनिया को, जिसमें वे रहते हैं, यातनाएँ दी हैं जिनके परिणामस्वरूप उन्हें मार्ग में काफ़ी कुछ खोना पड़ा है; काफ़ी कुछ, जिसे वे अपनी ऐतिहासिक परिपूर्णता के दौरान पा सकते थे, उसे कभी न पाने के लिए खो चुके हैं। ज़रा सोचो, एक सरल-सी बात के आधार पर। लेकिन अगर फिलोफ़ेइ की नज़र से देखें तो क्या ये सब कभी न समाप्त होनेवाले युद्ध जिनमें कुछ गौरवशाली भी कहे जाते हैं, ये क्रान्तियाँ, विद्रोह, बग़ावत, अपराध, शासन की क्रूरता, विचारों एवं शिक्षा की तानाशाही—क्या यह सब, अपने समग्र

रूप में, वह सब जो निरन्तर दहलाता है, सहमाता है, तोड़ता-मरोड़ता है जीवन को, भाग्य को, लोगों के मन में एक-दूसरे के प्रति घृणा भरता है, उन्हें लालची बनाता है, क्या वह सब कसांद्रा भ्रूणों के मूक विद्रोह में मुखर नहीं होता? उन कसांद्रा भ्रूणों के माध्यम से प्रकट नहीं होता जिनकी संख्या लगातार बढ़ रही है? उनका जीवन को नकारना—क्या यह सृष्टि के अन्त की पूर्व सूचना नहीं है? और नतीज़ा यह है कि वह दन्तकथा जिस पर अस्तित्व की निष्क्रियता के कारण पूरी तरह से कोई विश्वास नहीं करता था आज प्रत्यक्ष वास्तविकता वनी हुई है। इस वारे में मैं एक लेख लिख रहा हूँ जिसका आरम्भ आज रात को किया है। ऑलिवर ओर्डाक की फ़िलोफ़ेइ एवं उसके आविष्कार के बारे में अपनी राय हो सकती है, मगर फिर भी उसे और उसकी 'टीम' को यानी आप सबको हर हालत में यह समझना चाहिए कि एक मुश्किल, जटिल वस्तु से हमारा पाला पड़ा है। कुछ इसी के बारे में मैंने कल ओर्डाक से बात की थी।

"मैं माफ़ी चाहता हूँ कि आज आपको टेलीफ़ोन पर इतनी लम्बी बातचीत में घसीट लिया। मगर मन-ही-मन बहुत खुश हूँ क्योंकि मैं वह जान गया हूँ, जो जानना चाहता था। बेशक, मैं आपसे सहमत हूँ कि फ़िलोफ़ेइ के सिद्धान्त में और भी बहुत कुछ है जिसके बारे में काफ़ी कुछ सोचना पड़ेगा। मगर कुछ भी हो, उसने हमें एक अनकही, अनसुनी पहेली दे दी है सुलझाने के लिए। सबको, सब नश्वर प्राणियों को! क्या आदमी है! उसने ब्रह्माण्ड की चाभी घुमा दी है! और यदि हमें, माफ़ कीजिए, बीती हुई सदियों का लेखा-जोखा देना हो—शायद यही होने जा रहा है, उस सबकी ज़िम्मेदारी लेनी है जो हमारे द्वारा, जैसा कि आपने फ़रमाया, लालची लोगों द्वारा, रचा गया है, हम सबके द्वारा, हमारे पूर्वजों द्वारा, तो हम अपने आपके सिवा किससे फरियाद करें? यह साफ़ हो गया है कि बुराई बिना कोई निशान छोड़े, बिना कोई आवाज़ दिये, उन सबके साथ नष्ट नहीं होती जिन्होंने उसकी रचना की थी, परन्तु आनुवंशिकी की खाइयों में सही वक़्त आने तक, सही क्षण आने तक पड़ी रहती है। परिणाम यह होता है कि देर-सवेर किसी-न-किसी को इसका मूल्य जीवन को त्यागकर चुकाना पड़ता ही है?"

"हाँ, यही होता है एन्थोनी! कारण यह है कि हम अच्छाई और बुराई के आपसी सम्बन्ध के बारे में कम सोचते हैं, नादानी में उन्हें एक ही लड़ी में पिरोकर यह नहीं सोचते कि बुराई की ताक़त का वर्चस्व है, बुराई मारती

है, हमारे भीतरी लक्ष्य को हमारे ही भीतर तिल-तिलकर मारती है, हमारे ब्रह्माण्डीय संसाधनों को धीरे-धीरे नष्ट करती है, बुद्धि को सिर उठाने का मौक़ा नहीं देती जिससे अस्तित्व के अन्य साधनों को जाना जा सके, तब आदमी गुणात्मक रूप से उससे भिन्न होता जैसा वह आज है।"

"मिस्टर बोर्क, क्या आप ऐसा सोचते हैं कि भौतिक रूप से वैसे ही रहकर, जैसे हम हैं, लोग एक अन्य प्रकार की गुणात्मक बुद्धिमत्ता के स्वामी हो सकते थे, किसी अन्य प्रकार से व्यवहार कर सकते थे?"

"यह सौ फ़ी सदी सच है। हम स्वयं अपने आपको सौंपे गये थे, ब्रह्माण्ड में हम ही अकेले बुद्धिमान प्राणी थे। किसी भी अन्य जीव से किसी तरह की प्रतियोगिता नहीं थी। क्या हमारे आत्मिक विकास की कोई अन्य राह हो सकती थी, सैद्धान्तिक रूप से कोई अन्य प्रगति सम्भव थी? इसके बारे में सोचना चाहिए, बहस करना चाहिए। लोगों को, मगर, इस तथ्य से इनकार नहीं करना चाहिए कि विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में हमने चाहे जितनी प्रगति क्यों न की हो, मुझे अफ़सोस है कि हम हमेशा जानवर ही रहे हैं और रहेंगे जो अपने समान प्राणियों का भक्षण करते हैं।"

"अफ़सोस, बेहद अफ़सोस की बात है। ऐसा प्रतीत होता है, मानो अन्तरिक्ष पादरी ने हमारी आनुवंशिकता समेत हमें रँगे हाथों पकड़ लिया है? मगर, चाहे यह कितनी ही बेवकूफ़ी भरी बात क्यों न हो, मेरे दिल पर इस बात का बोझ है कि हम जैसे हैं, उसके बदले कुछ और हो सकते थे। कहीं इस स्वीकारोक्ति में चिरपरिचित आदर्शवादी संगीत तो नहीं सुनाई पड़ता जो हमें कामक्रूरता की, राह पर ले जाता है, मिस्टर बोर्क?"

"लगता है कि ऐसा ही है, क्योंकि कामक्रूरता—रेगिस्तान में वनों की अनुपस्थिति के बारे में शिकायत ही तो है।"

"और यदि ऐसे जंगल हैं नहीं और होंगे भी नहीं, तब आप क्या सलाह देंगे?

"सिर्फ़ एक—अपने अन्दर नये विचारों का वन लगाओ।"

"इसका क्या मतलब है?"

"इसका क्या मतलब है? बड़े ज़िद्दी पत्रकार हो तुम! दुनिया में फ़िलोफ़ेइ के आविष्कारों का एक ही मतलब होगा : कसांद्रा भ्रूणों के संकेतों को सुना जाये, हर कसांद्रा दाग़ को एक चेतावनी के रूप में देखा जाये। तभी हमारे भीतर जन्म लेने के भय से पनप रहे इतिहास के अन्त को रोका जा सकेगा। इस बात का अहसास कि आनुवंशिक संकट निकट आ रहा

है, प्रत्येक व्यक्ति को और विश्व में पूरी मानव जाति का होना अनिवार्य है। मैं 'ट्रिब्यून' के लिए इसी बारे में लेख लिख रहा हूँ। माफ़ करना एन्थोनी, टेलीफ़ोन पर विस्तार से नहीं बता सकता। संक्षेप में कहा जाये तो मानव की भावी पीढ़ियों के प्रति ज़िम्मेदारी को एक नया आयाम प्राप्त हुआ है, शायद यह विकास की नई कड़ी हो। कल मैंने ओर्डाक को कुछ ऐसी ही बात बताई थी। वह भी चिन्तित है।"

"हाँ, मिस्टर बोर्क, इस बार हमारे ओर्डाक को काफ़ी मुश्किल पेश आयेगी, क्योंकि प्रस्तुत परिस्थिति उस जैसे राजनीतिक खिलाड़ी के लिए नहीं है। ओर्डाक जैसे राजनीतिज्ञों को मैं प्रतियोगिता का खिलाड़ी कहता हूँ। ओर्डाक आत्मविश्वास से खेलता है, जब दुश्मन नज़र के सामने हो तब वह उस पर हमला कर देता है, यह भी सबके सामने, खुले आम, होना चाहिए, अपने अंतरंग मित्रों में वह 'अनिवार्य शत्रु' शब्द का प्रयोग भी करता है। तब वह घोड़े पर सवार होगा। मगर यहाँ, देखते हैं न, सब कुछ परोक्ष है, अमूर्त है।"...

"बिलकुल नहीं, एन्थोनी! ऐसी 'अमूर्तता' शीघ्र ही मूर्त रूप धारण कर सकती है। बल्कि काफ़ी मज़बूत, ठोस रूप। क्योंकि सवाल लोगों के जीवन से सम्बन्धित है।"

"हाँ, यह तो साफ़ है। मैं केवल ओर्डाक की मानसिक दशा का वर्णन कर रहा था। मगर यह उसके राजनैतिक अस्तित्व का ही एक रूप है। मगर यह तो कहने की बात है। मैं अब रुकता हूँ, मिस्टर बोर्क, माफ़ी चाहता हूँ। आपसे बातें करके तो जी ही नहीं भरता। मुझे टेलीफ़ोन करने की इज़ाज़त न दीजिए, वरना आपका जीना दूभर हो जायेगा।"

"अच्छा, अच्छा, एन्थोनी। अगर जरूरत हो तो क्यों न बातें की जायें।"

"विदा, मिस्टर बोर्क। मतलब, अगर चाहे तो टेलीविज़न पर 'अल्फ़ा बेसबॉल' में होनेवाली मीटिंग देखिए, शाम छः बजे से आठ बजे तक और हॉटेल 'शेरेटन' में हो रही प्रेस कान्फ्रेंस रात नौ से दस तक।"

"धन्यवाद! याद रखूँगा।"

6

प्रकृति के कैनवास पर शिशिर का वह दिन यादगार बनकर रह गया—हवा में चाँदी-सी झिलमिलाहट, ख़ामोशी से आँखों के सामने गिरते पत्ते, वतन से दूर उड़ते पक्षियों के झुण्ड जो विदा लेते-लेते घरों की छतों पर चक्कर लगा रहे थे...सभी कुछ स्मृति-पटल पर अंकित हो गया। अड़ोस-पड़ोस से खेलते हुए बच्चों की आवाज़ें सुनाई दे जाती थीं। वह सुनहरा दिन हर जीवित प्राणी को प्रदान कर रहा था ख़ामोशी, सन्तोष, समाधान—अपने अस्तित्व के बारे में चिन्तन करने का अवसर...।

शायद ऐसे ही समाप्त हो जाता ईश्वर का दिया हुआ एक और खुशनुमा दिन, और जीवन के प्रवाह में कोई विघ्न न डालता। मगर कोई घटना तो होनेवाली थी जो अभी तक अदृश्य, अपरिपक्व थी और ऊर्जा जुटा रही थी ताकि भविष्य में अपने बारे में बता सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लोगों को किसी स्थान पर एकत्रित होना था। एक अपार जनसमूह, एक-दूसरे से सटा हुआ, गुँथा हुआ, गहरी, गर्म साँसें छोड़ता हुजूम ज़रूरी था इसके लिए।

रॉबर्ट बोर्क ने घड़ी पर नज़र डाली और महसूस किया कि वह ओर्डाक की मतदाताओं से होनेवाली मुलाक़ात का इतनी बेचैनी से इन्तज़ार कर रहा है, जैसे कि उसी को भाषण देना हो, मानो राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ते हुए उसी के सामने यह समस्या खड़ी हो कि अख़बारवालों की भाषा में, प्रस्तुत क्षण पर कैसे क़ाबू पाया जाये, कैसे जनता का विश्वास और सहयोग अर्जित किया जाये। बोर्क खुद भी यह नहीं समझ पाया कि वह क्यों इतना उत्तेजित है। शायद यह कोई ख़ास बात नहीं थी—चुनाव प्रचार के दौरान सावधानीवश लिया गया एक क़दम था, इससे अधिक कुछ नहीं। क्या इसके बारे में सोचना ज़रूरी था? एक साधारण-सी घटना को इतना महत्त्व देना क्या उचित था? उस चीज़ के बारे में जिससे उसका कुछ लेना-देना नहीं था, परेशान होने में क्या तुक था? अजीब है वह भी! जैसे कोई प्रशंसक हो ओर्डाक का।

मगर इस बात को हँसी में उड़ाने की उसने जितनी ही कोशिश की, उसकी आत्मा में चुभन बढ़ती गई, दिल का चैन खोता गया। कोई शक्ति उसे घर से बाहर पथरीले उद्यान की ओर खींच रही थी, जहाँ अक्सर टहलते हुए या रेत पर जादुई से निशान बनाते हुए वह खुली खिड़की से आती संगीत की ध्वनि सुनता रहता। अभी भी वह उसे सुन रहा था। इसमें, बीथोविन की सिम्फ़नी में, उसकी शक्ति में, उसकी सार्वभौमिकता में, उसे शान्ति मिलती थी और यह आशा जाग्रत होती थी कि संगीत, जैसा कि अक्सर होता था, उसे अपनी ओर आकर्षित करेगा, अपनी दुनिया में ले जायेगा, कुछ और ही पीड़ाओं का, और ही विचारों और कल्पनाओं का आस्वाद करायेगा, जो किसी के भी द्वारा संचालित नहीं की जाती और जिनका कुछ-कुछ आभास उसे यहाँ भी होता था। उसे यह सोचना अच्छा लगता था कि संगीत सूर्य की ऊर्जा के अनेकानेक रूपों में से एक रूप है, वह ब्रह्माण्ड के गर्भ से उत्पन्न होता है, और संगीतज्ञ एक 'राडार' की भाँति ब्रह्माण्ड में उसे चीन्हता है, उसे आकार देता है। समरसता प्रदान करते हुए ध्वनि के रूप में परिवर्तित करता है। दूसरे शब्दों में, संगीत ब्रह्माण्ड की परिधि एवं समय का ध्वनि में रूपान्तरण है। ज़ाहिर है, कि अपने इन 'आविष्कारों' के बारे में उसने कभी किसी से कुछ कहा नहीं था, वरना लोग उस पर हँसते। जैस्सी को भी इसका ज्ञान नहीं था। एक और भी था उसका अपना सिद्धान्त, जिसके बारे में भी वह मौन था, हालाँकि कभी-कभी मुँह खोलने की प्रबल इच्छा होती थी : उसे ऐसा प्रतीत होता था कि संगीत का उपहार लोगों को जीवन की पीड़ाजनक क्षुद्रता के बदले मिला है। जब कोई मनुष्य संगीत सुनता है, उसमें खो जाता है, तो वह व्यक्तित्व से श्रेष्ठ समय की श्रेणी में जा पहुँचता है, वह अनन्त के प्रवाह का एक कण बन जाता है और उसका जीवन बढ़ जाता है, शायद अनन्त के सापेक्ष लम्बा हो जाता है, दशकों से, शतकों से या और भी ज़्यादा, मगर इस विस्तार की प्रकृति रेखागत न होकर कुछ ऐसी है जिसकी खोज अभी बाक़ी है। सम्भव है, यह खोज कभी हो ही न सके।

मगर इस बार, बोर्क को विश्वास हो गया कि संगीत का इस प्रकार से रसास्वादन करने के लिए एक विशेष मुद्रा की, विशेष मनःस्थिति की आवश्यकता होती है, जैसी सम्भवतः प्रार्थना करने से पूर्व या फिर समुद्र में तैरने से पूर्व होती है...। यही मनःस्थिति आज वह बना नहीं पा रहा था। और संगीत का भी कोई लाभ नहीं हो रहा था। उस पर जैस्सी को भी

रिहर्सल से लौटने में देर हो रही थी। भीड़-भाड़ का समय था और रास्ते पर हर तरह की रुकावटें थीं। काम भी आगे नहीं बढ़ रहा था, वह उसे भी हाथ नहीं लगा रहा था जिसे शीघ्र पूरा करना आवश्यक था। 'ट्रिब्यून' चाहता था कि वह, वादे के मुताबिक, अपना लेख एकदम तुरन्त भेज दे। मगर वह, भली-भाँति यह जानते हुए भी कि अख़बारों के स्तम्भों में सनसनीखे़ज ख़बरों को अधिक देर बर्दाश्त नहीं होती, अपने आपको आज कम्प्यूटर पर बैठकर काम करने के लिए तैयार न कर सका। बस टालता ही रहा, अपने आपको यह विश्वास दिलाते हुए कि जरूरत पड़ी तो रात में काम कर लेगा, अखबार को बगलें झाँकने पर मज़बूर न करेगा। परेशान होता रहा, इधर-उधर डोलता रहा और साथ ही यह कल्पना भी करता रहा कि कितना सुन्दर लेख काग़ज़ पर उतरेगा; उसने लेख को मन की आँखों से समूचा, भौतिक रूप में देखा भी, लेख उसके भीतर यूँ विकसित हो रहा था जैसे तूफ़ानी बारिश के बाद जमीन पर घास। जैसे लेख ख़ुद ही काग़ज़ पर उतरने के लिए मचल रहा हो।

मगर वह निष्क्रियता में डूबा रहा उस बात के तनावपूर्ण इन्तज़ार में, जिसका उसे, शायद इन्तज़ार नहीं करना चाहिए था, जो उससे किसी भी तरह सम्बद्ध नहीं थी। यह विशाल, चुनावपूर्व सभा जो शहर के सबसे घनी आबादीवाले भाग में लोगों से खचाखच भरे सुप्रसिद्ध स्पोर्ट्स हॉल में होने जा रही थी न जाने क्यों उसे घर के बहुत निकट होती प्रतीत हुई, जैसे उसकी घर की छत पर, लॉन पर, पथरीले उद्यान में हो रही हो। ऐसा लगा, मानो भीड़ के अजगर ने उसके घर को घेर लिया हो जिसके कारण उसका दम घुट रहा हो...उसने ख़ुद को संविभ्रमी (पीड़नोन्मादी) कहकर गाली दी। वरना उसे ऐसा भ्रम क्यों होता?

वह बेचैनी से घर के भीतर-बाहर चहलक़दमी करता रहा, घड़ी की ओर नज़र डालता, कान के कोने से संगीत सुनता, टेलीफ़ोन की हठी घंटियों पर ध्यान न देता हुआ। ड्राइंग रूम में रखे बड़े टेलीविज़न के निकट से गुज़रता, समय से पहले वह उसे 'ऑन' नहीं करना चाहता था, उस वक़्त टेलीविज़न की अनेक चैनलों पर जो कुछ प्रसारित हो रहा होगा, उसके बारे में बिना देखे ही बताया जा सकता था—वहीं टेलीगड़बड़...जैस्सी अभी तक लौटी नहीं थी...।

वह बड़ी बेचैनी की हालत में था, मन को एकाग्र नहीं कर पा रहा था। मगर मन में गम्भीर विचार भी आते रहे। उदाहरण के लिए,

विश्वविद्यालय में अपने साथियों और 'ट्रिब्यून' के संवाददाता से बातें करते हुए न जाने क्यों उस तथ्य की ओर उनका ध्यान आकृष्ट नहीं किया था कि अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेइ का पत्र व्यक्तिगत रूप से रोम के पोप के लिए था। यह अन्दाज़ लगाना मुश्किल न था कि इस कारण से पोप भी बड़ी उलझन में पड़ गये थे—क्या करें, किसी स्वघोषित पादरी के इतने अपारम्परिक, (आक्रामक न कहें तो) पत्र का उत्तर अख़बारों में दें या न दें, और अगर देना हो तो क्या जवाब दें?

रॉबर्ट बोर्क ने बड़ी सजीव कल्पना की उन अविश्वसनीय गड़बड़ियों की, जो कसांद्रा भ्रूणों की समस्या के आमचर्चा का विषय बनते ही विभिन्न धर्मों में प्रकट होगी। फ़िलोफ़ेइ के आविष्कारों के मार्ग में यह एक निहित ख़तरा था।

सभी धर्मों में निहित मानव की आत्मा की पीड़ा एवं अन्त काल से परमात्मा से मेल की अदम्य इच्छा के साथ-साथ बुद्धि के एक कोने में दुबकी है अपने ईश्वर को ईश्वर समझने की परिपाटी। हालाँकि ईश्वर सभी के लिए एक ही है, मगर अपना अपना ही होता है और पराया पराया, अपना और पराया ऐसी भावनाएँ हैं, जिनका मेल नहीं हो सकता। यहीं से विभिन्न धर्मों की सीख में उत्पत्ति होती है अन्याय एवं भेदभाव की, महत्त्वाकांक्षा और अहंभाव की, सीख जो सत्य को पाने की दिशा में अपनी-अपनी प्राथमिकताओं का प्रतिपादन करती है, और मुख्य रूप से यही कारण बनती है विश्व में धर्मगुरुओं के मध्य भेदभाव का, विरोध का जो जन्म देता है धार्मिक लोगों के मध्य अजनबीपन और एक दूसरे को न समझ पाने के एहसास को। रॉबर्ट बोर्क के अनुसार, इसी कारण हर धर्म में कुछ ऐसी विशिष्ट शक्तियाँ मिल जायेंगी, जो फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार को हर हालत में अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश करेंगी—या तो अन्तरिक्ष पादरी को गालियाँ देकर उससे राजनैतिक लाभ हासिल करेंगी, या कसांद्रा दाग़ सम्बन्धी आविष्कार को अपने धार्मिक मतानुसार मानते हुए अपने मत का प्रचार करेंगी तथा श्रद्धालुओं के मध्य अपना प्रभाव बढ़ायेंगी।

और उसके दिल में फिर से वही ख़याल आया जो आरम्भ में मस्तिष्क को छूते हुए निकल जाता था, मगर धीरे-धीरे वहाँ घर करने लगा, जिसके बारे में वह अपनी विदेशों की यात्राओं के दौरान और हर तरह की वैज्ञानिक कान्फ्रेंसों में बैठा-बैठा सोचता रहता था, मगर जिन्हें साफ़-साफ़ कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाया था। क्या होता, किसी एक व्यक्ति का जीवन कैसा

होता, लोगों के भाग्य कैसे होते अगर पृथ्वी पर रहनेवाले हर इन्सान को बिना किसी भेदभाव के सभी धर्मों को अंगीकृत करने की स्वतन्त्रता होती, अगर हर व्यक्ति को हर स्थान पर, बिना किसी रोक-टोक के, हर धर्म के, हर उत्सव में, समान मात्रा में, समान मर्यादा से भाग लेने की आज़ादी होती—अगर वह ईश्वर में विश्वास करता हो तो—तब वह किसी एक मत या सम्प्रदाय का समर्थक न होकर, अन्य मतों एवं विश्वासों से अलग-थलग न पड़ते हुए, विश्व के सभी धर्मों से बने एक समुदाय का सदस्य होता, उन सबके द्वारा मान्यता प्राप्त होता, स्वयं को ईसाई, मुसलमान, यहूदी या कोई अन्य धर्मावलम्बी समझता, हर धर्म से प्यार करता, उसका सम्मान करता, बदले में हर मत एवं सम्प्रदाय उसका सम्मान करता, वह आज़ादी से उनके मतों एवं रीति-रिवाज़ों को स्वीकार करता, विभाजित करनेवाले, अलग-थलग करनेवाले नहीं, अपितु सभी धर्मों के लिए समान, मूलभूत ऐसे विचारों को, आदर्शों को। तब लोगों के मध्य मौन एवं मुखर धार्मिक सीमाएँ न होतीं, जिसकी विशाल शहरों और घनी आबादीवाले देशों के मिश्रित बहुधर्मी समाजों को आवश्यकता है। शायद ऐसी परिस्थिति मानव जीवन को काफ़ी हद तक आसान बना देती, सौहार्दपूर्ण बनाती? शायद वह समय आ गया है, वह ऐतिहासिक युग आ गया है, जब मानव का स्वागत सभी धर्म मिल-जुलकर, एक साथ करेंगे न कि अकेले-अकेले, एक-दूसरे से हाथापाई करते हुए? बीसवीं सदी के अन्त का मानव अपने पूर्वजों से हटकर यह घोषणा कर सके कि सभी धर्म मेरे हैं और मैं सब धर्मों का धारक हूँ, मैं सभी सम्प्रदायों के सभी मन्दिरों में प्रवेश करता हूँ, और सभी मन्दिरों में मैं प्रिय हूँ, फ़क़ीर हूँ...। मेरा जन्म हुआ ईसाइयों के यहाँ, बप्तिस्मा भी हुआ, मगर दफ़न होऊँगा मैं कुरान शरीफ़ की आयतों के मध्य, आज मैं पूर्वी ईसाइयों के सम्प्रदाय के साथ पूर्वी ईसाई हूँ, कल मुसलमानों के संग मुसलमान था, जापान में मैं बुद्ध के सम्मुख शीश नवाता था, स्वीडन में ल्यूटर के सिद्धान्तों का अनुकरण करता था...। ईश्वर के प्रति मेरे विश्वास में मैं किसी के भी लिए अजनबी नहीं हूँ, मनुष्य द्वारा ईश्वर के सम्मुख की गई प्रार्थना, सभी भाषाओं एवं बोलियों में मेरे लिए नई नहीं है। उस रचयिता के प्रति जो हम सब पर समान रूप से कृपा करता है, हमारे पाप-कर्मों के कारण समान रूप से पीड़ित होता है और हम सबके लिए बिना किसी भेदभाव के ब्रह्माण्ड के द्वार खोलता है हमारी योग्यता एवं भले कर्मों के अनुसार...।

सर्वधर्म सम्मिलन किसी एक धर्म विशेष में ईश्वर के आदर्श को कमज़ोर नहीं बनाता, उल्टे उसे सार्वभौमिकता, खुलेपन, गतिमानता के गुण प्रदान करता और सबसे बढ़कर धर्मों में निहित मानव के प्रति प्रेम की भावना को उसके मौलिक अर्थ में प्रस्तुत करता, कर्मों के माध्यम से न कि केवल खूबसूरत सिद्धान्तों द्वारा...

बोर्क, बेशक, समझता था कि यह एक विचित्र और, शायद, बेतुका खयाल है और इसे मूर्त रूप देना शायद ही सम्भव हो, इस बारे में केवल अपने आप ही सोचना उचित है, इस प्रकार के सार्वभौमिक स्तर के विचारों की अभिव्यक्ति में अत्यन्त सावधानी बरतनी होगी, धर्म में विश्वास करने वालों पर बोझ नहीं डालना है, उनकी जीवनचर्या को बोझिल नहीं बनाना है, इस तरह के विचार पर बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया होगी, 'शॉक' की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। ये ही तर्क भविष्यविद् बोर्क को वह सब कहने से रोक रहे थे जो उसे व्यर्थ ही सता रहा था। प्रबल इच्छा होने पर भी वह रुक जाता था, जब धार्मिक 'कॉस्मोपोलिटिज़्म' की सत्यता दृष्टिगोचर होती थी तब भी संयत रहता था, लोगों के एवं विभिन्न धर्मों के बीच आत्मिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अत्यन्त आवश्यक प्रारूप के रूप में उसका महत्त्व जानते हुए भी ख़ामोश रहता था। यह एक सम्मिलित प्रयास था, ईश्वर की खोज की दिशा में, न कि एक-दूसरे से होड़ लगाते विभिन्न प्रतिद्वन्द्वी सम्प्रदायों के विभाजनकारी प्रयत्नों की ओर।

व्यक्ति विशेष द्वारा विविध धर्मों के अंगीकरण का विचार विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माध्यक्षों के बीच कितना असन्तोष पैदा करेगा इसका उसे अन्दाज़ था। कितना शोर मचेगा, उसके बेचारे सिर पर कितने पत्थर पड़ेंगे, कितने पापों का, कितनी नीचता का, कितना विश्वव्यापी गन्दगी फैलाने का उस पर आरोप लगेगा—इसकी उसे कल्पना थी। यदि अहम् एवं स्वार्थ—मानव की प्रकृति में प्रारम्भ से ही विद्यमान तथा लगभग जैविक समझे जानेवाले गुण हैं, तो इसमें किसी सन्देह की गुंजाइश ही नहीं कि प्रतिक्रिया इसी प्रकार की होगी और तब अभागे सलमान रुशदी के नसीब से भी ईर्ष्या ही होगी जिसे मुसलमानों के धर्मगुरु ने मृत्युदण्ड दिया, जिसे घोर अपमान का सामना करना पड़ा अपने महान् अपराध के लिए, जिसके बारे में अन्य सभी धर्मों के अनुयायी उदासीन रहे : ऐसे दुर्भाग्य से भी ईर्ष्या ही होगी, क्योंकि सलमान रुशदी तो किसी तरह भूमिगत होकर, आश्रय पाकर जीवन बिता रहा है, मगर सर्वधर्म संगठन के चलते ऐसा करना भी

सम्भव न हो पायेगा क्योंकि उस नास्तिक को, जिसे सभी ने ठुकरा दिया हो और सभी क्रुद्ध सम्प्रदाय जिसके खून के प्यासे हो रहे हों, कहीं भी अपने अभागे सिर को झुकाने की जगह न मिलेगी, कहीं भी और कभी भी ठौर-ठिकाना न मिलेगा? ऐसी स्थिति में बस एक ही विकल्प है, कि दूर, अन्तरिक्ष में, फ़िलोफ़ेइ के पास चले जाओ,—अपने आप पर व्यंग्य करते हुए सोचता रहा रॉबर्ट बोर्क और अचानक दिमाग़ में यह ख़याल कौंध गया—कहीं इसीलिए तो भाग्य ने फ़िलोफ़ेइ को अन्तरिक्ष में स्थापित नहीं किया है कि वहाँ से, अलभ्य ऊँचाई से, वह पृथ्वीवासियों को सच्चाई बता सके?

इन्हीं उमड़ते विचारों में खोया रहा बोर्क और उसे चुनावपूर्ण सभा के टेलीविज़न प्रसारण को देखने की याद ही न रही। घड़ी पर नज़र डाली—छः बजे चुके थे। वह ड्राइंगरूम में टी.वी. की ओर भागा। बिलकुल ठीक समय पर टी.वी. 'ऑन' किया!

उद्घोषक टेलीविज़न के दर्शकों को स्पोर्ट्स हॉल 'अल्फा बेसबॉल' में राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी स्वतन्त्र उम्मीदवार ऑलिवर ओर्डाक की मतदाताओं से हो रही मुलाक़ात देखने के लिए आमन्त्रित कर रहा था।

और स्पोर्ट्स हॉल में एकत्रित लोगों का दृश्य परदे पर आया। लोग कितने थे—नज़र में अन्दाज़ लगाना मुश्किल था। वातावरण में आवाज़ों का शोर था, मधुमक्खियों के गुंजार जैसा। बोर्क के सामने तैरते रहे चेहरे, उनके भाव, अनेक प्रकार के चेहरों का सागर, अनेक रंगोंवाले लोग। इस स्थान का चुनाव यह दर्शाता था कि उम्मीदवार की सहयोगी टीम ने अच्छा काम किया है। स्पोर्ट्स हॉल के गुम्बद के नीचे एक बहुत बड़ा गुब्बारा लटक रहा था जिस पर मुस्कुराते हुए ओर्डाक का चित्र था। जगह-जगह पोस्टर लगे थे : "वह समाज के कमजोर वर्गों का मित्र है!," "ओर्डाक—भावी राष्ट्रपति!", "ओर्डाक देंगे नया पर्यावरण का नारा", "बेरोज़गारों की आशा—ओर्डाक।" "महिला आन्दोलनकारी माँगते हैं—प्राथमिकता।" "वोट देंगे—अपने ओर्डाक को।" और भी इसी तरह के बहुत-से विशेषज्ञ इन पोस्टरों को प्रमुखता से दिखाकर अपनी कुशलता का परिचय दे रहे थे।

फिर सब कुछ घूम गया, जैसा कि इस तरह की आम सभाओं में होता है। शोर के साथ, धूमधाम के साथ, तेज़ संगीत के साथ, उद्घोषकों की ऊँची-ऊँची आवाज़ों के साथ, व्यवस्था देख रहे पुलिसवालों के साथ। खुद ऑलिवर ओर्डाक भी ऐसा ही दिखाई दे रहा था जैसा समारोह के नायक

को होना चाहिए। उसकी भावभंगिमा आत्मविश्वास से ओतप्रोत थी, अपनी मध्यम ऊँचाई के बावजूद उसने अपनी पुष्ट, सीधी गर्दन पर सिर ऊँचा उठा रखा था। मुस्कान उसके विवर्ण, कटे होठों को सजीवता प्रदान कर रही थी, इसी मुस्कान की आड़ में आँखें सतर्कता और प्रतिक्रियात्मकता को छिपा रही थीं। कोई बात थी जो उसे देखते ही प्राचीन सूत्रधारों की याद दिला रही थी, जो अपने बौनेपन को चुस्ती, फुर्ती, अप्रत्याशित ऊँची आवाज़ से छिपा देते थे। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच ओर्डाक स्टेज पर आया अपने सहयोगियों और सलाहकारों के साथ जो उसके दोनों ओर चल रहे थे। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के आते ही फ़ोटोरिपोर्टरों ने अपने-अपने कैमरों से फटाफट तस्वीरें लेना शुरू कर दिया, कैमरों की क्लिक-क्लिक के बीच फ़्लैश लाइट जलते-बुझते रहे। इस समय सभागृह का वातावरण वैसा ही था, जैसा उसे सभा से पूर्व होना चाहिए था, अमेरिका के प्रजातन्त्र का बखान और आयोजकों की व्यस्तता एक बार और दिखाई गई।

दिनभर न जाने क्यों बेचैन रहे, तनावपूर्ण इन्तज़ार से थक गये बोर्क के दिल को यह सब देखकर कुछ राहत महसूस हुई, उसने अपने आपको बेकार में ही निराश होने के लिए ताना भी दिया।

और सचमुच लोगों के इस हुजूम में, जहाँ सबका ध्यान केवल एक व्यक्ति—ऑलिवर ओर्डाक—पर केन्द्रित था, जिसका भाषण, माइक्रोफ़ोनों द्वारा गूँजता हुआ, विशाल हॉल में शब्दों एवं विस्मयोद्‌गारों की लहरों के माध्यम से फैलता जा रहा था, ऐसा कुछ भी दृष्टिगोचर नहीं हो रहा था जो सामान्य से हटकर हो। ओर्डाक ने बड़ा अच्छा भाषण दिया, उसने वास्तविक समस्याओं को छुआ, तालियाँ बीच-बीच में उसे रोकती रहीं, जब वह मतलब की बात पर आता, जब जीवन के महत्त्वपूर्ण प्रश्नों को छूता। राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार वह सब कर रहा था जो उसके बस में था, जिससे वह भीड़ को खुश कर सके, अपना बना सके, सम्मोहित कर सके और बदले में अपने लिए उनका राजनैतिक विश्वास प्राप्त कर सके। इसलिए वह पूर्व राष्ट्रपति की खुलकर निन्दा कर रहा था, कांग्रेस की आलोचना कर रहा था, सिनेटरों को बुरा-भला कह रहा था, प्रचार-प्रसार के माध्यमों, कुछ कॉर्पोरेशनों, कम्पनियों, वित्तीय ढाँचों को गालियाँ दे रहा था, जिन्होंने पृथक्-पृथक् एवं संयुक्त रूप से अपना कर्तव्य पूरी तरह नहीं निभाया था, कुछ कम दिया था जनता को, अपनी आय को छिपाया था, लोगों के लिए भलाई के काम नहीं किये थे, और उसने वादा किया कि वह यह सब कमियाँ

दूर करेगा, लोगों को बहुत कुछ देगा। भाषण का ख़ास तौर से यह भाग बहुत अच्छा बन पड़ा, पूरा हॉल उत्तेजित हो उठा, इस पर ओर्डाक का मुख चमकने लगा, वह अपनी ही नजरों में महान् बन गया, भीड़ ने भी ऐसा ही कुछ सोचा। यह थी सफलता।

रॉबर्ट बोर्क बड़े ध्यान से ओर्डाक पर नज़र रखे हुए था और यह कल्पना करने का प्रयत्न कर रहा था कि कल की उनकी टेलीफ़ोन पर हुई बातचीत उसे कितनी याद है। नहीं, अभी तक ओर्डाक ने अन्तरिक्ष पादरी के पत्र के बारे में एक भी शब्द नहीं कहा था। शायद यह ठीक ही था, शायद इतनी बड़ी राजनीतिक सभा में उस विषय को छूना उचित नहीं था। शायद ओर्डाक का उद्देश्य था जनता को दैनन्दिन जीवन से जुड़ी वास्तविक समस्याओं के घने जंगल में ले जाना, उनका दिल बहलाना और इसी में सारी समय सीमा समाप्त कर देना।

कारण चाहे जो भी रहा हो फ़िलोफ़ेइवाले क़िस्से तक ओर्डाक भीड़ को न ले जा सका। पहला ही प्रश्न हॉल में माइक्रोफ़ोन पर इसी बारे में पूछा गया :

"मिस्टर बोर्क" खनखनाती आवाज़ में एक महिला ने पूछा—"मेरा नाम ऐन्ना स्मिथ है, मैं स्कूल में अध्यापिका हूँ। क्या आप बताएँगे कि अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेइ द्वारा भेजे गये और ट्रिब्यून में छपे पत्र के बारे में आपका क्या ख़याल है?" महिला माइक्रोफ़ोन लिए बीच रास्ते में खड़ी थी, तनी हुई और उत्तेजित। हॉल में लोग मानो हिचकोले खाने लगे, जैसे जहाज़ के डेक पर अचानक एक शक्तिशाली लहर ने उन्हें धकेल दिया हो। एक शोर-सा उठा और जवाब की अपेक्षा में थम गया। यह वही क्षण था जिसे भाग्य को मोड़ देनेवाला क्षण कहा जाता है।

"हाँ, माननीय ऐन्ना स्मिथ," ऑलिवर ओर्डाक ने कुछ देर बाद, अपने आप में सिमटते हुए कहा, "उसके चेहरे का रंग बदल गया था, मैंने वह दस्तावेज़ पढ़ा है और उसके बारे में बहुत सोचा भी है। मैं छिपाऊँगा नहीं, साफ़-साफ़ कहूँगा कि इस सभा में यह प्रश्न उठाया जायेगा इसकी मुझे उम्मीद थी, हालाँकि उसका चुनावपूर्व प्रचार से कोई ताल्लुक़ नहीं है। मगर जब बात निकल ही आई है तो आदरणीय मतदाताओ, मैं कहता हूँ कि जो चीज़ आपको परेशान कर रही है, उसमें मैं भी दिलचस्पी ले रहा हूँ। ख़ास तौर से इसलिए कि यह सवाल सबसे सम्बन्धित है। इस बारे में मैं यह कहना चाहता हूँ कि," ओर्डाक ने आगे कहा, "मैं इस तरह की समस्याओं

पर, जो राजनीति से कोसों दूर हैं, ध्यान नहीं देता। मगर मेरा ख़याल है कि पादरी की, या असल में आधुनिक प्रसिद्ध वैज्ञानिक की, खोज यह कहती है कि मानवजाति के लिए परीक्षा की घड़ी आ रही है। आह, हमारी अपने बारे में राय काफ़ी अतिशयोक्तिपूर्ण थी। आप सबने अख़बार पढ़ा है और समझ रहे हैं कि किस बारे में बात हो रही है। फ़िलोफ़ेइ के संकेतों को निकट आते ख़तरे की चेतावनी के रूप में देखना चाहिए। ऐसी है बात!"

टेलीविज़न के उपकरण इस दौरान हॉल का जायज़ा ले रहे थे, उपस्थितों के चेहरों के भाव पकड़ते हुए, उनके चेहरों को स्पष्ट एवं बड़ा दिखाते हुए, उनकी आँखों से छलकते तनावपूर्ण इन्तज़ार को स्थिर बना रहे थे। रॉबर्ट बोर्क परदे के सामने मानो बुत बन गया था, उसे बड़ा अफ़सोस हो रहा था कि उस क्षण वह हॉल में मौजूद नहीं था। क्या ओर्डाक लोगों को विश्वास दिला पायेगा?

"तो किया क्या जाये?" ख़ामोशी को तोड़ते हुए दुबारा शिक्षिका ने पूछ लिया। उसके प्रश्न से ईमानदारी और बदहवासी छलक रही थी।

"मेरा ख़याल है," इस पर ओर्डाक ने कहा, "कि हरेक को अपना निर्णय खुद लेना होगा," हॉल में बहरा कर देनेवाला शोर गूँज गया। "अगर बड़े पैमाने पर," ओर्डाक ने उन्हें शान्त करने की कोशिश करते हुए विवेचन करना आरम्भ किया, "यह समस्या उत्पन्न होती है, तो बेशक, ख़तरे की चेतावनी देनेवाली योजनाओं पर पहले से विचार करना होगा। ख़तरा सामाजिक स्तर का हो, जैसा कि फ़िलोफ़ेइ कहता है, या जैविक स्तर का, उन स्थितियों से निपटने के उपाय करने होंगे जो कसांद्रा भ्रूणों की जीवन को नकारने की प्रतिक्रिया के लिए ज़िम्मेदार हैं।"

"कृपया मुझे कहने दीजिए," एक और स्त्री स्वर गूँजा। काले भूरे रंग की, काले बालोंवाली, कानों में चमकीले इयररिंग, खुली कॉलरवाला पीला ब्लाउज़ पहने एक महिला बड़े आत्मविश्वास के साथ कुर्सियों की क़तारों के बीच रखे माइक्रोफ़ोनों में से एक के निकट आकर बोली। "मैं ख़ामोश नहीं रह सकती, और हम सबको भी चुप नहीं रहना चाहिए"—उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाते हुए कहा, "हमारा जीवन हमारी बस्ती में, बड़ा कठिन है। मगर हम हमेशा जीते रहे, बच्चों की कामना करते हुए, उनके जन्म पर खुशियाँ मनाते। कोई इस में दख़ल न दे! उसे क्या पड़ी है, उस अन्तरिक्ष पादरी को? वह मेरा पीछा क्यों करे? मेरी निजी ज़िन्दगी में दख़ल क्यों दे? मैं इस पर कड़ा विरोध प्रकट करती हूँ।"

हॉल में दुबारा शोर उठा और उपस्थितों में अनेक ने सहमति में सिर हिलाये, कुछ लोग अपने स्थान से उठ खड़े हुए और हाथ हिला-हिलाकर समर्थन करने लगे।

ओर्डाक ने उस काली-भूरी मुलेट्टो महिला को शान्त करने का प्रयत्न किया; "हाँ, मैं आपकी बात समझ रहा हूँ, मैडम, मगर कसांद्रा के दाग़ की उत्पत्ति हम पर तो निर्भर नहीं करती। हमें इस तथ्य पर नज़र डालनी चाहिए कि यह वास्तविकता है।"

"अगर भावी राष्ट्रपति के मंच से इस अन्तरिक्ष पादरी की दलाली करनी हो तो और बात है। वह यहाँ आये और हम महिलाओं को बताये कि हमने कैसे आसमान का अपमान किया है, जिसकी वजह से वह वहाँ से हमें तंग कर रहा है, पूरी दुनिया की बेइज़्ज़ती कर रहा है!" महिला रुकने का नाम ही न ले रही थी, अपने चमचमाते कर्ण आभूषणों को तेज़ी से हिलाती, अपने चारों ओर, अपने समर्थन में, विरोध की एक लहर उठाने में वह सफल हो गई। शायद वह घर पर भी ऐसे ही नाटक करती होगी, या शायद उसका न तो कोई घर था, न ही पति "कितना दुर्भाग्य है," रॉबर्ट बोर्क अपने आप से बड़बड़ाया, "कितनी करुणाजनक है यह भटकाव! वह कितना कष्ट उठा रही है, उसकी बात भी समझनी चाहिए।"

और वह महिला और भी अधिक तैश में आकर कहे जा रही थी, "आपके लिए विवेचन करना, उसे महान् वैज्ञानिक कहना आसान है। उसने हमारी आँखें खोल दी हैं! मेरे लिए तो यह अन्तरिक्ष वाली चीज़—निकम्मी है!" वह चीख़ी, आँखों से, हावभाव से आग बरसाती।

इन शब्दों के साथ ही भिनभिनाता हॉल मानो बुत बन गया, एक क्षण के लिए भीषण सन्नाटा छा गया। किसी ने उसे खींचा नहीं, किसी ने सामाजिक नियमों के अन्तर्गत अपने आप पर काबू पाने के लिए नहीं कहा। स्वयं ऑलिवर ओर्डाक भी उसे कुछ नहीं कह पाया। उसने खुद को बड़ी दयनीय स्थिति में पाया। और इसके बाद वह नाटक हुआ जिसने अमेरिका में उस क्षण टेलीविज़न के पास बैठे अनेक लोगों को दहला दिया।

"देखिये मुझे कुछ भी छिपाना नहीं है। सुनिये, देखिये, मैं क्या करूँ?" तेज़-तेज़ साँसें लेते हुए वह महिला चीख़ी और उत्तेजना से उसने अपने माथे पर उँगली गड़ाई, "पिछले कई दिनों से मेरे माथे पर यह आफ़त छाई है, धब्बा, कसांद्रा दाग़, जैसा कि उस अन्तरिक्ष शैतान ने इस घिनौनी चीज़ का नाम रखा है!, और टेलीविज़न के परदे पर उसका चेहरा स्पष्ट दिखाया गया,

और उस क्षण उस महिला के माथे पर वह दुष्ट लाल दाग़ साफ़-साफ़ दिखाई दिया, एक लय में थिरकता, जैसे ख़तरे का निशान। "मैंने क्रीम और पाउडर उस पर पोता"—उसने अपने थरथराते होठों पर हथेली रखकर कहा—"कुछ फ़ायदा नहीं हुआ।" नहीं जाता। न दिन में न रात में! और पता चलता है कि मैं अन्तरिक्ष के उस दुष्ट के अधिकार में हूँ? और पता चलता है कि वह मेरी आँखों में उँगलियाँ गड़ाकर कहता है; देखो, देखो, तुम्हारी सन्तान तुम्हारे ही ख़िलाफ़, अपनी माँ के ख़िलाफ़, ज़िन्दगी के ख़िलाफ़, सन्देश भेज रही है, कह रही है कि उसे मार डालो! पता चलता है कि वह जन्म नहीं लेना चाहती, वह जीने से डरती है? यही पता चलता है न? और जीवन के प्रति तिरस्कार उसमें किसने भरा, कौन उसे मृत्यु की ओर धकेल रहा है, उस अजन्मे जीव को, कौन दुनिया से मुँह मोड़ने पर विवश कर रहा है? मेरे निजी जीवन में कौन दख़ल दे रहा है? किस अधिकार से मुझे उन भयानक, अदृश्य ज़ोन्दाझ किरणों का निशाना बनाया जा रहा है? हम यहाँ बैठे हैं, और वह, जैसा कि हमें बताया गया है, वह महान् फ़िलोफ़ेइ, अन्तरिक्ष से अपनी किरणों से औरतों में कसांद्रा भ्रूणों की तलाश कर रहा है। हम पर नियन्त्रण कर रहा है। खुल्लमखुल्ला कह रहा है कि हम बेवकूफ़ हैं। और हम क्या करें? आप सोचते हैं कि मैं अकेली ऐसी हूँ? शायद इस हॉल में भी मुझ जैसी कई औरतें हैं जो अब तक यह नहीं जानतीं कि उनके माथे पर भी कसांद्रा दाग़ हैं। तो लोगो, बताइये क्या करूँ? मैं कैसे ज़िन्दा रहूँ? अपने गर्भ को नष्ट कर दूँ, क्योंकि वह जीवन से डरता है? मतलब, मेरा भविष्य, मेरा जीवन उसे भाते नहीं? या फिर मैं उसके लिए धरती पर स्वर्ग बनाऊँ? कैसे? मुझे तो खुशी ही होती! मगर मैं दुनिया को कैसे सुधारूँ? या मैं खुद को ही फाँसी लगा लूँ? और वह फूट-फूटकर रोने लगी, अपने बालों को खींचती, सिर पर हाथ मारती। आस-पास की पंक्तियों से कुछ लोग उठकर उसकी ओर दौड़े और उसे कन्धों से लिपटाकर बाहर ले गये।

और हॉल में फिर छा गई मौत की-सी ख़ामोशी। हज़ारों लोग जड़वत् बैठे रहे, आँखें झुकाये। सभी ऑलिवर ओर्डाक के बारे में एकदम भूल गये, जिसके कारण वे यहाँ एकत्रित हुए थे। टेलीविज़न के कैमरे भी मानो उसे भूल गये थे, वे दिखा रहे थे बैठे हुए लोगों के चेहरे, या फिर आसपास का वातावरण।

और परदे पर ओर्डाक केवल तभी प्रकट हुआ जब उसने यह कहने

के लिए मुँह खोला : मैं नहीं समझता कि यहाँ हम इन सभी प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ सकते हैं। शायद, विशेष रूप से...उसने आरम्भ किया ही था, कि हॉल में से एक आवाज़ ने उसे टोका।

"माफ़ कीजिए, मिस्टर ओर्डाक" दूर के एक कोने से एक पुरुष ने माइक्रोफ़ोन में कहा, "मैं कहूँगा कि आपने कोई बेवकूफ़ी भरी बात नहीं सोची है। हम आपके साथ हैं, मगर देखते हैं न, सभी इस हादसे से गुज़र रहे हैं। मैं खुद एक डॉक्टर हूँ और मुझे गहरा आघात पहुँचा है, मैं इस महिला का दर्द समझ सकता हूँ, वह भीषण तनाव की स्थिति में हैं, और न जाने ऐसी और कितनी महिलाएँ होंगी! अन्तरिक्ष से कोई भी ऐरा-ग़ैरा नत्थू ख़ेरा हमारे जीवन में कैसे झाँक सकता है, चाहे वह कोई भी हो? पहली बात, यह हमारे संविधान का उल्लंघन है। अब सवाल उठता है, हम एक प्रजातान्त्रिक देश में रह रहे हैं अथवा नहीं? हम अपनी मर्ज़ी के आप मालिक हैं या नहीं? मानव के अधिकारों का पालन कहाँ हो रहा है? निजी स्वतन्त्रता के अधिकार को कौन चुनौती दे सकता है? हमें किसी एक सिद्धान्त के अनुसार जीवन जीने के लिए कौन बाध्य कर सकता है, चाहे वह सिद्धान्त वैज्ञानिक मान्यता ही क्यों न हो? यदि मैं इसलिए इस संविधान को स्वीकार नहीं करता कि वह मेरे हित में नहीं है, तो किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि प्रयोगशाला की किसी प्रक्रिया को आज़माकर कोई विशेष जीवन पद्धति मुझ पर थोपे। मैंने फ़िलोफ़ेइ के पत्र को ध्यान से पढ़ा है। मैंने बहुत सोचा। और यहाँ, मैं आपसे सहमत नहीं हूँ, मिस्टर ओर्डाक, बावजूद इसके कि मैं आपकी बहुत इज्ज़त करता हूँ। और फ़िलोफ़ेइ के सुझावों का पालन करने में स्वयं को असमर्थ पाता हूँ। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, शायद वह सही हो, मानता हूँ, मगर व्यावहारिक स्तर पर नहीं, वह सही नहीं है। हम कोई प्रयोग के लिए लाये गये चूहे नहीं हैं।"

"सही है! जिओ! सही कह रहा है।" अनेक जगहों से आवाज़ें आईं। हॉल उफन उठा।

कैमरे चेहरों पर फिसलते रहे, कभी एक को तो कभी दूसरे चीख़ते हुए मतदाता को दिखाते रहे। एक क्षण के लिए किसी टेलीविज़न ऑपरेटर ने स्वयं ओर्डाक के चेहरे पर कैमेरा केन्द्रित किया। उसकी ओर देखने पर दया आ रही थी, डर भी लग रहा था। वह मंच पर पूरी तरह बदहवास खड़ा था, समझ नहीं पा रहा था कि क्या करे, यह वहशी भय कैसे रोके जो हॉल में फैलता जा रहा था। और इसी समय बोर्क को नज़र पड़ी 'सूप'

के रंग के उन धब्बों पर जो दुबारा ओर्डाक के चेहरे पर उभर आये थे, उसके अन्तर में उफनते मौन क्रोध के प्रतीक बनकर। ये 'सूप' के रंग के धब्बे जो पूरे चेहरे पर फैल रहे थे लाल-नीलाभ भूरे, गर्म और नम थे—दूर से, परदे पर, ऐसा ही प्रतीत हो रहा था। इस सबसे बोर्क को भी बहुत बुरा लग रहा था, पृथ्वी पर फैली बुराई का स्रोत स्वयं में ही देखने से निरन्तर इन्कार करनेवाले लोगों पर दुःख हुआ। हाँ, यह फ़िलोफ़ेड़ को न समझने की अगम्य, अविनाशी, दुर्दम्य इच्छा थी। बोर्क को ओर्डाक पर भी सचमुच दया आ रही थी, वह बड़ी अपमानजनक स्थिति में था। "ओह बुरा हुआ, नाकाम रहा, —बोर्क अपने हमप्याला दोस्त के लिए व्यथित होता रहा। ख़ास बात यह है कि उसका मनोबल न टूटे। काश, वह हॉल में अपनी बात दुबारा कहता, उन्हें विश्वास में लेता। तब वह अपनी पूर्वस्थिति को प्राप्त कर लेगा। मगर क्या वह ऐसा कर सकेगा? हे भगवान्, कैसी विडम्बना है। हमें दोषी ठहराया गया है, हम दोषी नहीं हैं, मगर हम पर अन्धेपन का दोष लगाया जा रहा है जबकि इस बात का सम्बन्ध सीधे हम से ही है। बेचारा फ़िलोफ़ेड़, काश, वह इस समय हॉल में उपस्थित होता!"

"मिस्टर ओर्डाक, मैं अपनी ओर से, और यदि अन्य मतदाता चाहें तो उनकी भी ओर से, विनती करता हूँ। इस बात को यूँ ही नहीं छोड़ना चाहिए!" शोर को दबाते हुए माइक्रोफ़ोन पर ऊँची आवाज़ में वह बोला, जो स्वयं को डॉक्टर कह रहा था,"किसी को भी कोई अधिकार नहीं है कि वह अमेरिका के नागरिकों पर किसी भी तरह के प्रयोग करे। इस अन्तरिक्ष पादरी का सम्बोधन पूरे मानव समाज से है, हुजूम से है, यह उसकी अपनी बात है, हमें उससे कोई मतलब नहीं। और हम—अमेरिकी हैं। हम प्रभुत्वसम्पन्न, सम्पूर्ण व्यक्तित्व हैं! संयुक्त राज्य की सीमा पर इस आक्रामक-विकिरण पर पाबन्दी लगाना चाहिए! काँग्रेस अपना मत प्रकट करे, हमारी संघीय इकाइयाँ अपनी नीति स्पष्ट करें!"

"सही है, बिलकुल ठीक है! निषेध करना आवश्यक है!" चारों ओर से लोग चीखे "पाबन्दी लगाओ!"

"शान्त हो जाइये, सज्जनो! प्लीज़ महिलाओ!" अपने माइक्रोफ़ोन से सूत्रधार व्यवस्था स्थापित करने के उद्देश्य से बोला। यह एक हृष्टपुष्ट व्यक्ति था, कीमती, बड़े-बड़े शीशों का ऐनक लगाये, पोमेड लगे बालों की बीच से माँग निकाले, अप-टु-डेट, मगर साफ़ नज़र आ रहा था कि उसके लिए भी परिस्थिति का यह नाटकीय मोड़ एकदम अप्रत्याशित था। वह

परेशान था, अपनी 'टाई' को बार-बार खींच रहा था, "माइक्रोफ़ोन पर बारी-बारी से बोलिए, प्लीज़!" उसने विनती की—"मैं आपको मौक़ा दूँगा, सिर्फ़ एक के बाद एक, प्लीज़!"

मगर तब तक काफ़ी देर हो चुकी थी। माइक्रोफ़ोनों के निकट भीड़ इकट्ठी हो गई थी, हर कोई शीघ्रता से कुछ-न-कुछ कहना चाह रहा था, उस बात को बार-बार दुहराना चाह रहा था जिसे कई वक्ता कह चुके थे।

सूत्रधार के लिए सिर्फ़ यही बचा था, कि माइक्रोफ़ोनों के निकट कम-से-कम कुछ व्यवस्था, कुछ अनुशासन स्थापित करें :

—"पहला माइक्रोफ़ोन! दूसरे का नम्बर! प्लीज! तीसरा माइक्रोफ़ोन! पाँचवाँ, सातवाँ, दसवाँ..."

हर माइक्रोफ़ोन से मानो भाषणों की अदृश्य आग बरस रही थी, स्पष्ट रूप से यह माँग ज़ोर पकड़ती जा रही थी कि हमें फ़िलोफ़ेइ के विचारों और उसके आविष्कारों को ठुकराना है, उसे गर्दन से पकड़कर पृथ्वी की कक्षा से दूर फेंक देना है, न जाने कहाँ से अन्तरिक्ष में पैदा हो गया है दुनिया में आग लगानेवाला कुकर्मी, ब्रह्माण्ड पर आपत्ति ढानेवाला दुष्ट; और एक ने तो जो रूसी शरणार्थियों में से एक प्रतीत होता था, फ़िलोफ़ेइ को के.जी.बी. के जासूसों जैसी, अन्तरिक्षी जासूस की उपाधि दे दी जो गर्भवती महिलाओं की जासूसी करता था। दूसरे ने यह राय ज़ाहिर की कि फ़िलोफ़ेइ—एक रूसी एजेण्ट है, जिसे अन्तरिक्ष में रखा गया है और उसे अमेरिका को भीतर से नष्ट करने का दायित्व सौंपा गया है, समाज में आनुवंशिकी के बम का विस्फोट करने की ज़िम्मेदारी दी गई है; एक और व्यक्ति ने यह मत प्रदर्शित किया कि यह अन्तर्राष्ट्रीय माफ़िया का काम है जिसने आधुनिक समाज को नियंत्रण में रखने की यह विश्वव्यापी तरकीब ढूँढ़ निकाली है। जिसके जो जी में आता, वही वह कह रहा था, अनेक भयानक विचार प्रकट किये जा रहे थे। फिर बुराई और बेईमानी से सम्बन्धित कुछ प्रचलित शब्द भी कुछ परिवर्तन के साथ सुने गये, जिनके साथ 'अन्तरिक्ष' शब्द जोड़ा गया था, जैसे : अन्तरिक्षी शैतान, अन्तरिक्षी राक्षस, अन्तरिक्षी असंतुष्ट और किसी ने तो उसे अन्तरिक्षी फ़ाउस्ट तक कह डाला...।

मगर अधिकांश लोगों ने ईमानदारी से, आन्तरिक पीड़ा से, एकमत से फ़िलोफ़ेइ के विरुद्ध कहा कि हर हाल में उसके सामाजिक-जैविक आविष्कारों के भयभीत करनेवाले निष्कर्ष लोगों के मन-मस्तिष्क से निकाल फेंकने चाहिए और इसके लिए मानव जाति के इतिहास का सहारा लेना

चाहिए, जो सदियों से प्रगति कर रही है और समृद्ध हो रही है, बिना किसी 'कासान्द्रा दाग़' को देखे, जाने। यह काफ़ी मार्मिक और हृदयस्पर्शी हो गया जब ख़ास तौर से आँखों में आँसू भरे महिलाओं ने विनती की कि उनकी रक्षा की जाये, उन अनजानी किरणों के उनके व्यक्तिगत जीवन में प्रवेश को रोका जाये। भाषणों के दौरान यह भी माँग की गई कि संयुक्त राष्ट्र इस अन्तरिक्ष पादरी से निपटने की योजना बनाये, संयुक्त राष्ट्र में यह प्रश्न उठाया जाये जिससे मानवता की रक्षा के उपाय किये जायें।

ये दृश्य देखते हुए रॉबर्ट बोर्क को पीड़ा और अपमान का अनुभव हो रहा था। उसे बड़े दुःख के साथ विश्वास करना पड़ रहा था कि 'न्यू टेस्टामेण्ट' में वर्णित दुनिया के अन्त की भविष्यवाणी के पीछे निहित सत्य को उजागर करने का फ़िलोफ़ेइ का प्रयास—कि दुनिया का अन्त, जिसकी सृष्टि के दिन से ही प्रतीक्षा की जा रही है, किसी विपत्ति के फलस्वरूप नहीं होगा, जिसकी कल्पना करना कठिन नहीं था, बल्कि उसकी जड़ें मानव में ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी पनपती रही हैं, अन्तहीन चालाकियों एवं क्रूर पापों के फलस्वरूप कोई समझ नहीं पा रहा था। मानव मन के भीतर छिपा स्वाभाविक डर हर व्यक्ति के कथन से प्रकट हो रहा था, उस दण्ड की कल्पना करके, जो उसके द्वारा अनन्त काल से किये गये पापों के फलस्वरूप ईश्वर द्वारा प्रदत्त जीवन के सम्मुख अपराध करने के बदले उसे भुगतना पड़ेगा। उस जीवन के सम्मुख जो एक बार मिलता है जिसकी पुनरावृत्ति नहीं होती, हरेक को मिलता है एक दीर्घकाल के लिए न कि चिरकाल तक, समय और स्थान की एक निश्चित परिधि में सिमटा हुआ।

ऑलिवर ओर्डाक की ओर शान्त चित्त से देखना असम्भव था। बोर्क कल्पना कर रहा था कि कैसे ओडॉक अपनी ही नज़रों में गिर रहा है, समाप्त हो रहा है, और उसने स्वयं को दोष दिया कि वह घटनाओं के इस मोड़ की कल्पना क्यों नहीं कर सका हालाँकि उसने अपने तरीके से ओर्डाक को सावधान कर दिया था।

ओर्डाक बेवकूफ़ की तरह खड़ा था। लोग उसे भूल चुके थे, स्टेज पर फेंक चुके थे, जैसे इस सभा का उससे कोई लेना-देना ही न हो। सारे भाषण, सारे उद्‌गार केवल फ़िलोफ़ेइ से ही सम्बन्धित थे, केवल फ़िलोफ़ेइ ही, जो न जाने कहाँ बैठा था, अन्तरिक्ष की सीमा में, आकर्षण का केन्द्र बन चुका था, न कि ओर्डाक जिसके लिए ही इस सभा का आयोजन किया गया था। माइक्रोफोन पर कब्जा करके लोग दहाड़ रहे थे। कुछ कह रहे

थे फ़िलोफ़ेई से, न कि राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार से। और वह न जाने क्यों इस दौरान मंच पर ही बना रहा। उसके देखते-देखते ही सब कुछ हार में बदल चुका था। और वह सब, जिसकी तैयारी की गई थी, योजना बनाई गई थी मतदाताओं को बताने की, ओर्डाक की योजना के महत्त्व को समझाने की, सब बेकार चला गया। ओर्डाक की तस्वीरवाला गुब्बारा स्पोर्ट्स हॉल के गुम्बद के नीचे बेवकूफी से बग़लें झाँकता प्रतीत हो रहा था, मानो वह साबुन के फेन का बुलबुला हो। वह स्वयं भी अपमानित, निर्बल-सा पूरी तरह ध्वस्त हो चुका था। उसके सहायक एवं सलाहकार उसके निकट भागे, फुसफुसाकर उससे कुछ बोले, मगर वह असमंजस की स्थिति में स्टेज पर खड़ा हो रहा। उसकी आँखों से टपक रहा था गुस्सा, चेहरे पर दिखाई दे रहे थे सूप के रंग के धब्बे। यह पूरा विनाश था, समूचे देश के सामने पतन।

सभा की नदी किसी और ही दिशा में मुड़ गई थी। और कोई नहीं कह सकता था कि इस सबका अन्त कैसे होगा यदि अचानक डूबते के सामने तिनका न फेंका जाता। न जाने कहाँ से, पार्श्व से, एक खिलाड़ियों जैसा नौजवान उछलकर स्टेज पर आया, वह निश्चयपूर्वक संयोजक के निकट आया, जो अभी भी अपनी 'टाई' खींचते हुए बेकार ही भाषणों को एक क्रम देने की कोशिश कर रहा था, और उससे कुछ कहकर ज़बर्दस्ती उसके हाथ से माइक्रोफ़ोन छीन लिया। और हॉल को सम्बोधित करते हुए वह ज़ोर से बोला "कृपया मुझे इस अचानक आगमन के लिए क्षमा करें।" मैं एक घोषणा करना चाहता हूँ! यह बहुत ज़रूरी है।"

शोर थम गया। हॉल में कुछ देर के लिए चुप्पी-सी छा गई। एक भी क्षण गँवाना बेकार था।

"मेरा नाम एन्थोनी युंगेर है"—स्टेज पर अचानक टपक पड़े उस नौजवान ने अपना परिचय दिया।

"तो यह है एन्थोनी युंगेर! लाखों में एक नौजवान है"—रॉबर्ट बोर्क ने सोचा।

"मेरा नाम आपको कुछ नहीं बतायेगा," —यूंगेर बोला, मगर मैं भी वैसा ही मतदाता हूँ आपके क्षेत्र का, जैसे आप हैं। मैं विचार-स्वातन्त्र्य के अपने अधिकार का प्रयोग करना चाहता हूँ। साथ ही मैं मिस्टर ओर्डाक की टीम में उनका एक सलाहकार हूँ। कृपया ध्यान दीजिए। हमारी इस सभा का उद्देश्य था प्रेसिडेण्ट पद के उम्मीदवार से मुलाक़ात करना, न कि उन समस्याओं पर बहस करना जो अन्तरिक्ष से हम पर फेंकी गई हैं। इसलिए

हमारी चुनावपूर्ण बहस को ज़ारी रखना उचित होगा। फ़िलोफ़ेइ की समस्या के बारे में हम फिर कभी बातें करेंगे, क्योंकि इस महत्त्वपूर्ण घटना के बारे में अभी बहुत कुछ जानना और उस पर विचार करना बाक़ी है। इसलिए कार्यक्रम के अनुसार चलने का सुझाव देता हूँ। हम मिस्टर ओर्डाक से विनती करते हैं कि वे अपने निष्कर्षों के बारे में बतायें, और हम फ़िलोफ़ेइ से सम्बन्धित समस्याओं से उनका ध्यान नहीं हटायेंगे।"

यह बिलकुल समय पर उठाया गया क़दम था। एक लफड़ा रुक गया था। बोर्क को एन्थोनी यूंगेर के इस काम से प्रसन्नता हुई। उसने उसके बारे में कुछ ऐसी ही कल्पना की थी। और आगे हुआ, वह, जिसकी बोर्क समेत किसी ने भी कल्पना नहीं की थी।

ओर्डाक को उसका श्रेय देना ही पड़ा—उसने इस अवसर का लाभ उठाने में कोई क़सर न छोड़ी :

"हाँ, मैं अपनी बात जारी रखूँगा," उसने भूमिका बाँधते हुए कहा और उसकी आँखों में एक चमक दौड़ गई, उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि उसके भीतर कुछ हुआ है जिसने एक क्षण में उसे बदल डाला। उसने कुछ निश्चय किया। "हाँ, प्रिय मतदाताओ, मैं इसीलिए तो यहाँ खड़ा हूँ कि अपना भाषण ज़ारी रख सकूँ, जैसा कि एन्थोनी यूंगेर ने अभी-अभी कहा। मगर एक छोटा-सा सुधार करना चाहूँगा" वह एक क्षण रुका और श्रोताओं का मूल्यांकन करते हुए आगे बोला, "मैं फ़िलोफ़ेइ के बारे में बोलूँगा। हाँ, हाँ, उसी फ़िलोफ़ेइ के बारे में,"—उसने ज़ोर देते हुए कहा—"जो कुछ यहाँ कहा गया है माइक्रोफ़ोनों पर, उसी के आगे कहूँगा, अन्तरिक्ष से हम पर किये गये मनोवैज्ञानिक आक्रमण के सन्दर्भ में कहूँगा। हमारी आनुवंशिक स्थिति की कटु आलोचना के सम्बन्ध में कहूँगा। मैं इस बारे में इसलिए बोलूँगा क्योंकि मैं अपने मतदाताओं की राय से, जनता की राय से जी रहा हूँ। अभी हम सब यहाँ इकट्ठे हैं और मेरे लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। यहाँ माइक्रोफ़ोनों से आपने जो विचार प्रकट किये वे मेरे दिल के बहुत नज़दीक हैं। मैंने भी अन्तरिक्ष से हमारे अपने अधिकारों और हमारी आज़ादी पर किये गये आक्रमण के बारे में इसी तरह से सोचा। आक्रमण हुआ है हमारे अधिकारों पर, हमारी स्वतंत्रता पर जो अमेरिकी प्रजातन्त्र के लिए बहुमूल्य है। और मैं सहमत हूँ उस बात से, जो यहाँ कही गई है कि फ़िलोफ़ेइ अन्तरिक्ष से हमारे जीवन के नीचे एक सुरंग बिछा रहा है। मैं तो यह भी कहूँगा कि—चाहे अनचाहे—यह अन्त में हमारे प्रजातन्त्र के नीचे

बिछाई जा रही सुरंग है। विश्वास नहीं होगा, मगर है ऐसा ही। यह सुरंग बुरे उद्देश्य से, मानवता विरोधी उद्देश्यों से बिछाई जा रही है। और हमें फिर विश्वास करना पड़ेगा कि शैतान की चालों का सचमुच कोई अन्त नहीं होता। इस बारे में मैं आपको बताने जा रहा था, आरम्भ में कुछ सुयोग्य एवं प्रसिद्ध व्यक्तियों के विचार बताने के बाद, जिनसे बात करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। मगर अपने भाषण के दूसरे भाग तक जा ही न सका, फ़िलोफ़ेइ के पत्र के बारे में अपने विचार मैं बता ही नहीं सका, आप समझ रहे होंगे। जो कुछ भी माइक्रोफ़ोनों पर कहा गया है वह उससे बिलकुल मिलता-जुलता है, जो मैं कहना चाह रहा था। यह ख़ास बात है, इससे मुझे अपनी स्थिति को मज़बूत करने की शक्ति मिली है। मैं आपकी राय से पूरी तरह सहमत हूँ कि आधुनिक समाज पर अभूतपूर्व आपत्ति मँडरा रही है। उस आदमी की यह चाल जो स्वयं को पादरी फ़िलोफ़ेइ कहता है देखने में तो आनुवंशिक खोजों की ओर इशारा करती है, मगर वास्तव में यह है एक आक्रमण; हमारी आत्मा का, उस ऐतिहासिक विश्वास का उत्पीड़न है जो हम अपने आप पर और हमारी सभ्यता पर करते आये हैं। और, ध्यान दीजिए, यह आक्रमण न केवल अन्तरिक्ष की ऊँचाइयों से हो रहा है, बल्कि फ़िलोफ़ेइ ने विभिन्न व्यक्तियों में अपने सहयोगी भी पृथ्वी पर ढूँढ़ लिए हैं। ये वे ही लोग हैं जिन्हें विज्ञान के क्षेत्र में और समाज में मान सम्मान प्राप्त है। तो, बात ऐसी है और ये लोग, फ़िलोफ़ेइ के साथ-साथ, उस निश्चित घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब वह अपने अन्तरिक्ष को सर आँखों पर बिठाकर उसके नाम से पृथ्वी पर अराजकता फैला सकें, हमारी समग्रता; सम्पूर्णता में सन्देह के बीच बोयें, और ख़ासतौर से—हमारी महिलाओं को कलंकित करें, उन पर उन शैतानी दाग़ों—कसांद्रा के दाग़ों की मोहर लगाकर। ज़रा सोचिए—कसांद्रा का, दुःखों और दुर्भाग्यों की भविष्यवाणी करनेवाली का, दाग़! नाम भी यूँ ही नहीं रखा है। कितनी धूर्तता का, कैसी बेईमानी का प्रतीक है। तो आइये, सावधान रहें। पूरे देश को सतर्क रहना होगा। फ़िलोफ़ेइ के हमख़याल शिक्षाविदों के वेष में प्रचार-प्रसार के माध्यमों से लोगों के दिलो दिमाग़ पर प्रभाव डालने के लिए तैयार बैठे हैं, उन्हें अन्तरिक्ष के उस बनावटी भविष्यवेत्ता पर विश्वास करने के लिए मज़बूर करनेवाले हैं। मैं ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं कर रहा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यह मानवता के विरुद्ध षड्यन्त्र है। बिलकुल यही बात है। बस यही मेरे लिए चिन्ता का विषय है, आदरणीय मतदाताओ।"

हॉल को शायद इसी बात का इन्तज़ार था। राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के भाषण से सम्मोहित लोग बैठे-बैठे उसे एकटक निहारते रहे। जो कुछ भी ऑलिवर ओर्डाक ने कहा था उसका एक-एक शब्द उनके दिल को छू गया था। उस क्षण स्पोर्ट्स हॉल अल्फ़ा बेसबॉल में एकत्रित लोग एक सम्मिलित साँस ले रहे थे, एक आह्वान को—ऑलिवर ओर्डाक के एक-एक शब्द को ध्यान से सुन रहे थे। निःसन्देह यह उसकी विजय थी। सबके सामने पराजित होते ओर्डाक की यह गरिमामय जीत थी। उसने विजयपथ पा लिया था, उसने सही-सही चाल चली थी, लोगों को चकमा दिया था, बिना किसी त्रुटि के अपनी युद्धनीति को बदल दिया था, और अब उसे परिणाम का इन्तज़ार था।

और स्वयं ओर्डाक वह नहीं रह गया था। जैसे मंच पर एक बिलकुल अलग ही व्यक्ति खड़ा था। यह देखते ही कि उसके शब्द उपस्थित लोगों पर इच्छित प्रभाव डाल रहे हैं, ओर्डाक के हौसले हर वाक्य के साथ बुलन्द होते गये। यह अत्यन्त विरल स्थिति थी। अतीव प्रसन्नता की, अतृप्त सफलता की जिसे शब्दों में बाँधना असम्भव है—शब्दों को प्रकट करने की, उन्हें साकार करने की विशेष स्थिति थी; उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसके शब्द मुख से निकलते ही आस-पास के लोगों में समाते जा रहे हों, ख़ासतौर से उत्तेजनापूर्वक देखती महिलाओं में और वे सब—स्त्री और पुरुष—बग़ैर किसी भेदभाव के, उसके शब्द आत्मसात् करते जा रहे थे, और यही स्थिति उसे ऐसी शक्ति प्रदान कर रही थी मानो कोई घोड़े का बच्चा ज़ोर से हिनहिनाते, जोश में फुनफुनाते, अपने ही झुण्ड की किसी घोड़ी की ओर भाग रहा हो, हर शब्द इस उफनते जोश को बढ़ा रहा था और पूर्वाभास दे रहा था उस सत्ता के निकट होने का, जो इतनी प्रिय थी, मगर अभी तक प्राप्त न हो सकी थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो उसके भीतर की, अपने समान लोगों पर शासन करने की इच्छा, जंगली जानवरों के समान अपने से भयभीत, अपने अधीन रहनेवालों को कभी दूर न होने देने की प्रबल इच्छा, उसमें जाग्रत हो रही थी। मगर सत्ता के इस हनीमून की राह अनेक नदियों के पार थी, जब शब्द सैनिक टुकड़ी बनाते हुए दूसरे किनारे पर स्थित बुर्ज़ पर आक्रमण करने निकलें हो, यहाँ तात्पर्य था फ़िलोफ़ेइ के विचारों और अभी तक अज्ञात उसके समान विचार रखनेवालों से, जिनके बारे में वह हाथ हिला-हिलाकर उपस्थित जनसमुदाय को संकेत दे चुका था

उन्हें उकसा चुका था जिससे वे उसके साथ मिलकर उनके विरुद्ध युद्ध का ऐलान करें।

ओह, यह ऑलिवर ओर्डाक की विजय का क्षण था। सभी एक मत से उससे खुश थे, सिर्फ़ एक को छोड़कर जो मंच के निकट खड़ा-खड़ा टेलीविज़न के परदे पर कई बार झाँक चुका था। एन्थोनी यूंगेर स्टेज के किनारे पर गठरी बना बैठा था, सिर लटकाए, मानो पत्थरों की बौछार से अपने आपको बचा रहा हो, उसके मज़बूत हाथों की नसें फूल गई थी जो टेलीविज़न पर साफ़ नज़र आ रही थीं, ज़ाहिर है वह अपने आप में नहीं था।

इस बीच ऑलिवर ओर्डाक हमले की तैयारी कर रहा था, अपनी बात इस तरह कह रहा था जिससे उसका भाषण सुन रहे हॉल के भीतर और हॉल की सीमा से परे सभी व्यक्ति एकजुट होकर उसे अपनी इच्छा का प्रतीक बनायें और सफलता सुनिश्चित करें, उसे दृढ़ बनायें। उसके लिए यह महत्त्वपूर्ण घड़ी थी, जैसे वह आलिंगन कर रहा हो। चुम्बन ले रहा हो, शब्दों से फुसला रहा हो, किसी अभिसारिका को, जो स्वयं को उसे समर्पित करने आई हो और इसलिए आवश्यक था कि बिना किसी ग़लती के अविलम्ब आगे बढ़ा जाये।–"जब मैं हमारी जागरूक रहने की आवश्यकता की बात करता हूँ,"–उसने 'अल्फ़ा बेसबॉल' में एकत्रित लोगों पर पैनी दृष्टि डालते हुए कहा, "तब मैं समाज के हितों से प्रेरित होकर कहता हूँ जिससे हम उस अनजाने अन्तरिक्षीय दुस्साहस के शिकार न बनें। समस्या विश्वस्तर की है और साथ ही सभी को प्रभावित कर रही है, अंशतः, यहाँ चुनावपूर्व सभा के लिए आये व्यक्तियों को, स्वयं को फ़िलोफ़ेड के इस ग्रह पर किये जा रहे उन प्रयोगों से कैसे बचाया जाये, जो मनुष्य के आनुवंशिक कोष को कलंकित करने की, उसे नष्ट करने की नीयत से किये जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य समाज में आतंक और भय उत्पन्न करना है, हमारे भीतर उपस्थित जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण को समाप्त करना है।"

"यह नहीं होगा!"–हॉल में क्रुद्ध आवाजें गूँजी, "हम ऐसा नहीं होने देंगे।"

"मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ," ऑलिवर ओर्डाक ने आगे कहा, "और इसके लिए मैं अपनी पूरी ताक़त लगा दूँगा। किसी के भी सामने नहीं रुकूँगा। मगर इस अन्तरिक्ष से आई विपत्ति को और पृथ्वी पर फ़िलोफ़ेड के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलनेवालों को निष्प्रभ, निष्क्रिय कैसे बनाया

जाये जो वातावरण को ज़हरीला बना रहे हैं या सीधे-सीधे कहूँ तो—पानी को गन्दा कर रहे हैं? जब सवाल हो व्यक्तियों एवं जातियों के भविष्य का तो मुझे स्वयं को सज्जन, जेंटलमैन के रूप में प्रस्तुत करने का कोई शौक नहीं है, जो आम राय की परिधि में क़ैद हो। फ़िलोफ़ेइ के 'चमचे' यह जान लें कि हम उनसे कभी सहमत नहीं हो सकते। ख़ास तौर से जब आनुवंशिकता को जाल में फँसना हो तो हम उनका अनुकरण नहीं करेंगे, चाहे वे कितने ही अतिबुद्धिमत्तापूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करें। व्यक्तिगत रूप से मैंने इस बारे में लम्बी बातचीत की थी एक भविष्यवेत्ता से, एक ऐसे व्यक्ति से, जो वैज्ञानिक क्षेत्र में जाना-माना है, पूरी दुनिया में उसका नाम है, मगर इस बात में वह अन्तरिक्ष पादरी का पक्षधर है, उसके आदर्शों का समर्थक है। भूतपूर्व सोवियत संघ में उन नौजवानों को जो पूरी निष्ठा एवं सत्य से नेता की सेवा करते थे और जिन्हें उसके लिए जीवन देने का सौभाग्य प्राप्त होता था, उन्हें, अगर मैं ग़लत नहीं हूँ तो, 'कोम्सोमोल' कार्यकर्ता कहा करते थे। फ़िलोफ़ेइ का यह सहायक उन्हीं के समान है, हालाँकि उसकी उम्र काफ़ी बड़ी है, वह हमारे विश्वविद्यालय में काम करता है और हमारे शहर के उपनगरों में से एक में रहता है,—उसका नाम है रॉबर्ट बोर्क!"

एक क्षण के लिए सन्नाटा छा गया, उपस्थित लोगों की साँस रुक गई और फिर फुसफुसाहट फैल गई, "रॉबर्ट बोर्क! रॉबर्ट बोर्क! यह रॉबर्ट बोर्क है! कोई रॉबर्ट बोर्क है!"

"तो ऐसी बात है, सम्माननीय मतदाताओ! रॉबर्ट बोर्क के वैज्ञानिक निष्कर्षों को कितने आदर से सुनने की मैंने कोशिश की, उससे भी ज़्यादा कोशिश की मैंने उसका ध्यान इस ओर आकर्षित करने की, कि जीवित लोगों के भविष्य को अनदेखा नहीं किया जा सकता, और फ़िलोफ़ेइ, चाहे उसके वैज्ञानिक लक्ष्य कुछ भी हों, हमारे जीवन में विनाशकारी के रूप में घुस-पैठ कर रहा है, मगर मैंने देखा कि यह आदमी तो फ़िलोफ़ेइ से भी दो क़दम आगे है। देख रहे हैं न कि किन लोगों के अन्तर में, वैज्ञानिक मुखौटे के पीछे, दुनिया का पाप छिपा हुआ है। रॉबर्ट बोर्क की दृष्टि में, पड़ोस में रहनेवाले सीधे-सादे आदमी के भविष्य की अपेक्षा अपनी दार्शनिक बकवास, ब्रह्माण्ड से सम्बन्धित उसके विचार, जिनसे वह अपने साथ बातचीत करने वाले एवं विरोधी के दिमाग़ को कुछ कर देता है, अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इस सीधे-साधे आदमी को उसकी समस्याओं एवं दुखों समेत रॉबर्ट बोर्क अनदेखा कर देता है, उसे फ़िलोफ़ेइ की शिक्षा का शिकार बनाता

है, जो मानव-जाति की प्रजनन क्षमता को लुंज-पुंज कर रहा है, हमारा भविष्य हमसे छीन रहा है, चाहे कितने ही वैज्ञानिक स्पष्टीकरण इस सम्बन्ध में क्यों न दिये जायें। रॉबर्ट बोर्क सनकी है, दिलोदिमाग़ से फ़िलोफ़ेड के साथ है और उसकी सेवा करने को उसी भाँति तत्पर है जैसे कोई शैतान की सेवा करता है।"

"मगर, माफ़ कीजिए मिस्टर बोर्क! यह तो आपकी व्यक्तिगत बातचीत थी!"—एन्थोनी यूंगेर जो दौड़कर संयोजक के माइक्रोफ़ोन के निकट आ गया था, स्वयं को रोक न सका। उसका चेहरा विवर्ण हो गया था। वह पूरा पीला पड़ गया था—"व्यक्तिगत बातचीत को आखिर आप जनता की अदालत में कैसे ला सकते हैं?"

"मुझे बोर्क से हुई बातचीत को रहस्यमय नहीं बनाना है,"—बिना विचलित हुए ओर्डाक ने कहा। "अगर व्यक्तिगत वार्तालाप मानवता के भविष्य से सम्बन्धित हो, यदि रॉबर्ट बोर्क जैसे लोग फ़िलोफ़ेड के कार्य-कलापों की प्रशंसा करते हो, उन्हें उचित ठहराते हों और उसके सिद्धान्तों को लोगों के मस्तिष्क में बेरोक-टोक प्रवेश कराने का प्रयत्न करते हों, उसके लिए समूचे विश्व को नियन्त्रित करने का मार्ग खोल देते हों तो मैं भी शिष्टाचार का पालन क्यों करूँ?"

तालियों की गड़गड़ाहट से 'अल्फ़ा बेसबॉल' गूँज उठा। टेलीविज़न ऑपरेटर हॉल पर कैमरे दौड़ा रहे थे। चेहरों के भाव पकड़ते, जिससे ऑलिवर ओर्डाक की इस अप्रत्याशित जीत की घड़ियों को क़ैद कर सकें।

एन्थोनी यूंगेर ने कुछ कहने की कोशिश की, "मिस्टर बोर्क, आपको कोई अधिकार नहीं है कि..."

मगर हॉल ने उसे अपनी बात पूरी नहीं करने दी। सब लोगों ने एक साथ ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाना आरम्भ कर दिया ताकि उसके शब्द शोर में डूब जायें, वह आगे एक भी लफ्ज़ न कह सके, अपने ही स्थान पर नष्ट हो जाये।

मगर, फिर भी, यूंगेर कुछ कहता ही रहा, तालियों से उसका अपमान करनेवाली जनता से चीख़-चीख़ कर बात करता रहा, बदहवासी से हाथों को हिलाता रहा, इधर-उधर घूमता रहा, मगर इस सबने आग में घी डालने का ही काम किया, और सब चिल्लाने लगे, शोरगुल मचाने लगे जिससे यूंगेर को कोने में खदेड़ सकें : "ओर...डाक! ओर-डाक! ओर-डाक।"

और इसके बाद मानो किसी की आज्ञा से अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गये और ओर्डाक का नाम ले लेकर तालियाँ बजाने लगे :

"ओर-डाक! ओर-डाक! ओर-डाक... ।"

और इस तरह ओर्डाक का जादू चरम सीमा पर पहुँच गया। इतनी बड़ी राजनीतिक सफलता का सपना भी उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं देख सकता था। और उसे, देखने में साधारण, लगभग मरियल से, धब्बेदार, पक्षियों जैसे चेहरेवाले, गोवल्स की याद दिलानेवाले को, यह उत्तेजना सिर चकरानेवाली ऊँचाई पर, जादुई सफलता के आकाश में इतनी दृढ़ता से ले गई कि किसी के दिमाग़ में यह ख़याल तक नहीं आया कि इस समय ख़ुशी के मारे ओर्डाक को बेहोशी का दौरा पड़नेवाला है। मगर फिर भी उसने अपने आप पर क़ाबू पा लिया। कार्य आरम्भ हो चुका था, बस उसे पूरा करना बाक़ी था, सफलता को मज़बूत बनाना बाक़ी था। हॉल गूँजे जा रहा था : "ओर-डाक! ओर-डाक...!" उसने अपने आपको नियन्त्रित करते हुए तालियाँ बजानेवालों को और उपद्रवियों को इशारों एवं आभारयुक्त मुस्कान से ख़ामोश रहने को कहा और बोला :

"रॉबर्ट बोर्क के ज़िक्र से किसी ने अपमान महसूस किया है, तो क्या? सच पूछो तो, क्या उसे किसी ने रोका है? बोर्क यहाँ आये और जनता को विश्वास दिलाये कि स्थिति इसके विपरीत है, कि वह और अन्तरिक्षी फ़िलोफ़ेइ लोगों को, जनता को, देशों को, भावी पीढ़ियों को लाभ पहुँचाने की धुन में जल रहे हैं, इसका मुझे योग्य प्रमाण दें! इसकी स्वीकारोक्ति दें। प्लीज! भगवान् की दया से हम सर्वाधिक प्रजातांत्रिक देश में रह रहे हैं। मेरा ख़याल है कि बोर्क भी बिना किसी झिझक के अपना पक्ष प्रस्तुत करेगा। और यदि अचानक उसकी आँख खुल जाये, यदि वह फ़िलोफ़ेई को समर्थन देने के बारे में पुनर्विचार करे तो, शायद, अपनी सफ़ाई पेश करेगा, और, मुझे आशा है कि प्रायश्चित्त करेगा। जैसा चाहे, करे। सारे अमेरिकी अख़बार एवं पत्रिकाएँ तो उसकी सेवा में हैं ही, और क्या सिर्फ़ अमेरिकी पत्र-पत्रिकाएँ ही? अपने विचार प्रकट करें, रेडियो पर, टेलीविज़न पर? मगर मैं भी ख़ामोश न रहूँगा, सम्माननीय मतदाताओं, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैं भी सार्वजनिक प्रचार-प्रसार के माध्यमों में अपने लिए एक छोटी-सी जगह की गुज़ारिश करूँगा, इसलिए नहीं कि अपने भविष्य विषयक सिद्धान्तों से अपने समकालीनों को चकित कर सकूँ, बल्कि इसलिए कि मैं हर आदमी को यह समझाने की कोशिश कर सकूँ कि आग से खेलना, यानी कि फ़िलोफ़ेइ की शिक्षा से खिलवाड़ करना उचित नहीं और यह भी कि फ़िलोफ़ेइ और बोर्क पूरी दुनिया में आग लगाने जा रहे हैं। जिस क्षण से

मैंने बोर्क के विचारों में झाँका, मैं ख़ामोश न रह सका। उसके विचार काले और भयानक हैं, वह अदृश्य किरणों से हर जगह महिलाओं को विकिरित करने के विचार को समर्थन देना चाहता है और यह माँग करता है कि मानव जाति अपने पापों का प्रायश्चित्त करे। और यह सब फ़िलोफ़ेइ के नये धर्म का एक हिस्सा है, जिससे पारम्परिक धर्मों का दम घोंटा जा सके ताकि लोगों के दिलों और आत्माओं पर एकछत्र शासन किया जा सके। दुनिया के सभी धर्म भी सोचें कि उन्हें क्या करना है? आगे इसी के बारे में विचार करना है, इसी के बारे में लिखता और कहता रहूँगा। यह कहूँगा कि हमें समय रहते इन महान् वैज्ञानिक हस्तियों का सफ़ाया करना होगा—फ़िलोफ़ेइ का पृथ्वी की कक्षा से और बोर्क का धरती से। इस बारे में मैं सभी उपस्थित पत्रकारों के लिए घोषणा करता हूँ। सफ़ाया करना होगा क़ानूनी तरीक़े से, केवल उसी तरीक़े से, न कि किसी दूसरे तरीक़े से! ऐसे प्रयोगों पर विश्वव्यापी प्रतिबन्ध लगाकर। इस काम में मुझे आपके विश्वास और सहयोग की अपेक्षा है।"

तालियों का शोर गूँज उठा, सभी खड़े होकर दुबारा लगातार तालियाँ बजाने और शोर मचाने लगे, "ओर-डाक! ओर-डाक!" फिर से प्रसन्नता से शरमाते हुए ऑलिवर ओर्डाक ने यह स्वागत रोकने को कहा, "मैं आपके कुछ और क्षण लूँगा। जो कुछ मैंने कहा है, उसी को और स्पष्ट करने की दृष्टि से"...

और अचानक स्पोर्ट्स हॉल से प्रसारण रुक गया। परदा बुझ गया। किसी ने कँपकँपाते हाथ से टी.वी. बन्द कर दिया। यह जैस्सी थी। वह कब वापस लौटी, कमरे में कैसे आई, इतनी देर कहाँ थी—कहीं पास में ही बैठी थी और यह सब देखकर अपने स्थान से हिल नहीं पाई, मानो उसे लक़वा मार गया हो, या फिर, शायद अभी-अभी आई हो,—बोर्क को मालूम न था। खोखला, अपनी आँखों के सामने अपनी हत्या देख वह कुर्सी पर बैठा ही रहा, दूर कहीं शून्य में नज़रें गड़ाये।

"कितना कहेगा?...यह सब तुम देख कैसे सकते हो?—तीखी आवाज़ में, ज़ोर से जैस्सी ने पति से कहा। "बस! काफ़ी है।"

वह चुप रहा।

"और अध्ययन-कक्ष में भी टी.वी. न लगाना।"

उसने थरथराते हुए कहा —"अभी मैं सारे टेलीफ़ोनों के तार निकाल देती हूँ। सब भाड़ में जायें, शैतान ले जाये सबको, सबको, कोई भी न आये,

एक भी आदमी नहीं, एक भी टेलीफ़ोन नहीं। अभी टूट पड़ेंगे सब-के-सब फ़ोन पर, बिना समय गँवाये, सब, जिसने भी तुम्हारे ऑलिवर ओर्डाक का तमाशा देखा है! कितनी शर्मनाक बात! कैसी नीचता!"

बोर्क ख़ामोश रहा।

"तुम, चुप क्यों हो?"—जैस्सी उत्तेजना से चीख़ी, "इस तरह की बात ज़िन्दगी में कभी नहीं हुई!"

"धीरे प्लीज़,"—रॉबर्ट बोर्क ने विनती के स्वर में कहा, "तुम्हारे चीख़ने-चिल्लाने से कुछ भी नहीं बदलेगा।"

"और तुम्हारे चुपचाप रहने से तो और भी कुछ न बदलेगा!"

और वे दोनों ख़ामोश हो गये, मानसिक बोझ से दबे, व्यग्र, व्याकुल। खिड़कियों के बाहर अँधेरा उतर आया था। वो बेहतरीन शिशिर का दिन गुज़र चुका था, जो प्रकृति के कैनवास पर उतर आया था, चला गया अपने ही कोष में...जाते-जाते दर्द और उत्तेजना छोड़ गया...जाते-जाते नये दिनों का वादा कर गया, जो न जाने क्या लानेवाले थे...

"विश्वास नहीं कर सकती, जरा भी नहीं", काँपते स्वर में जैस्सी ने ख़ामोशी को तोड़ते हुए कहा, "मैं सोचती थी कि इस अविश्वसनीय समस्या पर कई वाद-विवाद होंगे, मगर इतनी नीचता और क्षुद्रता से तुम्हारे साथ बर्ताव करना!...अपने फ़ायदे के लिए इस तरह पूरी दुनिया के सामने कोई किसी को कैसे अपमानित, कलंकित कर सकता है? मैं इस नीच आदमी का ख़ून कर दूँगी। और वह अमेरिका का राष्ट्रपति बन सकता है? कहाँ है भगवान् ?"—जैस्सी फूट-फूटकर रो पड़ी।

बोर्क उठा और उसने गिलास में पानी डालकर पत्नी को दिया। वह पीने लगी, नीचे गिराते, दाँतों को गिलास की किनार से किटकिटाते।

"शान्त हो जाओ जैस्सी, और मेरी बात सुनो"—उसने कहा और पत्नी के सिर को सहलाना चाहा।

वह आगे को झुक गई; "नही सुनूँगी, किसी की बात नहीं सुनूँगी, और तुम भी, भगवान के लिए, मुझसे कुछ न कहना!" आँसुओं से उसका गला रुँध गया।

"ओह, माफ़ करना। मुझे कम-से-कम अपने पास तो रहने दो...माफ़ करना"...

पत्नी रोती रही। उसका पूरा शरीर थरथरा रहा था। हिचकियों के दर्द के मारे वह कुर्सी में गठरी बनी जा रही थी, मानो अचानक बूढ़ी हो गई

हो, उसके बाल सफ़ेद हो गये हों। इस बात को पहले कभी उसने महत्त्व नहीं दिया था, मगर अब, इस भयानक क्षण में इस पर उसने पीड़ा से ग़ौर किया।

और रॉबर्ट बोर्क कमरे में घूमता रहा, दायें-बायें, आगे-पीछे, मानो तूफ़ान में घूम रहा हो, मानो अपने घर पर न होकर किसी अज्ञात जगह पर घूम रहा हो। घूमते रहने से भी उसे डर लग रहा था और रुकने से भी, उसे भय था कि वह किसी खाई में न गिर जाये—यह, कोने से छिपकर किया गया अप्रत्याशित वार, उसे संज्ञाहीन बना रहा था।

एक बार टी.वी. पर बॉक्सिंग का मैच देखते हुए बोर्क हारे हुए बॉक्सर के बारे में बड़ी पीड़ा से सोचता रहा था। एक वार से नॉक आउट हो चुके, परास्त, पस्त हो चुके, चारों ओर एक अजनबी जैसी दृष्टि से देख रहे, उस बॉक्सर के दिल पर क्या बीत रही थी यही बूझने की कोशिश कर रहा था बोर्क। अब वह जान गया था कि कैसी भावना थी वह, क्या होता है पराजय का, अपमान का दर्द। अब वह समझ गया था कि आस-पास की दुनिया बाहर से स्थिर रहते हुए भी आदमी के भीतर, उसके अन्तर में, टूटती जाती है, उसकी नसों में, जो अपनी राह से सरक गई और दिमाग़ में रास्ते पर बहते बारिश के पानी के रेले जैसी सनसनाहट की आवाज़ कर रही हो; विचारों की अँधेरी कन्दरा में जो इन क्रोधित पानी के रेलों से धुल चुकी हो; ख़यालों की उलझन में और उनकी अस्त-व्यस्तता में।

वह बड़ी देर तक घूमता रहा, देर तक और भारी मन से, मगर ख़याल, जिन्हें दुर्भाग्य ने खदेड़ दिया था, उस अँधेरी कन्दरा में, अतीत के उन खण्डहरों में भटकते रहे वह जो एक घण्टे पहले तक अपना आप था अपना स्वयं था, अपने समान वह सत्य था, जो उसके व्यक्तित्व को परिभाषित करता था, अब यह सब एकदम उखड़ गया था, ऑलिवर ओर्डाक एवं उसके द्वारा बहकाये लोगों द्वारा कुचल कर जला दिया गया था। वह भौतिक रूप से इस रौंदे जाने, कुचले जाने और जलाये जाने का अनुभव कर रहा था। शरीर उस आग में जल रहा था। लोगों के सामने इस तरह खुल्लम-खुल्ला जीवन में उसको कभी भी कुचला नहीं गया था। और तभी अचानक एक प्रश्न उभरा—आगे क्या? या तो इस उन्मादपूर्ण शक्ति के सामने नतमस्तक हो जाये, जिसने उसके स्व को यूँ सबकी नज़रों के सामने लांछित, अपमानित किया था, और दूसरी कोई राह न देखकर अपने माथे पर पिस्तौल की गोली मार ले—उस क्षण वह इसी रास्ते के बारे में सोच रहा था—या फिर पूरी

ताक़त इकट्ठी करके संघर्ष के लिए तैयार हो जाये, उसमें विश्वास रखते हुए, जिसमें सदा से लोग विश्वास करते आये हैं, ख़ासकर विपत्ति के, हार के क्षणों में—न्याय की, सत्य की, वास्तविकता की अन्तिम विजय में। उसने कभी कल्पना भी न की थी कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा, जब उसे अपने आप से कठोरता से यह दोहरे ख़यालवाला वाक्य कहना पड़ेगा : होना या न होना, जीवन या मृत्यु! इन क्षणों में उसका एक और दुखद सत्य से साक्षात्कार हुआ—जैस्सी के लिए उसकी दुर्घटना व्यक्तिगत दुर्घटना से कहीं अधिक है, एक वफ़ादार पत्नी के लिए पति की दुर्घटना के अर्थ से कहीं अधिक है। इस विचार से मन और अधिक बोझिल हो गया। और कोई ऐसा उपाय न था, कोई ऐसा शब्द भी न था जो उसके दुःख को हल्का कर सके। वह परिस्थिति की नज़ाकत को, घटना के अर्थ को अच्छी तरह पहचानती थी।

"रॉबर्ट"—जैस्सी ने सिसकियाँ लेते हुए कहा।

"हाँ जैस्सी, कुछ कहना चाहती हो?"

"रॉबर्ट, मैंने अभी-अभी सोचा...," उसने बोलना शुरू किया मगर फिर चुप हो गई। वह इन्तज़ार करता रहा, "प्लीज़, बाथरूम से मेरे लिए तौलिया ले आओ।"

बोर्क तौलिया ले आया। उससे चेहरा पोंछते हुए जैस्सी अपने आपको संयत कर रही थी, आँसुओं की झड़ी को रोक रही थी।

"तुम क्या कहना चाह रही थीं जैस्सी?"

"रॉबर्ट, मैं यह सोच रही थी कि आज तुम पर और फ़िलोफ़ेइ पर जो गुज़री है, हालाँकि वह अन्तरिक्ष में है,—वह आदर्शवाद के साथ घटनेवाली त्रासदियों में से एक है। मुझे तुम्हारे प्रिय सुकरात की याद आई। जैसा कि तब और उसके बाद, और लम्बा समय बीत जाने के पश्चात् भी हुआ था, हमेशा एक आदर्शपूर्ण काल्पनिक समाज का भीड़ द्वारा विरोध किया जाता रहा है। कोई एक सिर पर एक थैला दे मारता है और सबके सब एक ढेर में लुढ़क जाते हैं।"

"हो सकता है, ऐसा ही हो"—उसने संयम से कहा।

"ऐसा ही है, या ऐसा नहीं है या लगभग ऐसा है, मगर तुमने देख लिया कि ऐसा हुआ है। मैं ओर्डाक के बारे में नहीं कह रही हूँ, उसे हम परख नहीं पाये, तुम्हें उसके साथ बात नहीं करनी चाहिए थी। वह बीमार, विक्षिप्त आदमी है। राष्ट्रपति की कुर्सी पर बैठने के लिए वह कुछ भी कर

सकता है—कोई भी झूठ बोल सकता है। किसी को नीचा दिखाने के लिए कोई भी चाल चल सकता है। कुछ भी बकवास कर सकता है। कोई भी वहाना बना सकता है। मैं उसके बारे में नहीं कह रही, धिक्कार है उस पर, वह नरक में जाये। मगर कितना भयंकर दृश्य था हॉल में खचाखच भरे उन लोगों का। जैसे हृदय को टापों से रौंदते हुए चले गये जिसके बाद वहाँ कभी फूल न खिल सकेंगे, सिर्फ़ गोखरू ही उत्पन्न होंगे, फाँसी लगाने को जी चाहता है। भाड़ में जाये यह सब! ओह, रॉबर्ट, यह भीड़, यह शैतान! कैसा था वह दृश्य, कितना वीभत्स। हे भगवान्!"—और वह फिर से तौलिए में मुँह छिपाकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

"शान्त हो जाओ," जैस्सी, रुक जाओ। मैं विनती करता हूँ, तुम इसे बहुत ही गम्भीरता से ले रही हो। मैं तुम्हें समझ सकता हूँ, मगर आओ सोचें, कुछ दूरी से इस पर नज़र डालें"—उसने पत्नी को मनाया। और मनाते हुए तर्क का सहारा लेना पड़ा उसे, क्रोध को ताक पर रखकर, जिससे वह कुछ शान्त हुआ। —कई बातों में तुम सही हो, बेशक। और सुकरात की त्रासदी समय की सीमा से परे है, यह भी सही है। मगर अब, ज़रा सोचो। अच्छा, चलो इस तरह मानते हैं, कि भीड़—एक रेवड़ के समान है, अराजकता से भरी है, या जैसा कि तुमने कहा, घोड़ों की टापों के समान है, मगर यही तो सामाजिक जीवन की नींव है। इससे बच कर कहाँ जायेंगे? यह मानव सामग्री है जिसके आधार पर रचना हुई है जीवन की और इसी पर जीवन टिका हुआ है। अस्तित्व की संरचना में एक विशेष विरोधाभास भी है, मैं कहूँगा कि जीवन के द्वन्द्वात्मक तर्क में—चिर त्रासदी है : विचारक समाज के नियमों की खोज करता है, और समाज इसके बदले में उसे निष्कासित करता है, मगर बाद में इन्हीं आविष्कारों को अपना सम्बल बनाता है। स्वीकृति नकार के मार्ग से प्रवेश करती है।

"रॉबर्ट," अपने स्वर और आँखों में उलाहना भरकर पत्नी ने उसे टोका, "तुम जितना चाहो इस पर मनन कर सकते हो, मगर स्वीकृति के बारे में मुझे कुछ समझाने की कोशिश मत करो। पहले कुचला जाये जिससे बाद में मान्यता प्रदान की जाये? यही कह रहे हो न? नहीं, इस बात से मैं समझौता नहीं कर सकती। और अभी हम दार्शनिक स्तर पर बात करने की स्थिति में भी नहीं हैं। रात हो रही है। और तुम्हें कल सुबह अपना पक्ष जनता के सामने रखना है—अगर तुम ऐसा करने का निर्णय ले रहे हो, तो। फ़ैसला करो।"

"हाँ, मेरा यही इरादा है।"

"रॉबर्ट, मैं समझ रही हूँ कि इसका मतलब क्या है, ओर्डाक के पीछे है—जनता, तुम्हारे साथ—कोई नहीं, सिर्फ़ उस नौजवान के अलावा जो माइक्रोफ़ोन के निकट दौड़ा था, कौन है वह?"

"एन्थोनी यूंगेर।"

"धन्यवाद, उसे। मगर एक बात स्पष्ट है रॉबर्ट, कि तुम्हें सीधे-सीधे चुनौती दी गई है। और तुम उससे मुँह फेरने की स्थिति में नहीं हो। देखो यदि तुम्हें विश्वास है, यदि सचमुच सत्य तुम्हारे फ़िलोफ़ेइ के पक्ष में है, तो तुम्हारा हक़ है कि उसका समर्थन करो, अपना पक्ष सबके सामने ज़ोर-शोर से रखो, चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये।"

"यह तुम बिलकुल ठीक कह रही हो, जैस्सी। इसी तरह कहना होगा कि सब सुनें। मैं पहले ही इस बारे में सोच चुका हूँ। 'ट्रिब्यून' वाले लेख के फ़ौरन बाद प्रेस-कॉन्फ्रेन्स बुलाऊँगा। आगे देखेंगे, घटनाएँ कैसा मोड़ लेती हैं। लेख का अधिकांश भाग तैयार है, वह मेरे कम्प्यूटर में है, मगर सभा में जो कुछ हुआ उसके बाद काफ़ी बातें स्पष्ट हुई हैं, कई बातों का नया अर्थ सामने आया है, शायद इसका उपयोग फ़िलोफ़ेइ के सिद्धान्त की सत्यता की पुष्टि करने में हो सकेगा। लेख में थोड़ा सुधार करना होगा, कुछ जोड़ना होगा, कुछ प्रभावशाली बनाना होगा। यानी अपने पात्र का पूरा अभिनय किये बग़ैर मैं स्टेज छोड़कर भागनेवाला नहीं। फ़िलोफ़ेइ सच कह रहा है और मैं उसके साथ रहूँगा।"

"अगर ऐसी बात है, तो समय खोना उचित नहीं। तुम खुद ही समझते हो। हमें एकाग्रता से काम करना होगा। यह एक युद्ध है। मैं तो ऐसा ही समझती हूँ, रॉबर्ट। वास्तविक युद्ध!"

"मैं सहमत हूँ। मगर यह युद्ध है प्रतिद्वन्द्वी की ख़ातिर, दुश्मन की ख़ातिर, उसकी स्वयं पर सम्पूर्ण विजय की ख़ातिर। मेरा मतलब स्पोर्ट्स हॉल में तालियाँ बजानेवालों से है। यही सत्य है इस युद्ध का जैस्सी!"

"मैं समझ रही हूँ। मगर इससे दिल हल्का नहीं हो रहा। मैं इसे स्वीकार करना नहीं चाहती, स्वीकार कर ही नहीं सकती। अपने आपको इससे उबार नहीं सकती। मुझे माफ़ करना! दुश्मन के लिए खुश होना, उसकी रक्षा करना यानी कि अपने हत्यारे की? फिर वही ईसाई सिद्धान्त?"

"जल्दबाज़ी न करो। यह केवल ईसाइयों से ही नहीं, सभी से, बिना किसी अपवाद के, सम्बन्धित है। दुःख की बात है कि कोई भी यह समझना

नहीं चाहता। सारे दुःखों का कारण यही है कि हम, लोग, बुद्धिमान प्राणी, सिर्फ़ यह प्रयत्न करते हैं कि किसी भी तरह जीवन की निरन्तर विकृति की ज़िम्मेदारी से बच निकलें, और इसके लिए अनेक सफ़ाइयाँ पेश करते हैं, बुराई और भलाई में भेद किये बिना, और इस बात से ज़रा भी भयभीत हुए बिना, थोड़ा-सा भी अपने आपको बदलने की कोशिश नहीं करते। और तो और, अपने आप में आश्वस्त हैं कि जीने का यही तरीक़ा है, कोई और नहीं। क्या चुनावपूर्व सभा इसी बिन्दु पर नहीं पहुँची? हमारे अलावा, मनुष्य के अलावा, धरती पर बुराई का धारक और कोई है ही नहीं। और, फिर भी, हर कोई बुराई का स्रोत, अपने आपमें नहीं, अपितु किसी और में देखना चाहता है : किसी और समूह में, परिस्थितियों में, देशों में, राज्यों में, और भी आगे बढ़ें तो—जातियों में, धर्मों में, विचारधाराओं में...। और जीवन का चक्र घूमता रहता है पापी कर्मों में। यह घूमना भ्रूणों के जीवन के प्रति विद्रोह के प्रदर्शित होने तक जारी रहेगा। बस! आगे कोई राह नहीं। आगे, गर्भस्थ विकार एवं निर्मूलन! यह सब आत्मघाती है, जैसे-जैसे हम तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं वैसे-वैसे हमारी भटकन भयावह होती जाती है और हमारी निर्लज्जता एवं असामाजिकता बढ़ती जाती है। फ़िलोफ़ेइ ने आनुवंशिकी के ऑर्केस्ट्रा के एक बेसुरे तार को छेड़ा है, इतने ही से कितना क्रोध एवं अप्रियता उत्पन्न हो गई है!"...

"ओह, रॉबर्ट, मुझे बख़्शो।"...जैस्सी बोली—"बेहतर है तुम इन ख़यालों को खुलेआम कहो, जिसे लोग सुनें।"

दोनों चुप हो गये। और जैस्सी ने कितनी ही अपने आपको रोकने की कोशिश की, मगर आँसू फिर से उसका दम घोंटने लगे।

"माफ़ करना रॉबर्ट, मैं अपने आप पर क़ाबू नहीं रख पा रही, नहीं, ...मैं उस दृश्य से इतनी आहत और अपमानित हुई हूँ," वह रोते-रोते बोली। "भीड़ के उस जंगलीपन के बाद ऐसा महसूस हो रहा है जैसे हम दोनों एक जले हुए जंगल में भटक रहे हों, कोयला बन चुके, पूरी तरह जल-झुलस गये जंगल में। चारों ओर सब कुछ अग्नि की भेंट चढ़ चुका है—शाख़ें, तने, झाड़ियाँ और बची हैं सिर्फ़ काली, कलंकित धरती, और दूर-दूर तक कुछ नहीं है—सब ख़ाली है, सब काला है, सब मृत है। क्या होगा? क्या होनेवाला है? कुछ तो होगा।"—वह फुसफुसाई।

बोर्क के पास पत्नी को समझाने, सान्त्वना देने के अलावा और कुछ नहीं बचा था। उसे याद नहीं था, कि जीवन में उसे कभी इस तरह का

उन्माद का दौरा पड़ा हो। हमेशा संयत, हमेशा कामों में व्यस्त, उससे ज़्यादा व्यवहारकुशल, ओर्डाक की निर्लज्जता से वह पूरी तरह टूट चुकी थी।

मगर इस ख़याल ने कि शीघ्रता से काम करना होगा, कि समय इन्तज़ार नहीं करता उसे अपने आपको सँभालने पर मजबूर किया।

"मैं तुम्हें समझ रही हूँ, रॉबर्ट," उसने अपने आप पर क़ाबू पाते हुए सहमति के स्वर में कहा—"तुम अध्ययन-कक्ष में जाओ, काम करो। लेख पूरा करो। मन चाहे तो कॉफ़ी किचन में है, चाहो तो—मैं ले आऊँगी। सिर्फ़ काम करो। हरकत में आओ। मैं ड्राइंग रूम जाती हूँ। मेरा दिल वॉयलिन बजाना चाह रहा है। शोस्ताकोविच की रचना बजाऊँगी—पाँचवीं सिम्फ़नी। और तुम लिखते रहो। मुझे मालूम है, तुम्हारे पास कहने को बहुत कुछ है। कहीं भी फ़ोन न करना, प्लीज! मैंने तीनों टेलिफ़ोनों के कनेक्शन निकाल दिये हैं। फिर से न लगाना। जाओ। नीचे से मेरा संगीत सुनाई नहीं देगा। मैं खिड़कियाँ और दरवाज़े बन्द कर लूँगी।"

7

कभी-कभार संगीत की ध्वनि ड्राइंग रूम से दूसरी मंज़िल तक पहुँच ही जाती थी। वॉयलिन की आवाज़ उस रात अनचाहे ही याद दिला रही थी कि इस दुनिया में एक औरत है जो उसका सुख-दुःख बाँट रही है, शायद क़ब्र तक बाँटेगी। और सम्भव है कि मृत्यु के बाद भी उनकी आत्माएँ एक-दूसरे को जानेंगी और आज के वॉयलिन की उनींदी आवाज़ ज़रूर सुनेंगी, अनन्त दूरी पर...।

और उस रात, कम्प्यूटर के सामने बैठे हुए, जिसके मॉनिटर पर कल के अख़बार के लेख की पंक्तियाँ उछल-उछल कर आती जा रही थीं, उसने फिर से ह्वेलों की समुद्र में उत्तेजित साँसें सुनीं। कहाँ चल दीं वे फिर से? मतलब धरती पर कहीं, कुछ हुआ ज़रूर है? लोग फिर से न सुधारी जा सकने वाली ग़लती कर रहे हैं? विशाल लहरें पर्वतों के समान उनका स्वागत कर रही थीं, पानी उफ़न रहा था, सागर की शक्ति को ख़र्च करते-करते फिर से उसे शक्ति वापस दे रही थीं, और तैर रही थीं ह्वेल मछलियाँ। शीघ्र ही वह भी उनके बीच हो लिया। अँधेरे में सागर कम्प्यूटर के परदे के झिलमिलाते प्रकाश में समा गया, जहाँ उस समय विलीन हो रहे थे दूरस्थ अन्तरिक्ष, और माताओं की कोख में हुए गर्भधारण। तीनों मिलकर एक शाश्वत इकाई की रचना कर रहे थे, उसके शब्दों में अपनी अभिव्यक्ति ढूँढ़ रहे थे, सागर में तैरते, विश्वात्मा के प्रतीक में चिरन्तन की व्याख्या पाने का प्रयत्न कर रहे थे, उस विश्वात्मा में जो सब के लिए एक है और हरेक के लिए अलग-अलग, पृथ्वी पर स्थित सभी तत्त्वों के विघटन एवं संघटन में समाहित है। परदे पर लकीरें दौड़ती रहीं, एक के बाद दूसरी, मिलकर एक आलेख बनाती रहीं।

"कसांद्रा दाग़ शर्म और अपमान का प्रतीक नहीं है, जैसा कि अपने राजनैतिक उद्देश्यों को पाने की गरज़ से कुछ वक्ताओं ने हमें विश्वास दिलाने का प्रयास किया है, यह संकेत है दुर्भाग्य का, हमारे प्रचण्ड दुर्भाग्य

का नन्हा-सा पूर्व संकेत, अप्रत्याशित, अब तक लोगों के लिए अपरिचित, विश्व स्तर पर दिखाई न देनेवाला और इसीलिए मानव के लिए जैविक-सामाजिक स्तर पर दुर्भाग्यपूर्ण होने के कारण, विशेष ध्यान की माँग करता हुआ। फ़िलोफ़ेइ का आविष्कार इस बात का प्रमाण है कि आनुवंशिक स्तर पर हमारा विवेक विकृत हो चुका है, स्वयं मनुष्य की भूल के कारण विकृत हो चुका है, पीढ़ियाँ से विश्वात्मा के आदर्शों को अनदेखा करते हुए जी रहा है। अफ़सोस की बात तो यह है कि हम कसांद्रा भ्रूणों में जीवन में आने से इनकार करने के लिए प्रेरित करनेवाले कारणों को जानने की बजाय, उनसे दूर भाग रहे हैं, जैसा कि अंशतः चुनावपूर्व सभा में देखा गया। जीने की इच्छा के लुप्त होने का तात्पर्य है विश्व सभ्यता का लुप्त होना। यही होगा विश्व का अन्त। दूसरे शब्दों में, विश्व का अन्त हमारे भीतर ही कहीं निहित है। अत्यन्त संवेदनशील होने के कारण कसांद्रा भ्रूणों को इसका अहसास हो जाता है और वे हमें जीवन के प्रति इस भय के बारे में बताते हैं, कसांद्रा दाग़ के माध्यम से, जो गर्भवती महिला के चेहरे पर यूँ प्रकट होता है जैसे ब्रह्माण्ड रूपी कम्प्यूटर के परदे पर कोई धब्बा। कसांद्रा दाग़ से भयभीत होने के स्थान पर उन कारणों से डरना चाहिए, जो आनुवंशिकी की कन्दरा में इस परिवर्तन के लिए ज़िम्मेदार हैं...हमने बड़ी भारी भूल की है...फ़िलोफ़ेइ जासूस और उकसानेवाला व्यक्ति नहीं, वह—अन्तरिक्षी फ़क़ीर है..."

उस समय बोर्क सुन रहा था तेज़ी से सागर में तैरती ह्वेलों का शोर, जो अधिकाधिक शक्ति से रुकावट डालती लहरों को दूर हटा रही थीं, और उसे प्रतीत हुआ कि उनकी राह में उत्तेजनावश पानी भी एक प्रकाश पुंज की भाँति चमक रहा है—कम्प्यूटर के परदे के रंग में...।

× × ×

और लाल चौक पर आधी रात के बाद प्रसिद्ध स्पास्काया बुर्ज़ की घड़ी की सुइयाँ उल्लू के प्रकट होने के समय के निकट—रात में तीन के अंक तक सरक रही थीं। और उल्लू उस प्रिय घड़ी का इन्तज़ार कर रहा था जब क्रेमलिन के घण्टे चारों दिशाओं में तीन बार बजेंगे और वह अपने स्थान से निकलकर बुर्ज़ से सीधे नीचे उतरते हुए चौक पर जड़े पत्थरों के निकट आते ही फिर से ऊपर उड़ान भरे, फिर क्रेमलिन की दीवार से लगे-लगे उड़ते हुए आगे निकल जाये, जैसे वह हमेशा करता था, ख़ामोशी से चक्कर काटते, लाल चौक के ऊपर मँडराते, समाधि के ऊपर चक्कर काटते चारों और देखता रहता—कि दुनिया में क्या हो रहा है। और इस बार भी उल्लू को

मोटे-नाटे भूतों का इन्तज़ार था, यह सुनने की इच्छा थी कि वह किस बारे में बातें करते हैं। इस बार तो उनके पास बहस करने के लिए काफ़ी कुछ था, उफ़ कैसा था वह नज़ारा! क्योंकि शाम को ही लाल चौक पर भयानक घटना घटी थी। अपने लम्बे जीवन में काफ़ी कुछ देख चुके उल्लू ने भी पहले कभी ऐसा न तो देखा था, न ही कल्पना की थी कि कभी ऐसा भी हो सकता है।

मगर, वैसे देखा जाये तो उसे, स्पास्काया बुर्ज़ पर रहनेवाले पक्षी को या आत्मा को, जो भूतों से बातें किया करती थी कैसे मालूम होता, कैसे समझ में आता वह सब जिसके होने के पीछे निहित कारणों को अत्यन्त बुद्धिमान व्यक्ति भी नहीं समझ पाये थे।

आरम्भ हुआ शिशिर की उस दोपहर से, जब लाल चौक पर एम.आई.सी. (मिलिट्री इण्डस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स) के समर्थन में एक मीटिंग करने के लिए लोगों के झुण्ड-के-झुण्ड आने लगे। अख़बारों के संवाददाताओं के अनुसार, कुछ ख़ास हलक़ों में यह सुगबुगाहट हो रही थी कि 'पेरेस्त्रोयका' रूपी परिवर्तन रक्षा विभाग के गले की हड्डी बन गया है और साम्राज्य की मिटती हुई ताक़त को बचाने का एकमात्र उपाय है एम.आई.सी. को पुनर्जीवित करना। हाँ, जलते हुए जंगल से आती आग के समान हवा में ये विचार फैल रहे थे। उन्होंने आग पकड़ ली और इस आग को हवा दे रहे थे मौक़े का फ़ायदा उठानेवाले राष्ट्रीय-जागरुकता मंच के कार्यकर्त्ता, वे ताक़तें जो निरन्तर हथियारों के व्यापार के पक्ष में जनमत बना रही थीं, सैनिक शासन प्रणाली के आधार उस एम.आई.सी. को दोबारा मज़बूत करने के पक्ष में जनता को उकसा रही थीं—जिसे तथाकथित 'पेरेस्त्रोयका' और पश्चिमी देशों के हित में, परदे के पीछे खड़े हाथ मल रहे कुछ सोशल डेमोक्रेट्स ने मौत के कगार तक पहुँचा दिया था।

लाल चौक में चारों ओर से आये लोग जमा थे। अधिकांश लोग सभा में बाहर से आये थे—बन्द शहरों से, जिन्हें पहले 'डाकपेटी' कहा जाता था और पिनकोड ही जिनकी पहचान थे। ख़ास तौर से परिवर्तन के दौरान इन्हीं रहस्य से मुक्त 'पेटियों' से लोगों के समूह मॉस्को के हर रेलवे स्टेशन पर आ रहे थे, जुलूस की शक्ल में केन्द्र की ओर जा रहे थे, पूरे रास्ते इन्हीं से भरे हुए थे। उनके साथ जा मिले मॉस्को के सुरक्षावादी, राष्ट्रवादी देशभक्त स्टालिन की याद में घुलते पेंशनर और ऐसे ही कई अन्य प्रकार के लोग। प्रदर्शनकारी गुज़रे हुए ज़माने के विचित्र-से लोग थे जैसे अभी-अभी

गम्भीर अंग-भंग के पश्चात् उनकी याददाश्त लौटी हो; सिरों के ऊपर उन्होंने खून की नदियाँ बहानेवाले उन तानाशाहों के चित्र उठा रखे थे जिन्हें कुछ समय पहले तक इन्हीं सड़कों पर गालियाँ और शाप दिये जाते थे।

प्रदर्शनकारियों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी, यह इस बात का प्रमाण था कि एम.आई.सी. के बन्द बिलों में कितने सारे लोग कामकाज में व्यस्त थे। आधी दुनिया को अस्त्र-शस्त्रों से इन्होंने ही सुसज्जित किया था। और अब महसूस कर रहे थे—ज़मीन पैरों तले खिसक रही है परिवर्तन ने एम.आई.सी. के कर्मचारियों को दुविधा में डाल दिया था, अगर शस्त्र निर्माण पुनः प्रारम्भ नहीं होगा तो वे बेकार हो जाएँगे। और वे...आगे बढ़ रहे थे...। यह दृश्य बाढ़ की याद दिला रहा था, जब पानी का क्रुद्ध बहाव बड़े-बड़े पेड़-पत्थर और घरों की गिरी हुई छतें बहाकर ले जाता है और कोई भी इस प्रवाह को रोकने में सफल नहीं होता। इसी तरह उस समय सड़कों पर लोगों का प्रवाह बहा ले जा रहा था अपने-अपने "पत्थर, ठूँठ और टूटी हुई छतें—नारे और माँगें, जो दृढ़तापूर्वक कह रहे थे : "परिवर्तन रोको।", "एम.आई.सी. को भगवान् भरोसे नहीं छोड़ेंगे, "एम.आई.सी." "अमर रहे!", "मातृभूमि—सबसे महान!", "राष्ट्रविरोधी सुधार—हाय, हाय!", "टैंक-स्थायित्व की गारण्टी!", "हथियारों के लिए मुद्रा!", "हथियारों के विश्व बाज़ार में प्रतियोगिता को मत रोको!"—कुछ नारे तो एकदम अटपटे थे : "डाक पेटियाँ वापस लौटाओ!" "काम करेंगे और जियेंगे—डाक पेटियों में!" कुछ तो ऐसे भी थे : "मुँह बन्द रखो, शान्तिवादियो, वरना देर हो जायेगी!", "शीत युद्ध से वंचित कर हमें जीत लिया", "टैंकों को कढ़ाई में नहीं बदलने देंगे!" और अन्त में "हथियारों का निर्माण अमर रहे!" "हथियार हैं—देश की शक्ति, देश की दौलत!", "बेरोज़गारी नहीं सहेंगे!", "बुद्धि निकासन नहीं सहेंगे!", "तकनीकी प्रगति का प्रणेता शीतयुद्ध—अमर रहे!", "बिकनेवाले मानवतावादी हाय, हाय!" इसी तरह के अन्य अनेक नारे थे। नारे लिखे गत्ते के टुकड़े की कीमत तो कुछ नहीं थी, मगर उसमें छिपी हुई थी शक्ति जिससे दिमाग़ चकरा रहा था।

देश के शस्त्र भण्डार की सर्वोच्चता के गुण गानेवाले राष्ट्रवादी, प्रभुसत्तावादी कहलाने वाले राजनीतिज्ञ चाहें या न चाहें; हथियारों के अन्तर्राष्ट्रीय मेलों के आयोजक चाहें या न चाहें; व्यापार में प्रथम स्थान पाना देश के हित में महान्, पवित्र कार्य समझा जाता था, और सबसे महत्त्वपूर्ण

बात यह थी कि यहाँ अरबों डॉलरों के शुद्ध मुनाफ़े का वादा किया जाता था, जिससे साँस ऊपर की ऊपर रह जाती थी क्योंकि इन अरबों डॉलरों का एक तिहाई हिस्सा खड़े-खड़े उत्पादकों की जेब में जाता था; प्रचार-प्रसार के माध्यमों में अभी तक धूमिल न पड़ी हमारे अस्त्र-शस्त्रों की गौरवमय गाथा गानेवाले चाहें या न चाहें—मगर अब उनमें से कोई भी उसे रोकने की स्थिति में नहीं था, जो जाग चुका था, जो घटित हो चुका था—सब कुछ भँवर में तिनके के समान था...।

लाल चौक पर सिर ही सिर उमड़ रहे थे। हजारों लोग जो एम.आई. सी. के समर्थन में हुई मीटिंग में भाग ले रहे थे या उसके लिए आये थे चौक में खचाखच भरे थे, और एक स्वर में नारे गूँज रहे थे "एम.आई.सी", "विदेशी मुद्रा!", "क्रेमलिन—हमारा है!", "क्रेमलिन हमारा है!", जैसे नारों से आसमान गूँज रहा था।

हेलिकॉप्टरों से तस्वीरें ली जा रही थीं, मगर इस भव्य ज्वालामुखी जैसे चित्र की विशालता को ऊँचाई से कैमरे में क़ैद करना असम्भव प्रतीत हो रहा था। आम सभा की, लेनिन समाधि पर लगे लाउडस्पीकरों द्वारा प्रसारित भाषणों की पार्श्वभूमि पर चौक के कोने-कोने में अनेक छोटी-छोटी सभाएँ हो रही थीं, हर मीटिंग के अपने नारे थे, अपने चित्र थे, अपनी माँगें थी। लोब्नी पुल पर फिडेलवादी जमा थे, यह उनके नेता के चित्र एवं उनके नारों से स्पष्ट था : "फिडेल—हम तुम्हारे साथ हैं!", "समाजवाद या मृत्यु!" और भीड़ ताल दे-देकर ज़ोर-शोर से दुहरा रही थी : "समाजवाद या मृत्यु।" हिस्ट्री म्युज़ियमवाले गलियारे में रेल-पेल मची थी सद्दामवादियों की। इस रेल पेल में ज़ोर-ज़ोर से क्रुद्ध आवाज़ें आ रही थीं : "स ऽ द्दा ऽ ऽ म—भाई हो हमारे तुम!" "स ऽ ऽ द्दा ऽ ऽ ऽ म—भाई हो हमारे तुम!" एक और जगह मुट्ठियाँ ताने लोग नारे लगा रहे थे : "कद्दा...कद्दा...कद्दाफ़ी!" "कद्दा...कद्दा...कद्दाफ़ी!"

चौक पर लगभग उन सभी देशों के समर्थक थे जो बरसों से हथियारों का आयात करते आ रहे थे, ये समर्थक चीन, ईरान, पाकिस्तान, भारत, उत्तर कोरिया और विशेषतः अरब एवं अफ्रीका के ख़रीदारों के सम्मान में नाच रहे थे। मगर बात समझ में आनेवाली थी—चीन के समर्थकों की संख्या उसकी ताक़त एवं भौगोलिक सीमा के अनुरूप थी, जो माओ के 'भोर का गीत' की मुख्य पंक्ति : "बन्दूक़ करे पैदा ताक़त! बन्दूक़ करे पैदा ताक़त!" गाते हुए उधम मचा रहे थे। उनके साथ-साथ, भाईचारे की भावना से, उतनी

ही ताक़त से चिल्ला रहे थे स्टालिनवादी : "स्टालिन की—जय हो!" और निडरता से सिरों के ऊपर जनरलों की तस्वीरें उठाये थे। मगर इन सबके ऊपर चढ़कर जो बोल रहा था, वह महान् विजेता था कलाश्निकोव का स्वचालित हथियार : "कलाश-क्रेमलिन हमारा है!"—के नारे दूसरे सभी नारों से ऊँचे प्रतीत हो रहे थे।

विषय से सम्बन्धित कुछ समझ में न आनेवाले नारे भी थे, जैसे "गोलीबारी बिखेरे—आकाश में हीरे!" क्या इसका मतलब यह था कि रॉकेट उड़ता है तो ऊपर से हीरों की बौछार होती है? काश ऐसा होता! ओह, अगर ऐसा ही होता!

और यह सब आम उत्तेजना की विशाल कड़ाही में उबल रहा था, उफन रहा था और एक महान्, असीमित शक्ति का, एकता का, आक्रामकता का अहसास उत्पन्न कर रहा था...जैसे, अभी...कुछ हो जायेगा और भभक उठेंगी ये अग्निशलाकाएँ, आकाश काँप जायेगा और तब आयेगा वह : इच्छापूर्ति करनेवाला...मगर कौन है यह वह?

मगर समाधि के ऊपर बने मंच से गूँज रहे मुख्य वक्ताओं के भाषण अपने आपमें सारगर्भित और दृढ़ता से परिपूर्ण थे। हथियारों के निर्माण की स्थिति को पंलटने से देश की अर्थव्यवस्था को कोई ख़ास लाभ नहीं होनेवाला, सिर्फ़ विश्व के हथियारों का बाज़ार धनी, अत्यन्त धनी अमेरिका के हाथों में पहुँच जायेगा। वह सो नहीं रहा—पूरे साल हथियारों का निर्माण करता ही रहता है, चौबीसों घण्टे और सबको आख़िरी दाँत तक हथियारों से सुसज्जित कर देता है और सब पर शासन करता है। हम किस बात में कम हैं? एक और भी दलील थी—परिवर्तन के कारण उत्पन्न बेरोज़गारी एक दिन सामाजिक विस्फोट का कारण बनेगी। साथ ही—परिवर्तन देश के बुद्धिजीवियों की महान् क्षमता को जड़ से ही काट रहा है। और, और भी अधिक दलीलें दी जाती रहीं। हर आक्रमण एक जनव्यापी घृणा को जन्म दे रहा था।

मगर एक और भी ताक़त थी। उसी समय मानेझनाया चौक पर, सँकरी-सी जगह पर, विरोधियों की आमसभा से कुछ ही दूर, एक दूसरी सभा हो रही थी, एक अलग ही तरह का जोश उफन रहा था वहाँ।

यहाँ एक अन्य समूह की सभा हो रही थी, समाज के एक अन्य भाग की—प्रजातान्त्रिक, सुधारवादी, शान्तिवादी और 'पेरेस्त्रोयका' की एक अन्य

पौध, संक्षेप में—स्वतन्त्रता के प्रेमी और सभी स्तरों एवं प्रकारों के उदारवादी। उनकी संख्या भी काफ़ी थी, मैदान लोगों से भरा हुआ था, उनके भी अपने विचार, अपनी मान्यताएँ, अपने नारे, अपनी माँगें थीं, जो कुछ कम महत्त्वपूर्ण और कम प्रभावशाली नहीं थे। यहाँ भी तख्तियाँ दिखाई दे रही थीं : "एम.आई.सी. को मिली सुविधाएँ—हाय, हाय!", "एम.आई.सी. के क़ैदी—नहीं बनेंगे!", "सैनिकशाही का मददगार एम.आई.सी.!", "बजट को चूसनेवाला एम.आई.सी.!" "स्टालिनरूपी शैतान—हाय, हाय!" और भी अनेक प्रकार के नारे लिखे थे, यहाँ तक कि "मौत की स्वचालित राह एम. आई.सी.!", "पार्टीवाद का पालतू कुत्ता एम.आई.सी.!" "जनता नहीं रहेगी एम.आई.सी. की बन्धक!"

लगभग वैसा ही दृश्य, लाल चौक पर था। सिर्फ़ यहाँ उल्टी गंगा बह रही थी।

यहाँ प्रदर्शनकारियों ने अपने आपको अपने नेताओं और आदर्श व्यक्तियों की तस्वीरों से सजा रखा था। वे इन्हें सिरों के ऊपर उठाये हुए थे, लोगों और देवताओं की नज़रों में (यदि उन्हें महत्त्व दें तो) लाने की कोशिश कर रहे थे।

संवाददाताओं के लिए, जो अपने-अपने कैमरे लिए कभी एक सभा में भागते, तो कभी दूसरी में, कभी लाल चौक, तो कभी मानेझनाया चौक, ये ख़बरें काफ़ी मसाला देनेवाली साबित हो रही थीं। मगर इस सब गहमागहमी में भी दो पोस्टर सभी रिपोर्टरों का ध्यान आकर्षित कर रहे थे जो अन्य सभी पोस्टरों से अलग थे। खपच्चियों पर टँगे अपने पोस्टरों को ऊँचा उठाये दो नौजवान चले जा रहे थे—युवक और युवती, शायद दोनों विद्यार्थी थे। प्रत्यक्षदर्शियों ने बाद में बताया कि भीड़ में भी वे एक-दूसरे से ज़रा भी अलग नहीं हुए थे, आँखों से एक-दूसरे पर नज़र रखे वे एक पुकार भर की दूरी पर ही थे, किसी के भी साथ बहस में नहीं उलझे और अलग-थलग, ख़यालों में डूबे से प्रतीत हो रहे थे। लड़के के पोस्टर पर काले रंग से लिखा था—"मानव को हथियारों का निर्माण करने के लिए दुनिया में जन्म नहीं लेना चाहिए।" लड़की के पोस्टर पर लिखे लाल अक्षर एक विनाश का सन्देश दे रहे थे : "अगर क्रेमलिन हथियारों की दौड़ में शामिल हुआ तो मैं आत्मदाह करूँगी।"

भीड़ में वे इस तरह चल रहे थे जैसे सागर में भटकी दो नौकाएँ, किसी की उन पर नज़र पड़ती, किसी की नहीं, कोई उनके नारों का मतलब

निकालने की कोशिश करता। कोई उसमें कुछ सुनने की कोशिश करता। किसी के लिए यह सब कुछ भी नहीं था—और ठीक ही तो था, मीटिंग करनेवालों के दिमाग़ों पर इतनी घोषणाओं, इतने नारों, विरोधों, चेतावनियों, बहरा कर देनेवाले सुधारवादी भाषणों की, बौछार हो रही थी, मानो बारिश हो रही हो—दोनों चौकों पर—लाल और मानेझनाया पर।

मगर, फिर भी, जो होना था, वह हो गया। लोग तब उपदेश देते हैं, जब बहुत देर हो चुकी होती है, हर बार विश्वास दिलाते हुए कि उफनती भीड़ में मनोवैज्ञानिक ढंग से घटनाओं का ऐसा विस्फोट होता है, जो अपने घटने के तरीक़े से और अपनी अपरिहार्यता के कारण स्तम्भित कर देती हैं, आघात पहुँचाती हैं।

सूर्य क्रेमलिन की दीवारों के पीछे झुक गया था, चीख़ती-चिल्लाती भीड़ पर शाम के निर्दोष साये मँडराने लगे और दोनों चौकों पर मीटिंगें होती रहीं, भाषण गूँजते रहे। लाउडस्पीकरों से फैलते उन्मादक एवं आग भड़कानेवाले भाषण उपस्थितों के दिलों में शोले भड़का रहे थे और चरम सीमा तक पहुँचा रहे थे। इस और उस चौक पर, हरेक पक्ष न्याय की माँग कर रहा था, शासन को और जनता को अपना दृष्टिकोण, उसकी सच्चाई समझा रहा था, दुनिया के सामने अपने-अपने तर्क प्रस्तुत कर रहा था, जोश में, चरम जोश में आते हुए शीघ्र कार्रवाई करने की माँग कर रहा था, अपनी संचित शक्ति को ख़र्च करने की राह ढूँढ़ रहा था। ये जोश, ये चीख़ें लाउडस्पीकरों में एक होकर गूँज रही थीं; एक-दूसरे पर दोषारोपण, धमकियाँ और अपमानजनक शब्द, हर पक्ष दूसरे से घृणा करते हुए उसे मातृभूमि के दुश्मनों का घृणित नीच समूह कह रहा था। तभी पहला विस्फोट हो ही गया। एक-दूसरे की क़तारों में घुसकर मिलिट्री राज के समर्थक और विरोधी एक-दूसरे को मारने-पीटने लगे, पोस्टरों से, तस्वीरों से। औरतें क्रन्दन करने लगीं, आदमी चिल्लाने लगे और गालियाँ देने लगे। देखते-देखते लातें और मुक्के चलने लगे। कितनी ही उन्हें रोकने की कोशिश की गई, लड़नेवालों को खदेड़ने की कोशिश की गई, मगर दोनों पक्ष और भी अधिक तैश में आ गये। सचमुच का युद्ध शुरू हो गया और तेज़ी से फैलने लगा, जैसे लोगों को इसी का इन्तज़ार था, और शायद इसी के लिए वे यहाँ एकत्रित हुए थे। आदरणीय, प्रिय लोगों की तस्वीरें बड़े काम आईं—उनसे दनादन सिरों पर वार किये जा रहे थे। खून, आँसू, कराहें, हाहाकार, सैकड़ों लोगों की गिरफ़्तारियाँ, आदमियों की और औरतों की, बूढ़ों की, जवानों की, पूरी

दुनिया के टेलीविज़न के परदों पर, यथासम्भव विस्तार के साथ, विभिन्न कोणों से, ऊपर से, हेलीकॉप्टर से खींचे गये चित्र, पृथ्वी पर स्थित सभी सम्भव स्थानों पर झलकने लगे।

इसी समय घटनाओं के झंझावात में फँस गये थे वे दोनों—लड़का और लड़की। और यह तथ्य कि उन्होंने चलते-चलते अपने हाथ के नारों को नीचे नहीं गिराया था उनके लिए दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ। लाल चौकवाले 'एम. आई.सी.' समर्थक, परिवर्तनवादियों को पीट रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि लड़का हठधर्मी से अपना पोस्टर ऊँचा उठाये हुए है और मानो उसे देशभक्ति के उन्माद में पागल लोगों की नाक में चुभो रहा हो।

"तुम सूअर, यह किसका दिमाग़ ख़राब करने चले हो?" आक्रमणकारियों में से एक चीख़ा। "मतलब, हमारा यानी कि हमें जन्म नहीं लेना चाहिए था? आह, तुम कमीने!" और उन्होंने लड़के को मारना शुरू कर दिया, पोस्टर फाड़ दिया, उसे पैरों तले रौंद दिया। ठीक इसी समय उसकी ओर मदद करने के लिए दौड़ी वह लड़की, अपने विचित्र से, चौंकानेवाले पोस्टर के साथ, जिसमें उसने क़सम खाई थी कि अगर क्रेमलिन हथियारों की दौड़ में शामिल हुआ तो वह आत्मदाह कर लेगी।

कौन कह सकता है कि इस धमकी को लिए सभा में जाने का लड़की का आचरण सही था या नहीं? कौन-सी शक्ति उसे प्रेरित कर रही थी? उसने ऐसा क्यों किया—जवानी के जोश में, या पागलपन के उन्माद में या कि दृढ़विश्वास और बदहवासी ने उसे यह क़दम उठाने पर मज़बूर किया था? और आख़िर में, एम.आई.सी. समर्थकों के हाथों पिटते हुए मित्र की मदद के लिए दौड़ने से पहले उसने वह मनहूस पोस्टर फेंक क्यों नहीं दिया? मगर वह दूसरा पोस्टर हाथ में लिए चिल्लाती हुई उसकी ओर दौड़ी।

"क्या कर रहे हो? मत छुओ! किसने तुम्हें यह अधिकार दिया है? हिम्मत न करना! रुक जाओ!"

बेकार गया उसका चिल्लाना। लड़के को पाँच लोग मार रहे थे। शायद काला-नीला बनाकर छोड़ भी देते। मगर कौन कह सकता था कि यह सब कैसे ख़त्म होगा, यह क्रोध, यह उद्वेग, जो उन्मादपूर्ण भीड़ अनजाने में अपने अन्तर में छिपाये हुए है?

एम.आई.सी. वालों ने क्रुद्ध गालियों से लड़की का स्वागत किया : "और तू, कुतिया, यहाँ से भाग, नहीं तो तुझे भी देख लेंगे!"

और तभी नज़र आई बदहवासी से चीख़ती एक औरत, "तो तुम

ब्लैकमेल कर रही हो? अपने आपको जलाओगी? ओहऽहो, देखो, देखो लोगो, यह 'ब्लैकमेलर' कुतिया अब जलनेवाली है, और हमारा क्रेमलिन नष्ट हो जायेगा! अभी, देखते-देखते! उसके सिर पर जमकर लगाओ ताकि वह घर का रास्ता भी भूल जाये!"

सब-के-सब लड़की पर टूट पड़े। उसका जैकेट फाड़ दिया। उसके चेहरे पर खून बह चला।

उसका नारेवाला पोस्टर भी छीनकर फाड़ दिया और पैरों तले रौंद दिया।

"तो, अब? क्या करोगी? जलोगी? या डर लगता है? सोच लो, बकवास लिखने से पहले सौ बार सोचा करो! क्यों, तुम जलती क्यों नहीं हो?"

और फिर सब कुछ पलक झपकते ही हो गया।

"और तुम मुझ पर दियासलाई फेंको!" थरथराते हुए लड़की चीख़ी, आसपास एक क्रूर हँसी के ठहाके गूँज उठे।

तभी किसी ने एक पुट्ठे का टुकड़ा उठाया, जिससे उसमें आग लगा सके...

"लाइटर, किसके पास है? हा...हा...हा। तुम उसके पास 'लाइटर' ही ले जाओ!" किसी और ने सुझाव दिया।

"रुको! ख़बरदार!" स्वयं से अपरिचित आवाज़ में उसका दोस्त चीख़ा और मारनेवालों के हाथों से छिटकने की कोशिश करने लगा। मगर, देर हो चुकी थी। जलती हुई दियासलाई लड़की के कन्धे पर गिरी, उसके सिंथैटिक के जैकेट पर, और वह लपटों में घिर गई।

सब उसके चारों ओर घेरा बनाकर खड़े हो गये, फिर अचानक होश में आकर दूर हट गये और अलग-अलग दिशाओं में बिखर गये।

और वह, लपटों में घिरी, आगे की ओर दौड़ी, वातावरण को भयानक चीख़ों से दहलाती। और तब लाल चौक पर सब गड्ड-गड्ड हो गया, नरक से भी बदतर! भीड़ में भय की लहर भी उतनी ही ख़तरनाक थी जितना उसका विनाशकारी, बदहवास, भावनाओं का उद्वेग...

बिजली की गति से अफ़वाह फैल गई, कि कहीं निकट ही किसी ने बम फेंका है या शायद कोई आत्मदाह कर रहा है, या शायद कुछ और भी भयानक हो रहा है और लोग, सब कुछ भूलकर तीर की सी तेज़ी से एक-दूसरे को दबाते, कुचलते, गिरते-पड़ते, चीख़ते हुए भागे सड़कों पर,

गलियों में अपने ज़हरीले नारोंवाले पोस्टर और नेताओं की तस्वीरों को पैरों तले कुचलते, जैसे उनकी न कभी ज़रूरत थी और न ही होगी। लोग भाग रहे थे पागलपन से, भय से, भाग रहे थे अपने आपसे।

तो यह सब क्यों हुआ, क्रेमलिन में तूफ़ान लाने का क्या कारण था—कोई भी स्वयं को उत्तर न दे सका। उस क्षण से जब आत्मदाह की धमकी देनेवाली लड़की से आग भड़क उठी—अनजाने में, या गम्भीरता से, या मज़ाक-मज़ाक में, समय का नये रूप में आकलन शुरू हो गया। वह किस तरह चीख़ती हुई, जलती हुई भाग रही थी, उन सबने देखा जो नज़दीक थे। वह ज़मीन पर गिर गई। उसे पकड़ा उसके साथी ने और कुछ सिपाहियों-कार्यकर्ताओं ने जो उसके पीछे-पीछे भागे थे। उन्होंने बड़ी फुर्ती से अपने-अपने जैकेटों से लड़की के शरीर पर लगी आग को बुझाने की कोशिश की। मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। उसका साथी बदहवास होकर सिर पकड़कर घुटनों के बल गिर गया, इसी समय देखते-देखते ख़ाली हो गये चौक पर एक हेलिकॉप्टर उतरा जो शायद अब तक टेलीविज़न के लिए फोटो ले रहा था। घरघराते घूमते पंखों के नीचे से तेज़ हवा के कारण झुकते हुए, और शोर से अपने आपको बचाते हुए कुछ लोग बाहर की ओर दौड़े, उन्होंने उस लड़की का मृत शरीर उठाया और उसके साथी और दो कार्यकर्ताओं को लेकर वे हवा में उड़ चले। मगर उनमें से एक ने फिर भी यह सब कैमरे में क़ैद कर लिया।

हेलिकॉप्टर, ऊपर उठते हुए लाल चौक के ऊपर उड़ा, स्पास्काया बुर्ज़ की ऊँचाई तक पहुँचा और फिर आगे बढ़ गया, पत्थर के पुल पर, फिर मास्को नदी के किनारे-किनारे और फिर नज़रों से ओझल हो गया।

हेलिकॉप्टर के साथ ही शहर की भूलभुलैया में जवान लोगों की त्रासदी यूँ खो गई जैसे जंगल में कोई पक्षी खो जाता है। वे नौजवान जो इतनी बदहवासी से, इतनी भयानकता से बिना कुछ आगा-पीछा सोचे उस आदर्श के लिए कुर्बान हो गये थे जिसमें उनका दृढ़ विश्वास था...ओह, यह रूमानियत-हमसफ़र एक आदर्श राज्य की और उसके लिए दिये गये बलिदानों की!

उस दिन शहर का केन्द्र बड़ी देर तक शान्त न हो सका, दिन भर की घटनाओं को बर्दाश्त करता रहा। मानसिक उत्तेजना कइयों को सड़क पर ठेलकर ले गई, असाधारण रूप से तमतमाते चेहरों पर, आवाज़ों में, गतिविधियों में प्रकट होती रही। लोग झुण्ड बनाते, बहस करते, अन्दाज़

लगाते और फिर भी समझा न पाते कि ऐसी बात हुई कैसे—सिर्फ़ एक जलती हुई तीली ही तो फेंकी गई थी, वह तो उस तक पहुँचते-पहुँचते ही बुझ सकती थी, मगर, नहीं बुझी, और लड़की भी, बस एक ही सेकेण्ड में आग से घिर गई! यह कोई चमत्कार तो नहीं, सर्कस का कारनामा तो नहीं? शायद उसके कपड़े किसी ज्वलनशील पदार्थ से बने थे या उन पर ऐसी कोई चीज़ छिड़की गई थी? मगर यह सब करने की ज़रूरत क्या थी—कि जान ही दे दी? और अगर ऐसी बात नहीं है, कुछ और ही बात है, कुछ आधिभौतिक प्रकार की घटना हो, शायद, जब मनुष्य अतिभीषण मानसिक तनाव के कारण जल जाता है? कहते हैं कि ऐसे लोग हैं जो रात को फ़ास्फोरस के प्रकाश से प्रदीप्त होते हैं। कैसे जानें, कौन जानता है?...

इसी दौरान रात हो गई। सड़कों पर लोगों की संख्या कम होने लगी। रातों को सड़कों पर वक़्त गुज़ारनेवाले भी जाने लगे, अपनी कारों में बैठकर, रात के चौकीदारों और दादाओं को कीमत चुकाकर। नाइट क्लबों में रोशनी होने लगी, हल्की-हल्की नीची बत्तियाँ, रोमांचक हल्का-हल्का संगीत, वक्ष पर से कपड़े उतरते गये, मुस्कुराहटें बिखरती रहीं...सब कुछ भूलने के लिए, कुछ भी याद न रखने के लिए, अपने आपसे दूर जाने के लिए, ईश्वर से दूर छिटकने के लिए...

लाल चौक पर उस रात था नीरव सन्नाटा। एक भी आदमी नहीं। एक भी आत्मा नहीं। कोई भी उस जगह नहीं आना चाहता था जहाँ दिन में जंगली, असभ्य भावनाएँ ताण्डव कर रही थीं, उन्मादभरा लड़ाई-झगड़ा हुआ था। रोशनियाँ टिमटिमा रही थीं। प्रदर्शनकारियों द्वारा, भागते हुए और लड़ते हुए रौंदे गये, फाड़े गये चित्र, नारे, पोस्टर इधर-उधर ऐसे बिखरे पड़े थे मानों युद्ध के मैदान में पड़े शव।

और किसी को उनसे कोई मतलब नहीं था।

चाँद क्रेमलिन के ऊपर था। और अपने निर्धारित समय पर उड़ता हुआ उल्लू वहाँ आया। वह एक छाया की तरह इधर-उधर फिसलता रहा, अपने बड़े-बड़े पंखों को ख़ामोशी से फड़फड़ाते, अपनी गोल स्थिर चमकती चुम्बकीय आँखोंवाले सिर को तेज़ी से इधर-उधर घुमाते। बड़ा बोझिल और दमघोंटू-सा अहसास हो रहा था उसे। हौले से समाधि के ऊपर एक चक्कर लगाकर, बुत बने प्रहरियों के सामने से गुज़रकर, वह आगे उड़ गया अपने नाटे-मोटे भूतों की तलाश में। उसने उन्हें पाया एक अँधेरे कोने में, क्रेमलिन की दीवार के नीचे। नहीं, इस बार भी वे भावनारहित थे, जैसे जादुई छड़ी

उन पर घुमाई गई हो। एक-दूसरे का हाथ पकड़े वे नाटे-मोटे भूत अपनी ही जगह पर नृत्य करते रहे, दिन में सुने नारों को एक सुर में बड़बड़ाते रहे : "समाजवाद या मौत!" हाँ, यही तो वे बिना थके, ख़ामोश आवाज़ में, अदृश्य रूप में, डरावने तरीक़े से, दृढ़ता से दुहरा रहे थे, "समाजवाद या मौत!"

उल्लू इस लय से शीघ्र ही उकता गया। वह और आगे उड़ा और उसे स्पास्काया बुर्ज़ के सामने एक जीवित व्यक्ति दिखाई दिया—यह एक नशे में धुत बुढ़िया थी। न जाने वह कहाँ-कहाँ भटक रही थी।

वह रात के लाल चौक पर चली जा रही थी, निपट अकेली, बदहवास और नशे में धुत अपना दुःखभरा गीत गाती जा रही थी :

आह क्यों, आह क्यों
जन्मी मैं इस दुनिया में?
आह क्यों, आह क्यों
माँ ने जना मुझे?
आह क्यों, आह क्यों
तूने मुझे धारण किया?
चाहा न था मैंने,
तूने मजबूर किया।
आह क्यों, आह क्यों
तूने मुझे जन्म दिया?
चाहा न था मैंने,
तूने मजबूर किया।
आह क्यों, आह क्यों
जन्मी मैं इस दुनिया में?
आह क्यों, आह क्यों
माँ ने जना मुझे?...

लड़खड़ाते क़दमों से, गिरते-पड़ते वह चौक से बाहर चली गई और दुकानों के पीछे कहीं छिप गई। कुछ देर और उसका उनींदा गीत सुनाई देता रहा, फिर सब कुछ शान्त हो गया।

उल्लू क्रेमलिन की दीवारों पर से होते हुए उद्यानों की ओर आया और यहाँ घनी झाड़ियों के बीच आकर अचानक ज़ोर से रो पड़ा, उसी बुढ़िया के समान जो कराहते हुए, भारी-भारी साँसें ले रही थी।

चाँद सितारों के बीच चमक रहा था, ऊपर से क्रेमलिन के गुम्बद, टीले, छतों को प्रकाशित कर रहा था, और उल्लू को महसूस हुआ मानो दूर से समुद्र में तैरती ह्वेल मछलियों की साँसें सुनाई दे रही हों। कहाँ और क्यों भाग रही हैं वे? उन्हें चैन नहीं है और लहरें भी शान्त नहीं हो पा रहीं।

8

'ट्रिब्यून' वाले लेख का अधिकांश भाग तैयार था, सिर्फ़ निष्कर्ष लिखना शेष था। मगर जैसे-जैसे यह काम समाप्ति की ओर बढ़ता गया बोर्क की परेशानी भी बढ़ती जा रही थी। कहीं बेकार में ही वह कसांद्रा दाग़ की घटना को वैज्ञानिक तरीक़े से समझाने के चक्कर में तो नहीं पड़ गया, जबकि अधिकांश या शायद सभी लोगों के लिए यह महत्त्वपूर्ण था कि फ़िलोफ़ेड की 'उकसानेवाली' अन्तरिक्ष से की जा रही हरकतों से किसी तरह बचा जाये। ऐसा हो जाये कि कसांद्रा भ्रूणों के बारे में कुछ देखने को, सुनने को न मिले, उसके संकेतों के बारे में भूल जायें। मँजे हुए राजनीतिज्ञ ऑलिवर ओर्डाक ने जनता की यही नस पकड़ ली थी और तदनुसार चाल चलकर सफलता प्राप्त कर ली थी। बेशक, उसे राजनीतिक सफलता मिल चुकी थी। हालाँकि, यह सच है, कि वह ग़लत राह पर चलकर मिली थी। मगर लोगों को दुबारा विश्वास कैसे दिलाया जाये, कैसे यह समझाने पर मजबूर किया जाये कि उनके साथ एक बहुत बड़ा धोखा हुआ है।

बोर्क यह बात अच्छी तरह समझता था कि ओर्डाक के मुक़ाबले में उसके पास राजनीतिक अनुभव, राजनीतिक सूझबूझ नहीं है। हाँ, वे अब दुश्मन हो गये थे। इतने अप्रत्याशित तरीक़े से और ऐसे कि यह दुश्मनी अब कभी खतम नहीं हो सकती थी। और, चाहे बोर्क चाहे या न चाहे, एक संघर्ष की, अवश्यम्भावी संघर्ष की स्थिति उसके सामने उपस्थित हो गई थी। वह, जिसकी ओर्डाक को ज़रूरत थी—प्रेसिडेण्ट पद के लिए आम जनता का समर्थन—उसे मिल गया था। इस दृष्टि से भाग्य ने उसे मेहरबानी करके दो साधन भी दे दिये थे : अन्तरिक्ष में फ़िलोफ़ेइ, धरती पर—बोर्क।

यही सब सोचते हुए रॉबर्ट बोर्क इस नतीजे पर पहुँचा कि इस तुच्छ राजनीतिक संघर्ष में उसे कितनी शीघ्रता से खींच लिया गया है, दिल पर विद्रोह की भावना ने कितनी मजबूती से अधिकार कर लिया है। ओर्डाक से आमने-सामने बात करने को जी चाह रहा था। सीधे उसके पास जाकर,

आँखों में आँखें डालकर, आवाज़ चढ़ाये बग़ैर, मगर तीक्ष्णता और तीव्रता से यह कहने को जी चाह रहा था, "कैसे नीच हो तुम!" ताकि यह वाक्य उसके दिल के आर-पार हो जाये। और उसके पश्चात् सबके सामने यह घोषणा की जाये कि ओर्डाक नीच है और ऐसे व्यक्ति को सत्ता पर नहीं आने देना चाहिए, वरना यह शैतान को निमन्त्रण देने के समान होगा, और ऊपर से सर्वाधिक ख़तरा इस बात का है कि कोई जान भी न पायेगा कि वह शैतान है! "नहीं, नहीं, सिर्फ़ यही बात नहीं होनी चाहिए, नहीं होनी चाहिए,"—सोचता रहा ओर्डाक, अपने ही ख़यालों से दूर हटता गया—"होने दो उसे राष्ट्रपति, जो चाहे होने दो, मगर, मेरे बग़ैर! नहीं, नहीं, मेरा काम राजनीतिक संघर्ष करना नहीं है, मेरा काम है लोगों को यह बताना कि कसांद्रा दाग़ से मुँह मोड़कर वे हृदय की संकीर्णता का परिचय दे रहे हैं, समस्या के उद्गम से, उसकी गहराई से आँखें चुरा रहे हैं, अपने दुर्भाग्य को और अधिक शोचनीय बना रहे हैं। मगर कैसे, कैसे विश्वास दिलाऊँ उन्हें कि सत्य भयानक है, मगर आँखें बन्द नहीं करना चाहिए, इससे निकलने का रास्ता ढूँढ़ना चाहिए?"

खुली हवा में साँस लेने के लिए बोर्क बालकनी में आया, वहाँ रात की ठण्डक शिशिर का अहसास दिला रही थी—पत्ते अँधेरे में ख़ामोशी से सरसरा रहे थे, उसे कँपकँपी लगने लगी। चाँद नीचे सरक गया था हाइवे के निकट की पहाड़ी को लगभग छू रहा था। बोर्क ने उस पहाड़ी के पीछे स्थित गोल्फ़ के मैदानों की कल्पना की, चाँद चमक रहा है, रात बाक़ी है, हल्का और खुला-खुला आज़ाद-सा महसूस हो रहा है, मगर यह क्या—गेंद पर कोई निशाना ही ठीक नहीं बैठ रहा, वह न उड़ रही है, न ही लुढ़क रही है; उसने कितना ज़ोर लगाया, कितनी बार निशाना लगाया, कितनी कोशिश की, मगर गेंद अपनी जगह से टस-से-मस नहीं हुई। और तभी न जाने कहीं ऊपर से प्रकट होता है मैक्स फ्राइड, उसका स्वर्गवासी सहयोगी, प्रोफ़ेसर। चलो, वह कहता है, उड़ चलें चाँद पर, वहाँ पर ऐसे मैदान हैं, चाँद की रोशनी में गोल्फ़ खेलेंगे। मैक्स से आकर्षित होकर वह उसके पीछे-पीछे जाता है, मैदानों के ऊपर उड़ता है और जैस्सी पीछे से भागती हुई उसे आवाज़ देती है, वापस बुलाती है। और, न जाने क्यों रोती है। यह सब सपने जैसा क्यों दिखाई दिया? आश्चर्य की बात है, अगर, यदि ग़ौर किया जाये तो बहुत आश्चर्य की भी नहीं है। मैक्स उसका घनिष्ठ मित्र था और हर प्रकार की गूढ़ विद्या एवं ज्योतिष शास्त्र में उसे गहरी

दिलचस्पी थी। तारों को देखकर बतलाने की कोशिश करता था कि गोल्फ़ के खेल में कितने अंकों से जीतेगा अथवा हारेगा। कभी-कभी उसकी भविष्यवाणियाँ सत्य होती थीं, मगर अकसर उनके कारण उस 'जादूगर' का मज़ाक़ भी उड़ाया जाता था। हो सकता है, मैक्स की आत्मा ने उस दुनिया में कुछ अनुभव किया हो, कुछ ढूँढ़ा हो, और जैसा कि वह कहता था, नकारात्मक ज्योतिष योग के आगमन को भाँपा हो, और इसीलिए अपने मित्र को इस आघात के प्रभाव से दूर ले जाने की इच्छा से उसे चाँद पर उड़ने के लिए बुला रहा हो। इसीलिए सपने में आया, पूर्व चेतावनी दे गया।

हाँ, अगर मैक्स जीवित होता तो शायद मीटिंग में जो कुछ हुआ, उसके बाद फ़ौरन न्यूबेरी स्थित उसके घर पर, रात को ही, आ जाता। चाहे इससे कुछ लाभ न होता, मगर वह था ऐसा ही आदमी, कुछ-कुछ हुल्लड़ मचानेवाला, मगर बेहद सहानुभूति रखनेवाला। अकसर पिआनो पर, आसान संगीत रचनाओं में जैस्सी का साथ देता था, और ठीक ही बजाता था। जैस्सी मुस्कुराती, "बॉब, तुम्हारे सारे दोस्त मैक्स जैसे ही हैं, अजीब से, शास्त्रीय शैली के बुद्धिवादी। आप लोगों को तो किसी मठ के जैसा भाईचारा निभाना चाहिए था, तुम होते मठ-प्रमुख, कट्टर धर्मगुरु और सजीला मैक्स होता तुम्हारा दाहिना हाथ, हर जगह साथ ही रहता। तब आप लोग प्रसिद्धि पाते न केवल विज्ञानों में, बल्कि किसी और चीज़ में भी, एकदम अलग क्षेत्र में।" बेचारा मैक्स, वह जैस्सी के प्रति उदासीन तो न था और कभी-कभी इसी बात को लेकर मसख़रापन कर बैठता। मज़ाक़ की आड़ में दिल की भावनाएँ व्यक्त करना उसे अच्छा लगता था :

"सुनो रॉबर्ट, मुझे तुमसे साफ़-साफ़ कहना होगा कि तुमने मेरा जीवन बर्बाद कर दिया है।"

"वह कैसे?"

"अगर तुम न होते तो जैस्सी से मोहब्बत का इज़हार मैं कर बैठता।"

"मगर, शायद, अभी भी देर नहीं हुई?"

"नहीं, सिर्फ़ तब, जब तुम्हारा अस्तित्व ही न होता, सिर्फ़ तभी मैं उससे इस बारे में कहता।"

"अच्छा, सुनो, तब तो अब कुछ नहीं हो सकता। एक पात्र के रूप में मेरा अस्तित्व तो है ही।"

"यही तो बात है। अब तुम समझे कि कैसे तुमने मेरी उम्मीदों पर पानी फेर दिया।"

"मैक्स, मेरे दोस्त, तुम बड़ी आसान-सी ज़िन्दगी चाहते होगे। तुम इसी पात्र के रहते अपनी बाज़ी लगाओ, मगर सीधी-सादी, आरामदेह परिस्थितियों में, जैसा कि तुम चाहते हो, यह दिलचस्प नहीं रह जायेगा।"

"नहीं, तुम्हारी पृष्ठभूमि में मैं अपने आपको दिखाई ही नहीं देता। बिलकुल नहीं।"

"भला क्यों? औरतें तुम्हारी इज़्ज़त करती हैं—तुम मशहूर आदमी हो, कहना पड़ेगा—कि ख़ूबसूरत हो, किसी ज़माने में यूँ मोटरसाइकिल चलाते कि देखनेवाले देखते ही रह जाते। फिर तुम मुझसे ज़्यादा जवान भी हो।"

"मैं मोटरसाइकिल सवार, और तुम वैज्ञानिक, दुनिया भर में मशहूर, मैं मोटरसाइकिल सवार और तुम अमीर आदमी...किताबों के लिए काफ़ी मानधन मिलता है, फ़ैशनेबल न्यूबेरी में तुम्हारा एक ख़ूबसूरत घर है, बीवी वायलिन पर बाख़ और बीथोवेन की रचनाएँ बजाती है, और मैं मोटरसाइकिल पर घूमता रहता हूँ, तुम आधुनिक न्यूबेरी-गोल्फ़ मैदान में गेंद को दौड़ाते हो और मैं मोटरसाइकिल पर घूमता रहता हूँ; तुम भाषण देते हो क्रेमलिनों और व्हाइट हाउसों में, और मैं घूमता रहता हूँ मोटरसाइकिल पर..."

"रुको, रुको मैक्स, इतना बेचारे न बनो! तुम सिर्फ़ मोटरसाइकिल चैम्पियन नहीं हो, और यह तो विगत की बात है। अपने विज्ञान में—राजनैतिक भूगोल में, तुम्हारा बड़ा नाम है, पूरा ग्रह तुम्हारे हाथों में है। ग्रह की बात हो रही है, सोचो, समूचा ग्रह! तुम ज़रा सावधानी से बोलो, वरना हमारी बातें आन्ना सुन लेगी, सबसे ख़ूबसूरत पोलिश महिला, कैसे पति हो तुम? हंगामा! मोटरसाइकिल भी किसी काम न आयेगी! और वह तो ख़्वाबों में रहती है!"

"हाँ, रॉबर्ट, तुमने, शायद, मेरी नस पकड़ ली। आन्ना के बारे में तुमने बिलकुल सच कहा। और ग्रह के बारे में—बिलकुल नहीं। राजनैतिक भूगोल में सब कुछ जानना आवश्यक है, वर्ना उसका पीछा छोड़ दो। यह विशेष प्रकार का, सर्वभक्षी विज्ञान है। मैं तो कहूँगा कि यह जानकारी का बैंक है। हाँ, इस दृष्टि से मैं विश्व का बैंकर हूँ। बीसवीं सदी का रोथशील्ड। मैं सब जानता हूँ, सब देखता हूँ, मगर इससे क्या? कहते हैं कि आकाश में बैठा-बैठा ईश्वर भी सब देखता है, सब जानता है, मगर कुछ भी नहीं... ।"

वही आदमी न रहा। कार दुर्घटना में मारा गया। तेज़ी से कार चलाना बहुत पसन्द था उसे। आन्ना असमय में ही बूढ़ी हो गई। बेटे ने शादी कर

ली और अलग रहता है। जैस्सी और आन्ना एक-दूसरे से फ़ोन पर बातें करती हैं, कभी-कभी मिल भी लेती हैं। अभी गर्मियों में ही तो आन्ना आकर गई है। वे सब इकट्ठे गोल्फ़ के मैदान में गये थे खुली हवा में साँस लेने, टहलने, खेल देखने। दिन अच्छा गुज़रा, वहीं गोल्फ़-क्लब में खाना भी खाया। और अनचाहे ही बीते दिनों को याद करते रहे, मैक्स के बारे में बड़ी देर बातें करते रहे...उसे यहाँ की जगहें बड़ी अच्छी लगती थीं। हमेशा यहाँ आने को तैयार रहता था...

ओह, बेचारा प्यारा दोस्त, मैक्स फ्रायड। इस समय तुम होते तो क्या कहते, इस सबके प्रति, जो हो रहा है, तुम्हारा क्या रुख़ होता, जब दिलोदिमाग़ में सब कुछ गड्ड-मड्ड हो गया है। अदृश्य आनुवंशिकी का बवण्डर प्रहार करके, सबको घुमा गया है। अब चुनाव करना ही होगा : या तो शुतुरमुर्ग की भाँति रेत में सिर छुपाकर बैठो, जैसा कि अधिकांश लोग करना चाहते हैं, जिससे किसी तरह तूफ़ान गुज़र जाये, या फिर ईश्वर की ओर देखो और उससे नज़र हटाये बिना उसकी चेतावनी लोगों तक पहुँचाओ, क्योंकि ईश्वर सिर्फ़ चेतावनी ही देता है, निर्णय तो स्वयं मनुष्य को ही करना होता है। इस बात में मैक्स फ्रायड बिलकुल सही था। और सपने में वह यूँ ही नहीं आया था। उत्तेजित था, पूर्वाभास हो गया था उसे, शायद। बुला रहा था, बचाना चाहता था दुर्भाग्य से, बुला रहा था चाँदवाले गोल्फ मैदानों पर...

मगर अब परिस्थिति यह है कि ओर्डाक ने, बातों-बातों में, समस्या का स्वरूप ही बदल दिया, समाज को अपनी उँगली पर नचाया, उसका ध्यान बँटाया, और साथ ही शूरता का, पराक्रम का प्रभामण्डल पाने के लिए सबके सामने उसे, बोर्क को, राजनीतिक द्वन्द्व के लिए ललकारा। और उसे तैयार रहना होगा, इस आह्वान को स्वीकार करना होगा, कसांद्रा दाग़ के बारे में अपना मत बताना होगा, फ़िलोफ़ेइ को फ़ितनागिरी और राजनैतिक सट्टेबाजी से बचाना होगा। ओर्डाक ने जो कुछ भी किया उसका नाम कुछ और हो सकता है क्या? हे भगवान्, रात के दो बजनेवाले हैं, बोर्क चौंका, काम पूरा करना होगा। कार्रवाई शीघ्रता से करनी होगी। वापस जाने की गुंजाइश ही नहीं है।

अध्ययन-कक्ष में लौटते हुए प्रवेश-द्वार के निकट आईने में अपने प्रतिबिम्ब को देखकर वह ठिठका। अनिद्रा से आँखें लाल हो गई थीं। उनमें कितनी पीड़ा और उत्तेजना थी और बाल भी अब एकदम सफ़ेद हो गये

थे। यह तो अच्छा है कि पूरी तरह गंजा नहीं हुआ था, जैसे कई लोग हो चुके थे। बूढ़ा, राइन नदी की उस चट्टान की तरह, जिसके नज़दीक से वह हाल ही में जर्मनों के साथ, शोर मचाते संवाददाताओं के साथ गुज़रा था, उन्होंने उसके 'इण्टरव्यू' को यही शीर्षक दिया था 'बूढ़ी चट्टान से एक मुलाकात', ज़रा भी सन्देह किये बिना कि शीघ्र ही जब वह सागर के ऊपर से, अटलाण्टिक के ऊपर से गुज़र रहा होगा तभी पादरी फ़िलोफ़ेइ रूपी बिजली गिरेगी, तूफ़ान आयेगा और पूरे विश्व को भय के गर्त में धकेल देगा, और तब उसकी ओट में मंच पर प्रकट होगा वह शैतान—ऑलिवर ओर्डाक। ज़ाहिर है कि मुक़ाबला करना ही पड़ेगा...

बोर्क कम्प्यूटर पर बैठने ही वाला था कि क़दमों की आहट सुनाई दी। जैस्सी नीचे से आ रही थी।

"तो, कैसे चल रहा है?" उसने दहलीज से ही पूछा।

"ठीक है, काम कर रहा हूँ।" उसने जवाब दिया और उसे अपने सपने के बारे में बताने ही वाला था, जो अचानक किसी बात की याद दिला गया था मगर बताया नहीं।

जैस्सी थकी हुई लग रही थी, मगर फिर भी उसकी आँखों में कोई चमक थी।

"मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहती थी बॉब, मगर जानते हो, मैं तुम्हें चकित करना चाहती हूँ।"

"किस बात से तुम मुझे चकित कर सकती हो?"

"देखो, मैं काग़ज़ों का पुलिन्दा लाई हूँ। तुम्हें उनकी ज़रूरत पड़ सकती है।"

"क्या है यह?"

"फ़ैक्स। सोचो, किसने भेजे हैं? एन्थोनी यूंगेर ने।"

"एन्थोनी यूंगेर ने?" उसने फिर पूछा, "और वह क्या कहता है? क्या ख़ास बात लिख रहा है?"

"याद है, मैंने तुम्हें कहा था कि मैं सभी टेलीफ़ोनों के तार निकाल रही हूँ। कल्पना कर सकते हो कि उसने फ़ोन करने की कितनी कोशिश की होगी। मगर, कौन जानता था? मगर हॉलवाला फ़ैक्स निकालना मैं भूल गई थी, दिमाग़ में ही नहीं आया। और फिर, सुना कि कोई चीज़ लगातार सरसरा रही है, देखा तो काग़ज़ों का पूरा ढेर लगा हुआ है। देखो, पढ़ो। हर पृष्ठ के ऊपर वह लिख रहा है, "भगवान् के लिए, फ़ैक्स बन्द न

कीजिए।" उसके फ़ैक्स अभी भी आ रहे हैं, एक के बाद एक पृष्ठ। उसे क्या हो रहा है? बेचारा बच्चा! तुम पढ़ो, बाद में मैं कुछ और लाऊँगी।"

पूरी तरह अप्रत्याशित! रात के दो बजे हैं। और कोई है, जो सो नहीं रहा, पृष्ठ-पर-पृष्ठ लिखे जा रहा है फ़ैक्स भेजता जा रहा है। लिख रहा है एन्थोनी यूंगेर, जिससे उसने सिर्फ़ एक बार फ़ोन पर बात की थी, जिसे ठीक से पहचानता भी नहीं। मगर चुनावपूर्व मीटिंग में, जब यूंगेर ने हिम्मत जुटाई थी, चाहे असफल ही सही, ओर्डाक को उसकी बहकानेवाली उन्मादपूर्ण दौड़ से थामने की, तब उसने एक आदर्शपूर्ण चुनाव किया था, वह ओर्डाक की कमेटी का आदमी, खुल्लमखुल्ला अपने नेता से मतभेद प्रकट करने की जुर्रत कर रहा था, उसके राजनीतिक शिकार के पक्ष में चला गया था। मीटिंग के बाद उसे क्या-क्या न सहना पड़ा होगा, इसका अन्दाज़ लगाना मुश्किल नहीं है। स्वयं ओर्डाक और उसकी विश्वस्त टीम ने अवश्य यूंगेर को विश्वासघाती सिद्ध किया होगा। ओर्डाक की छत्रछाया में अपने 'कैरियर' के बारे में सोचने का तो अब सवाल ही नहीं उठता था। दोस्त, शायद हँस रहे होंगे : ऐसा तो आज तक कभी हुआ न था—अपने हाथों अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली। इतना सब होने के बाद भी वह ओर्डाक द्वारा अपमानित और कलंकित किये गये, पूरी सभा द्वारा, जासूसी का ठप्पा लगाये गये व्यक्ति की मदद के लिए दौड़ने का साहस जुटा सका। बोर्क को एन्थोनी यूंगेर के सामने अटपटा लग रहा था, और साथ ही उसके हृदय में कुछ गर्माहट भी महसूस हो रही थी। कभी भी, किसी अजनबी ने सहानुभूति से उसके दिल में जगह नहीं बनाई थी, क्योंकि वह हमेशा आत्मनिर्भर और दृढ़ था। और अब, ज़बर्दस्ती कोने में धकेले जाने से वह वहाँ से दूर छिटक रहा था, आहत, सार्वजनिक रूप से सिर पर मार खाकर अब कुछ देर के लिए वह दुनिया से छिप रहा था, दाँत भींचते हुए अपने पैरों पर खड़े होने की कोशिश कर रहा था, जिससे दुबारा शक्ति एकत्रित करके लड़ाई में शामिल हो जाये, इस बार अपनी अच्छा से, बड़ा ख़तरा उठाते हुए, सिर्फ़ अपने ही बलबूते पर। इसीलिए, यह सब समझते हुए ही तो यूंगेर ने हर पृष्ठ की पहली पंक्ति में एक ही एक वाक्य लिखा था, "भगवान् के लिए, फ़ैक्स बन्द न कीजिए।"

"मिस्टर बोर्क, मैं समझ रहा हूँ कि आपके घर के टेलीफ़ोन क्यों बन्द हैं—यूंगेर ने लिखा था। कभी भी इस तरह परेशान करने की धृष्टता न करता, मगर मुझे भी समझने की कोशिश कीजिए। अगर अभी मैं

कम-से-कम फ़ैक्स के द्वारा ही आपसे वह न कह पाया, जिसे मैं आपके सामने घुटने टेककर कहना चाहता था, तो वह मेरे लिए सचमुच मौत की-सी स्थिति होगी। चुनाव पूर्व सभा में जो कुछ भी हुआ, उसके बाद मैं अपने आपको माफ़ नहीं कर पा रहा हूँ, मैं सब कुछ करने को तैयार हूँ, हत्या भी, अगर इससे कोई लाभ होनेवाला हो तो। इतनी भयानक स्वीकारोक्ति के लिए मुझे क्षमा करें। मगर निष्कर्ष यही निकलता है कि ओर्डाकवाली इस बेतरतीब एवं अप्रिय घटना में मैंने आपको घसीटा है, आपको एक बाज़ारू चीज़ के रूप में इस्तेमाल किया उस अनैतिक राजनैतिक शिकारी की लोकप्रियता की राह में अचूक निशानेबाज़ी के प्रदर्शन के लिए। मैं रोऊँगा नहीं, माफ़ कीजिए, मगर कोहनियाँ ज़रूर काट रहा हूँ; यह मैंने किसकी सेवा की, किसके लिए पत्थर ढोये? आग लगे मेरे अन्धेपन को और मेरी न सुधारे जाने योग्य सहज विश्वास करने की प्रकृति को! मगर इस समय बात मेरे बारे में नहीं हो रही है, माफ़ कीजिए मुझे, भगवान् के लिए। बात यह हो रही है कि अब आगे क्या करना होगा। कसांद्रा दाग़ से कैसे निपटा जाये।"

यहाँ पृष्ठ समाप्त हो गया था, और दूसरा पृष्ठ उसी विनती से शुरू हुआ, "भगवान् के लिए फ़ैक्स बन्द न कीजिए।"

"तो, मिस्टर बोर्क, आगे क्या करना होगा?"

इस पूरे प्रकरण में मेरी भूमिका को न देखते हुए मुझे कुछ कहने की इजाज़त दीजिए। शायद मेरे सुझाव लाभप्रद हों।

"मिस्टर बोर्क, कहना कठिन है, मगर कहूँगा। पहले ही माफ़ी माँग लेता हूँ कि आपको ऐसा सुझाव दे रहा हूँ। मगर मेरे पास खोने के लिए कुछ है ही नहीं। मैं आपके सम्मुख इतने बड़े गुनाह का दोषी हूँ कि अब बाक़ी चीज़ों का मेरे लिए कोई मतलब ही नहीं है।

"मेरा इशारा इस ओर है कि ओर्डाक पर मुक़दमा चलाया जाये, झूठ में लिप्त होने का, क्योंकि उसने आपसे हुई व्यक्तिगत बातचीत का सहारा लिया है। इस वार्तालाप के कोई गवाह न थे और न हो सकते थे। आपने उससे बात की थी टेलीफ़ोन पर। और हो सकता है, बात न भी की हो, और अगर की भी हो तो किसी और विषय पर। यह चाल ओर्डाक की ही शैली में है। कलंक का बदला कलंक। वार्तालाप टेप नहीं हुआ था। यह बात मुझे अच्छी तरह मालूम है। कसम खाता हूँ। आप स्वयं ही निर्णय लीजिए। अगर यह चाल चलना सम्भव हो तो मैं सनसनीख़ेज तरीक़े से सब बन्दोबस्त करूँगा। प्रचार-प्रसार के माध्यम फ़ौरन इसे उछालेंगे।

"मगर, संघर्ष का एक बिलकुल अलग रास्ता भी है। मिस्टर बोर्क, यदि आपको फ़िलोफ़ेइ की सच्चाई में विश्वास है और यदि सत्य की ख़ातिर आप अपनी बात पर अड़े रहते हैं, तो, मैं भी, अन्त तक आपका साथ दूँगा, हालाँकि इस स्थिति में मेरी भूमिका केवल एक सहायक की ही होगी। मैं आपके हथियार उठाकर चलूँगा। आपको कठिन संघर्ष करना होगा, आप पीछे हटने का फ़ैसला नहीं ले सकेंगे—यह निश्चित है।

"परिस्थिति कुछ इस प्रकार है कि इस क्षण युद्ध के मैदान में आप अकेले योद्धा हैं, निपट अकेले, शायद, पूरे ग्रह पर आप ही अकेले व्यक्ति हैं, जिसने खुल्लमखुल्ला अन्तरिक्ष पादरी का पक्ष लिया है, आप ही हैं जो 'जन्म से विरक्ति' वाली धारणा का समर्थन कर रहे हैं। चुनावपूर्व सभा में जो कुछ हुआ उसके पश्चात्, 'एक संगठित जनमोर्चे' के एकजुट से ओर्डाक का समर्थन करने के बाद, वे गिने चुने लोग, जो सम्भवतः फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार के बारे में यदि कुछ कहना चाहते भी होंगे, तो अब संयम रखेंगे, चुप रहेंगे। और आम जनता..."

"भगवान् के लिए फ़ैक्स बन्द न कीजिए!!!"

"तो, मिस्टर बोर्क, सभा में मतदाताओं की प्रतिक्रिया को देखते हुए, आम जनता में अफ़सोस के साथ, मगर निश्चित रूप से बता सकता हूँ—कि देश की लगभग पूरी आबादी उन अन्तरिक्षीय प्रयोगों के विरुद्ध है जो कसांद्रा दाग़ को प्रकट करने की दिशा में किये जा रहे हैं। लोग कसांद्रा दाग़ के बारे में कुछ सुनना नहीं चाहते, कुछ भी जानना नहीं चाहते, औरतें नहीं चाहतीं कि उनका अदृश्य 'जोन्दाझ' किरणों से नियन्त्रण किया जाये। 'अल्फ़ा बेसबॉल' में हुई घटनाओं के बारे में सभी समाचार एजेन्सियों ने सूचना दी है। इसके फलस्वरूप ओर्डाक की 'रेटिंग' सभी राज्यों में अचानक बढ़ गई है। अभी-अभी उसने इस जोश के ठण्डा पड़ने से पहले यह घोषणा की है कि मानवाधिकारों की रक्षा के लिए वह सदा तत्पर रहेगा, महिलाओं की—माँ की—चिरन्तन पवित्रता की रक्षा करेगा और उकसानेवाले, बहकानेवाले, सभी प्रकार के फ़िलोफ़ेइवादियों से संघर्ष करता रहेगा, चाहे वे कहीं भी क्यों न हों—धरती पर या अन्तरिक्ष में। मिस्टर बोर्क, आपकी तस्वीर टेलीविज़न पर निरन्तर दिखाई जा रही है, कुछ टिप्पणियों के साथ मास्को में फ़िलोफ़ेइ के फ़ोटो प्राप्त किये गये हैं और वे भी इस दौड़ में शामिल हो गये हैं।

"मैं इसके बारे में यह सोचकर लिख रहा हूँ कि आपने न केवल टेलीफ़ोन निकाल दिये हैं, बल्कि आपका टी.वी. भी नहीं चल रहा। आपको

मीटिंग के बाद की परिस्थिति का जायज़ा लेना चाहिए, यह जानना चाहिए कि घटनाएँ आगे कौन-सा मोड़ लेती हैं। मुझे डर था कि यह सारा घटना-क्रम और तेज़ हो जायेगा, और अब उसे रोकना किसी के बस की बात नहीं है...”

“भगवान् के लिए फ़ैक्स बन्द न कीजिए!!!”

“तो, मिस्टर बोर्क, अब परिस्थिति हाथ से निकल चुकी है और इसीलिए आपको, मेरे विचार से अपनी ख़ातिर, सबसे पहले यह निर्णय लेना होगा कि इन हालात में आप कौन-सी भूमिका निभायेंगे, कौन-सा रास्ता अपनायेंगे। इस सम्भावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि शीघ्र ही तथाकथित ‘आनुवंशिकी कोष के नियन्त्रण’ के विरुद्ध आम प्रदर्शन होंगे। अगर आप ‘ट्रिब्यून’ के लिए अपना लेख तैयार कर रहे हैं तो सोच लीजिए, कि इस लेख को आप स्वयं अख़बार के दफ़्तर ले जायेंगे, या उसे फ़ैक्स, टैलेक्स या किसी अन्य के द्वारा भेजना ज़्यादा ठीक समझते हैं, क्योंकि मेरी जानकारी के अनुसार अख़बार के प्रवेश-द्वार के निकट पोस्टर लिए लोगों की भीड़ इकट्ठी होने लगी है, जो ज़ोर-ज़ोर से चीख़कर अपनी माँगें सुना रहे हैं और धमकियाँ दे रहे हैं। उन्होंने घोषणा की है कि अख़बार के भवन को चौबीसों घण्टे घेरे रहेंगे। पुलिस ऐसी स्थिति में प्रभावहीन हो जाती है। माफ़ कीजिए, ख़बर बहुत अप्रिय है।

“और मैं फिर से दुहराता हूँ : युद्ध के मैदान में आप अकेले योद्धा हैं। फ़िलोफ़ेइ अन्तरिक्ष में है, विरोधी उस तक पहुँच नहीं पायेंगे, उसके पास यह सम्भावना नहीं है कि अपने सहयोगियों से विचार-विमर्श कर सके। सोचिए, कौन-सा रास्ता अपनायेंगे।

“आप वह समझ गये हैं और उसका समर्थन कर रहे हैं जिसे दूसरे, वर्तमान की ही कल्पना करनेवाले, या तो समझ नहीं सकते, या समझना नहीं चाहते। वे भविष्य के बारे में ज़रा भी परवाह नहीं करते, जैसा कि कुछ समय के लिए दुनिया में जीवन गुज़ारनेवाले करते हैं। आप अकेले हैं, यह दायित्व आपका है। न जाने ऐसा क्यों होता है कि महान् कार्य एक ही व्यक्ति करता है। हर हाल में, मैं आपके साथ हूँ, मैं आपसे सहयोग करूँगा, जो कुछ भी मेरे बस में है—करूँगा, सिर्फ़ इसलिए नहीं कि जैसा मैं लिख चुका हूँ, स्वयं को आपका अपराधी मानता हूँ, क्योंकि फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार के बारे में आपसे बात करने का सुझाव ओर्डाक को मैंने दिया था, बल्कि इसलिए कि, मैं भी फ़िलोफ़ेइ के विचारों से प्रभावित हुआ हूँ,

मानवता के भविष्य के बारे में उसकी और आपकी चिन्ता, अब जैसे, मुझे भी सताने लगी है। हो सकता है, अब तक मनुष्य भटक रहा था, मगर अब समय आ गया है कि वह अपने आपसे कहे—या तो बेहतर बनो, या फिर मरे हुए विशालकाय जीवों के समान अवशेष शास्त्र के पृष्ठों में शामिल हो जाओ।"

"माफ़ कीजिए, पृष्ठ दोबारा समाप्त हो गया!"

"भगवान् के लिए, फ़ैक्स बन्द न कीजिए। अभी मैंने पूरी बात नहीं कहीं है...मिस्टर बोर्क, माफ़ कीजिये, मैं मुद्दे की बात पर आता हूँ। मेरे विचार से, कल—नहीं, वह तो आ चुका है, आज बन गया है—आज का दिन बहुत कुछ दिखलानेवाला है। अफ़वाहों और सनसनीख़ेज ख़बरों का बाज़ार गर्म है। सिर्फ़ एक चीज़ जो इस सबसे विपरीत एवं अलग-थलग होगी, वह—आपका लेख, भाषण, आपकी दूरदर्शिता, आपकी दृढ़ता और स्थिति का आकलन करने की शक्ति। आपने क्या निर्णय लिया? क्या प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करना चाहेंगे? अगर हाँ, तो मैं इसके आयोजन में भाग लूँगा, आपके निकट ही रहूँगा।

"आगे। न्यूबेरी में आपके पास सुबह से ही, और सम्भव है, बिना कोई सूचना दिये, संवाददाता ज़रूर आयेंगे। अगर आप उनसे मिलना नहीं चाहते, तो बिना भूले किसी दर्शनीय स्थान पर सूचना लिखकर लगा दीजिए कि आप किसी से भी मिलना नहीं चाहते, और विनती करते हैं कि आपको परेशान न किया जाये।

"मैं न्यूबेरी जा चुका हूँ, गोल्फ़ के मैदानों में और शहर के निकट बने उद्यानों में। मेरे घर से, रीडिंग से, आपके घर तक तीस मिनट की 'ड्राइविंग' है। यदि आप चाहें, तो मैं आ सकता हूँ, ताकि आपसे विचार-विमर्श कर सकूँ। इस सम्बन्ध में अपने विभिन्न नम्बर आपको बता रहा हूँ।

"मिस्टर बोर्क, रात के तीन बज चुके हैं। और मैं लिखे जा रहा हूँ, इस उम्मीद में कि आप मेरे फ़ैक्स ज़रूर पढ़ेंगे, जैसे ही आपकी नज़र उन पर पड़ेगी। आपसे यह सब कुछ कहने को इतना दिल चाह रहा था! दुनिया में हो रही घटनाएँ, वे भी, जिनके बारे में प्रतिदिन समाचार-पत्र लिखते हैं, सभ्यता के संकट की ही पुष्टि करती हैं। इन परिस्थितियों में एक नये जीव का दुनिया में आगमन ऐसा ही प्रतीत होता है मानो उसे बारूदी सुरंगवाले मैदान पर धकेल दिया गया हो। मगर वह बारूदी सुरंग है कहाँ, जीवन की

किन सीमाओं में छिपी है, लोगों के कार्यों में, विश्व में दी जा रही शिक्षा में या दैनन्दिन व्यवहार में—ठीक-ठीक बताना असम्भव है।

"अभी-अभी टेलीविज़न पर दिखा रहे थे : मास्को के लाल चौक में—मुझे वहाँ जाना इतना अच्छा लगता था—एक भयानक हादसा हुआ। प्रदर्शनकारियों के दो समूहों में झगड़ा हो गया, युद्ध उद्योग कॉम्प्लेक्स के समर्थकों और परिवर्तन के समर्थकों के बीच। परिणामस्वरूप एक लड़की ने आत्मदाह कर लिया, सबकी नज़रों के सामने धू-धू कर जलती रही। इन दृश्यों को देख पाना असम्भव है। संवाददाता बताते हैं कि लोग एक पोस्टर को देखकर भड़क उठे जिसे लेकर इस लड़की का साथी मीटिंग में आया था। उस पोस्टर पर...मैं अगले पृष्ठ पर लिखूँगा...यह, समाप्त हो रहा है।"

"भगवान् के लिए फ़ैक्स बन्द न कीजिए, मुझे यह बताना है कि लाल चौक पर क्या हुआ...

"मिस्टर बोर्क, बात यह थी कि उस पोस्टर पर लिखा था, 'मानव को हथियारों का निर्माण करने के लिए पृथ्वी पर जन्म नहीं लेना चाहिए!' और ज़ाहिर है कि यह इबारत उन लोगों को नागवार प्रतीत हुई जिन्हें 'सुरक्षावादी' कहा जाता है जो सरकार और समाज द्वारा भेजे गये थे, या संक्षेप में कहें तो, युद्ध उद्योग में रत लोगों द्वारा जो मानव के विनाश की सामग्री का निर्माण करते हैं—पिस्तौल की गोली से (सुरक्षावादी दुनिया में हर आदमी के लिए ऐसी सौ-सौ गोलियाँ बना चुके हैं।) ध्वनिरहित वायुयान तक, परमाणु अस्त्रों से सुसज्जित पनडुब्बियों तक, जो दिन-रात सागर की गहराई में पहरा देती रहती है, आक्रमण के लिए तत्पर, पहले ही आदेश पर महाद्वीपों के मध्य छोड़े जानेवाले राकेटों तक। यह धन और श्रम, हवा में फेंकने के समान है, व्यर्थ हैं, ऐसा ही सोचता था वह समझदार विद्यार्थी। हमारे अमेरिकी एम.आई.सी. के साथ-ही ऐसा ही सलूक होना चाहिए। वह भी अपनी जाति के लोगों के विनाश की सामग्री जुटा रहा है और सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए इसका समर्थन कर रहा है।

"मगर दूसरी ओर, ये अपनी जाति के लोग, जिन्हें मारने के बारे में तर्क दिये जाते हैं, और जिस उद्देश्य से सभी आवश्यक हथियारों का निर्माण किया जाता है, वे भी फ़रिश्ते तो नहीं हैं, वे भी सिर से पैर तक हथियारों से सुसज्जित हैं और वे भी अपने बहुमूल्य आदर्श (जिन्हें आजकल राष्ट्रवादी कहने का फ़ैशन चल पड़ा है।) के नाम पर औरों को मारना चाहते हैं, न

केवल आदर्श के लिए, बल्कि न्याय के नाम पर और अपने आर्थिक हितों के नाम पर।

"घेरा कसता जा रहा है। साथ ही; वह कभी भी ढीला नहीं पड़ा, उससे बाहर निकलना सम्भव नहीं है। इस सबसे, वह विद्यार्थी कैसे न चिल्लाता, अपने हाथ से उस पोस्टर पर कैसे वह न लिखता जिसके बारे में लोग शायद तब से सोच रहे थे, जब से उन्हें वाणी का वरदान मिला था, जिसके बारे में कहने के लिए मनुष्य की आत्मा छटपटा रही थी, सदियों से, युद्ध एवं शस्त्रों की बुद्धि पर हुई विजय के बारे में चीख़-चीख़कर कहना चाहती थी। हाइड्रोजन बम का निर्माण करने के बाद साखरोव ने रूस में इस सत्य को समझा गया और वह थम गया, चल पड़ा भाग्य से जूझने।

"पृथ्वी पर हथियारों की संख्या निरन्तर बढ़ती ही जा रही है, सभी, हर जगह, हथियारों से लैस होना चाहते हैं। कहीं इसी बारे में कसांद्रा दाग़ गर्भवती महिलाओं के माथे से संकेत तो नहीं भेज रहा है, कहीं इसी बारे में माता के गर्भ में पड़े-पड़े कसांद्रा भ्रूण मौन चीत्कार तो नहीं कर रहे, यदि दुनिया में जन्म लेनेवाले हर मानव के हिस्से में कम-से-कम सौ छेदनेवाली गोलियाँ तैयार हैं और यदि उसके भाग्य में समय से पहले मरना या मारना लिखा हो तो? वह विद्यार्थी इस बारे में कैसे न कहता? और वह अभागी लड़की, अपने आपको लाल चौक पर आग लगानेवाली, कहीं उसके भीतर वही भावना तो नहीं जाग उठी, जिसे सुना नहीं गया था और जिसे उसकी भ्रूणावस्था में ही दबा दिया गया था, जिसे कसांद्रा ग्रन्थि कह सकते हैं! मगर जीवन के प्रति भय का जो भाव उसके दिल में था, उसकी किसे चिन्ता थी?

"और तब एक विचार उठता है, आदर्श की दृष्टि से अटपटा ही सही : क्या होता, यदि मानव शस्त्रों का आविष्कार किये बिना, युद्धों को जाने बग़ैर विकास करता? क्या मानव तब वैसा ही होता जैसा वह आज है, क्या हमारी सभ्यता, उस हालत में, वैसी ही होती जैसी आज है, या पृथ्वी पर तब किसी और ही तरह का माहौल होता, और मनुष्य भी किसी और ही तरह का होता? क्या विकास की इस राह को आरम्भ से ही नकारा गया था? और यदि हाँ, तो किस विशेष कारण से, ख़ासतौर से यदि बुद्धि मानव को ऊपर से मिली हो तो, यदि बुद्धि जीवविज्ञान से श्रेष्ठ चीज़ हो तो?

"अब फ़िलोफ़ेइ ने दूर, अन्तरिक्ष में जाकर हौले से दुनिया का परदा हटा दिया है, और उसी समय स्पष्ट हो गया कि लोग इस गुप्त अभिशाप के बारे में जानना नहीं चाहते।

"मिस्टर बोर्क, यदि फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार विरोध के अलावा किसी और बात की अपेक्षा नहीं करते, तो भी मैं उनमें विश्वास करता रहूँगा। उनमें मुझे विश्व के विनाश सम्बन्धी, आत्मा को पीड़ा देनेवाली, भविष्यवाणियों का हल दिखाई देता है, जो आत्मा के निरन्तर नैतिक पतन से और भी तीव्र हो गई हैं।

"अनचाहे ही यह सोचने पर विवश होना पड़ता है कि ईश्वर ने हमारी रचना क्यों कर की, जब यह सुनने में आता है कि कराबाख़ में, आर्मेनिया और अज़रबैजान के बीच कई वर्षों से छलपूर्वक चल रही लड़ाई में, सेना के कमाण्डर मृत शरीरों का व्यापार करते हैं। रिश्तेदारों और निकट सम्बन्धियों को युद्ध में मारे गये लोगों की लाशें ख़रीदनी पड़ती हैं ताकि उन्हें ज़मीन में दफ़ना सकें। और यह भी व्यापार बन गया है। ऐसा भी होता है जब अपने ही सिपाही की पीठ में गोली मार दी जाती है जिससे उसके शव से पैसा कमा सकें। जब मैंने अख़बार में इस बारे में पढ़ा तो मेरा सिर घूमने लगा। क्या ऐसे कुकर्मों का प्रभाव मानव की आत्मा पर और उसके शरीर पर न पड़ेगा, धीरे-धीरे उसके वंशजों की रचना में परिवर्तन न लायेगा, पीढ़ियों में परिलक्षित न होगा?

"एक और उदाहरण लीजिए, अकल्पनीय क्रूरता का। तुर्की के एक शहर में एक होटल जला दिया गया, जहाँ सलमान रुश्दी के समर्थन में साहित्यकारों का सम्मेलन हो रहा था। न केवल सम्मेलन में भाग लेनेवाले ज़िन्दा जल गये, बल्कि होटल में रहनेवाले आम मुसाफ़िर भी ख़ाक हो गये। टेलीविज़न के संवाददाताओं ने इस पूरे हादसे की तस्वीर खींची : आग की प्रचण्ड लपटों में घिरी इमारत, ज़िन्दा जल रहे लोग, आग बुझानेवाले जो कुछ करने की कोशिश कर रहे थे, और पास ही खड़ा रूढ़िवादी नौजवानों का एक बड़ा हुजूम। यह हुजूम आग लगानेवालों की प्रशंसा कर रहा है, उछल रहा है, नाच रहा है, मुक्के दिखा रहा है, खुश हो रहा है, इस भयंकर दृश्य से एक वीभत्स प्रसन्नता प्राप्त कर रहा है। उत्तेजित, प्रतिशोध की भावना से जलते नौजवानों के चेहरे अग्नि के ताण्डव में दमक रहे थे। और टेलीविज़न फ़िल्म ली जा रही थी। यह कोई मनोरंजक फ़िल्म तो नहीं थी!

"हम कहाँ जा रहे हैं, क्या हो रहा है हमें? क्या अपने आपसे यह नहीं पूछना चाहिए, जर्मनी में ज़िन्दा जलाये गये तुर्की परिवारों के बारे में नहीं पूछना चाहिए?...आपने, शायद, अख़बारों में पढ़ा हो?...

"ऐसे पापकर्मों की फ़ेहरिस्त लम्बी, और लम्बी होती जाती है और

एक के बदले दूसरा कुकर्म किया जाता रहेगा जिसमें एक विशेष बात देखने को मिलती है : विभिन्न देशों में हो रहे ये कुकर्म अधिकाधिक भयानक होते जा रहे हैं। फ़िलोफ़ेइ ने साबित कर दिया है कि यह सब संचित होता रहता है और 'जीन्स' को प्रभावित करता है।

"पहले मेरा विश्वास था कि बुद्धि ब्रह्माण्ड का सबसे महत्त्वपूर्ण, सर्वोच्च अंग है, मगर बुद्धि ही बुराई की जड़ सिद्ध हुई है। क्या वह कभी आज़ाद हो सकेगी? कहीं कसांद्रा दाग़ इसी बारे में तो विलाप नहीं कर रहा, हमसे याचना तो नहीं कर रहा?"

"माफ़ कीजिए मिस्टर बोर्क, फ़ैक्स में काग़ज़ बदलना है..."

"मिस्टर बोर्क, भगवान् के लिए गुस्सा न कीजिए, मेरे तर्क काफ़ी विस्तृत हैं और मुझे डर है, कि आपको उनमें दिलचस्पी न होगी। मगर आज रात मेरे हृदय के द्वार खुल गये हैं। मैं समझ रहा हूँ कि आपके साथ क्या हो रहा है। और मुझे डर है, आपके लिए, साथ ही आपकी हिम्मत पर भरोसा है।

"इस पल-पल बदलते हालात पर ग़ौर करते हुए मैं इस नतीज़े पर पहुँचा हूँ कि फ़िलोफ़ेइ, पृथ्वी की कक्षा में रहते हुए, उस सबसे अलग नहीं रह सकता, जो पृथ्वी पर हो रहा है। अगर आप चाहें तो उससे शीघ्रातिशीघ्र सम्पर्क स्थापित करने का तरीक़ा ढूँढ़ना होगा; तकनीकी दृष्टि से यह काफ़ी कठिन काम है, मगर मैं टेलीविज़न कम्पनियों और अन्तरिक्ष संस्थाओं के अपने दोस्तों की मदद से यह करने की कोशिश कर रहा हूँ। आपका इस बारे में क्या ख़याल है? यदि आप इस प्रस्ताव से सहमत हैं तो मुझे सूचित करें, मैं आपको इसकी सम्भावना के बारे में बताऊँगा।"

और अन्त में, मेरी दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण सवाल। फ़िलोफ़ेइ के साथ सम्पर्क स्थापित करना क्यों ज़रूरी है, सिर्फ़ इसलिए नहीं कि उसे टेलीविज़न पर देखकर उसका स्वागत किया जाये? मेरा विचार है कि उसे जवाब देना होगा, और मुझे विश्वास है कि उसके पास जवाब हैं—उसने कसांद्रा दाग़ को कैसे उजागर किया और उसके पास इस बात का क्या प्रमाण है कि यह दाग़ भ्रूणों के भावी जीवन के प्रति, नकारात्मक रवैये का प्रतीक है, कुछ और नहीं। रोम के पोप को भेजे गये उसके पत्र से यह बात स्पष्ट नहीं होती। शायद आपने भी ध्यान दिया होगा कि इस सम्बन्ध में अभी कुछ और कहना शेष है। सोचता हूँ कि अन्य लोग भी, विशेषकर जीवशास्त्र से जुड़े वैज्ञानिक उससे यह सवाल पूछेंगे। इसलिए, मुझे लगता

है कि फ़िलोफ़ेइ का उस अनकहे, अस्पष्ट कथन को स्पष्ट करना आवश्यक है, मैं चाहता हूँ कि वह सवालों के जवाब दे।

"मुझे फ़िलोफ़ेइ से सम्बन्ध स्थापित करने का अवसर दें। आप निश्चय ही शीघ्रतापूर्वक आवश्यक दार्शनिक प्रारूप तैयार कर लेंगे, मुझे विश्वास है।

"हमें उन परिणामों से जूझना होगा, जो ऑलिवर ओर्डाक के, राह चलते दिमाग़ों में ज़हर भरने से उत्पन्न हुए हैं। मगर, यही भाग्य में लिखा है। और हमें जीतना होगा। उन्हीं राह चलते आदमियों के लिए! सादर,

आपका,

एन्थोनी यूंगेर

"पुनश्च : अगर मेरे नम्बरों की आवश्यकता हो—घर के फ़ैक्स का, टेलीफ़ोन का, मेरा पता—तो वह सब इन पृष्ठों पर हैं। कार्यालयवाले नम्बरों की ज़रूरत नहीं है, वहाँ मैं अब जाऊँगा नहीं..."

9

सुबह के साढ़े चार बज चुके थे। रॉबर्ट बोर्क लिखने की मेज़ पर पड़े, फ़ैक्स के पृष्ठों को ख़ामोशी से पढ़ रहा था। जैस्सी भी वहीं थी, उसने भी उन्हें पढ़ा था।

"हे भगवान्, क्या हो रहा है, क्या हो रहा है यह।" न जाने कितनी बार उसने दुहराया।

"तुम सो जातीं," पति ने सलाह दी।

"अगर तुम अकेले रहना चाहते हो तो मैं अभी चली जाऊँगी। मगर मैं शायद ही सो पाऊँ। मैं अपने आपमें नहीं हूँ। मैं समझ रही थी कि यह सब बड़ा ख़तरनाक है, मगर यह कल्पना न कर पाई थी कि सब कुछ इतना उलझ जायेगा। मालूम नहीं, क्या कहना चाहिए।"

"हाँ, जैस्सी! एन्थोनी यूंगेर ठीक कहता है। बिलकुल ठीक"—बोर्क ने सोच में डूबकर कहा। "उसे स्वयं भाग्य ने ही हमारे पास भेजा है। और उसका दृष्टिकोण नई पीढ़ी का दृष्टिकोण है। जीवन जीने का, उसे ग्रहण करने का एक अलग अन्दाज़ है। और कार्य करने की क्षमता एकदम महसूस होती है। मैं ख़ुद लेख के सिवा—और वह भी बहुत बड़े, शायद पूरे पृष्ठ के कुछ और करने की सोच भी नहीं सकता था। हम दोनों घर में एकदम बन्द होकर बैठ गये हैं। मगर घटनाओं से पूरी तरह कट जाना सम्भव नहीं है। वह, जिसे ओर्डाक ने उकसाया है..."

"बेहतर, अगर कहें कि खुला छोड़ दिया है।"

"हाँ, खुला छोड़ दिया है। ये शक्तियाँ, जिन्हें उसने खुला छोड़ दिया है, आज़ाद कर दिया है—बड़ी ख़तरनाक हैं। और ओर्डाक बहुत सोच-समझकर मेरे और फ़िलोफ़ेइ के ख़िलाफ़ जनता को, भीड़ को मुझ पर छोड़ रहा है।"

"और तुम्हें भरोसा है कि तुम अकेले इतने सारों को दुबारा विश्वास दिला सकोगे? उन्हें जो तुम्हारे ख़िलाफ़ हो चुके हैं?"

"मैं पीछे नहीं हटूँगा। प्रमाणित करता रहूँगा। मगर ऊँट किस करवट

बैठेगा, कहना मुश्किल है। कसांद्रा भ्रूणों की खोज सभी स्थापित मान्यताओं पर, वर्तमान जीवन पद्धति पर, घिसी-पिटी विचार-शैली पर करारी चोट है। कसांद्रा भ्रूणों की जीवन के प्रति भय की भावना को स्वीकार करने का मतलब है अब तक की सभी—अतीत की और वर्तमान की—राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्थाओं को, नैतिक मान्यताओं को सन्देह के कठघरे में खड़ा करना। ज़ाहिर है घिसी-पिटी धारणाओं पर यह प्रहार, उनकी टूटन, किसी को भी रास न आयेगी, गर्भधारण करनेवाली महिला से लेकर ओर्डाक जैसे व्यक्तियों तक को। इसीलिए यह विरोध आक्रामकता में परिवर्तित हो गया है।"

"मगर उन्हें तो फ़िलोफ़ेइ ही आक्रामक प्रतीत हो रहा है!"

"हाँ, वे उसी को आक्रामक समझ रहे हैं। मेरे लिए वह पैग़म्बर है, औरों के लिए शैतान। दुविधापूर्ण स्थिति उत्पन्न हो गई है : या तो हम पहले की तरह जीते रहें, सरेआम स्वयं को धोखा देते हुए, वैसे जैसे हमेशा जीते रहे हैं, या फिर कसांद्रा भ्रूणों की बढ़ती हुई संख्या के पीछे निहित कारणों का विश्लेषण कर, विश्व के अवश्यम्भावी अन्त की चेतावनी दें। मानव के सामने ये दो रास्ते हैं, जिनमें से उसे एक को चुनना है।"

"फ़िलोफ़ेइ स्वयं ही लिखता है कि उसका आविष्कार लोगों के लिए इतना अप्रत्याशित है जैसे आकाश में दूसरे सूर्य का प्रकट होना। मगर यह दूसरा सूर्य सदियों से स्थापित जीवन की रचना शैली को नष्ट कर सकता है। इस पर तुम्हारे विरोधी फ़िलोफ़ेइ पर यह इल्ज़ाम लगा रहे हैं कि उसके प्रयोगों के फलस्वरूप मानवाधिकारों का हनन हो रहा है। आगे क्या? इसके बारे में तुम क्या कहते हो?"

"नहीं, यह मानवाधिकारों का हनन नहीं है! मेरे ख़याल से तो, ऐसा नहीं है। मैं इस बारे में लिख रहा हूँ। तुम इसे पढ़ सकती हो। कसांद्रा दाग़ के बारे में जानना हमारा कर्तव्य है, समाज का कर्तव्य है और व्यक्ति का कर्तव्य है, सबसे पहले गर्भधारण करनेवाली महिला का कर्तव्य है, उसे ख़ुद को यह जानने में दिलचस्पी होनी चाहिए, अगर नौबत यहाँ तक आ जाये तो जाँच कर लेनी चाहिए कि कहीं उसके गर्भ में दुबका जीव जीवन के प्रति भय के संकेत तो नहीं भेज रहा है। कसांद्रा भ्रूणों से सम्बन्धित आँकड़े धीरे-धीरे सबसे अधिक विश्वसनीय सामाजिक प्रमाण सिद्ध होंगे, जिनके आधार पर समाज की स्थिति एवं उसकी प्रगति का आकलन किया जा सकेगा।"

"मान लो रॉबर्ट, मैं तुमसे सहमत हूँ। मगर यदि दूसरे लोग यह सब स्वीकार न करना चाहें तो? यदि तुम किसी को भी विश्वास न दिला पाये तो?"

"बहुत कुछ आम वातावरण पर, आम हालात पर निर्भर करेगा। एन्थोनी यूंगेर एकदम सही कहता है, हाँ सीधे फ़िलोफ़ेइ को ही इसमें शामिल करना होगा। उसका तुरुप कार्ड है—वैज्ञानिक निरीक्षणों से प्राप्त आँकड़े, जिनकी सहायता से कसांद्रा भ्रूणों के जीवन के प्रति रवैये का आकलन किया गया था। यह ज़रूरी है कि लोगों को ये आँकड़े बताये जायें। और तब, उनसे प्राप्त जीव विज्ञान के कारकों से लेकर दार्शनिक निष्कर्षों तक, सब कुछ फिर से जनता के सम्मुख रखा जाये, जैसे किसी प्रेस कॉन्फ्रेंस द्वारा। और यह भी बहुत ज़रूरी है कि ख़ुद फ़िलोफ़ेइ भी अन्तरिक्ष में, आकाश में उपस्थित रहे। यदि यूंगेर को अपने विचार को मूर्त रूप देने में सफलता मिलती है, तो बड़ी अच्छी बात है। मैं पूरी तरह इसके पक्ष में हूँ। अभी उसे फ़ैक्स भेज देता हूँ, और देखेंगे आगे क्या होता है, अगर ज़िन्दा रहे तो देखेंगे।"

वे चुप हो गये, दोनों नाइट गाउन में, थके-हारे से, रात भर नींद से दूर, और जैसे अपने आप पर भी उनका अधिकार न रह गया हो—उनके जीवन में यह पहली न ख़त्म होनेवाली उत्तेजना की रात थी, उनकी परिचित ज़िन्दगी के कार्यकलापों से परे, कुछ भयानक-सी विपत्ति को उजागर करती हुई। इस तरह दर्द और पीड़ा के माध्यम से ब्रह्माण्ड का विस्तार होता है।

खिड़कियों के बाहर प्रकाश दिखाई देने लगा था, सुबह हो गई थी।

आज का दिन, कल की ही तरह, साफ़, शिशिर के दिनों की तरह नर्म धूपवाला होने का वादा कर रहा था। दूर से पक्षियों का कलरव सुनाई दे रहा था—उड़कर दूर देशों को जानेवाले पक्षियों के झुण्ड एकत्रित होने लगे थे। रॉबर्ट बोर्क ने कल्पना की कैसे वह आकाश के नीचे जंगल की पहाड़ी के नीचे गोल्फ़ के मैदानों के ऊपर गोलगोल चक्कर लगाते हैं, और कैसे निकल पड़ते हैं लम्बी यात्रा पर, समुद्र के किनारे-किनारे, नीचे से गुज़रते सफ़ेद तूफ़ान के ऊपर से; उनके साथ ही निकल पड़ने को जी चाहने लगा, यहाँ से दूर उड़ जाने को मगर, उसे पूरा करना ज़रूरी था जो अचानक जीवन का निर्विवाद कार्य बन गया था।

सुबह होते ही यह स्पष्ट हो गया कि दुनिया उन्हें भूली नहीं थी, उसने उन्हें छोड़ नहीं दिया था और न ही ऐसा करने का उसका इरादा था। यह

शुरू हुआ इस बात से कि शिकागो से बेटी का फ़ैक्स आया। ऐरिका ने चिढ़कर और उत्तेजना में लिखा था, "पूरी रात फ़ोन नहीं कर सकी। आपके फ़ोन कटे हुए हैं, फ़ैक्स भी व्यस्त है। पापा, क्या हो रहा है? आपने यह सब क्यों किया? शिकागो उबल रहा है। सब आपके विरुद्ध हैं। मुझे और जॉन को बड़ा आघात पहुँचा है। मैं विनती करती हूँ; रुक जाओ। माँ, तुम्हारा ध्यान कहाँ है?"

जैस्सी सचमुच में एकदम बड़ी नर्वस हो गई।

"क्या करें रॉबर्ट? तुम पिता हो। बेटी परेशान हो रही है, और वह गर्भवती है। दामाद भी खुश नहीं है। मैं जॉन की मनःस्थिति समझ सकती हूँ : वह डायरेक्टर की सलाहकार समिति का सदस्य है। उसे अपने आचरण की रूपरेखा बनानी होगी। इस बारे में हम भूल नहीं कर सकते।"

"ठीक है, सब सही है," बोर्क को सहमत होना ही पड़ा। "मगर इस स्थिति में मैं कह ही क्या सकता हूँ? यह बात परिवार के भीतर नहीं रह गई है। काश, ऐसा होता!...शान्त हो जाओ जैस्सी। मैं ऐरिका को लिखूँगा, फ़ोन करूँगा, समझाने की कोशिश करूँगा, शान्त करने की कोशिश करूँगा। मगर फिर, नौजवानों को भी अपने दिमाग़ से सोचना चाहिए। ऐसा लगता है कि उनके लिए, ख़ास तौर से जॉन के लिए, कम्पनी की उन्नति ही सबसे बढ़कर है। मगर ऑटोमोबाइल कम्पनी की सीमा से बाहर भी ज़िन्दगी है, और उसकी समस्याएँ सभी के लिए और हर एक के लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। मुझे उनसे कोई शिकायत नहीं है—अच्छी जोड़ी है, खुश है, सुखी है। मगर, तुम भी समझ सकती हो कि अहम् की, सामाजिक अहम् की भी कोई सीमा होनी चाहिए।"

"ओह रॉबर्ट, तुम्हें तो बस कोई भाषण देने के लिए कह दे। अच्छा, जब समय मिले, ऐरिका को फ़ैक्स भेजना न भूलना," इतना कहकर जैस्सी जाने लगी, कन्धों पर ऊनी स्वेटर डालते हुए। यूंगेर की सलाह मान ली थी उसने। पहली ही सूचना चिपकाने चली गई—आगुन्तकों से माफ़ी चाहते हुए विनती, कि उन्हें परेशान न किया जाये, वह अपनी मोटी-सी बिल्ली के साथ चली गई, जिसे वे कुत्ता-बिल्ली समझते थे, क्योंकि वह पालतू प्राणी बिल्ली होते हुए भी लगभग कुत्ता बन सकती थी। कम-से-कम घरवालों को ऐसा सोचना अच्छा लगता था।

जब जैस्सी दरवाज़ा बन्द करते-करते, बालों में कंघी फेरते, अपने साथ-साथ दौड़ते बिल्ली-कुत्ते से कुछ कहने चली गई तो रॉबर्ट बोर्क फ़ैक्स

के पास बैठ गया जिससे रात भर में पूरा किया गया लेख 'ट्रिब्यून' को भेज सके, ताकि अख़बार के कर्मचारियों को दफ़्तर पहुँचते ही वह टेबुल पर पड़ा मिले और उस पर कार्रवाई आरम्भ हो जाये। इस बात में उसे कोई सन्देह नहीं था कि लेख को फ़ौरन छापा जायेगा; उसने माँग करते हुए यह सूचना भी लिख दी थी कि लेख उसी रूप में छापा जाये जिसमें लेखक चाहता है, कोई परिवर्तन न किये जायें। लेख के छापे जाने के बारे में सन्देह करने की गुंजाइश सिर्फ़ इसलिए नहीं थी कि 'ट्रिब्यून' के सामने और कोई चारा ही न था। फ़िलोफ़ेइ के पत्र को प्रकाशित करने का साहस दिखाकर, अब अख़बार अपनी भूमिका बदल नहीं सकता था—और चीज़ों के अलावा उसे अपनी इज़्ज़त भी तो बचानी थी। यह अपने आप में अभूतपूर्व घटना थी, जब कोई अख़बार अपने आपसे पूछ रहा हो—हाँ या ना...ज़िन्दगी या मौत...

मगर, इसके बाद क्या हो सकता था इसकी कल्पना करने का समय ही नहीं आया। अख़बार के, फ़िलोफ़ेइ के और अब स्वयं उसके नाम के चारों ओर का घेरा सुबह से ही बड़ा क्रूर और निर्दय प्रतीत हो रहा था। यदि चीज़ों को उनके नाम से पुकारा जाये तो यह लड़ाई होनी थी—जीवन के लिए नहीं बल्कि मृत्यु के लिए...।

हर सूचना को सांकेतिक घण्टी से आत्मसात करते हुए फ़ैक्स मशीन उसे दिये गये, लेख को पन्ना-दर-पन्ना गटकती रही। यही ठीक रहा कि काम हो गया। एक ही मिनट बाद बोर्क ने महसूस किया कि सड़क पर कुछ गड़बड़ हो रही है : बिल्ली इस तरह काँपती घर के अन्दर भागी मानो अचानक आँगन में उसने घृणित अजस्र कुत्ते को देख लिया हो जो कभी-कभी उसे डराया करता था। मगर इसी के साथ बोर्क ने काँच में से घबराई हुई जैस्सी को छत से घर के अन्दर दौड़ते हुए देखा। उसने हाथों में कुछ काग़ज़ और एक डिब्बा पकड़ रखा था। वह अन्दर घुसी—हाँफती हुई, आपे से बाहर, पीतवर्ण। ऐसा लगता था मानो सड़क पर उसका गला दबाने की कोशिश की गई हो, और वह छिटक कर भागी हो।

"क्या हुआ, तुम्हें क्या हुआ?" वह उसकी ओर भागा।

"रॉबर्ट! भयंकर, यक़ीन नहीं कर सकते! मैं बाहर निकली और कुछ बदमाश, नुक्कड़ पर खड़े थे, उन्होंने अपनी गाड़ियाँ खड़ी कर दीं और खुद वहीं खड़े हैं...देखो, कैसे काग़ज़ चिपकाये हैं।"

जैस्सी ने अख़बारों के साथ वे काग़ज़ भी मेज़ पर पटक दिये जिन्हें

दीवार से उखाड़कर बाहर से अपने साथ लाई थी, अत्यन्त अशिष्ट, अपमानजनक और भद्दी इबारतें लिखी थीं उन पर। उन रंग-बिरंगी इबारतों को देखकर बोर्क मानो बुत बन गया। "हमें शर्म आती है, कि बोर्क हमारे मुहल्ले में रहता है!" शायद किसी पड़ोसी ने लिखा होगा। और "स्त्री विरोधी, गर्भविनाशक बोर्क, हमारी न्यूबेरी से भाग जा!" "न्यूबेरी के फ़ेमिनिस्ट बोर्क से नफ़रत करते हैं!" दूसरे, और भी ज़ालिम थे : "बोर्क को चाहिए—माथे पे गोली!", "बुड्ढे, मुझे नुक्कड़ पे नज़र न आना—गला घोंट दूँगा! कसांद्रा नाम के भ्रूण!"

"शायद, अलस्सुबह शुरू करने की ठान ली है।" सोच में डूबे हुए बोर्क बड़बड़ाया।

"सुबह से! देखते हो, सुबह से! और आगे क्या होगा, रॉबर्ट? क्या होगा? दिमाग़ में कुछ नहीं आ रहा!"

रॉबर्ट बोर्क कमरे में घूमता रहा, हाथों को उसने इतना कसकर पीठ के पीछे बाँध रखा था कि उनमें दर्द होने लगा।

"हमें हर चीज़ के लिए तैयार रहना होगा"—उसने टका-सा जवाब दिया पत्नी को और होठ भींच लिए ताकि चीख़ न निकले। यह बड़ा कठिन था—अपने आप पर नियन्त्रण रखना, जब ख़ून उबल रहा हो। अब जब आरम्भ ऐसे हुआ है, तो आगे इससे भी बुरा होने की आशंका है। यह सब सभ्य तरीक़ों से भी किया जा सकता था, अगर कल की मीटिंग न हुई होती। ओर्डाक ने घटनाओं की डोर ढीली छोड़ दी है, अब शैतान ही उसे खींच सकता है!

"अगर तुम देखते!" जैस्सी ने सड़क पर झाँकते हुए कहा। "कैसे गुण्डों जैसे खड़े हैं वे नुक्कड़ पर। बदमाशों जैसे। अपनी-अपनी कारों के पास सिगरेटें फूँक रहे हैं। मैं इस गन्दगी को दीवार से निकाल रही थी, और वे मेरी ओर देखकर सीटियाँ बजा रहे थे, ठहाके लगा रहे थे।"

"कैसे हैं देखने में? यहीं के हैं?"

"मुझे कैसे मालूम। जीन्स, जैकेट पहने हैं, जैसे अफ़सर लोग पहनते हैं। मेरे ख़याल से उनके साथ औरतें भी हैं।"

"हूँ, समझा," बोर्क बड़बड़ाया, "हालाँकि समझने जैसा कुछ था ही नहीं।"

"पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिए, रॉबर्ट। पुलिस को फ़ोन करो। तुम्हें कुछ कार्रवाई करने को हो तो करो।"

"जल्दबाज़ी न करो। फ़ोन भी कर लेंगे। थोड़ा इन्तज़ार करना चाहिए। अगर कुछ हुआ, तो बेशक।"

"हाँ, यह पतन की चरम सीमा है! यह विचारों की सीमा से परे है। और तुम–इन्तज़ार करो!" जैस्सी कुर्सी पर धँस गई और फिर से बिसूरने लगी।

"जैस्सी, डार्लिंग, मेरी प्यारी! तुम यह क्या कर रही हो, अपने आप पर क़ाबू रखो।" उस पर झुकते हुए असहायता के स्वर में बोर्क ने कहा, मगर वह बोल नहीं सकती थी, सिर्फ़ सिसकियाँ ले रही थी।

"अगर तुम जानते! अगर तुम जानते!" वह बोली।

"मैं तुम्हारे लिए कॉम्पोज़ लाता हूँ। अभी लाया, जैस्सी, रुको। अभी लाया!"

वह उसके शयन-कक्ष में दवा लाने गया। दरवाज़े के पास लड़खड़ाया, उसके किनारे से टकराया और उसी क्षण कोने में मुड़े-तुड़े काग़ज़ के टुकड़े को पड़े हुए देखा। वह समझ गया कि जैस्सी ने आते-आते उन काग़ज़ों में से ही यह निकाल कर, गुड़ी-मुड़ी करके फेंक दिया है। ऐसा क्या था उसमें, जो अर्ध-विक्षिप्तावस्था में होने के बावजूद उसे निकालकर फेंक दिया, जिससे पति उसे न देख पाये? उसने पढ़ा और वह समझ गया। सिर घूमने लगा।

"बोर्क, अपने चूतड़ फ़िलोफ़ेइ के पास ले जाओ, वहाँ अन्तरिक्ष में औरत ही नहीं है उसके पास!" और इसी के अनुरूप एक चित्र। और नीचे लिखा था, "नमस्ते। कसांद्रा भ्रूण!"

उसे याद नहीं कि वह कैसे अन्दर के आँगन में, अपने पत्थरोंवाले उद्यान में गया। और हालाँकि उसने इस नैतिक आतंक के सामने न झुकने की कसम खाई, मन को इतना तैयार कर लिया था कि वह लोगों को क्षमा करनेवाला था, बिना यह जाने कि अन्धेपन और बेवकूफ़ी के कारण वे क्या कर बैठते हैं। उसने अपने आपको इस सब नीचता से ऊपर उठने की ताक़ीद की थी, मगर इस सबसे मन हल्का न हुआ। यह भी होना था : वहाँ, जहाँ उससे मिलने बुद्धिमान लोग आया करते थे और अन्तःचक्षुओं द्वारा रेखांकित चिरन्तनता के दर्शन करते थे, जिसे शब्दों द्वारा समझाना असम्भव था, और वह समझाने का प्रयत्न करता रेत पर कुछ रहस्यमय चिह्न बनाकर, जिस पर पत्नी हँसा करती थी, अब उसे जानवरों के समान अपमानित और आहत होकर मुँह छिपाये यहीं बैठना पड़ रहा था। कितनी विडम्बना है, भाग्य मानो मख़ौल उड़ा रहा है उसकी विद्वत्ता एवं उसकी आयु

के लिए अक्षम्य सोने जैसे दिल का। कितना अपरिपक्व, अनुभवहीन सिद्ध हुआ था वह, कितना कम जानता था, कितनी क्रूर कितनी प्रतिशोधी है यह दुनिया। ढलती उम्र में यह गन्दगी भी देखनी पड़ी।

क्षितिज पर उठ रहा सूरज ख़ाली और अवांछित-सा प्रतीत हुआ। कुछ भी देखने और सुनने को जी नहीं चाह रहा था।

उसने यन्त्रवत् अख़बार खोला जिसे घर से बाहर निकलते-निकलते न जाने क्यों हाथों में पकड़ रखा था। यह न्यूबेरी का स्थानीय अख़बार था, आपात अंक। और उसे फिर से विश्वास हो गया कि उसकी स्थिति उस भेड़िये के समान है जिसे हाँका करके शिकारी बाहर की ओर खदेड़ते हैं। पहले पृष्ठ पर बड़े-बड़े अक्षरों में ऑलिवर ओर्डाक की प्रेस कॉन्फ्रेंस का वर्णन था, जिसे चुनावपूर्व सभा के पश्चात् आयोजित किया गया था। यह सामग्री 'असोसिएटेड प्रेस' से प्राप्त हुई थी। ओर्डाक का फ़ोटो, एक नहीं कई बड़े-बड़े—ओर्डाक क्रोध में स्टेज से मुँह बनाते हुए, हाथ नचाते हुए। और पूरे पृष्ठ पर थे उसके शब्द : "बोलशेविकों का आनुवंशिक कोष को नष्ट करने का अभियान—नहीं चलेगा।"

कहाँ जाकर उसने निशाना मारा था : क्योंकि फ़िलोफ़ेइ रूसी है, तो वह अवश्य बोलशेविक होगा। बकवास, मगर प्रभावशाली! अब समझ में आया उन पर्चों में से एक में बोर्क को के.जी.बी. का एजेण्ट क्यों कहा गया था। सारी आग एक ही चिराग़ से लगी है। इस बारे में कुछ कहने-सुनने की इच्छा ही नहीं रही थी। दिल को पीड़ा देनेवाले खोखलेपन ने घेर लिया।

बग़ल में पत्नी की आवाज़ सुनकर वह मुड़ा। आँसुओं से फूली आँखोंवाली जैस्सी अपने आप पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रही थी।

"अभी-अभी 'अर्जेण्ट' फ़ैक्स आया है, एन्थोनी ने भेजा है," उसने निकट बैठते हुए कहा।

"मिस्टर बोर्क," एन्थोनी यूंगेर ने लिखा था, "मुझे आपसे टेलीफ़ोन पर ज़रूरी और तुरन्त बात करनी है। कृपया टेलीफ़ोन कनेक्शन लगा दीजिये, जवाब दीजिए। अन्तरिक्ष के साथ एक 'टेलीब्रिज'[1] के बारे में बात हो रही है। अगर हम इसमें सफल हो गये तो लोगों की आँखें खोल देंगे। इस बात पर विचार करना है कि क्या सम्बन्धित उपकरण आपके घर पर लगा सकते हैं। मिस्टर बोर्क, चारों ओर से सब हम पर टूट पड़ने को तैयार

1. टेलीविज़न द्वारा सम्पर्क स्थापित करना।

हैं, मगर हिम्मत न हारिए। मैं दस मिनट बाद फ़ोन करूँगा। आपका, एन्थोनी यूंगेर।"

"यह हुई न काम की बात! एन्थोनी यूंगेर हरकत में आ चुका है!" बोर्क में मानो जीवन का संचार हो गया हो। "और वैसे भी, टेलीफ़ोन चालू करना होगा, जैस्सी। करने दो टेलीफ़ोन, जिसे करना है, हम उनसे बचकर कहाँ जायेंगे। दुनिया से छिपकर तो बैठना नहीं है!"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो। एक और सन्देश आया है," जैस्सी ने कहा। यह विश्वविद्यालय के कुलपति का फ़ैक्स था। वह लिख रहा था—"मिस्टर बोर्क, आपके हित में, विनती करता हूँ कि विश्वविद्यालय में 'लेक्चर' देने न आयें।"

"समझ गया," बोर्क बड़बड़ाया। "चलो, टेलीफ़ोन की ओर चलें।"

उस भयानक सुबह, एन्थोनी यूंगेर का फ़ोन आशा की किरण के समान प्रतीत हुआ।

"मिस्टर बोर्क, आपकी आवाज़ सुनना अच्छा लग रहा है। फ़ैक्स अच्छी बात है, मगर आवाज़ सुनना ज़्यादा अच्छा लगता है।"

"ओह, क्या बात है? ठीक कहते हो!" बोर्क ने यथासम्भव आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया, "मेरी पत्नी, जैस्सी, तुम्हें नमस्ते कह रही है, एन्थोनी।"

"बहुत अच्छा। उन्हें धन्यवाद कहिये। मेरा ख़याल है कि आज हम सब मिल सकेंगे। यह बहुत ज़रूरी है।"

"तुम्हें ही कहना है, एन्थोनी, बोलो। तुम्हारे रात के 'फ़ैक्सों' ने मानो हमें बुर्ज़ में हाथी के पैरों से बचाया है। अब, कम-से-कम अपने आप पर हँसने दो। तो, अब आगे क्या? उम्मीद रखूँ कि कुछ सम्भावनाएँ हैं?"

"पूरा कार्यक्रम तैयार है। मगर सबसे पहले मैं आपसे कहना चाहता हूँ, मिस्टर बोर्क, ताकि आप जान लें, कि आपका लेख, जो अख़बार के दफ्तर में पहुँच गया है, सम्भवतः फ़िलोफ़ेइ को अन्तरिक्ष में भेजा जा रहा है, मैं कुछ ही देर में इसकी पुष्टि करूँगा। और यह सिर्फ़ इसलिए नहीं किया जा रहा है कि फ़िलोफ़ेइ का उसके पृथ्वी के—आपको इस नाम से पुकारूँगा—अन्तरिक्ष आनुवंशिकी के क्षेत्र के सहयोगी से परिचय कराया जाये। तो, शायद, फ़िलोफ़ेइ आपके लेख का जायज़ा ले रहा होगा। हम 'टेलीब्रिज' का आयोजन करके प्रेस कॉन्फ्रेंस भी बुलाना चाहते हैं जिसमें आप और फ़िलोफ़ेइ दोनों भाग लेंगे।"

"एन्थोनी, मेरे प्यारे, यह सब सोचकर, सुनकर अच्छा लग रहा है। मगर मैं कल्पना करने में असमर्थ हूँ कि यह सब होगा कैसे? और वह भी इतने कम समय में।"

"परेशान न होइए, मिस्टर बोर्क! मैं अकेला नहीं हूँ। मेरे साथ मेरे विश्वासपात्र मित्र हैं, बड़े-बड़े लोगों से सम्बन्ध है। 'ट्रिब्यून' पूरी तरह हमारे साथ है, और वह काम कर रहा है, चाहें तो कहिये कि अपने अस्तित्व के लिए। मगर सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि 'टेलीब्रिज' के आयोजक इस समूची प्रक्रिया को एक 'वर्ल्ड शो' समझकर इसमें बेहद दिलचस्पी ले रहे हैं, उन्हें अप्रत्याशित पूँजी प्राप्त हो रही है बर्फ़ पर स्केटिंग करनेवालों से। और इसीलिए जी-जान से काम कर रहे हैं।"

"क्या मतलब? बर्फ़ पर कौन स्केटिंग कर रहा है?"

"माफ़ कीजिए। शायद यह तुलना बेवकूफ़ी भरी थी। हाँ, हम बहुत पतली बर्फ़ की सतह पर दौड़ रहे हैं। मगर अभी इस बारे में बात नहीं करेंगे। माफ़ कीजिए, अभी मुझे अपने आपको रोकना होगा। समय भाग रहा है। मैं कार से यह बातचीत ज़ारी रखूँगा। हम आपके पास, न्यूबेरी आ रहे हैं। हम चार लोग हैं, मैं और मेरे तीन साथी, अन्तरिक्ष से सम्बन्ध स्थापित करनेवाले 'नासा' के बेहतरीन कर्मचारी। तो, हम चार हैं, दो कारों में। एक गाड़ी है—जीप फुर्गन, तकनीकी सामग्री से लदी। बाक़ी सब कुछ रास्ते से समझाऊँगा। हमें न्यूबेरी, आपके पास, चालीस मिनट में पहुँचने की उम्मीद है, शायद कुछ पहले ही। नक्शे से जहाँ तक मैं समझा हूँ, आपका घर सुपर मार्केट कॉन्फेरांस से आधा मील दूर है, ठीक है न?"

"हाँ, बिलकुल ठीक! तीन आवासीय इकाइयाँ छोड़कर।"

"ओ.के.! तो अब हम निकल रहे हैं। तो, बस हँसिये मत, मैं—इस पूरे 'आपरेशन' का 'चीफ़' हूँ, फ़िलोफ़ेइ—अन्तरिक्ष का 'मार्शल', और आप..."

"मैं जैस्सी का 'डिप्टी जनरल'" बोर्क को भी दूर की सूझी।

"एक मिनट, एन्थोनी। मैं समझ रहा हूँ कि समय बहुत कम है, मगर तुम जवान आदमी हो, और वैसे भी, यह सुन लो कि अन्तरिक्ष से मेरे घर तक सम्बन्ध स्थापित करने का ख़र्च मैं उठाऊँगा।"

"बहुत देर हो चुकी है, मिस्टर बोर्क। इच्छुक टेलीविज़न कम्पनियाँ सारा ख़र्च खुद ही कर रही हैं। उनका अपना दृष्टिकोण है। घबराइये नहीं। फिर, मैं भी थोड़ा-बहुत तो कर ही सकता हूँ। मेरे पिता प्रसिद्ध एडवोकेट थे, तो...इस पहलू के बारे में मत सोचिये। आप कसांद्रा भ्रूणों के बारे में और फ़िलोफ़ेइ के बारे में सोचिए।"

"ओर्डाक के बारे में," बोर्क ने पुश्ती जोड़ी। "सबसे पहले। वह भी लड़ाई की तैयारी कर रहा है। इसके बारे में—रास्ते से। हाँ, मिस्टर बोर्क, माफ़ कीजिए, मगर मैं आपको घर से बाहर निकलने की सलाह नहीं दूँगा और आपकी पत्नी को भी। सुपर मार्केट तक भी नहीं। अपने आपको रोकिए। आज नहीं। हम सब कुछ अपने साथ ला रहे हैं। हम निकल रहे हैं।"

शीघ्र ही उसने रास्ते से फ़ोन किया। और इन दोनों फ़ोनों के बीच का अन्तर बोर्क दम्पती को अन्तहीन प्रतीत हुआ, जैसे हवाई जहाज़ से उतरने के बाद सामान सहित रेल में बैठे हों, जब अब तक की हर चीज़ पीछे रह गई हो, मानों क्षितिज के पीछे छिप गयी हो, और रेल हिलने का नाम न ले रही हो। उन्हें अचानक इस बात का साक्षात्कार हुआ कि अब उनका जीवन इस एक अन्य गति से चल रहा है—अनुशासनबद्ध गति से जब घटना-दर-घटना मिनटों में नापी जाती है, और यह भी कि जीवन का चरम क्षण, भाग्य की फ़ैसला करने की घड़ी आ पहुँची है। किसी पहेली समान, अनिर्णित किस्मत की नहीं, बल्कि उस किस्मत की जो उन उकसानेवाली हरकतों के कारण शत्रुतापूर्ण शक्तियों से घिर गई थी।

"हम 'हाईवे' पर आनेवाले हैं," एन्थोनी यूंगेर ने सूचित किया। "ट्रैफ़िक सामान्य है, रुकावट नज़र नहीं आती, समय पर पहुँच जायेंगे, और अब, काम की बात करें।"

"मैं सुन रहा हूँ, एन्थोनी, मैं जानना चाहता था कि क्या हो रहा है। मैं और जैस्सी, अपने आप ही, आसपास की दुनिया से कट गये हैं, तुम जो जानते ही हो, टेलीविज़न और रेडियो भी नहीं चला रहे।"

"मिस्टर बोर्क, दिलासा देने की कोशिश नहीं करूँगा, स्थिति बड़ी गम्भीर है। आपको मालूम होना चाहिए कि हर जगह, हर देश में, एक-सी ही तस्वीर है—आम असहमति।"

"हम्ऽऽऽहाँऽ" टेलीफ़ोन के चोंगे में बोर्क बड़बड़ाया! "एन्थोनी, जहाँ तक मेरा ख़याल है, लोग कसांद्रा भ्रूणों को विद्यमान वास्तविकता के रूप में स्वीकार करने की स्थिति में नहीं हैं। हाँ, बेशक, यह एक अत्यन्त कठोर मानसिक आघात है, और जीवन के सभी मूल्यों का पुनरावलोकन करने की आवश्यकता मुँह बाये खड़ी है। इसलिए बेहतर है कि सन्देह के नाग को भगा दिया जाये, बेहतर है कि उसे कुचल दिया जाये..."

"यही बात है," एन्थोनी ने सहमति के स्वर में कहा, "मैं इस परिस्थिति की तुलना उस स्थिति से करूँगा, जब मान लीजिए किसी पुल

के निर्माण में जैसा कि सैनफ्रांसिस्को में खाड़ी के ऊपर बना है, कमियाँ पाई गईं, मगर फिर भी उस पर आवागमन तो हो ही सकता है। तो फिर इस बारे में क्यों सोचा जाये? जल्दी-जल्दी, जितना हो सके वज़न ले जाओ, पुल के बारे में बाद में दूसरे लोग सोचते रहेंगे। मगर, रास्ते में, जबकि हमारे पास कुछ समय है, मैं आपका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूँ—स्टीयरिंग व्हील पर एक ऑपरेटर बैठा है, जिससे मैं आपसे बातें कर सकता हूँ—तो आपका ध्यान अत्यन्त मनोरंजक चीज़ों की ओर खींचना चाहता हूँ और आप तो अभी से निष्कर्ष निकालने लगे। मैंने अख़बारों के पन्ने पलटे हैं, रेडियो सुना, टी.वी. भी देखा और फ़िलोफ़ेइ के आविष्कारों के बारे में दो नकारात्मक संघर्षात्मक प्रवृत्तियाँ ढूँढ़ी हैं। राष्ट्रवादी विचारधाराएँ काफ़ी परेशान करनेवाली हैं। इज़राइल में इसे इज़राइलियों के आनुवंशिक कोष को समाप्त करने के प्रयत्न के बारे में देखा गया है। उन अदृश्य किरणों से बचाव का उपाय ढूँढ़ने के लिए आह्वान किया गया है, फ़िलोफ़ेइ की विकिरण-प्रक्रिया को निष्प्रभावी करने के लिए किसी यन्त्र का आविष्कार करने का निश्चय किया गया है। रूस में प्रबल विरोध की आँधी एक प्रदर्शन में परिवर्तित हो गई है, जहाँ फ़िलोफ़ेइ को तुरन्त अन्तरिक्ष से वापस बुलाने की माँग की गई है, क्योंकि वह कोई पादरी-वादरी नहीं है, और ख़ास बात है कि एक 'पेरेस्त्रोइका' ही हमारे लिए बहुत है गैदार के सुधार काफ़ी हैं, हम रूसी जनता के 'आनुवंशिक पेरेस्त्रोइका' को बर्दाश्त नहीं करेंगे। फ़िलोफ़ेइ—अन्तरिक्ष का गोर्बाचोव है! वह अमेरिका की चाकरी करता है! वह रूस को नीचा दिखाना चाहता है, घुटनों के बल झुकने को मजबूर करना चाहता है! यह डर उन्हें सता रहा है।"

"हूँ, यह तो बड़े दुःख की बात है। सुनने में बड़ा दर्दनाक प्रतीत होता है, मुझे बड़ी पीड़ा हो रही है। क्या किया जाये?" रॉबर्ट बोर्क व्याकुल हो उठा।

"नहीं, आप आगे तो सुनिये। चीन में एक अलग ही तरह का ख़तरा देखा गया—इसे उनकी जनसंख्या की सर्वोच्चता के महत्त्व को कलंकित करने का प्रयास कहा गया। वहाँ नारा है—जनसंख्या में कमी—नहीं सहेंगे! वैसे भारत मे कसांद्रा दाग़ को कुमकुम (बिन्दी) से ढँक देने की बात कही जा रही है।"

"ओयू, ओयू, ओयू," बोर्क सकते में आ गया। "यह क्या हो रहा है एन्थोनी!"

"मगर, मुझे तो एक और चीज़ से ही धक्का लगा है, मिस्टर बोर्क, देखिये, आप इस बारे में क्या कहते हैं। हैम्बर्ग में उन्मादपूर्ण तरीक़े से विरोध प्रगट किया वेश्याओं एवं उनके दलालों ने। ये वहाँ प्रसिद्ध हैं और बन्दरगाह के निकट रहते हैं। सिसली में माफ़िया के सरगनाओं ने नदी किनारे पालेर्मो में एक आम जुलूस निकाला। लैटिन अमेरिका में अनेक उन्मादपूर्ण प्रदर्शन हुए हैं, ख़ास तौर से भूमिगत नशीले पदार्थोंवाले भागों में। अश्लील एवं बाज़ारू साहित्यवाले भी पीछे नहीं रहे—वे भी विरोध कर रहे हैं। हाँ, आतंकवादी संगठन, हर तरह के क्रान्तिकारी—सभी तीव्र विरोध कर रहे हैं। यदि फ़िलोफ़ेइ तक पहुँचा जा सकता, तो वे उसे...। हाँ, सेनाएँ और अनेक देशों में युद्ध से सम्बन्धित उद्योग भी खुश नहीं हैं। और यह बात समझ में नहीं आ रही—युद्ध से सम्बन्धित फ़िल्में बनानेवाले प्रोड्यूसर भी इसके विरोध में आवाज़ उठा रहे हैं।"

"हूँ, देखो एन्थोनी," रॉबर्ट बोर्क ने कहा, "मैं यह सोच रहा हूँ कि यहाँ व्यापार-व्यवसाय से सम्बन्धित क्षेत्र बढ़-चढ़कर विरोध कर रहा है। हर तबक़ा चाहता है कि वह जिये और उसका विस्तार हो। मैं इसे इसी तरह कहूँगा। और कसांद्रा दाग़ उनके मार्ग में एक बड़ी रुकावट है, जिसके परिणामस्वरूप उनका नामोनिशान मिट जाने का अन्देशा है। समाज में इनमें से अनेक गुटों की ज़रूरत कमज़ोर पड़ती जायेगी। इसलिए आत्म-सुरक्षा की भावना सिर उठा रही है, ये गुट अप्रिय स्थिति का लाभ उठा रहे हैं। मैं उनकी हालत भी समझता हूँ। हैलो, हैलो, एन्थोनी, ठीक से सुनाई नहीं दे रहा।"

"मैं आपको ख़ूब अच्छी तरह सुन सकता हूँ। कृपया आगे बताइये। यह एक बड़ा दिलचस्प पहलू है।"

"तो यह बात है। हाँ, अब अच्छी तरह सुन रहा हूँ।"

"हाँ, तो मैं आगे बता रहा हूँ। अगर फ़िलोफ़ेइ के आविष्कारों के परिणामस्वरूप मानव की प्रवृत्ति में परिवर्तन होता है, अगर मानव जाति एक नई दृष्टि से स्वयं को देखना प्रारम्भ करती है, भ्रूणों के संकेतों को निरन्तर सुनते हुए तो व्यक्तिविशेष की नकारात्मक प्रवृत्तियों के प्रादुर्भाव का प्रतिशत काफ़ी कम हो जायेगा। और तब किसी को भी शायद ही दलाली करने की ज़रूरत पड़े—क्योंकि तब समाज में उनकी आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी, वेश्याओं की संख्या काफ़ी कम हो चुकी होगी, न केवल हैम्बर्ग में, बल्कि सभी स्थानों पर। और माफ़िया का भी—वही हाल होगा, अपराध,

डकैतियाँ—सभी एक-दूसरे से जुड़ी ही तो हैं। और अगर भावी पीढ़ियों द्वारा किये गये रोकथाम के उपायों के फलस्वरूप, जिनके लिए कसांद्रा भ्रूण शर्म का नहीं, बल्कि चेतावनी का प्रतीक है, साथ ही, मानव की नैतिक परिपूर्णता का प्रेरणा-बिन्दु है। मानव विशेष में नकारात्मक प्रवृत्तियों के प्रादुर्भाव का प्रतिशत कम हो जाये, तो इस संकट से गुज़रना, इसे झेलना भी सार्थक हो जायेगा। अनचाहे ही सवाल उठता है...”

“मिस्टर बोर्क, क्या आप अन्तरिक्ष से स्थापित होनेवाले ‘टेलीब्रिज’ में ये विचार बतायेंगे?”

“क्यों नहीं? सवाल दूसरा है, क्या मुझे सुनना चाहेंगे? क्योंकि जिन विरोधियों के नाम तुमने बताये हैं वे अपनी ही नज़रों में गिरने से डरते हैं, अपनी स्थिरता खोने से डरते हैं। क्योंकि भविष्य में विचार-प्रणाली में मूलभूत परिवर्तन होने चाहिए, तभी सभी आपराधिक, विध्वंसक, विनाशकारी प्रवृत्तियों को नकारा जायेगा जिनसे कसांद्रा भ्रूण इतना डरते हैं। फिर यह आत्मबोध सुन्दर नैतिक आकांक्षाओं, प्रेरणाओं के कारण नहीं होगा बल्कि यह अस्तित्व एवं प्रगति की एकमात्र आवश्यक शर्त होगी। इस समय तो इसकी कल्पना भी असम्भव है।”

“ख़ैर मिस्टर बोर्क, अनेक धार्मिक सम्प्रदायों से भी विरोध की कई ख़बरें मिली हैं।”

“यह बात भी समझ में आती है। कसांद्रा दाग़ अपनी प्रकृति के कारण सभी को समान तौर पर प्रभावित करता है। कसांद्रा भ्रूणों की प्रतिक्रिया हर जगह एक-सी है। मानव को गुटों में, संघों में, विचारधाराओं में, अपनों में, परायों में बाँटने के चलते उत्पन्न स्थितियों का फ़ायदा उठानेवाली शक्तियों को, इस विभाजन और विरोध के कारण मानव को चूसनेवाली ताक़तों को, कसांद्रा भ्रूणों से कोई मतलब नहीं है। वे उनके रास्ते में रुकावट हैं, समस्या है, एक आम समस्या न कि किसी सम्प्रदाय या धर्म से सम्बन्धित समस्या। ऐसी शक्तियाँ फ़िलोफ़ेइ एवं उसके आविष्कारों को सभी भाषाओं में, बोलियों में, गालियाँ ही देंगी। इस बात से मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ...।”

“मैं आपसे इस बात में भी सहमत हूँ, मिस्टर बोर्क, इस बातचीत से कई और बातें भी मेरे लिए साफ़ हुई हैं। मगर माफ़ कीजिये, एक मिनट के लिए रुकना होगा। मुझे गुप्त टेलीफ़ोन पर बुला रहे हैं। नहीं, नहीं, आप चोंगा मत रखिये। मैं अभी पता करता हूँ कि बात क्या है, और फिर हम

बातचीत ज़ारी रखेंगे। (हैलो, हैलो, क्या ख़बर है? हाँ? तो यह बात है! यह बिलकुल ठीक नहीं है। हाँ सब समझ गया। कार्रवाई करेंगे।) मिस्टर बोर्क, कृपया माफ़ करें। प्राप्त सूचनाओं से ज्ञात होता है कि परिस्थिति और भी जटिल होती जा रही है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप स्थानीय पुलिस को फ़ोन करें, उन्हें आगाह करें कि सुपर मार्केट के 'स्टॉप' से आपके घर की ओर प्रदर्शनकारियों का एक बड़ा हुजूम बढ़ रहा है। साफ़ है, विरोध प्रकट करेंगे। आपकी खिड़कियों के नीचे नारे लगायेंगे।"

"अच्छा, एन्थोनी, मैं अभी पुलिस को फ़ोन करता हूँ। पत्नी ने पहले ही यह सुझाव दिया था, मगर मैंने ही सोचा कि जल्दबाज़ी न करूँ। सुबह-सुबह हमारी दीवारों पर कई काग़ज़ पोस्टर चिपका गये। जैस्सी अभी जा रही है पुलिस को फ़ोन करने।"

"हाँ, मिस्टर बोर्क, सावधानी एवं चौकसी का यह क़दम बेकार नहीं जायेगा। फिर अभी-अभी मुझे यह भी बताया गया है कि आपके लेखवाला 'ट्रिब्यून' पाठकों तक पहुँच चुका है। आपात अंक!"

"कैसे?" रॉबर्ट बोर्क चहका। "शायद अख़बारवालों ने ज़रा भी समय नहीं खोया है।"

"बिलकुल सही। आप एक महान् भविष्यवेत्ता हैं, और इस समय आपका एक-एक शब्द सोने जैसा क़ीमती है। यह बात और है, कि अब उस लेख के बारे में गर्मागर्म बहस हो रही है! यह चारों ओर से घिरे बुर्ज़ से पहला तोप का गोला है। मगर ओर्डाक के अनुसार, बस यह एक ही गोला छोड़ा जायेगा। मैं छिपाऊँगा नहीं, मुझे यह अपमानजनक प्रतीत हो रहा है। मेरा ख़याल है कि आपके हमख़याल लोग भी हैं, चाहे उनकी संख्या थोड़ी ही है। असाधारण रूप से विचार करनेवाले बुद्धिवादी कसांद्रा भ्रूणों के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकते। यह स्वयं को समझने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ होगा। इतिहास में ऐसा कब हुआ है? और ऐसा लगता है, कि इस घटना के पीछे निहित कारण समझनेवाले, टहनियों पर बैठकर गाते बसन्ती पंछियों के समान हैं। मगर—और मुझे यह अच्छी तरह मालूम है—दुःख की बात है कि बुद्धिजीवियों का एक बड़ा भाग उस प्रवाह के विरुद्ध खड़ा होने की हिम्मत ही नहीं करेगा जो उनके पैर उखाड़ रहा है। और इस सबमें वह, विद्वान् व्यक्ति, भीड़ के ख़िलाफ़ आवाज़ नहीं उठायेगा, कोने में दुबक जायेगा। उस दौरान ओर्डाक भागता है, भागता है, मशाल लिए, लोगों के दिलों और दिमाग़ों में अक्षरशः विश्वव्यापी आग लगा दी है उसने, वह लोगों

को अपने आगे झुकाने में, निम्नवर्ग के लोगों को उठाने में क़ामयाब हो गया है। चारों ओर सब चीख़ने-चिल्लाने में लगे हैं। सब बेसब्री से कुछ करने के लिए उतावले हो रहे हैं। भीड़ में शामिल होना चाहते हैं। अगर वेश्याएँ संगठित होकर मीटिंग करने चली हैं तो औरों के बारे में क्या कहें?"

"एन्थोनी, माफ़ करना, मैं तुम्हें बीच में रोक रहा हूँ। मगर एक बात कहना चाहता हूँ, बड़ा होने के नाते। तुम अभी एकदम जवान हो, और जब तुम वेश्याओं के बारे में बात कहते हो तो तुम्हें अटपटा-सा लगता है, यह मैं समझ रहा हूँ। मगर मुझे यह बड़ा दर्दनाक जान पड़ रहा है। बेशक, आज तक वे केवल अपने पेशे के अनुरूप आचरण करती आई हैं, मगर यह बात कि वेश्याएँ खुलेआम विरोध प्रकट करनेवाली मीटिंग में शामिल हो रही हैं, ऐसा ही कुछ, माफ़ करना, मैंने आज तक नहीं सुना। स्वाभाविक पेशेवर निर्लज्जता और आत्मविश्वास के बावजूद! उन बेचारी वेश्याओं को भी जीवन के हालात पर अपनी निर्भरता को महसूस करना पड़ा है। और कसांद्रा का निशान—आनुवंशिकी के घने वन में ऐसे मुरझाये हुए फूलों का रुदन ही तो है।"

"प्रदर्शन करते समय उन्हें राजनीतिक दलालों ने पीटा, जैसा कि उन्होंने औरों को भी पीटा था। मेरा ख़याल है कि अब ख़ुद ओर्डाक भी इस जिन्न को क़ाबू में रखने की स्थिति में नहीं है जिसे उसने बोतल से आज़ाद किया था। उदाहरणों के लिए दूर क्यों जायें? मैं देख रहा हूँ, कि रास्ते पर क्या हो रहा है। देखकर अन्दाज़ लगा रहा हूँ कि बहुत-सी कारें, हमें पीछे छोड़ते हुए आपके घर की ओर, न्यूबेरी जा रही हैं। और इन कारों में सभी, मेरे समान ही, टेलीफ़ोनों पर चीख़ रहे हैं। उनके चेहरों के भाव किसी अच्छी बात का आभास नहीं देते। हर कार लोगों से खचाखच भरी है। मुझे बताया गया है, कि वे सुपर मार्केट के निकट के 'स्टॉप' पर एकत्रित होनेवाले हैं।"

"हूँ, हाँ एन्थोनी, ऐसे जमाव के लिए वह एक उपयुक्त स्थान है।"

"ओह, अगर सिर्फ़ वहीं! माफ़ कीजिए, मुझे फिर फ़ोन कर रहे हैं। (हैलो, हाँ, सुन रहा हूँ, मैं एन्थोनी यूंगेर हूँ। सुन रहा हूँ। ठीक है। हाँ, हाँ, बोलो, सुन रहा हूँ। मैं ऐसा ही सोचता था। अच्छा। मुझे बराबर ख़बर देते रहो। समझ गया। ओ.के।) मिस्टर बोर्क, अभी-अभी सूचना मिली है—न्यूयॉर्क की सड़कों पर प्रदर्शनकारियों के गुट खड़े हैं। ख़ासतौर से बड़ा जमाव संयुक्त राष्ट्र की इमारत के सामने देखा गया है। पुलिस बड़ी कठिनाई

से स्वयं पर नियन्त्रण रखे हुए है। प्रदर्शनकारी फ़िलोफ़ेइ को अन्तरिक्ष से भगाने की माँग कर रहे हैं। यह अन्तर्राष्ट्रीय कार्रवाई है। विशेष बात यह है कि आगे-आगे चल रही हैं गर्भवती महिलाएँ जिनके माथे पर पिछले कुछ दिनों से कसांद्रा दाग़ प्रकट हुए हैं। वे अपने माथे को रँगे हुए हैं और हाथों में लिए हुए हैं पोस्टर : 'देखो, हमारे माथे पर कसांद्रा का दाग़ चिपकाया गया है। हमारी हिफ़ाज़त करो।' और कई-कई मर्द और औरतें, एकजुटता के प्रतीक, इन क्रॉस का निशान बने माथों के साथ-साथ चल रहे हैं। तो ऐसी है परिस्थिति।"

"हाँ, एन्थोनी, अच्छी ख़बर कम है। और क्या कहा जाये?"

"मिलने पर इस बारे में बात करेंगे। जल्दी ही हम वहाँ पहुँचेंगे। ख़ास बात यह है कि ये उपकरण 'फ़िट' करने हैं। फ़िलोफ़ेइ से सम्बन्ध स्थापित करना है, और तब एक साथ मिलकर सोचेंगे।"

"मैं राह देख रहा हूँ, एन्थोनी। मैं घर के आसपास निकट कुछ आवाज़ें सुन रहा हूँ। जैस्सी गैरेज बन्द करने के लिए भागी है। खिड़की से देख रहा हूँ। कुछ बदमाश स्विमिंग पूल में पत्थर फेंक रहे हैं—मुँह बना रहे हैं, गुण्डागर्दी कर रहे हैं। उम्मीद करता हूँ कि पुलिस अभी आ जायेगी। राह देख रहा हूँ। हाँ, माफ़ करना एन्थोनी, और फ़िलोफ़ेइ से सम्पर्क स्थापित करने में कितना वक़्त लगेगा?"

"लड़के बता रहे हैं कि क़रीब एक घण्टा, शायद, थोड़ा-सा ज़्यादा। वहीं जाकर पता चलेगा। तब आप फ़िलोफ़ेइ से बात कर सकेंगे, जैसा कि कहते हैं, आँखों में आँखें डालकर। मुझे सूचित किया गया है कि उसे फ़ैक्स द्वारा आपके लेख की प्रति मिल गई है। उससे बात करके प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित करने की रणनीति तय करनी होगी। वहाँ पहुँचने पर इस बारे में और बातें करेंगे। तो हम पहुँचने ही वाले हैं, इन्तज़ार कीजिए।"

सड़क का शोर बढ़ता ही जा रहा था। खिड़की से दिखाई दे रहे थे कारों से निकलते हुए और सुपर मार्केट के पार्किंग स्टैण्ड से पैदल चलते हुए लोग। ये एकत्रित लोग चारदीवारी के निकट पेड़ों के नीचे खड़े थे, ज़ोर-ज़ोर से, जोश में, बातें कर रहे थे, हाथों में रंगीन पोस्टर—तस्वीरों और नारोंवाले पकड़े हुए थे। सभी एक ही विषय पर, खुल्लमखुल्ला धमकियाँ देते हुए कह रहे थे—'बोर्क तुम्हें माफ़ नहीं किया जा सकता!', 'झूठी शिक्षा देनेवाले राक्षस को रीछ की माँद में कुचल देंगे!', 'कसांद्रा दाग़ प्रोफ़ेसर के माथे पर जला देंगे।', 'जो मानवाधिकारों का हनन करता है, वह स्वयं ही

उन्हें खो देता है।', 'आतंकवादी वैज्ञानिक को बर्दाश्त नहीं करेंगे!', 'बोर्क शैतान का गुलाम।', 'फ़िलोफ़ेइ और बोर्क को, एक ही फन्दे में लटकाओ।' और भी अनेक...

और उत्तेजना में बोर्क ने सोचा—कौन हैं वे, ये लोग? क्यों और किसलिए वे अचानक यहाँ आ गये हैं? उन्हें कभी देखा नहीं, जाना नहीं, एक-दूसरे के अस्तित्व के बारे में सन्देह किया नहीं। और जैसे ही उनका समय हुआ—आ पहुँचे। और अब सड़क पर कुछ होने की उम्मीद में भिनभिना रहे हैं—गोरे, काले, आदमी और औरतें, बूढ़े और जवान, कोई लाउडस्पीकर साथ लाया है, कोई फ़ोटो और वीडियो कैमरा तो कइयों के पास रेडियो टेलीफ़ोन भी है—जिसमें से वे किसी-किसी से जोश में बातें कर रहे थे। विश्वास करना कठिन है कि यह, वही शक्ति है, जिसके बारे में वह ऐतिहासिक खोजों और सैद्धान्तिक लेखों के आधार पर निष्कर्ष निकाला करता था, जिन्हें कैनवास पर, थियेटरों में, फ़िल्मों में देखा, जिनके रचयिता भीड़ को चित्रित करके यह समझने की कोशिश किया करते कि उसके बर्ताव की आकस्मिकता या अप्रत्याशितता का क्या कारण है?

और अब वे यहाँ हैं, वे जो 'भीड़' कहलाते हैं। वे चारदीवारी से सटकर घेरा बनाये खड़े हैं, खिड़कियों से उनके चेहरे दिखाई दे रहे हैं। क्या पाना चाहते हैं वे, किस चीज़ की प्यास है उन्हें? वे कैसा अन्त चाहते हैं? उनके हाथों को अदृश्य रूप से एक मशाल जला रही है—'बार्थालोम्यो की रात' की प्रतियोगिता के समान उनके पैर रोमन विद्रोहों से रक्तरंजित पत्थरों से लहूलुहान हो रहे हैं, सिरों पर है एस्प वृक्षों की तेज़ सरसराहट, जो विष की बौछार को ही अपना लक्ष्य समझ रही है। क्या यह उनका अपराध है, या दुर्भाग्य या महामारी जैसी कोई अदृश्य शक्ति, जो उन्हें यहाँ सज़ा देने के लिए धकेल कर लाई है? क्या करूँ, क्या कहूँ उनसे, जो अभी कुछ ही समय पहले चौराहों पर, चौकों पर खड़े होकर महाबली फ्यूरर की एक झलक देखकर ख़ुशी की सैकड़ों-हज़ारों किलकारियों से आसमान गुँजा देते थे, उसके हाथ के संकेत पर घुटनों के बल ख़ून में झुक जाते पूर्व में, पश्चिम में, उत्तर में, दक्षिण में, उनसे क्या कहूँ, जो अभी कुछ ही समय पहले तक स्टालिन की क़ब्र के सामने एक-दूसरे को कुचल देते थे, उसकी एक झलक पाने के लिए जिससे वे ख़ौफ़ खाते थे, और फ़ौरन उसी के साथ फाँसी और बन्दूक़ की गोलियों से जीवन का अन्त करनेवाले इस महाद्वीप से काली उड़ान भरकर दूर चल देते थे, क्या कहूँ उनसे जो कल तक ईरान के शहंशाह

के हवाई जहाज़ के सामने रातों को नारे लगाती, भागती, उन्मत्त भीड़ के साथ तेहरान के मैदानों में भागते हुए हवाई अड्डे तक आये थे, उस शहंशाह के हवाई जहाज़ के सामने जो मृत्युदण्ड से बच गया था, और हवाई जहाज़ को पकड़कर लटक जानेवालों से बचकर, उनके सिरों पर से होकर, निकल गया था? पागल भीड़ हवाई-पट्टी पर बड़ी देर तक खड़ी रही थी, और पलकें झपकाते हवाई जहाज़ की ऊँची और दूर जाती रोशनी को देखती रही, और आकाश में थे वे तारे, जो मनुष्य के नियन्त्रण में नहीं होते, और ये लोग, अधूरे प्रतिशोध की आग में जलते ताण्डव करते रहे, अल्लाह से यही दुआ माँगते रहे कि वह हवाई जहाज़ जल्दी-से-जल्दी वापस आ जाये...।

और अब, भीड़ यहाँ भी है, नये दोराहे पर उसके घर के दरवाज़े पर...

वह खिड़की के पास खड़ा था, जैस्सी भी पास ही खड़ी थी। उनकी बातचीत न जाने क्यों वायुरहित स्थान में तैरने का आभास दे रही थी।

"सुनो, रॉबर्ट, वे मज़ाक़ नहीं कर रहे हैं।"

"हरगिज़ नहीं।"

"क्या किया जाये?"

"सोचता हूँ कि मुझे वहाँ हाज़िर होना पड़ेगा, मुझे उनके पास जाना चाहिए।"

"क्या कह रहे हो रॉबर्ट? तुम, होश में तो हो?"

"पूरी तरह। उन्हें समझ लेना चाहिए कि मैं उनसे छिप नहीं रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि वे जान लें। विद्रोह आनुवंशिक पतन को नहीं रोक सकता, उल्टे, बल प्रयोग से पृथ्वी का अन्त निकट ही आयेगा। मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि कसांद्रा दाग़ भाग्य द्वारा हमें दी गई चुनौती है। कसांद्रा भ्रूण का हर संकेत हम सबको प्रभावित करता है। और अगर हम इस बात को समझेंगे तो शायद इस स्थिति से बाहर निकलने का मौक़ा मिल सकता है। आगे क्या है, यह जानने के लिए चारों ओर देखना होगा।"

"जवाब नहीं, मगर पहले यह तो सोच लो, रॉबर्ट, कि यह सब तुम किसे समझाने चले हो। यह कोई विश्वविद्यालय का भाषण नहीं है। तुम्हारी बात सुनेगा कौन? वे इसके लिए थोड़े ही यहाँ आये हैं!"

"मेरे पास और कोई चारा नहीं है।"

"मतलब? तुम खुद ही कह रहे हो कि अभी एन्थोनी अन्तरिक्ष से सम्बन्ध स्थापित करेगा, तुम फ़िलोफ़ेइ को देख सकोगे और पूरी स्थिति की उसके साथ चर्चा कर सकोगे, और शाम को फ़िलोफ़ेइ के साथ मिलकर प्रेस

कॉन्फ्रेंस बुलाओगे, समस्या के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करोगे। और लोग, मुझे उम्मीद है, आख़िरकार समझ ही जायेंगे कि तुम उनका भला ही चाहते हो, न कि बुरा।"

"जब मैं तुम्हारी बातें सुनता हूँ, तो तुमसे सहमत हो जाता हूँ जैस्सी। मगर सिर्फ़ तभी तक, जब तक सुनता हूँ। ये लोग, जो बाहर खड़े हैं, प्रेस कॉन्फ्रेंस का इन्तज़ार न कर सकेंगे। उन्हें फ़ौरन जवाब चाहिए, वे तत्काल कोई कार्रवाई चाहते हैं। खुद ही देख लो तो पता चलेगा। वे आते जा रहे हैं, आते जा रहे हैं, और जैसे-जैसे उनकी संख्या बढ़ रही है, उनकी आक्रामकता भी बढ़ती जा रही है। इससे पहले कि बहुत देर हो जाये, मुझे उनसे स्पष्ट बात कर लेनी चाहिए।"

"मालूम नहीं, रॉबर्ट। तुम ख़तरा उठा रहे हो।"

"क्या मतलब है—ख़तरा उठा रहा हूँ? मुझे उनको समझाना होगा कि फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार के बारे में मेरी क्या राय है।"

"यह तो तुम अपने लेख में ही कर चुके हो।"

"वह कम है। या, शायद कुछ भी नहीं है। ये लोग लेख नहीं पढ़ते।"

"रॉबर्ट देखो, वे क्या कर रहे हैं—वे तुम्हारी तस्वीरें जला रहे हैं!"

"मेरी तस्वीरें? मैं क्या कोई राजनैतिक नेता हूँ?"

"देखो! ये तुम्हारे फ़ोटो की ज़ेराक्स प्रतियाँ हैं।"

"मैं क्या कह सकता हूँ! दुःख की बात है, काग़ज़ जला रहे हैं।"

"मगर पुलिस कहाँ है?"

"पुलिस किसलिए? पुलिस आ चुकी है। देखो, वे तीन प्रवेश-द्वार के पास दुबके खड़े हैं। क्या तुमने उन्हें नहीं देखा?"

"सिर्फ़ तीन? वे चुप क्यों हैं?"

"और वे कर भी क्या सकते हैं? किसी को किसी की फ़ोटो जलाने में बड़ा मज़ा आता है। बस, इतनी-सी बात है।"

"कितनी बार टी.वी. पर इस तरह का दृश्य देख चुकी हूँ। और अब, यह सचमुच में हो रहा है। जैसे किसी भारत में हो रहा हो। बिलकुल ऐसा ही, ऐसा ही होता है वहाँ। ओह, एन्थोनी ही जल्दी आ जाता! तुम्हारा क्या ख़याल है, वे लोग अभी तक क्यों नहीं आये?"

"मालूम नहीं। इस समय ट्रैफ़िक रुक जाता है। तुम खुद ही जानती हो।"

वे ख़ामोश हो गये। न बैठने को जी चाह रहा था, न खड़े होने को, न बोलने को, न चुप रहने को।

और इसी बीच भीड़ शोर मचाती, आगे बढ़ती, गुण्डागर्दी पर उतर आई थी। वह ताल पर गा रही थी, "बोर्क–जवाब दो! बोर्क–जवाब दो!"

चीख़ें बढ़ती चली गईं। खूँखार होती गईं। सब कुछ बर्दाश्त के बाहर हो रहा था। लोग माँग कर रहे थे कि रॉबर्ट बोर्क बाहर निकले। कहीं से रँगे हुए माथोंवाली औरतों का एक झुण्ड आ गया। वे 'ट्रिब्यून' का ताज़ा अंक दिखा-दिखाकर चीख़ने लगीं, "बोर्क–कमीना! बोर्क को कसांद्रा दाग़ लगाओ! कसांद्रा दाग़ के लिए मारो उसे! बोर्क–कमीना!" एक दूसरा ग्रुप चिल्ला रहा था, "ओर्डाक–सही है! ओडार्क–सही है!"

परिस्थिति बिगड़ती चली जा रही थी। भीड़ पर उन्माद छा रहा था। पुलिसवाले जो शान्ति बनाये रखने के लिए चीख़ रहे थे, कमज़ोर और असहाय से जान पड़ते थे। उनमें से एक ने, बड़ी कठिनाई से भीड़ से निकलकर कार में से फ़ोन किया, शायद, सहायता माँगी।

जब आसपास का पूरा परिसर खचाखच भर गया, तब भीड़ घर की ओर बढ़ी। शरीरों के धक्कों से बेंचें टूट गईं, वृक्षवीथि में लगे फ़ानूस चूरचूर होकर ज़मीन पर गिर गये। भीड़ चीख़ रही थी, चिल्ला रही थी और किसी और ही लोक का हंगामा आरम्भ हो गया।

यह देखकर कि पति कोट पहन रहा है, जैस्सी चीख़ी।

"कहाँ जा रहे हो? बाहर क़दम न रखना!" उसने मना किया।

मगर उसने उसे धक्का दे दिया। और इसी क्षण से उसकी अचानक काली हो गई आँखों में दिखाई दे रही दुनिया, न जाने किसमें समा गई, जो अब तक की कल्पनाओं से परे था। वे जैस्सी की आँखों से मिली : दर्द का दर्द से मिलन। और उसने, जैसे कहीं दूर से कहा : "मुझे मत रोको। मुझे यह ज़हर पीना ही पड़ेगा।"

जैस्सी का चेहरा भय से विकृत हो गया :

"तुम मौत के मुँह में जा रहे हो।"

"अगर ऐसा है," धीमी आवाज़ में बोर्क ने कहा, "तो भी मुझे जाना ही होगा।"

उसने न जाने क्यों हैंगर से टोपी उतारी और दृढ़ता के साथ दरवाज़े की ओर बढ़ा। बाहर निकला, और उसे मानो गर्म लपटों ने, उसकी राह में पागल हो रही भीड़ की गर्म लहरों ने उसे घेर लिया। उसके आते ही चीख़ों से हवा दहल उठी। पोस्टर हिलने लगे, हर कोई अपना पोस्टर उसके चेहरे में घुसाना चाहता था। वह दरवाज़े के पास खड़ा था, अतीत की

खोई-खोई-सी मुस्कुराहट से सबको एक साथ और ख़ासतौर से किसी को भी न देखता हुआ। उसने फट् से टोपी पहनी और पलक झपकते ही वह वैसा हो गया जैसा वह हमेशा से था—सफ़ेद बालोंवाला, स्थूलकाय बूढ़ा, तीखे सजीव नाक-नक्शवाला, काली गहरी आँखों को सिकोड़कर देखता हुआ, मज़बूत गर्दन और मज़बूत दाँतोंवाला। वह 'बूढ़ा पाषाण' था, जैसा कि फ़्रैंकफ़र्ट के संवाददाताओं ने उसके बारे में एक बार कहा था।

एकदम छा गई ख़ामोशी में बोर्क परेशानी से थरथराती आवाज़ में कुछ ही शब्द कह पाया :

"कसांद्रा भ्रूण—हमारा दुर्भाग्य एवं हमारा पाप है। हमें उसके सम्मुख उत्तर देना ही होगा।"

तभी कोई औरत बिल्ली के समान उछलकर उसके सामने आ गई।

"और यह तुम देख रहे हो?" उसने अपने रंगीन माथे पर उँगली गड़ाते हुए कहा, "तुम मेरा यह अन्तरिक्ष के शैतान द्वारा दिया गया दाग़ देख रहे हो? पढ़ो! शैतान शैतान के गुण गा रहा है!" और उसने गुस्से से भविष्यविद् के चेहरे पर उसके लेखवाले अख़बार से मारना शुरू कर दिया। अख़बार चिंदी-चिंदी होकर उड़ गया। उसकी टोपी ज़मीन पर गिर गई, और उसे फ़ौरन कुचल दिया गया, और वह औरत चीख़ती रही, ऐसे चीख़ती रही मानो अपने रसोईघर में दहाड़ रही हो। "तुम और लिखोगे मेरे बारे में! मैं अन्तरिक्ष तक जाऊँगी! मैं इस फ़िलोफ़ेइ का गला घोंट दूँगी।"

"मारो उसे! मारो!" उसके वहशीपन से भड़क उठे नज़दीक खड़े लोग चिल्लाये। "खींचो उसे! यहाँ खींचो!" पीछे खड़े लोग गरजे, और मुक्के तानते हुए उसकी ओर बढ़े। दसियों हाथों ने उसे खींचा और फिर सब गड्ड-मड्ड हो गया। जैस्सी भी भीड़ में दबी जा रही थी, मगर किसी ने भी उसकी प्रार्थनाओं और आँसुओं पर ध्यान नहीं दिया।

टेलीविज़न के फ़ोटोग्राफरों का ग्रुप भी जो इस वहशी दृश्य को कैमरे में क़ैद कर लेना चाहता था, कुचला गया, उनके उपकरण पैरों तले रौंद दिये गये। कुछ पुलिसवाले, जो कुछ उपाय करने की सोच रहे थे, खुद ही भँवर में पड़े लकड़ी के टुकड़े के जैसे मालूम पड़े। और रॉबर्ट बोर्क को कहीं खींचा जा रहा था, न जाने कहाँ। हर आदमी अपनी ओर खींचता, कोई उसका गिरेबान पकड़ता, कोई बालों से खींचता, सभी बूढ़े आदमी के चेहरे को ख़ून से लथपथ कर रहे थे। भीड़ क्रोध में अपने आपको ही दबाये जा रही थी, हर आदमी सबको, सब किसी एक को। और इसी से घृणा और कड़वाहट

और अधिक भड़क उठी। और इस वहशी ताण्डव में उन्मत्त लोगों का एक गुट भविष्यवेत्ता के पथरीले उद्यान में घुस गया, स्वीमिंग पूल के निकट, और यहीं, जहाँ वह रेत पर अपने रहस्यमय चिह्न बनाया करता, विश्वात्मा के रहस्य को जानने की कोशिश किया करता, यहीं वह हुआ, जिसे पलटाया नहीं जा सका। किसी ने क्यारी से लोहे का डण्डा, जिस पर लहराती बेलें लटक रही थीं, खींचकर क्रोध से बोर्क के सिर पर दे मारा। बोर्क ज़ोर से चिल्लाते हुए, सिर पकड़कर नीचे गिर गया और गठरी बनकर तड़पता, काँपता रहा, ख़ून से लथपथ हो गया, मगर वे उस पर वार करते रहे।

इसी समय भीड़ में किसी नई हलचल का आभास हुआ, कुछ ताक़तवर लोगों ने सबको किनारों पर धकेलना शुरू कर दिया, और बोर्क की तरफ़ बढ़े। ये थे एन्थोनी यूंगेर और उसके साथी, जो आख़िरकार पहुँच ही गये अन्तरिक्ष से वह सम्बन्ध स्थापित करने के लिए जिसकी अब यहाँ किसी को ज़रूरत ही नहीं थी। वे फ़ौरन मरते दम तक मारे गये बोर्क के निकट पहुँचे।

"किसने किया है यह? किसने?" एन्थोनी यूंगेर ने सबको झिंझोड़ते हुए पूछा। "अपराधी, गुनहगार, तुम सब गुनहगार हो!"

और सड़क पर पुलिस का हवा में चक्कर लगाता हेलिकॉप्टर उतरा। पंखों की तेज़ आवाज़ में चीख़ें दब गईं, तेज़ हवा का झोंका उठा। यह ऐसा दृश्य था, जैसा मूक फ़िल्मों में होता है—उत्तेजित भीड़, जिसे सुनना सम्भव नहीं था। हेलिकॉप्टर नीचे उतरा, उसमें से पुलिसवाले मोटे-मोटे डण्डे लिए कूदे। और केवल तभी भीड़ को होश आया। लोग भागने लगे। अनेक लोग सुपर मार्केट की ओर भागे, अपनी-अपनी कारों की ओर। कई लोग तो फटाफट कारों में बैठकर तूफ़ानी गति से भागे। कुछ ही मिनटों बाद वहाँ कोई नहीं बचा था।

एन्थोनी यूंगेर ने दो सहयोगियों के साथ मिलकर रॉबर्ट बोर्क का क्षत-विक्षत शरीर उठाया, एक अन्य सहयोगी ने पगला गई, लड़खड़ाती जैस्सी को सहारा दिया।

पुलिसवालों समेत वे सब हेलिकॉप्टर में बैठे, फिर यूंगेर के सहयोगी नीचे उतरकर अपनी-अपनी 'टेलीब्रिज' की सामग्रीवाली कारों में बैठ गये, और हेलिकॉप्टर ऊपर उठ गया। वह घर से सीधे ऊपर उड़ा। और, सब कुछ शान्त हो गया।

आसपास एक भी प्राणी नहीं बचा। टूटे हुए दरवाज़ों और खिड़कियों,

बिखरी पड़ी बेंचों, चूर-चूर हुए झुंबरों साथ आश्चर्यजनक भविष्यवेत्ता के रौंदे गये पथरीले उद्यानवाले घर के निकट कोई नहीं था। यह था तूफ़ान के बाद का तहस-नहस ख़ालीपन!

एक मिनट बाद हेलिकॉप्टर गोल्फ़ के मैदानों पर उड़ रहा था जहाँ जाना कभी-कभी रॉबर्ट बोर्क को अच्छा लगता था, अभी कुछ ही दिन पहले उसके सपने में आये थे ये चमकीले, हरे, खुले मैदान और उसका स्वर्गवासी मित्र मार्क फ्राइड उसे चाँद के गोल्फ़ मैदानों में बुला रहा था।

हेलिकॉप्टर शहर के अस्पताल की ओर जा रहा था।

एन्थोनी यूंगेर रॉबर्ट बोर्क पर झुका था। अपनी कमीज़ निकालकर वह उसका सिर बाँध रहा था, ताकि ख़ून का बहना रोक सके। उसके कमीज़ से बँधे सिर को वह अपने घुटनों पर रखे हुए था और जीवन के चिह्न ढूँढ़ने की कोशिश कर रहा था, अभी भी किसी चमत्कार की आशा कर रहा था। एक क्षण के लिए भविष्यवेत्ता के चेहरे पर चमक आई, हलके-से पलकें फड़फड़ाईं और यूंगेर ने उसकी नज़र देखी। उनकी आँखें मिलीं। शायद, बोर्क ने यूंगेर को पहचान लिया था। वे जीवन में पहली बार मिले थे, और तभी जुदा भी हो गये। हमेशा के लिए, चिरन्तन तक। रॉबर्ट बोर्क का सिर एक ओर लुढ़क गया...

यूंगेर रो पड़ा। जैस्सी ने नासमझी से निश्चल पड़े पति की ओर देखा। पुलिसवालों ने सिर झुकाकर सहानुभूति एवं दुःख प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया।

हेलिकॉप्टर अस्पताल के ऊपर नीचे की ओर उतरा, मगर तब तक देर हो चुकी थी...

उसी समय समुद्र में ज़ोर का तूफ़ान उठा। मौसम विभाग ने कम्प्यूटर चैनलों पर अटलाण्टिक के किनारे पर भयंकर तूफ़ान आने की चेतावनी दी। अटलाण्टिक के ऊपर उड़ रहे हवाई जहाज़ तेज़ हवाओं में घिर गये। जहाज़ों के कमाण्डर बार-बार मुसाफ़िरों से सुरक्षा बेल्ट बाँधने का और अपनी जगह से न उठने का आग्रह कर रहे थे। साथ ही पृथ्वी पर स्थित अपने दफ़्तरों को अपनी उड़ान की कठिनाइयों की सूचना दे रहे थे। विमान परिचारिकाएँ मुस्कुराने की कोशिश कर रही थीं, मगर इससे कोई लाभ नहीं था। अटलाण्टिक मज़ाक़ नहीं कर रहा था...

और केवल ह्वेलें—सार्वभौमिक राडार—हमेशा की भाँति, अपना दर्द

ब्रह्माण्ड की प्रतिगूँज को अपने भीतर छिपाये रहीं, और उन्हें साथ लिए वे बगुलों की भाँति तैर रही थीं। सागर उनकी इस बगुलों की-सी आकृति को तोड़ने का प्रयत्न कर रहा था, उन्हें वापस भेजने की कोशिश कर रहा था। मगर वे तैरती जा रही थीं, संघर्ष करते, भीषण उन्मत्त लहरों से आच्छादित होकर भी, बार-बार डूबते, बार-बार तैरते...

कौन-सी शक्ति थी जो उन्हें प्रेरित कर रही थी और खदेड़ रही थी, क्यों और कहाँ वे तैरती हुई जा रही थीं?

और मास्को के लाल चौक पर गहरी रात छाई थी। और उल्लू का समय निकट आता जा रहा था। वह अभी भी स्पास्काया बुर्ज़ पर निश्चल पड़ा ऊँघ रहा था। और राह देख रहा था कि कब नीचे उड़कर जाने का समय होगा। आज उसे हमेशा से अधिक बेचैनी का अनुभव हो रहा था ...दुनिया में कहीं कुछ हुआ है...उसने मानो यह सूँघ लिया हो...कुछ तो हुआ है...।

10

उस दिन अतिशीघ्रता से घोषित की गई 'अन्तरिक्ष–पृथ्वी' प्रेस कॉन्फ्रेंस निश्चित समय पर हुई और सभी मुख्य चैनलों ने उसे प्रसारित किया।

मगर इससे पहले टेलीविज़न कम्पनियों को 'ईथर से पूर्व के बवण्डर' का सामना करना पड़ा। जैसे ही भविष्यवेत्ता रॉबर्ट बोर्क की मृत्यु का समाचार फैला, दुनिया के हर कोने से फ़ोन और जानकारी के लिए प्रार्थनाएँ आने लगीं, अधिकांश फ़ोन आये राष्ट्रीय कम्पनियों से, जो इस सनसनीख़ेज प्रेस कॉन्फ्रेंस को 'रिले' करना चाहती थीं। सभी शीघ्रता से जानना चाह रही थीं कि इस त्रासदी के परिणाम क्या होंगे, क्या फ़िलोफ़ेइ से टेलीब्रिज के माध्यम से सम्पर्क किया जा सकेगा, बातचीत के सूत्र किसके हाथों में होंगे, उसका संचालन कौन करेगा, और क्या सचमुच में यह प्रेस कॉन्फ्रेंस हो पायेगी।

और पृथ्वी अपने अपरिवर्तनीय पथ पर घूम रही थी, और वह घड़ी निकट आ रही थी...और सब इन्तज़ार कर रहे थे...

और आख़िरकार टेलीविज़न के परदों पर बहुप्रतीक्षित शीर्षक दिखाई दिये। इसके पश्चात् उद्घोषिका ने सूचित किया कि टेलीविज़न सेवा केन्द्र इसे अपना कर्तव्य समझता है कि सर्वप्रथम वैज्ञानिक रॉबर्ट बोर्क की हत्या से सम्बन्धित विश्वभर में हुई प्रतिक्रियाओं के बारे में दर्शकों को बताये और इस सम्बन्ध में जन-संचार माध्यमों की टिप्पणियों से भी उन्हें अवगत कराये।

यह बताने की ज़रूरत नहीं कि टिप्पणियाँ हमेशा की तरह ही घिसी-पिटी थीं। आरम्भ हुआ दुःख एवं सहानुभूति के प्रदर्शन से, तत्पश्चात् उद्घोषिका ने, बड़ी कठिनाई से अपनी दुष्ट मुस्कुराहट को छिपाते हुए, जो उसकी आँखों से फिसलने को मचल रही थी, एक रेखाचित्र दिखाया—ये थे शीघ्रता से पूछे गये प्रश्नों के परिणाम, जो फ़िलोफ़ेइ के कसांद्रा भ्रूणों सम्बन्धी विचारों के समर्थक एवं प्रशंसक रॉबर्ट बोर्क की 'पत्थर मारकर

हत्या' करने से सम्बन्धित थे : 'परिणाम निराशाजनक, मगर साथ ही विस्मित करनेवाले हैं। प्रिय टी.वी. दर्शको, आप खुद ही फ़ैसला कीजिये।' रेखाचित्र के अनुसार, जो दिखावा करने के लिए रंगबिरंगे खानों में बँटा हुआ था, ज्ञात होता था कि 83.7 प्रतिशत लोग भविष्यवेत्ता के साथ किये गये सलूक का पूरी तरह समर्थन करते हैं, मगर इस गुट के अधिकांश भाग ने—76 प्रतिशत ने—यह कहा कि यदि वे स्वयं वहाँ, न्यूबेरी में, उस समय होते, तो वे भी अन्तरिक्षीय शैतान के जासूस को पत्थरों से मारने में खुद हिस्सा लेते; 11 प्रतिशत ने भीड़ के इस आपराधिक कृत्य की निन्दा की, और इसमें सामाजिक-नैतिकता के पतन के कुलक्षण देखे, शेष, थोड़े-से लोगों ने इस घटना के प्रति सम्पूर्ण उदासीनता दिखाई।

इसके पश्चात् टी.वी. के दर्शकों को उस दिन आयोजित अनेकानेक आम प्रदर्शनों के सामाजिक विश्लेषण सम्बन्धी परिणाम दिखाये गये। यह एक लम्बी फ़ेहरिस्त थी देशों की, नगरों की, प्रान्तों की, जनसंख्या सम्बन्धी, सामाजिक एवं अन्य दृष्टिकोणों सम्बन्धी। इससे भी यही प्रकट होता था, कि लगभग पूरा विश्व, जनसंख्या के सभी स्तर, किसी-न-किसी रूप में, इस बात पर विरोध प्रकट कर रहे थे कि अन्तरिक्ष पादरी पृथ्वी पर अपनी अदृश्य किरणें भेज कर कसांद्रा दाग़ को सुस्पष्ट करने का सिलसिला ज़ारी रखे। एक बात, जो स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती थी, वह यह कि लोगों की वैचारिक एवं आचरण सम्बन्धी गतिविधियों को सुनिश्चित करने में राष्ट्रवाद की भावना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही थी।

मगर सबसे भयानक बात हुई जेलों में। शायद यह बिना सोचे-समझे दिया गया परिपक्व एवं कटुतापूर्ण जवाब था, जो उन व्यक्तियों के विद्रोह का परिणाम था, जो कभी स्वयं कसांद्रा भ्रूण थे, मगर जिन्हें जन्म लेने पर मज़बूर किया गया था और अब, दुनिया के प्रति उनकी वितृष्णा फ़िलोफ़ेइ की बदौलत अचानक मुखरित हो उठी थी। वरना इन वहशी दृश्यों का, सुरक्षा कर्मियों के साथ हुई झड़पों का क्या कारण हो सकता था, जब दोनों पक्ष दीवारों से सटे-सटे चल रहे थे—हैलमेट, ढाल और डण्डे लिए एक पक्ष और नंगे हाथ, उफनते, भेड़िये जैसे क्रोध से तप्त दूसरा, जब वे झनझनाते हुए, और आग की लपटों से घिरे एक-दूसरे से टकराये । और विभिन्न देशों एवं नगरों में क़ैदियों के विद्रोहों का बाह्य कारण चाहे कुछ भी रहा हो, मगर वास्तविक कारण तो उस अभागे कसांद्रा दाग़ में निहित था, जिसे अपराधों के कारण सज़ा भुगत रहे ये क़ैदी मान्यता दे चुके थे।

उस दिन संवाददाताओं ने भी अनेक स्थानों पर हुई आतंकवादी घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, एक बंदरगाह से यह ख़बर मिली कि विरोध प्रकट करने के लिए वहाँ नौ सैनिकों ने समुद्र में जाने से इनकार कर दिया। जहाज़ लंगर डाले खड़े रहे, जैसे ख़ाली खिड़कियों वाले घर, जिन्हें वहाँ रहनेवाले छोड़ कर चले गये हों।

और ये सभी प्रदर्शनकारी एक ही माँग कर रहे थे। रॉकेट की सहायता से अन्तरिक्ष उपद्रवकारी फ़िलोफ़ेइ को मार डाला जाये! कक्षा में स्थित अन्तरिक्ष स्टेशन को नष्ट कर दिया जाये जो इन दुष्ट किरणों का स्रोत है। पृथ्वी के विभिन्न बिन्दुओं पर घटित इन सभी घटनाओं का सरसरी तौर पर विवरण देने के पश्चात् परदे पर आख़िरकार एक हॉल दिखाई दिया, जहाँ प्रेस कॉन्फ्रेंस आरम्भ होनेवाली थी। जो बात ध्यान आकर्षित कर रही थी, वह यह थी कि हॉल लोगों से खचाखच भरा था। लोग दीवारों से सटकर खड़े थे, कुर्सियों के बीच के रास्ते पर फ़र्श पर बैठे थे। सबकी नज़रें स्टेज पर टिकी हुई थीं, जो समुचित यन्त्रों, उपकरणों से सुसज्जित था—एक विशाल परदा, जिस पर अन्तरिक्ष से फ़िलोफ़ेइ दिखाई देने वाला था, स्टेज के एक कोने में रखा था, हॉल की तरफ़ तिरछा रुख़ किये। मेज़ के पीछे, स्टेज पर, अपने-अपने माइक्रोफ़ोनों के निकट बैठे थे दो व्यक्ति : एन्थोनी यूंगेर और इस टेलीविज़न कार्यक्रम का लोकप्रिय संचालक वॉल्टर शेर्मेट। हॉल में उपस्थित सभी व्यक्ति काफ़ी परेशान थे, ऐसा उनके इन्तज़ार में अविचल हुए चेहरों से चमकती सतर्क आँखों से, बाहर निकली गर्दनों से स्पष्ट हो रहा था। उपस्थित फ़ोटोग्राफ़रों के, जिन्हें इस सींगोंवाले शैतान को कैमरे में क़ैद करने का मौक़ा मिला था, हाथ काँप रहे थे, वे उन भयभीत बकरियों के समान खड़े थे जिन्हें कुछ ही देर में नदी पार करनी थी। आमतौर से मुखर, गंजा, फैशनेबुल, वॉल्टर शेर्मेट अपनी व्यावसायिक मुस्कुराहट सहजता से बिखेर नहीं पा रहा था। उसकी नफ़ासत एवं अभिनेताओं जैसी लापरवाही इस समय किसी काम नहीं आ रही थी, बेमेल लग रही थी। उसके सामने बैठा हुआ एन्थोनी यूंगेर अपने आप में खोया था। इस बात से किसी को ज़रा भी मतलब नहीं था कि इस घटना से उसे गहरा आघात पहुँचा है, और केवल इच्छा शक्ति के बल पर ही वह अपने आपको संयत कर पा रहा है, क्योंकि उसे रॉबर्ट बोर्क का स्थान ग्रहण करना था। उसे करोड़ों टी.वी. दर्शकों की नज़रों के सामने अन्तरिक्ष पादरी के साथ वार्तालाप में भाग लेना था। उस पर, उसी शाम डब्लिन से उसकी मंगेतर

केटी अपनी माँ के साथ आई थी, और वह इस प्रेस कॉफ्रेन्स की वजह से हवाई अड्डे पर उनसे न मिल सका था, जिससे वह काफ़ी परेशान था। वह तनावग्रस्त था, आँखें सूजी हुई थीं। एन्थोनी समझ रहा था : भाग्य ने उसे इस घटनाचक्र में फेंक दिया है, जिसमें वह या तो डटा रहे, रॉबर्ट बोर्क की वैचारिक सत्यता का समर्थन करता रहे, जिसने कल उसकी आँखों के सामने दम तोड़ दिया था या फिर सीटियों और रास्ते के पत्थरों के नीचे कुचला जाये, कल तक के ओर्डाक के ग्रुप के स्नेहियों के व्यंग्यबाणों और अविश्वास से उचकते कन्धों से घायल हो जाये। ये ही लोग उस उन्मादपूर्ण भीड़ की ओर देख रहे थे, जो उन्हीं के द्वारा वहाँ लाई गई थी, और ये बहस कर रहे थे कि सम्भवतः यूंगेर का भी वही हश्र होगा, जो रॉबर्ट बोर्क का हुआ था।

इस बीच लोगों की उत्सुकता चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। सभी को निर्णायक घड़ी का इन्तज़ार था, सभी को फ़िलोफ़ेइ के परदे पर प्रकट होने का इन्तज़ार था, ताकि एक कॉमेण्टेटर के अनुसार, उसे विश्वव्यापी घृणा की लपटों में झोंक दिया जाये। सब कुछ इसी दिशा में हो रहा था, और वह घड़ी निकट आ रही थी, समय की उल्टी गिनती आरम्भ हो चुकी थी, जैसी कि विस्फोट से पूर्व की जाती है।

और दोपहर में, जब अस्पताल में रॉबर्ट बोर्क की बलपूर्वक हत्या की पुष्टि की गई, जैस्सी ने कठिनाई से अपने आँसू रोकते हुए कहा, "एन्थोनी, अगर तुम्हारा हश्र भी मेरे रॉबर्ट जैसा होनेवाला है, तो मुझे कुछ नहीं कहना। उसके लिए सत्य सर्वोपरि था, जिसकी कीमत उसे चुकानी पड़ी। मगर, तुम अपने बारे में सोचो। तुम जवान हो। तुम्हें जीने के लिए पूरी उम्र पड़ी है। क्या रॉबर्ट के साथ-साथ अपना जीवन दाँव पर लगाने में कोई तुक है?"

उस क्षण बातचीत ज़ारी रखना बड़ा कठिन प्रतीत हो रहा था, और उसने संक्षेप में जवाब दिया, "मैं आपकी बात समझता हूँ, जैस्सी। मगर मैं उस सबसे दूर भागना नहीं चाहता, जिससे रॉबर्ट बोर्क न बच सका।

वे अस्पताल के हॉल में बड़ी खिड़की के पास खड़े थे, मरीज़ों और डॉक्टरों से हटकर। सूरज की रोशनी, साफ़ रोशनी, काँच से छनकर उस ख़ामोश बिल्डिंग में आ रही थी, आसमान भी उसी ख़ामोशी से खिड़की के बाहर नीलिमा बिखेर रहा था, मेपल वृक्ष के पत्ते टहनियों पर उतनी ही ख़ामोशी से पीले पड़ते जा रहे थे...भविष्यवेत्ता की विधवा दुःख की मार से बुढ़ा गई थी। न जाने उसे देखकर उस भटकते कुत्ते की याद आ रही

थी, जिसे मार-मार कर अधमरा कर दिया गया हो, और जो गढ़े में गिरा पड़ा हो। जैस्सी को मालूम नहीं था कि उसे क्या करना चाहिए। आँसू बहे जा रहे थे। और शायद किसी तरह अपने आप पर क़ाबू पाने के उद्देश्य से उसने जोर से बड़बड़ाकर वह कहा जो सोच रही थी।

"रॉबर्ट हमेशा कहता था कि प्यार—दो नदियों का संगम है। मैं हँसा करती, अपनी ऊँची-ऊँची बातों के प्रवाह में डूब जाओगे, बॉब! मगर अब विश्वास हो रहा है कि मेरी नदी ही नहीं है। रुक गई, सूख गई वह नदी और मैं फेंक दी गई सूखे किनारे पर..."

और उसने एक विचित्र, रहस्यमय, वाक्य भी कहा, "ओ, मेरी अभागी हेलो, अब जब मैं वॉयलिन बजाया करूँगी, तो तुम्हें कौन याद करेगा..."

इन शब्दों ने एन्थोनी को इतना चौंका दिया कि वह पूछने ही वाला था, कि उसका क्या मतलब है, मगर हिम्मत न कर सका। शायद, शोक के कारण उसके मुँह से ये बात निकली होगी।

और फिर उन्हें जुदा होना पड़ा। एन्थोनी को 'टेलीब्रिज' का इन्तज़ाम करना था। समय बहुत कम बचा था। जैस्सी अस्तपाल में ही शिकागो से अपनी बेटी और दामाद का इन्तज़ार करती रही।

इसी के साथ उन्होंने अगले दिन तक के लिए एक-दूसरे से विदा ली। एक काम एन्थोनी कर पाया, उसने अस्पताल से डब्लिन में फ़ोन करके केटी के निकलने से पहले उससे बात कर ली। वह परेशान था, उनके आने पर विवाह के बारे में सोचना था।

ये सब कुछ घण्टे भर के अन्दर हो गया। कौन सोच सकता था? शायद समय और अवकाश की सीमाओं में एक-दूसरे की ओर जाती हुई उल्काएँ इस तरह टकराती होंगी।

और केटी से बातचीत भी सुखद न रही। केटी उसके फ़ोन का इन्तज़ार ही कर रही थी, और उसकी साफ़ आवाज़ एन्थोनी को पलभर के लिए वहाँ लौटाकर ले गई जिसे सुख कहते हैं। उसके अन्दर सब कुछ सुख ही था—उसकी पलकों को छूना, और उसकी साँसें, और चाल सुख का प्रतीक थे, जिसे किसी सबूत की, किसी गारण्टी की ज़रूरत नहीं थी।

"ओ, आख़िर में, एन्थोनी!" केटी चहकी। "मैं तुम्हारे फ़ोन का इन्तज़ार ही कर रही थी। और चोंगे में जानी-पहचानी साँस से उसे बदन में गर्मी महसूस हुई। मैं और माँ पन्द्रह मिनट में बस निकलने ही वाले हैं। तुम कैसे हो एन्थोनी? राह देख रहे हो?"

"माफ़ करना केटी। मैं भी बहुत नर्वस हो रहा था, डर रहा था कि तुम्हें न पाऊँगा।"

"ओह, कोई बात नहीं, जल्दी ही मिलेंगे। मुझे सिर्फ़ तुम्हारी आवाज़ सुनने की इच्छा हो रही थी।"

"जानती हो, एक समस्या उत्पन्न हो गई है। अभी समझाने का समय नहीं है। मैं बाद में सब कुछ बताऊँगा। मैं चाहता हूँ कि मेरे लिए, मेरी ख़ातिर, माँ से माफ़ी माँग लो। दुर्भाग्यवश, मैं आप लोगों को एअरपोर्ट पर नहीं मिल पाऊँगा। टैक्सी में बैठकर..."

"बात क्या है, एन्थोनी? कोई गम्भीर बात हो गई है?"

"हाँ, बहुत! यह एक लम्बी कहानी है। संक्षेप में बताने की कोशिश करता हूँ। आज शाम को मुझे स्वर्गीय भविष्यवेत्ता के स्थान पर प्रेस कॉन्फ्रेंस में भाग लेना है।"

"क्या? रेडियो पर बताया कि उसे उत्तेजित प्रदर्शनकारियों ने मार डाला। मगर तुम्हारा वहाँ क्या काम है?"

"देखो, मैं ही फ़िलोफ़ेइ के साथ अन्तरिक्ष में 'टेलीब्रिज' बनानेवाला था।"

"फ़िलोफ़ेइ के साथ? उसी आदमी के साथ?"

"हाँ, उसके साथ-साथ रॉबर्ट बोर्क भी भाग लेनेवाले थे।"

"कुछ भी समझ में नहीं आ रहा, एन्थोनी! कुछ भी नहीं!"

"मैं बाद में सब बताऊँगा। परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बदलीं कि फ़िलोफ़ेइ के साथ बातचीत अब मुझे करनी पड़ेगी; मैं बाद में तुम्हें और माँ को समझाऊँगा, मगर दूसरा कोई उपाय ही नहीं है।..."

केटी ने आवाज़ धीमी की, और वह समझ गया कि उसने हाथ से टेलीफ़ोन के चोंगे को ढाँक दिया है।

"अच्छा, एन्थोनी। बाद में बताना। अभी मैं माँ को कुछ भी नहीं बताऊँगी। वह बहुत परेशान है, गुस्से में है—अन्तरिक्ष से किसी पागल ने पूरी दुनिया को हिला दिया है। और मैं उद्विग्न नहीं हूँ।"

"मैं उसे समझ सकता हूँ और तुम्हें भी समझ रहा हूँ"—एन्थोनी ने जवाब दिया। "मगर मैं प्रार्थना करता हूँ केटी, कुछ ऐसा करो कि वह बेकार में परेशान न हो। और बाद में मैं सब कुछ विस्तार से बताऊँगा। मैं तुम्हारा बहुत इन्तज़ार कर रहा हूँ, केटी। मैं तुमसे प्यार करता हूँ। एअरपोर्ट पर टैक्सी में बैठकर फ़ौरन आ जाना। जैसे ही प्रेस कॉन्फ्रेंस ख़त्म होगी, मैं फ़ोन

करूँगा, और फिर हम मिलेंगे। देर न करना, 'फ़्लाइट' के समय पर ठीक पहुँच जाना। अच्छा तुम्हारा चुम्बन लेता हूँ।"

"अच्छा, एन्थोनी। मिलेंगे...मैं आशा करती हूँ कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जाये...मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हारा इन्तज़ार करूँगी..."

स्टेज पर बैठे-बैठे एन्थोनी यही सोच रहा था कि वह हवाई जहाज़ जिसमें आयरलैण्ड से केटी अपनी माँ के साथ आ रही है, अटलाण्टिक के किनारे पर पहुँचने ही वाला है।

और हॉल में हो रही समय की उलटी गिनती अन्तरिक्षीय 'टेलीब्रिज' के आरम्भ तक पहुँच गई थी। और लोगों की अदालत में हाज़िर होगा एक फ़िलोफ़ेइ जिसने पूरे ब्रह्माण्ड की मानव जाति को उलझन में डाल दिया था। वह इस सबके लिए उत्तरदायी है, इस सबका दोष उसी के माथे पर होगा।

न जाने कितनी बार, उस पूरे दिन के दौरान, एन्थोनी यूंगेर को यह खयाल कचोटता रहा : "...यदि हमारे परिवार में ऐसा दुर्भाग्य हो जाये तो—केटी के माथे पर कसांद्रा दाग़ उभर आये तो? तब क्या, तब क्या करेंगे, इसमें असाधारण कुछ नहीं है, कुछ भी नहीं। इस ख़याल से कोई भी भयभीत नहीं है कि उसके आनुवंशिक कोष में जीवन के प्रति भय छिपा हुआ है।"

बावजूद इसके कि हॉल तनावपूर्ण मनःस्थिति में अन्तरिक्ष से सम्पर्क स्थापित होने का इन्तज़ार कर रहा था, कई लोग 'सिग्नल' की आवाज़ सुनते ही काँप गये जिसके साथ-ही-साथ परदा भी रोशन हो गया। मौत जैसी ठण्डी ख़ामोशी छा गई। संचालक तुरन्त लोगों से मुखातिब हुआ :

"तो, हम पृथ्वी की कक्षा में स्थित जीव वैज्ञानिक और अपने आपको अन्तरिक्ष पादरी कहनेवाले फ़िलोफ़ेइ की प्रेस कॉन्फ्रेंस का प्रसारण आरम्भ कर रहे हैं। वे तथ्य नहीं दुहराऊँगा जो सबको अच्छी तरह मालूम हैं—फ़िलोफ़ेइ का रोम के पोप को भेजा गया सनसनीख़ेज पत्र और उसके बाद घटी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएँ। और अब, कृपया ध्यान दीजिए..."

परदे पर कई बार ईथर की थरथराती पर्तों के बीच एक टिमटिमाती-सी रूपरेखा झलकी, और फिर प्रसारण स्पष्ट हुआ, और परदे पर आदमी का चेहरा उभरा जिससे सभी परिचित थे, मगर टेलीविज़न के दर्शकों के सम्मुख वह पहली बार प्रगट हुआ था। कोई भी, एक भी शब्द बोले, इससे पहले ही, वहीं पर, फ़ोटो संवाददाता अपने-अपने स्थानों से उठकर परदे पर झलकती फ़िलोफ़ेइ की छवि को अपने कैमरों में क़ैद करने में जुट गये।

फ्लैश लाइटों से घिर गये वॉल्टर शेर्मेंट को विरोध प्रगट करना पड़ा।

"कृपया अनुशासन में रहिये। हमें अन्धा न बनाइये। हम काम शुरू करने जा रहे हैं।"

जब फ़्लैश लाइटें कुछ मद्धिम पड़ीं, तो फ़िलोफ़ेड का चेहरा साफ़ दिखाई दिया, अन्तरिक्ष से अपने सजीव नाक-नक़्श सहित निकट आया। लोगों ने अपने-अपने दिल थाम लिए। यही वह व्यक्ति है, महान् मसीहा कहें उसे, या फिर महान् पागल, या कि फिर उच्चकोटि का शैतान! यही है वह—उन्माद और दुर्भाग्य फैलाने का अपराधी! यही है वह, औरतों को, अन्तरिक्ष से, अदृश्य किरणों से विकरित करनेवाला! यही है वह, कसांद्रा दाग़ के सिद्धान्त का जन्मदाता!

देखने से फ़िलोफ़ेड की उम्र पचास से कुछ अधिक प्रतीत होती थी। लम्बा चेहरा, भूरे बाल, जो गोल कन्धों तक लटक रहे थे। और दाढ़ी भी भूरी-सी थी, कुछ सफ़ेदी लिए हुए। उसने परदे से हॉल में देखा, उपस्थित लोगों के चेहरों को देखा, जैसे राह चलने-चलते अचानक कोई हम सफ़र मिल गया हो, जो हाथ में छड़ी लिए, पीठ पर गठरी लादे कहीं जा रहा हो और रुककर जानना चाहता हो कि वह सही रास्ते पर जा रहा है अथवा नहीं। और शाम हो चली है, वह गन्तव्य तक पहुँच पायेगा या नहीं? उसकी दृष्टि में थी उत्सुक एकाग्रता और एक दृढ़ निश्चय। एन्थोनी यूंगेर ने उसके ऐसे ही रूप की कल्पना की थी और उसे वैसा ही पाकर वह मन-ही-मन आनन्दित हुआ। अन्तरिक्ष पादरी की प्राचीन शिल्प के समान आकृति यदि ऐसा कहना उचित हो तो, अन्तरिक्ष स्टेशन के अन्तरंग से पूरी तरह मेल खाती थी। फ़िलोफ़ेड के चेहरे पर आत्मविश्वास का कामकाजी भाव था। शायद, पृथ्वी से उसकी इतनी बड़ी दूरी और वह उद्देश्य, जिसके लिए उसने निपट एकान्त में रहते हुए अपने आपको पूरी तरह समर्पित कर दिया था, के कारण यह भाव बनाये रखना सम्भव हो सका था। गहरी झुर्रियाँ, भारी पलकें, अपलक निहारती भूरी आँखों में आकर्षण के साथ-साथ कुछ आहत-सा भाव भी निहित था।

प्रसारण के आरम्भिक क्षणों में एन्थोनी यूंगेर इस बात से भी परेशान था कि न जाने फ़िलोफ़ेड कितनी अच्छी अंग्रेज़ी बोल सकता है। अकसर ऐसा होता है कि आदमी विदेशी भाषा में लिख तो भली-भाँति सकता है, मगर बोलने में, ख़ास तौर से सबके सामने, वह उतना निपुण नहीं होता। मगर फ़िलोफ़ेड द्वारा कहे गये पहले कुछ वाक्यों से ही एन्थोनी आश्वस्त

[illegible]

"धन्यवाद, मिस्टर ओबेरॉय। मैं एन्थोनी सुमेर को जानता हूं," [illegible] ने उसे रोककर सुमेर की ओर देखते हुए कहा। "मैं एन्थोनी सुमेर को

[illegible] अगर..."

"आपके सवालों के जवाब देने से पहले, मैं एक और बात कहना चाहता हूं। शायद मैं अंत के सभी प्रश्नों का उत्तर न दे पाऊं, इसलिए पहले से ही माफी मांग रहा हूं। मुझे लगता है, मगर आपको जीना है और जीने का मतलब है – खुद ही जवाब ढूंढना। मुझे समझाने की कोशिश कीजिए और माफ कीजिए, अगर कर सकें तो। एक ही बात, जो मैं अन्त में कहना चाहता था; न तो प्रशंसा की खातिर, न ही महान् आकांक्षा की खातिर और न ही अपने समान लोगों में स्वयं को सर्वोत्तम सिद्ध करने की इच्छा से मैंने अपने ये आविष्कार जगजाहिर किये हैं, ये गुप्त भी रह सकते थे और दुनिया इस अज्ञानता में खुश ही रहती, जैसी कि अब तक रहती आई है। मगर

हो गया—रूसी मूल का अन्तरिक्ष पादरी अंग्रेजी पूरी स्वाभाविकता से बोल रहा था, केवल लहज़े के कुछ अन्तर को छोड़कर।

और बातचीत एक निश्चित ढंग से शुरू हो गई। जैसे ही वॉल्टर शेर्मेट ने कृत्रिम नज़ाकत और बनावटी अन्दाज़ में कहा, "नमस्ते भाई, फ़िलोफ़ेइ! माफ़ कीजिए, हम नहीं जानते कि आपको इस तरह सम्बोधित करना उचित है या नहीं?"

"हाँ, ठीक है," अन्तरिक्ष पादरी ने जवाब देकर आगे कहा, "जो चाहे, उसके लिए मैं भाई हूँ।"

"और यदि सब आपके साथ भाईचारा न रखना चाहें तो?" वॉल्टर शेर्मेट ने तीखी आवाज़ में पूछा।

"तब, जैसा जो उचित समझे। कोई अफ़सोस नहीं। मगर, उनके लिए भी, जो मुझे स्वीकार नहीं करते, अपने दिल में मैं उनका भाई ही हूँ।"

"आप इस बारे में इतने आत्मविश्वास से क्यों कह रहे हैं? कहीं हमारी इस पापी दुनिया में अपने आप ही महान् तो नहीं बनना चाहते?"

"मेरे जीवन का उद्देश्य है हरेक के दुःख में सहभागी होना, चाहे कोई मुझसे कैसा ही बर्ताव करे।"

"मान लेते हैं। अच्छा, ठीक है। मगर, हम अपनी इस मुलाक़ात का आरम्भ आपसी रिश्तों के स्पष्टीकरण से न करें तो ज़्यादा ठीक रहेगा," वॉल्टर शेर्मेट ने बुद्धिमानों के से अन्दाज़ में कहा। "कुछ अधिक गम्भीर बातें भी हैं और, जैसा कि आप, शायद समझ रहे होंगे, भाई फ़िलोफ़ेइ, आपके अन्तरिक्ष स्टेशन में किये जा रहे वैज्ञानिक प्रयोगों से कहीं अधिक ख़तरनाक, जिनके कारण आपसे यह सीधा सम्पर्क स्थापित करना पड़ा है। इसीलिए, हमने ही इस प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया है। हाँ, मगर आरम्भ में मैं दर्शकों से आपका परिचय करा दूँ। हॉल में प्रख्यात संवाददाता बैठे हैं। टी.वी. पर इसका सीधा प्रसारण हो रहा है। मैं संचालक, वॉल्टर शेर्मेट हूँ। मेरे नज़दीक है—एन्थोनी यूंगेर। इस 'टेलीब्रिज' में वह भविष्यवेत्ता रॉबर्ट बोर्क के स्थान पर भाग ले रहे हैं, जो आज सुबह आम प्रदर्शनों एवं गड़बड़ियों के परिणामस्वरूप शहीद हो गये। दरअसल मुझे, माफ़ कीजिए, दो टूक बातें करनी पड़ रही हैं; इन त्रासदियों का कारण बने हैं आप। ख़ैर, एन्थोनी यूंगेर स्वयं ही अपना परिचय देंगे और अपने विचार प्रकट करेंगे।"

"धन्यवाद, वॉल्टर शेर्मेट! मैं एन्थोनी यूंगेर को जानता हूँ," फ़िलोफ़ेइ ने उसे रोककर यूंगेर की ओर देखते हुए कहा। "मैं एन्थोनी यूंगेर को

चुनावपूर्व हुई सभा के समय से जानता हूँ, जिसका प्रसारण मैंने देखा था। अब जब मैंने आपको बीच में यूँ रोक ही दिया है तो मुझे कहने की इजाज़त दीजिए कि मुझे इस घड़ी का, इस मुलाक़ात का, इस अवसर का इन्तज़ार था, जब मैं उस बारे में कुछ कह सकूँगा, जिस बारे में अभी आपने बताया, कि किस तरह लोगों के दिल और दिमाग़ में लगी आग के शोले अन्तरिक्ष में मुझ तक पहुँच रहे हैं। हाँ, ऐसा ही है। मगर यह मशाल मैंने फ़कीरों को आग में जलाने के लिए नहीं उठाई थी, बल्कि लोगों की आत्माओं को प्रकाशित करने के लिए ली थी। मगर, यह हो न सका। चारों ओर अँधेरा हो गया। और, मुझे डर है, कि अब कोई उम्मीद नहीं बची। और मुझे विश्वास था, शायद मेरी उम्र के लिए यह बचकानी बात हो। बेशक, बचकानी क्यों कि जीत सच्चाई की ही होगी। दरअसल मैं ग़लत था। हृदयों को आलोकित करने के स्थान पर हर जगह भगदड़ और कोहराम ही मचा दिया। यह सब मैं अपने टी.वी. के परदे पर देख रहा हूँ। वह भी देखा जो आज न्यूबेरी में हुआ। मुझे रॉबर्ट बोर्क से टेलीविज़न पर मुलाक़ात का इन्तज़ार था, उसके बारे में मुझे बताया गया था, उससे अपनी बात कहने के लिए मैं छटपटा रहा था, मगर आदमी के अपने ही घर में उसके साथ किये जा रहे वह शियाना सलूक को ही देखता रहा। वही विद्रोह था यह, जिसके बारे में रूसी कहते हैं—बेमतलब, अक्षम्य। और यह भी मेरे ही कारण! अन्तरिक्ष में रहते हुए भी मैं ही उस व्यक्ति की मृत्यु का सीधा कारण बना, जो ईश्वर द्वारा प्रदत्त मेरा हमख़याल था। लोगो, मैं घुटनों के बल आपके सामने हूँ। मगर अब मेरे पछतावे का कोई लाभ नहीं। मृत रॉबर्ट बोर्क को किसी भी तरह जीवित नहीं किया जा सकता, अपना जीवन देकर भी नहीं, जिसका बलिदान किसी भी क्षण करने के लिये तत्पर हूँ। अगर..."

"आपके सवालों के जवाब देने से पहले, मैं एक और बात कहना चाहता हूँ। शायद मैं हॉल के सभी प्रश्नों का उत्तर न दे पाऊँ, इसलिए पहले से ही माफ़ी माँग रहा हूँ। मुझे जाना है, मगर आपको जीना है और जीने का मतलब है—खुद ही जवाब ढूँढ़ना। मुझे समझने की कोशिश कीजिए और माफ़ कीजिए, अगर कर सकें तो। एक ही बात, जो मैं अन्त में कहना चाहता था; न तो प्रशंसा की ख़ातिर, न ही महान् आकांक्षा की ख़ातिर और न ही अपने समान लोगों में स्वयं को सर्वोत्तम सिद्ध करने की इच्छा से मैंने अपने ये आविष्कार जगज़ाहिर किये हैं, ये गुप्त भी रह सकते थे और दुनिया इस अज्ञानता में खुश ही रहती, जैसे कि अब तक रहती आई है। मगर

क्या चिरन्तन के अर्थ एवं सारांश के रूप में हमारा निर्माण इसलिए नहीं किया गया है, कि हमारे निरन्तर परिपूर्ण होते ज्ञान की बदौलत हम दुनिया को समझ सकें, वरना दुनिया का मतलब ही क्या है? शाश्वत का उद्देश्य क्या है? यदि उसे हम ग्रहण न कर सकें, समझ न सकें, अपनी कमज़ोरी एवं सत्य से दूर जाती प्रवृत्ति के कारण, जब ऐसा करना सम्भव हो? क्या हम विवेकशील प्राणियों का स्तर नीचे नहीं गिरा रहे—क्योंकि ईश्वर हमारे बिना ईश्वर नहीं है, ब्रह्माण्ड हमारे बिना सूना है। और यदि हम दृढ़ता से कहते हैं कि सूचना-प्रगति की राह है, तो क्या नित नई और सर्वव्यापी सूचना के प्रवाह में ही चिरन्तनता का सारतत्त्व निहित नहीं है? सभ्यता की अन्तहीनता—ज्ञान की निरन्तरता में ही निहित है। लेकिन यदि हम अपने फ़ायदे के लिए ज्ञान से दूर भागें, सत्य को अनदेखा करके, तो क्या इससे हम चिरप्रतीक्षित सत्य से ही दूर नहीं भाग रहे?

यथार्थ परिस्थितियों के ऐसे काल्पनिक मूल्यांकन के लिए मैं सभी उपस्थितों से क्षमा माँगता हूँ, मगर आज जब हमने रॉबर्ट बोर्क की हत्या की है, हमने उसी के साथ शाश्वत के एक हिस्से को भी मार डाला है। माफ कीजिए, मैं चाहता हूँ..."

"प्लीज़, प्लीज़ भाई फ़िलोफ़ेइ!" बड़ी मुश्किल से स्वयं को अब तक संयत किये वॉल्टर शेर्मेट ने उसे टोका। "ऊँची चीज़ों के बारे में यह मूल्यांकन, ज़ाहिर है अच्छा ही है। शाश्वत का दर्शन भी आकर्षक है। मगर हमने तो जन्म के रहस्य पर हाथ डाला है, मेरा इशारा आपके अन्तरिक्षी प्रयोगों की ओर है, जिन्होंने गर्भवती महिलाओं में कसांद्रा दाग़ को प्रकट होने के लिए उकसाया है। आप हमारे अहम् पर ऐसा दबाव डाल रहे हैं, जिसकी आपको इज़ाज़त नहीं है। आप हमें अपने अन्तरिक्ष नियन्त्रण में लेना चाहते हैं। और, हम आपको बता दें कि पृथ्वी पर कोई भी इस स्थिति से समझौता नहीं करना चाहता! मैं आपको याद दिला दूँ—पृथ्वी पर, हमारी पापी पृथ्वी पर हर चीज़ को अन्तरिक्ष की ऊँचाई से न तौलिए, जहाँ उत्तेजित, सम्भ्रमित लोग आप तक पहुँच नहीं पायेंगे। पूरी तरह संभ्रमित। माफ़ कीजिए, मैं अपनी स्थिति खुल्लमखुल्ला आपके सामने रख रहा हूँ। मगर इन परिस्थितियों में अगर-मगर से काम नहीं चलेगा, सभ्यता के मापदण्डों की यहाँ ज़रूरत नहीं है। और मैं आपकी हरक़तों के ख़िलाफ़ विरोध प्रकट किये बिना नहीं रह सकता। किसने आपको इज़ाज़त दी, कौन-सी शक्ति ने आपको प्रेरित किया, किन भले उद्देश्यों की ख़ातिर आपने

अपनी वैज्ञानिक खोजों के लिए इस ग्रह के निवासियों को इस बवण्डर में घसीटा, क्या यह आपका घमण्ड, आत्मगौरव नहीं था? क्या यह पवित्रता का अपमान नहीं है, ख़ास तौर से तब जब आप पादरी हैं, स्वघोषित ही सही, जैसा कि रूसी धर्मगुरु कहते हैं। क्या आप ईश्वरीय संरचनाओं के विरुद्ध नहीं जा रहे? धर्मग्रन्थों में लिखा है—फलो और वृद्धिंगत हो। बिना किसी लाग-लपेट के। और आप उसी को बदलने चले हैं, जिस पर किसी का भी बस नहीं चलता। क्या आप नारकीय शक्तियों के सम्मुख जन्म के रहस्य की बलि नहीं चढ़ा रहे हैं? मेरे विचार में, बिलकुल यही कर रहे हैं आप! और अगर मिस्टर ओर्डाक ने एक राजनीतिज्ञ की तरह इस विषय में अपने विचार प्रकट किये तो मैं एक संवाददाता की हैसियत से कहता हूँ जो इस सभाकक्ष के करोड़ों लोगों के मत की क़दर करता है।"

और तब हॉल में शोर उठा। यह एक विचित्र, वहशीपन की तस्वीर थी। संवाददाता अपनी-अपनी जगहों से उछले, माइक्रोफ़ोनों की ओर बढ़े और हाथ यूँ नचाने लगे, जैसे यह टी.वी. पर दिखाई दे रहा चित्र न होकर, खुद फ़िलोफ़ेइ ही उनके सामने स्टेज पर मौजूद है। और वह परदे पर उन्हें सुनता रहा, होंठ भींचे, आँखें सिकोड़े, अपने को संयत रखने की कोशिश करता हुआ।

उसके चेहरे पर पीड़ा की सिहरन साफ़ नज़र आ रही थी। इस मुलाक़ात को प्रेस कॉन्फ्रेंस कहना सर्वथा अनुचित था। शोर और जोश को देखते हुए वह मीटिंग से किसी भी तरह भिन्न नहीं थी। माइक्रोफ़ोन पर झपटता हर व्यक्ति, अपना, अपने अख़बार का, समाचार एजेंसी का नाम बताता और फ़ौरन माँग करता कि अन्तरिक्ष पादरी जवाब दे। जीवन का कोई भी दर्शन या व्यवहार इससे ऊपर नहीं था! फ़िलोफ़ेइ को किसी ने मुँह ही नहीं खोलने दिया। शायद उसका सिर चकराने लगा। वह अचानक परदे से ग़ायब हो गया। हॉल में सब कुछ ऊपर-नीचे हो गया। परदा ख़ाली था।

"कहाँ हैं आप? क्या हो गया है आपको?" वॉल्टर शेर्मेट चीख़ पड़ा।

मगर वह दुबारा प्रकट हुआ, हाथों में अन्तरिक्ष-यात्रियोंवाली पोशाक पकड़े।

एक क्षण के लिए हॉल में सन्नाटा छा गया। सभी विस्मित थे—यह किसलिए? और फ़िलोफ़ेइ चुपचाप उस 'स्पेस सूट' में घुसने लगा। एन्थोनी यूंगेर ने इस मौक़े का लाभ उठाया। वह अपनी जगह से उठा और हॉल से मुख़ातिब होकर बोलने लगा—

"मैं उपस्थित जनों से विनती करता हूँ कि मेरी बात सुनें, क्योंकि मैं इस 'टेलीब्रिज' के आयोजकों में से एक हूँ। और इस सम्बन्ध में मेरे भी कुछ कर्तव्य एवं अधिकार हैं। सबसे पहले मैं वॉल्टर शेर्मेट से कहना चाहूँगा कि प्रेस कॉन्फ्रेंस का संचालन अब मेरे हाथों में सौंप दे। आप अपनी बात कह चुके हैं, वॉल्टर शेर्मेट और वह, जो कुछ अभी हॉल में हो रहा है, वह संवाददाताओं की कार्यकारी सभा के समान है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपेक्षित होते हैं प्रश्न और उत्तर। अभी तब व्यावसायिक प्रश्न पूछे ही नहीं गये हैं। भावनाएँ तर्क को धुँधला कर रही हैं। मैं अनेकों बार प्रेस कॉन्फ्रेंसों में भाग ले चुका हूँ, मगर ऐसा नज़ारा आज तक नहीं देखा। जब हाल ही में फ़ारस की खाड़ी में युद्ध भड़क उठा था, तब भी प्रश्न अनेक भाषाओं में पूछे गये, जो अनेक स्थितियों को प्रदर्शित करते थे। मगर अभी तो सभी एक सुर में बोलना चाहते हैं, जैसे कोरस में बोल रहे हों। और सभी बड़े दोस्ताना अन्दाज़ में एक ही सज़ा पर हस्ताक्षर कर रहे हैं।"

"प्लीज़, एन्थोनी यूंगेर," वॉल्टर शेर्मेट से रहा नहीं गया—"मगर आप हॉल को इसमें क्यों लपेटना चाहते हैं, हॉल की बात ही क्या है—पूरी दुनिया के अपने-अपने ख़याल हैं? और साथ ही दूसरों को उनके विचार-प्रदर्शन के अधिकार से क्यों वंचित कर रहे हैं?"

"आदरणीय वॉल्टर शेर्मेट, मैं समझ रहा हूँ, परिस्थिति ऐसी है कि पलक झपकाते ही इसका भरपूर राजनैतिक लाभ उठाया जा सकता है, टेलीविज़न पर जनता के प्रति समर्पण का भाव सिद्ध करते हुए, समाज के रक्षक का अभिनय करते हुए—है न? मगर इससे सच्चाई तो स्पष्ट नहीं होगी। इस तरह नहीं। और इसीलिए मैं निवेदन करता हूँ कि इस समस्या को राजनीति से दूर रखें, उसके प्रलोभनों से दूर रखें, हर प्रकार की राजनीति से दूर रहें, अगर यह सम्भव हो तो, वरना हम समस्या के मूल तक नहीं पहुँच पायेंगे। सत्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक है पराक्रम एवं वास्तविकता।"

"और आपका सत्य और आपका पराक्रम किसमें निहित है?" हॉल में कोई चिल्लाया।

वॉल्टर शेर्मेट ने खुश होकर सिर हिलाया और फिर चुनौती-सी देते हुए हँसा। हॉल चौकस और ख़ामोश हो गया।

"पराक्रम के बारे में," इस सन्नाटे को तोड़ते हुए एन्थोनी यूंगेर ने रुककर कहा, "निर्णय लेना मेरा काम नहीं, क्योंकि वह मुझमें है। मगर, हम

काम की बात करें। हमारे सामने, परदे पर है एक मनुष्य, जिसने महान् वैज्ञानिक आविष्कार किया है। मैं तो यह भी कहूँगा कि जो इतिहास में अभूतपूर्व है। वह हमें पसन्द है या नहीं—यह अलग बात है। यह विज्ञान है। भाई फ़िलोफ़इ ने और मेरे लिए तो वह पिता समान है, पिता फ़िलोफ़ेइ ने मानवता के लिए कसांद्रा भ्रूणों की समस्या के बारे में हमारी आँखें खोलने की कोशिश की है। हमारे एक और समकालीन, जो आज भीड़ के हाथों मारा गया, भविष्यवेत्ता रॉबर्ट बोर्क ने फ़िलोफ़ेइ के आविष्कार की यह कह कर प्रशंसा की कि वह मानवीय आत्मा की उन्नति की दिशा में एक नया कदम है। उसने प्रेस में भी अपना पक्ष प्रस्तुत किया। और यह था उसका अन्तिम शब्द, उसका उपदेश। मैं अपने विचारों एवं निष्कर्षों की मौलिकता का स्वांग नहीं रचूँगा, मगर मैं इतना ज़रूर कहूँगा, केवल आज के, इस क्षण के स्वार्थ की ख़ातिर हमें कसांद्रा भ्रूणों की समस्या की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, बात इस बारे में हो रही है। और अब हम पहले अपने आपसे और फिर प्रत्यक्ष कारणों से पिता फ़िलोफ़ेइ से प्रश्न पूछें। कसांद्रा भ्रूणों के अस्तित्व का ज्ञान होने के पश्चात् मानव को अब कैसा आचरण करना चाहिए?"

"मिस्टर यूंगेर," एक महिला की आवाज़ गूँजी, "माफ़ कीजिए, सवाल पूछने में आपने ज़रूरत से ज़्यादा जोश तो नहीं दिखाया? किस अस्तित्व के बारे में, वह भी भ्रूण अवस्था में, बात हो सकती है? आप तो पेशेवर सवाल चाहते थे। तो लीजिए, प्रेस को, करोड़ों पाठकों को, और टी.वी. दर्शकों को, जिन्हें आप विस्मय एवं बदहवासी के चक्र में लगातार घसीट रहे हैं, जवाब दीजिए, स्पष्ट और असंदिग्ध जवाब, आपको कौन-सी चीज़ मजबूर कर रही है? आप क्यों फ़िलोफ़ेइ के साथ मिलकर समाज पर यह दुःखद समस्या थोंपने पर तुले हुए हैं, जब आपसे इस बारे में कोई कह ही नहीं रहा, कोई भी नहीं? एक भी व्यक्ति नहीं?"

"आप ठीक पूछ रही हैं मैडम! और बात यह नहीं कि एक भी व्यक्ति पूछ रहा—पूछ रहे हैं अनगिनत लोग। जीवन की सीमा-रेखा पर खड़े भ्रूणों की आवाज़ें हमसे 'अपील' कर रही हैं, विनती कर रही हैं कि उनकी बात सुनें और फिर सोचें उनके बारे में—उतना नहीं, जितना स्वयं अपने बारे में; और हम कतरा रहे हैं जवाब देने से—उन्हें और स्वयं को भी, हम कृपणता दिखा रहे हैं, इन अभागे भ्रूणों से हाथ झटक लेना और भी आसान है, चाहे इसकी क़ीमत खुद को धोखा देना ही क्यों न हो! और इसमें हम सब दोषी हैं, हम सब, आप मैं, मैडम, और हमारे पूर्वज। ये आवाज़ें, मैं फिर दोहराता

हूँ, हम सबसे मुख़ातिब हैं, उन्हें इसकी ज़रूरत है कि उनको सुना जाये, उन्हें समझा जाये, उनकी बात को समझाया जाये, इसमें सफल हुआ है महान् फ़िलोफ़ेइ। उसकी महानता का बखान उसी की उपस्थिति में करने के लिए मैं बाध्य हूँ। वह हमारे सामने परदे पर है, मगर दूसरा कोई रास्ता नहीं है। हाँ, वह महान् है। आप ज़िद कर रहे हैं कि मैं स्पष्ट करूँ कि जैसा कि आपने कहा, हमें इस दुःखद समस्या को पूरे समाज से जोड़ने की क्या ज़रूरत है। क्या हम कह सकते हैं कि आइनस्टाइन को सापेक्षता के सिद्धान्त का आविष्कार मजबूरी में करना पड़ा? ठीक वैसे ही फ़िलोफ़ेइ के साथ हुआ—वह एक वैज्ञानिक है, यह विज्ञान है, यह योग्यता है, यह भविष्य का वरदान है, अनुभव एवं आविष्कार है, यह बुद्धि का काम है। मैं इसे इसी तरह समझ पाया हूँ। ऐसे आविष्कार का विरोध नहीं करना चाहिए, वैसे ही जैसे कि पहाड़ों के पीछे से उगते सूरज का विरोध नहीं करना चाहिए। हमें, लोगों को, समाज को समझ लेना चाहिए—यही बात है...हमें अपने आपसे कहना होगा ...अब से मानव को जीने की एक नई नीति की ज़रूरत है...

इसी क्षण वॉल्टर शेर्मेट ने तेज़ी से टेलीफ़ोन का चोंगा उठाया, जो उसके सामने मेज़ पर रखा था और संक्षेप में किसी से बोला, "ऑपरेटर, आप तैयार हैं?" और चोंगा बिना वापस रखे मरियल आवाज़ में एन्थोनी यूंगेर से बोला, "आप फ़िलोफ़ेइ की और आपकी इस 'बातचीत' पर सम्पूर्ण विश्व के समाज की प्रतिक्रिया जानना चाहते हैं? विश्वास करना, सुनिश्चित करना चाहते हैं?"

"आपका क्या मतलब है?"

"यही कि हमारी प्रेस कॉन्फ्रेंस विश्व के अनेक कोनों के चौराहों और सड़कों पर दिखाई जा रही है। समानान्तर अनुवाद भी किया जा रहा है। तो आइये, यहाँ उपस्थित सबको सूचित करते हुए देखें कि इस ग्रह पर क्या हो रहा है, पादरी फ़िलोफ़ेइ और उसके सहयोगियों से की जा रही इस जवाबतलबी की प्रक्रिया पर लोगों की क्या प्रतिक्रिया है। मैं फिर से दोहराता हूँ—विश्व के विभिन्न कोने, दिन के अलग-अलग समय पर, भिन्न-भिन्न भाषाएँ। तो, ध्यान दीजिए! उसने टेलीफ़ोन से आज्ञा दी। केन्द्रीय मॉनिटर चालू कीजिए। तो, शुरू करते हैं तियानन्मेन से देखें कि बीजिंग में, सर्वाधिक जनसंख्यावाले देश की राजधानी में क्या हो रहा है!"

विशाल परदे पर, जो स्टेज के बीच में प्रकाशित था, लोगों से खचाखच भरा तियानन्मेन चौक दिखाई दिया। पार्श्व में माओ से तुंग की

कठोर मुद्रावाली तस्वीर झलक रही थी। माओ की कठोर दृष्टि के नीचे यह भयंकर भीड़ उफनते मानव समुद्र की याद दिला रही थी। चीनी क्रुद्ध प्रतीत हो रहे थे, वे जोश में चीख़ रहे थे। संवाददाता ने टिप्पणी करते हुए कहा कि ऐसा नज़ारा इस चौक में केवल 1989 में देखने को मिला था, जब विद्यार्थियों के आन्दोलन को कुचला जा रहा था। सुनिये थियानन्मेन का एकजुट नारा—संवाददाता ने आगे कहा—मैं उसे दुहराता हूँ—'फ़िलोफ़ेइ को मृत्युदण्ड!' 'समाजवाद के दुश्मन को रॉकेट से उड़ा दो।'

हॉल ने फ़िलोफ़ेइ की ओर देखा, उस पीतवर्ण की ओर देखा जो उसके चेहरे पर छलक रहा था, और परदे पर भी स्पष्ट दिखाई देता था। तनाव के कारण बुत बने, माइक्रोफ़ोन पकड़े एन्थोनी यूंगेर की ओर देखा, वॉल्टर शेर्मेट की ओर देखा जो सूचनाएँ दे रहा था :

"और अब—मॉस्को, लाल चौक! ध्यान दीजिए!"

वही सब कुछ लाल चौक पर भी हो रहा था। उषाकाल! जगह-जगह आग जल रही थी। भीड़ दहाड़ रही थी—स्वघोषित फ़िलोफ़ेइ को—मृत्युदण्ड! "जासूस को रॉकेटों से उड़ा दो!"

इस उत्तेजित, चीख़ती भीड़ के ऊपर जो कई बार परदे पर दिखाई गई, एक और भी विचित्र-सी चीज़ डोल रही थी, सबका ध्यान बरबस उस ओर जा रहा था, यह रात का पक्षी था, उल्लू से मिलता-जुलता। यह पक्षी, जैसे किसी अज्ञात डोर से बँधा हो, अँधेरे में समाधि के ऊपर क्रेमलिन की दीवार के ऊपर और फिर लोगों की क्रुद्ध भीड़ के ऊपर चक्कर काट रहा था...।

बिना समय गँवाये, वॉल्टर शेर्मेट ने नई सूचनाएँ देकर पृथ्वी के अन्य स्थानों से विवरण माँगा : बर्लिन, वारसा, मॉन्ट्रियल, रियो-डि-जेनेरियो, हर जगह वही उन्माद फैला था, वे ही नारे गूँज रहे थे और हर जगह वही सज़ा सुनाई जा रही थी : 'फ़िलोफ़ेइ को मृत्युदण्ड,' 'कमीने को रॉकेट से उड़ा दो!'

"बस! कृपया मेरी बात भी सुनिये!" बायीं ओर के परदे से फ़िलोफ़ेइ की आवाज़ गूँजी।

"हाँ, हम आपको सुन रहे हैं, भाई फ़िलोफ़ेइ,"—वॉल्टर शेर्मेट फिर व्यंग्य से और कृत्रिमता से चहका। उसकी गंजी चाँद विजयोन्माद से चमक रही थी, जब उसने कुछ बड़प्पन जताते हुए कहा, "प्रजातन्त्र की ऐसी प्रतिक्रिया देखने के बाद अब आप क्या कहेंगे?"

"वही जो इससे पूर्व कहना चाहता था,"—फ़िलोफ़ेइ ने जवाब दिया। और उसके चेहरे के भाव देखकर स्पष्ट होता था कि वह कुछ निश्चय कर

चुका है, निर्णय की सीमा रेखा पर है। "मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ मिस्टर वॉल्टर शेर्मेट कि आपने दुनिया के विभिन्न कोनों से यह 'रिपोर्ताज़' आयोजित किया। इसके बाद अब किसी सन्देह की गुंजाइश ही न रही। तस्वीर एकदम साफ़ है। मैं पूरी तरह हार गया हूँ। मेरा उद्देश्य था, मानव जाति का ध्यान विनाश से बचाने के उपायों की ओर आकर्षित करना और विकास में एक नई कड़ी की सम्भावना के बारे में बताना। राह एक ही है—कसांद्रा भ्रूणों के 'जीवन के प्रति भय' के संकेतों को सुनना और पूरे समाज की एवं हरेक व्यक्ति की नैतिक परिपूर्णता के बारे में निर्णय लेना। परिणाम यह हुआ—मेरी कोशिशें का कोई भी नतीज़ा न निकला। मेरे समकालीन लोगों का मेरे आह्वानों के प्रति रुख़ पूरी तरह से नकारात्मक है। मैं स्वीकार करता हूँ—मेरी हार हुई है। और अब इस बहस को ज़ारी रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। बस! बोरिया बिस्तर लपेटने की बारी आ गई।"

"भाई फ़िलोफ़ेइ, अब आप वास्तविक स्थिति को समझें, बात इसी बारे में हो रही है। लोगों को दिलासा देना होगा, समाज को ढाढ़स बँधाना होगा, है न?" वॉल्टर शेर्मेट ने जोड़ा।

"हाँ, ऐसा ही हो रहा है," फ़िलोफ़ेइ ने सहमति प्रगट की। "और, क्योंकि मैं इस अभूतपूर्व कोलाहल के लिए, अशान्ति के लिए ज़िम्मेदार हूँ जिसके कारण रॉबर्ट बोर्क की मृत्यु हुई। अतः मैं ईश्वर के सम्मुख और लोगों के सम्मुख जवाबदेह हूँ। और अब वह घड़ी आ गई है। करनी का फल भुगतने की घड़ी। और मैं ख़ुश हूँ कि मेरी इस निर्णायक घड़ी में मुझे लोगों के सामने उपस्थित होने का मौक़ा मिल रहा है, और वे मेरी स्वीकारोक्ति की सत्यता में विश्वास कर सकते हैं।"

"भाई फ़िलोफ़ेइ," फिर से छेड़ा उसी वॉल्टर शेर्मेट ने, यह समझते हुए कि वह पूरी दुनिया के सामने है, और यह भी कि हर शब्द पर उसे शाबाशी मिल रही है। "भाई फ़िलोफ़ेइ," उसने दोहराया, "हम आपसे कोई भी व्यक्तिगत हस्तक्षेप की उम्मीद नहीं करते। जनता की भावनाएँ, बेशक, कटु हो गई हैं, मगर आपने लोगों को मजबूर किया..."

"हाँ, हाँ, मैं समझ रहा हूँ," फ़िलोफ़ेइ ने जवाब दिया। "इस भली बात के लिए धन्यवाद! मगर मेरे आचरण को साधारण ग़लती नहीं कहा जा सकता। और मुझे इसके लिए जवाब देना होगा। मैंने अनुभव किया है कि अगर विश्व मेरे आविष्कार का स्वागत करता है, मेरे विचारों को आत्मा का स्वयं से नया साक्षात्कार समझता है, तो अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लूँगा

या फिर करारी हार मान लूँगा, अपने ही आविष्कार का शिकार हो जाऊँगा, उसी के टुकड़ों के नीचे मर जाऊँगा। और कोई रास्ता नहीं। मैं जानता था, कि मैं क्या करने जा रहा हूँ। और यह है मेरी आख़िरी प्रार्थना। मैं लोगों को हानि पहुँचाने के किसी भी ख़याल से दूर था। मगर वास्तव में हुआ इसका बिलकुल उल्टा। एक अच्छा इरादा बुराई में बदल गया। और अब हम सब—उसके सामने शक्तिहीन सिद्ध हुए हैं। मगर मैं आविष्कार से मुँह नहीं मोड़ता, कसांद्रा भ्रूणों की घटना को नहीं नकारता, जीवन के प्रति उनके भय की भी खिल्ली नहीं उड़ाता; लोगों को यह मालूम होना चाहिए कि विश्व का अन्त—हमारे भीतर हमारे कार्यों, हमारे विचारों में निरन्तर संचित होती बुराई के कारण ही होगा जो मानव के आनुवंशिक 'कोड' के द्वारा प्रकट होती है, और विपत्ति निकट आती जा रही है। जब तूफ़ान आयेगा, बिजली कड़केगी, तब तक बहुत देर हो चुकी होगी..."

हॉल में शोर होने लगा। उत्तेजित आवाज़ें आने लगीं। एक व्यक्ति तो माइक्रोफ़ोन में क्रोध से तप्त होकर चिल्लाने लगा—

"धमकियाँ बन्द करो! मैं माँग करता हूँ, कि समाज को 'ब्लैक मेल' करना फ़ौरन बन्द करो! और मैं सबके सामने, चीख़कर कहता हूँ—हमारा पाला शैतान से पड़ा है, जो मनुष्य पर अन्तरिक्ष से तानाशाही करना चाहता है। हाँ, हाँ अतीत के तानाशाहों को भी ऐसे ही सर्वशक्तिमान होने के सपने आया करते थे, वे सिर्फ़ पूरी दुनिया पर शासन करने के ही ख़्वाब देखते थे, जैसे हिटलर, जैसे स्टालिन। वे आये और ख़ून की नदियों में बह गये। और यह पूरी दुनिया पर अधिकार करना चाहता है, अन्तरिक्ष से हमें 'ब्लैकमेल' करके। अभी वह लोगों के क्रोध का शिकार नहीं हुआ है। और, इसी बात का फ़ायदा उठाकर, लोगों पर हुकुम चला रहा है!

एन्थोनी यूंगेर अपने आपको रोक न सका और वह भी माइक्रोफ़ोन की ओर बढ़ा,

"मिस्टर, मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं, कम-से-कम माइक्रोफ़ोन पर चीख़ने से पहले हॉल को अपना परिचय तो दीजिए।"

"मेरी नाम बहुत साधारण है—स्मिथ, जॉन स्मिथ।"

"तो मि. जॉन स्मिथ! शायद सुनियोजित तरीक़े से या फिर यूँ ही आप वास्तविकता को तोड़-मरोड़ रहे हैं। कोई भी आपकी आज़ादी और आपके अधिकारों को नहीं छीन रहा। आपको अपनी मर्जी के मुताबिक रहने का पूरा हक़ है। मगर एक वैज्ञानिक जिसने एक आविष्कार किया है, मानवता

के इतिहास में महान् वैज्ञानिक आविष्कार, केवल इसीलिए तो अपनी वैज्ञानिक खोजों के परिणाम समाज से नहीं छिपा सकता कि उससे आपकी मानसिक शान्ति भंग होती है। फ़िलोफ़ेइ को तो मजबूर किया जा सकता है सत्य को, स्वयं को नकारने के लिए, मगर तथ्य तो तथ्य ही रहेगा—कि कसांद्रा भ्रूणों का अस्तित्व है। अब से कसांद्रा दाग़ होगा अवश्यम्भावी संकेत—हमारे अन्दर छिपी हुई बुराई का। और हमें भी अपने आपको धोखा नहीं देना चाहिए, अपने आपसे वास्तविकता को नहीं छुपाना चाहिए। उल्टे, मैं तो समझता हूँ कि हमें—ठीक से कैसे कहूँ—सेना में ऐसी स्थिति में कहते हैं—हमला मोल लेना चाहिए"...

"सुनिये! आप ऐसे सुझाव दे कैसे सकते हैं—हमला मोल लेना चाहिए? किस पर हमला? अवश्य ही—औरतों पर, पूरे हॉल में महिला का चीत्कार गूँज उठा। "यह आपका पुरुष अहंकार बोल रहा है! मर्दों को यह अधिकार किसने दिया कि वह औरतों के बारे में निर्णय लें? पुरुष राज, दुष्ट पुरुष राज्य, यहाँ भी अपने ही बारे में बात कर रहा है! मुझे अपने ऊपर हमला मोल नहीं लेना! मैं नहीं चाहती कि मेरे माथे पर कसांद्रा दाग़ उभरे। यह शर्म की और नीचता की बात है!"

"माफ़ कीजिएगा!" परदे से फ़िलोफ़ेइ की आवाज़ गूँजी। "माफ़ कीजिए, भगवान के लिए, मैं आपको बीच में ही टोकना नहीं चाहता था, मगर यह कहे बिना नहीं रह सकता कि कसांद्रा दाग़ न तो नीचतापूर्ण है और न ही लज्जाजनक। बिलकुल नहीं। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि यह प्रतिक्रिया है कसांद्रा भ्रूणों की, जो हमें बुराई से आगाह करते हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमारे भीतर संचित होती रही है। विश्व का अन्त खुद हमारे भीतर ही छिपा है—इसी के बारे में बताता है हमें यह दाग़। मैं विनती करता हूँ, शान्त हो जाइये। और मैं सबसे निवेदन करता हूँ जो इस समय मेरी बात सुन रहे हैं कि कृपया मुझे अन्तिम विदाई का सन्देश देने दीजिए। पिछले चौबीस घण्टों में मैंने जो देखा और सुना है इस बात का प्रमाण है कि मेरा आविष्कार समय से पहले हो गया। उसे मेरे समकालीन लोग समझ नहीं पाये। और इसीलिए मैंने कठोर निर्णय लिया है, अदृश्य हो जाने का, जीवन से मुक्त होने का, दुनिया से और भलाई से दूर जाने का, और सौभाग्यवश यह मैं यहाँ, अन्तरिक्ष में बिना किसी रोक-टोक के कर सकता हूँ। और इन अन्तिम क्षणों में, मैं उन सबसे माफ़ी माँगता हूँ, जो मुझे सुन रहे हैं, देख रहे हैं, या जो मेरे बारे में बाद में जानेंगे। मैंने आपको कष्ट

पहुँचाया, हालाँकि मेरे इरादे एकदम नेक थे। और अब, मेरा अन्त। अब मैं खुले अन्तरिक्ष में छलाँग लगाऊँगा और इसी के साथ मेरी जीवन-यात्रा पूरी हो जायेगी। यही मेरा भाग्य है। मैं यह क़दम उठाने के लिए तैयार हूँ। बस शिरस्त्राण पहनना शेष है। मगर इससे पहले कि मैं अपना अन्तरिक्षीय आवास छोड़ दूँ, जहाँ मैं पुश्किन की इस पंक्ति से प्रभावित होकर आया था—'काश छिप जाता मैं, बादलों के पार, ईश्वर के निकट एक कोठरी में', तो यह अन्तिम क़दम उठाने से पहले मैं सबको, जो मुझे देख और सुन रहे हैं, यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि वे उपकरण जिनके द्वारा 'ज़ोन्दाझ' किरणें पृथ्वी पर विकिरित की जाती थीं, मैंने नष्ट कर दिये हैं, तहस-नहस कर दिये हैं। सारी योजनाएँ, आँकड़े और सम्भावनाएँ, गणनाएँ, सभी नोट्स जो आविष्कारों से सम्बन्धित थे, नष्ट कर दिये हैं, सब कुछ जो कसांद्रा दाग़ से सम्बन्धित आविष्कार से जुड़ा था, निःशेष हो गया है। यह सब लुप्त हो जायेगा, मेरे साथ चला जायेगा, शान्त हो जाइये, इत्मीनान रखिये, समझ लीजिए कि यह सब कभी हुआ ही नहीं। हो सकता है, मानवीय विचारधारा फिर कभी इन घटनाओं की ओर रुख़ करे, मगर यह होगा हमारे बाद, भविष्य में। मगर अभी तो हर चीज़ अपनी धुरी पर वापस आ जायेगी। कोई निशान तक नहीं बचेगा। सिर्फ़ एक चीज़, जो कभी नज़र आ सकती है, अगर मेरे बाद कोई इस अन्तरिक्ष स्टेशन का निरीक्षण करे, तो ये मेरे जीवन सम्बन्धी कच्चा चिट्ठा होगा, अन्तरिक्ष पादरी के संस्मरण भविष्य के बारे में, समय के बारे में, उस बारे में कि कसांद्रा भ्रूणों का रहस्य मुझ पर क्यों और कैसे खुला? यही एक चीज़ है, जो मैं अपने पीछे छोड़ जाऊँगा। और अगर, मेरे बेटे, एन्थोनी यूंगेर, तुम्हारा दिल चाहे, तो मैं खुशी-खुशी ये 'नोट्स' तुम्हारे नाम लिख जाऊँगा।

प्रिय एन्थोनी, तुमसे मैं इस तरह मुख़ातिब हो रहा हूँ, जैसे तुम मेरे बेटे हो, मगर यह मेरी आत्मा की पुकार है। मैं भाग्य का आभारी हूँ कि सबके सामने तुम्हें इस तरह सम्बोधित कर सकता हूँ। मेरा जीवन इस तरह ढला कि मैं सन्तानहीन रह गया, मगर अन्त में, अन्तिम क्षणों में, मैं सोचता रहूँगा कि मेरा एक मानसपुत्र है—एन्थोनी यूंगेर।"

पूरा हॉल ख़ामोश हो गया। और फिर से फ़िलोफ़ेइ की आवाज गूँजी।

"मुझे माफ़ करना लोगो। विदा लेते समय सारी बातें कहना मुश्किल है। मगर जाते-जाते, मैं एक बात के बारे में ख़ामोश नहीं रह सकता। मुझे बार-बार स्वघोषित पादरी कहा गया, स्वघोषित फ़िलोफ़ेइ कहा गया। हाँ,

यह सच है। सन्त बनाने के लिए किसी ने मेरे बाल नहीं काटे, किसी ने फ़िलोफ़ेइ सम्बोधन से मेरा नामकरण नहीं किया। मगर बात चर्च की रूढ़ियों की, प्रथाओं की नहीं है, बात है किसी आदर्श में विश्वास की। और मैं चाहता हूँ कि मेरी इस बात को सब लोग भली-भाँति समझें।

"समय हो गया है। मैं आपसे विदा लेता हूँ। मैं अपने ग्रह से विदा लेता हूँ। मैं एक परदे पर उसे पूरा-पूरा देख रहा हूँ, ब्रह्माण्ड में तैरते हुए, दूसरे परदे पर—अलग-अलग और स्पष्ट दृश्य है—सूक्ष्मतम जानकारियों सहित : पेड़, घास, पत्थर। और यह कुछ विचित्र, फ़िलहाल बिलकुल समझ में न आनेवाला, कुछ बेसिर-पैर-सा दृश्य। आपको भी इस बात में विश्वास हो जायेगा, यदि अन्तरिक्ष के मॉनीटर से यह दृश्य पृथ्वी के मॉनीटर पर प्रसारित करना सम्भव हो सका तो। देखिये, देखिये, मेरे बग़लवाला वह परदा। देखिये, उस पर है सागर, यह है सागर तट अटलाण्टिक का तट! देखिये, तट के निकट के छिछले पानी में कितनी भीषण लहरें उठ रही हैं, और आप देख रहे हैं कि क्या हो रहा है? आप ह्वेलों को देख रहे हैं? ये हैं वे, पूरा झुण्ड! वे सागर से बाहर की ओर तैर रही हैं, पर्वतों जैसी, और देखिए, ओह भयानक, ओह देवताओं द्वारा दी जा रही सजा, ह्वेलें छलाँग लगाकर किनारों पर स्वयं को फेंक रही हैं! देखिये, उनके साथ क्या हो रहा है! ये आत्मघाती ह्वेले हैं! क्या हो रहा है उन्हें? वे पानी से बाहर क्यों फेंक रही हैं स्वयं को? उन्होंने अपना जीवन समाप्त करने का निश्चय क्यों किया? इसका क्या मतलब है? उन्हें ऐसा करने पर कौन मज़बूर कर रहा है। कोई बुरी बात, कोई असहनीय बात उन्हें मृत्यु की ओर धकेल रही है। या फिर ये हमारे हाल ही के विचारों से सहमति है? एक ही दिन और एक ही समय में! शायद मैं समझ रहा हूँ, वह बात पकड़ पा रहा हूँ, जो मृत्यु के मुख में जाने के लिए इन ह्वेलों को प्रेरित कर रही है। अफ़सोस इस समस्या में गहरे पैठ कर उसका समाधान ढूँढ़ न पाऊँगा, समय नहीं है कि जीवन की इस विस्मित करनेवाली पहेली का हल ढूँढ़ सकूँ। यही हुआ था रॉबर्ट बोर्क के साथ। उसके लेख को पढ़ने के बाद, मैं अब उसके विचारों की गहराई को समझ रहा हूँ। मगर उस लेख में कुछ और भी छिपा है, जो पूरा नहीं कहा गया है। मैं उम्मीद करता था कि हम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझेंगे, और हमें आत्मा की नई पहचान होगी। मगर, यह हो न सका, शायद भाग्य को मंजूर न था। वही बात है ह्वेलों की। यदि वे बोल सकतीं, तो हमें कितनी बातें पता चलतीं...मगर मुझे देर हो रही है। और मैं

ह्वेलों के साथ-साथ जा रहा हूँ...मैं भी एक ह्वेल हूँ जो अपने आपको समाप्त करने जा रहा है, किनारे पर कूद कर। और अन्त में—रॉबर्ट बोर्क से। मैं तुम्हारा गुनहगार हूँ, और मैं भी ह्वेलों के साथ तुम्हारे पास आ रहा हूँ... अलविदा..."

उसके बाद परदे पर जो कुछ दिखाई दिया, उससे दर्शकों के विस्मय का ठिकाना न रहा। फ़िलोफ़ेइ पूरी दुनिया की नज़रों के सामने जीवन से दूर चला गया, उन सबकी जो उस समय टी.वी. के पास बैठे थे। अन्तरिक्ष पादरी का हर हाव-भाव उसके निर्णय की पुष्टि कर रहा था। सब समझ रहे थे कि वे एक व्यक्ति के सार्वजनिक रूप से आत्महत्या करने के अवसर पर उपस्थित हैं। और कोई भी फ़िलोफ़ेइ का निर्णय नहीं बदल सकता था, जन्म और मृत्यु की दहलीज़ पर खड़े उसको कोई आवाज़ नहीं दे सकता था...

हॉल में अत्यन्त तनावपूर्ण शान्ति छा गई। कोई हिल तक नहीं रहा था, कोई आवाज़ तक नहीं निकाल रहा था। सब नज़रें परदे पर टिकी हुई थीं, जिस पर अन्तरिक्ष पादरी के जीवन के क्षण बीत रहे थे। एन्थोनी यूंगेर फ़ौरन समझ गया कि मृत्यु प्राप्त करने की आज़ादी आत्मा की सबसे बड़ी त्रासदी है, जिसका स्थान कोई चीज़ नहीं ले सकती, जिसका किसी भी प्रकार आकलन नहीं किया जा सकता। इसी दौरान फ़िलोफ़ेइ अपने विशाल शिरस्त्राण को पहन चुका था। साफ़ दिखाई दे रहा था कि वह किस तरह उसे अपने 'सूट' के अगले हिस्से से अटक रहा है। और इस क्षण से उसके चेहरे के भाव अस्पष्ट होने लगे। सब कुछ तैयार था। बस, अब निर्गम द्वार की ओर जाना शेष था। फ़िलोफ़ेई ने पीछे मुड़कर देखा, शायद कुछ कहा, मगर अब उसके शब्द सुनाई नहीं दे रहे थे। हाथ हिलाकर विदा लेते हुए, वह दरवाज़े की ओर बढ़ा ताकि स्वयं को खुले अन्तरिक्ष में फेंक सके। दरवाज़े के पल्ले खुले और फ़िलोफ़ेइ शून्यता में विलीन हो गया।

वह सितारों के बीच की जगह पर चलता रहा, स्वयं को निपट अकेला महसूस करते हुए उस अन्तहीनता में जहाँ न तो कुछ ऊपर था, न कुछ नीचे, न दाहिने, न बायें, न क्षितिज, न कोई सीमा और न ही कोई पैमाना।

इस धुँधलके में वह लटक गया और तैरते हुए बढ़ गया लक्ष्यहीन-सा अपने अन्तरिक्ष यान से दूर, और दूर...

वह तैरता रहा, भारहीनता में लटकते हुए, और शीघ्र ही नज़रों से ओझल हो गया।

11

ह्वेलें, जिन्होंने खुद को किनारे पर झोंक दिया था, उथले पानी में दम तोड़ती रहीं, गहरी पीड़ा एवं भयानकता के साथ, उनकी बाहर निकली आँखें फटी की फटी रह गईं। उनके शरीर अनेक स्थानों पर यूँ बिखर गये, जैसे आग से कोयला बने पर्वत।

और, धरती सूर्य की परिक्रमा करती रही...

अगली सुबह दुनिया के सभी अख़बार एक सुर से प्रथम पृष्ठ पर चीखे : 'अन्तरिक्ष में आत्महत्या की पहली घटना!'

"अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेइ ने मानवता को कसांद्रा दाग़ के शाप से मुक्त किया!", "भगवान् उसे स्वर्ग दे!", और भी इसी तरह के सनसनीखेज़ वाक्य अख़बारों में, टेलीविजन के परदों पर और रेडियो पर छाये रहे।

'ट्रिब्यून' में एन्थोनी यूंगेर के कुछ विचित्र वाक्य भी छपे थे, "मेरे पिता, फ़िलोफ़ेइ और रॉबर्ट बोर्क, वह राह दिखा गये हैं जिस पर मैं आगे चलूँगा..."

मगर कुछ दुष्ट प्रतिक्रियाएँ भी थीं, "स्वघोषित पादरी को स्वर्ग की ज़रूरत नहीं है, वह पहले ही अन्तरिक्ष में उल्टा लटक रहा है।"

इसी तरह के चौंकानेवाले समाचारों में एक रहस्यपूर्ण समाचार भी था : "अटलाण्टिक के पश्चिमी किनारे पर ह्वेलों के एक बड़े समूह ने अपने आपको समुद्र के बाहर तट पर फेंक दिया। ये सभी जानवर मर गये।"

रूसी अख़बारों में एक और विचित्र, अटपटा, असम्बद्ध-सा समाचार छपा—

"कल रात लाल चौक पर किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा समाधि पर एक मरा हुआ उल्लू फेंका गया। उसके शरीर पर कोई विस्फोटक सामग्री नहीं पाई गई।"

दो दिनों बाद रॉबर्ट बोर्क को दफ़ना दिया गया। क़ब्रिस्तान में ख़ामोशी थी। शिशिर ऋतु। स्वच्छ आकाश। अन्तिम प्रार्थना के समय

एन्थोनी यूंगेर ने ऊपर, आसमान की ओर देखा और सोचा कि इन दोनों सत्यान्वेषियों ने अपने पूर्व-नियोजित स्थान ग्रहण कर लिए हैं : एक ने अन्तरिक्ष के विस्तार में, निरन्तरता के प्रवाह में, और दूसरे ने पृथ्वी के गर्भ में, अनन्त की गहराइयों में...

और उनके साथ है सत्य...

उपसंहार

"मेरा वक़्त टाइम बम की नोक पर है। और मैं कम्प्यूटर पर अपना अन्तिम पत्र पूरा करने की जल्दी में हूँ। और जाते-जाते मुझे यह चौंकाने वाली बात दिखाई दे रही है। अभी मैं देख रहा हूँ कि पृथ्वी पर चमकते दिन के स्थान पर रात आ रही है, ताकि वह भी नवजात दिन के लिए अपना स्थान छोड़ दे। यही है चिरन्तन का दृश्य प्रवाह, समय की प्रत्यक्ष अन्तहीनता। मगर अन्तरिक्ष से देखने वाले के लिए आ चुका है एक सीमान्त।"

ब्रह्माण्ड के पैमाने से मनुष्य का जीवन एक मक्खी के जीवन-सा है। मगर मनुष्य को विचार करने की शक्ति मिली है, और इसी कारण उसका जीवन लम्बा हो जाता है। मगर उल्टा भी होता है—काफ़ी घट जाता है। मैंने न जाने कितनी ही बार दिन और रात के परिवर्तन के रहस्य को देखा है, बिना यह जाने कि परिवर्तन की सीमा-रेखा पर मैं जीवन को पूर्ण विराम लगा दूँगा। क्योंकि मेरे लिए इन्साफ़ का दिन आ गया है, मेरे पापी जीवन का अन्तिम दिन। और यह इन्साफ़ का दिन मेरे साथ ही चला जायेगा, उसी तरह जैसे जीवन से सम्बन्धित हर चीज़। अपना इन्साफ़ का दिन मैंने स्वयं ही तय किया है, यही है मेरा कटु सौभाग्य और चरम दुर्भाग्य भी।

इन पंक्तियों के लिखे जाने के बाद, यदि सम्भव हुआ तो मैं अन्तरिक्षीय प्रेस कॉन्फ्रेंस में अपना बयान दूँगा। और उसके पश्चात् जीवन का हिसाब चुकाकर आत्महत्या कर लूँगा। यही मेरी स्वयं को दी गई सज़ा है। मैंने समाज की आत्मचेतना को नष्ट किया है। करोड़ों लोगों की घृणा का मैं पात्र हूँ। मैं रॉबर्ट बोर्क की हत्या का ज़िम्मेदार हूँ। मैं बड़ी ऊहापोह में हूँ। मुझे लुप्त होना ही पड़ेगा, अपने अस्तित्व को समाप्त करना होगा। अन्य कोई उपाय नहीं।

और, हालाँकि कहते हैं कि मृत्यु से पूर्व साँसें भी कम पड़ जाती हैं, मगर मुझे अन्तिम साँस तक अपनी बात कहनी होगी। पृथ्वी पर कलंकित

व्यक्ति के लिए शायद इस बात का कोई महत्त्व नहीं है कि उसके बाद इस उकताहट भरी दुनिया का क्या होगा? शायद, घास नहीं उगेगी! सब कुछ भाड़ में जाये! मगर मैं तो मृत्यु की देहलीज़ पर भी अपनी चिन्ता को नहीं छिपा सकता। लोगों का क्या होगा, भविष्य में कसांद्रा दाग़ के इतिहास की उनके दिलोदिमाग़ पर क्या प्रतिक्रिया होगी? क्योंकि, चाहे कुछ भी हो जाये, सत्य नकारे जाने की बाद भी सत्य बना रहता है। आज की उपेक्षित की गई समस्या कल फिर मुँह बाये खड़ी होगी, और तब इससे बचना असम्भव होगा।

मेरा इन्साफ़ का दिन आ पहुँचा। उसे टालना असम्भव था। मेरे लिए वापसी का रास्ता नहीं है। लोगों, मैं आपके लिए अपनी स्वीकारोक्ति छोड़ जाता हूँ। उससे आप जान जायेंगे कि मैं कौन हूँ, जिसने स्वयं को बाद में अन्तरिक्ष पादरी कहना शुरू किया, मेरा ख़ानदान कौन-सा है, जीवन मैंने कैसे बिताया, क्या करता रहा, कसांद्रा भ्रूण का मनहूस आविष्कार मैंने कैसे किया...

जाते-जाते एक बात और कहूँगा। अन्तरिक्ष में मेरे दिमाग़ में अत्यन्त अनपेक्षित विचार आते रहे और मैंने ऐसी पीड़ा भी सही है, जिनकी मुझे कोई उम्मीद नहीं थी। नहीं जानता कि यह सब कैसे समझाऊँ! हर बार अन्तरिक्ष से बादलों में दुबकी पृथ्वी पर देखते हुए मेरा मन हिलोरें लेता : हे भगवान्, कैसी महान् रचना है यह पृथ्वी! सूर्य का अस्तित्व भी पृथ्वी के लिए ही है, जिस पर लोग रहते हैं, वरना यह सब क्यों होता? मनुष्य को ब्रह्माण्ड की आवश्यकता है—इसलिए वह है, ताकि मनुष्य उसे जाने, इसलिए तो उसका अस्तित्व है। वरना, इस आकाशगंगा की क्या ज़रूरत है, किस उद्देश्य से वह बनी है? और, स्वयं ईश्वर भी!! उसकी भी मानव को आवश्यकता है—इसलिए वह ईश्वर है, इसलिए उसका अस्तित्व है! मगर क्या मानव इन सभी विश्व सत्ताओं के योग्य है? इतनी विराट सृष्टि के योग्य है? यही है ब्रह्माण्ड का रहस्य!

मगर, अब मेरा समय हो गया। बस कुछ ही वक़्त बचा है। जल्दी ही मैं इस 'स्टेशन' से बाहर खुले आकाश में कूद जाऊँगा। पृथ्वी से दूर। बहुत दूर। और मौन हो जाऊँगा।

मुझे माफ़ करना,

—फ़िलोफ़ेइ

फ़िलोफ़ेइ का पत्र और उसकी 'स्वीकारोक्ति' जो रूसी भाषा में थी, अन्तरिक्ष पादरी के पूर्व निवास यानी अन्तरिक्ष स्टेशन से शीघ्र ही भेज दी गई अन्तरिक्ष यात्रियों की एक 'टीम' द्वारा। इस अन्तरिक्ष यान के कमाण्डर के सन्देश में कहा गया था कि वहाँ के पी.सी. की 'मेमरी' में (व्यक्तिगत कम्प्यूटर की मेमरी में) फ़िलोफ़ेइ की वसीयत थी, जिसमें वह, इस यान में भविष्य में आनेवाले अन्तरिक्ष यात्री से प्रार्थना कर रहा था कि वह कम्प्यूटर में सुरक्षित उसकी 'स्वीकारोक्ति' को एन्थोनी यूंगेर को सौंप दे।

"एन्थोनी यूंगेर को पूरा अधिकार है कि वह इन 'नोट्स' का, जैसे उचित समझे, उपयोग करे।"

इस लेख का शीर्षक था—"आपबीती, तुम्हारे साथ और उसके बाद।"

और आगे लिखा था—

पहले कभी सोचा भी न था कि अन्तरिक्ष में कक्षा में स्थित स्टेशन पर जाऊँगा। यहाँ मुझे घसीट लाया विज्ञान। मगर, यह कोई नहीं जानता कि अन्तरिक्ष में मैं केवल वैज्ञानिक उद्देश्यों से नहीं गया, कोई नहीं जानता कि मैं भगोड़ा हूँ, जिसने स्वयं ही अपने आपको पृथ्वी की सीमा से दूर भगा दिया है, स्वयं ही बाद में अपने आपको अन्तरिक्ष पादरी घोषित कर दिया। शायद, मुझे अपना नाम रखना चाहिए था 'आप्रवासी', जैसा कि प्राचीन काल में कहलाते थे वे लोग, जो राजनैतिक या अन्य किसी कारणवश विदेश से मातृभूमि लौटने से इन्कार करते थे, सोवियत संघ में, और अपने इस कृत्य द्वारा समूचे विश्व के सामने खुल्लमखुल्ला उस महान् शक्ति के शासकों को चुनौती देते थे।

मगर नहीं, यहाँ हालात दूसरे थे। मैं न तो भगोड़ा हूँ, न ही आप्रवासी। यह स्वयं में सिमट जाने की प्रक्रिया थी जिसे समझाना मुश्किल है, 'स्व' की खोज, अन्तरिक्ष से होकर। आत्मा का अन्तरिक्ष से मिलन, यदि इतना कहने से बात समझ में आ जाये तो, हालाँकि यह बड़ी ऊँची बात प्रतीत होती है। मगर अन्तरिक्ष में आगमन मेरे समूचे जीवन की तार्किक परिणति था, मेरे विकास का सर्वोच्च एवं अन्तिम बिन्दु शायद इसके पीछे कोई मजबूरी हो, आरम्भ से सुनिश्चित कोई बात हो, भाग्य हो। विश्वास करना कठिन है कि ऐसा हो सकता है, मगर दुनिया में क्या-क्या नहीं होता...

और भाग्य मेरा, निर्धारित भी ऐसे नहीं हुआ, जैसे कि औरों का होता है। इसी कारण, पूरी ज़िन्दगी, मैं अपने जीवन के, अपने जन्म के रहस्य को अँधेरे में धकेलता रहा, उसे कभी छूने का साहस न किया।

मुझे एक कम्बल से लिपटी थैली में डालकर, अनाथालय के द्वार पर फेंक दिया गया था, जब मैं नन्हा-सा था। यहीं से मेरा कुलनाम क्रील्त्सोत पड़ा जो अनाथालय में मुझे दिया गया। मेरा नाम रखा गया आन्द्रेइ और पिता का नाम भी आन्द्रेइ दिया गया—इस तरह पूरा नाम बना आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच क्रील्त्सोव। यह दुःखद घटना, जैसा कि मुझे बताया गया, 1942 के अन्त में घटी, सर्दियों की एक बर्फ़ीली सुबह। मुझे उस सुबह की धुँधली-सी याद है, हालाँकि इस बात पर कोई भी, ज़ाहिर है, विश्वास नहीं करता। मगर करूँ क्या, मैं वही कहता हूँ, जो सच है। मुझे याद है, माँ के पैरों के नीचे बर्फ़ की चरमराहट। याद है, कैसे उस बर्फ़ीली सुबह वह जल्दी-जल्दी जा रही थी। याद है, कैसे थरथराते हुए उसने मुझे सीने से लगाया था, बार-बार भय से काँपते हुए, और मैंने महसूस किया कि उसका दिल कितनी ज़ोर से, कितनी पीड़ा से तड़प रहा था। चलते-चलते वह गहरी-गहरी साँस ले रही थी, फुसफुसाकर मुझसे कुछ कह रही थी, कुछ शब्द, लगभग रोते हुए, आँसुओं को बलपूर्वक पीते हुए। उस समय, जब वह अनाथालय के द्वार पर मुझे छोड़ने जा रही थी, मैंने कम्बल की झिरी से उसका चेहरा देखा—बड़ी पलकोंवाली आँखें, जिन पर बर्फ़ जम रही थी और ऊपर था धूसर आकाश, बर्फ़ के गिरते हुए कण। बर्फ़ बवण्डर की भाँति चक्कर काट रहा था। और, शायद, वह फुसफुसाकर मुझसे कह रही थी : "तुम रोओ, ज़ोर से रोना, जिससे जल्दी से तुम्हारी आवाज़ सुन लें।"

जब उसने मुझे द्वार पर रखा, मैं फ़ौरन ही समझ गया कि माज़रा क्या है। मुझे ठण्ड लग रही थी, मैं जम गया और मैं आस लगाये रहा कि वह वापस आकर मुझे अपनी बाँहों में उठा लेगी। मगर वह एक ओर बर्फ़ के टीले पर झाड़ियों के पीछे छिपी, खड़ी रही, नज़दीक नहीं आई। और तब मैं रो पड़ा, ज़ोर से रोया, और फिर खुला द्वार, कोई आया और मुझे हाथों में उठाकर ले गया...

और मैं बर्फ़ के टीले के बारे में क्यों कह रहा हूँ—क्योंकि यही एक चीज़ है, जिसके बारे में मुझे बाद में बताया गया। हाँ, माँ के पदचिह्न बर्फ़ीले टीलों पर देखे गये, और कहीं भी, कोई भी पैरों के निशान नहीं मिले...

अब मैं कल्पना कर सकता हूँ कि क्या बीत रही होगी उसके दिल पर, झाड़ियों के पीछे खड़े-खड़े अपने परित्यक्त बच्चे की पुकार पर उसके निकट न जाते हुए...और मुझे अक्सर दिखाई देता है एक ही सपना—कि मैं बर्फ़ के ढेरों पर चल रहा हूँ उसके पैरों के निशान ढूँढ़ता हुआ, और वे

निशान मुझे ले जाते हैं अँधेरे जंगल में, और मेरा दम घुटने लगता है, ठण्ड लगती है, बर्फ़ीले तूफ़ान का अहसास होता है। और मैं चीख़ता हूँ : "माँ! माँ!"—और मेरी आँख खुल जाती है...

मगर मेरी माँ को उस भयानक सुबह ऐसा खौफ़नाक काम करने के लिए किसने मजबूर किया? काश, मुझे पता चलता। कौन थे मेरे पिता? क्या उसे खुद को भी यह मालूम था? और ऐसे अनेकों प्रश्न मेरे लिए अनुत्तरित ही रहे, जीवन भर रहस्य ही बने रहे।

अनाथालय में इस विषय पर मुझसे कोई भी बात नहीं करता था। हाँ, और मैं खुद भी नहीं चाहता था, हालाँकि कभी-कभी किसी के साथ अपना दर्द बाँटने का मन करता था, मगर मेरे पास कहने के लिए कुछ था ही नहीं, सिवाय उस बर्फ़ीली सुबह मुझे बाँहों में ले जाती हुई माँ की याद के। और कोई विश्वास भी तो नहीं करता कि मुझे कुछ याद भी है।

मगर दुनिया में एक महिला थी, एकमात्र महिला, वालेरिया वालेन्तिनोव्ना, या जिसे उसके साथी वावा, कहा करते थे—जो बिना किसी सन्देह के मेरी बातें सुनने को उत्सुक रहा करती थी। हम, बच्चे भी उसे वावा कहते, वावा मौसी, और इस सम्बोधन में कुछ घरेलूपन, कुछ रिश्तेदारी का अहसास होता। और, बेशक, वावा मौसी हमारी सबसे प्रिय मौसी थी।

हमारा अनाथालय रूज़ा शहर की सीमा पर स्थित था, मालेव्का गाँव के निकट। यह मॉस्को से लगभग सौ कि.मी. दूर है। हमारे अनाथालय नम्बर 157 का निर्माण जर्मन फ़ौजों के मॉस्को के निकटवर्ती इलाकों से पीछे हटने के तुरन्त बाद किया गया, सीमा पर खेत रहे सिपाहियों के अनाथ बच्चों के लिए आवास के रूप में। उस समय वावा बग़ल में ही स्थित, रूज़ा के वनोद्यान में बने संगीतकारों के कला भवन में काम किया करती थी। दरअसल यह स्थान सोवियत संगीतकारों का जन्म स्थान था। यहाँ, सरकारी ख़र्चे पर अपनी-अपनी 'कॉटेज' में रहते हुए अलग-अलग प्रान्तों और ज़िलों के संगीतकार शताब्दी का संगीत रचा करते—जोशीले समूहगान, युगों-युगों के महानतम नेता और सभी जातियों एवं जनजातियों के पिता स्टालिन की प्रशंसा में...यहाँ कभी-कभी पार्टी के बड़े-बड़े कार्यकर्ता उन रचनाओं को पहली बार सुनने के लिए आया करते, जो इस व्यक्ति को समर्पित थीं, जो एक मोची के बेटे से बीसवीं शताब्दी का शासक बना। कभी-कभी यहाँ संस्थागत संगीत कार्यक्रम भी हुआ करते, हम अनाथालयवालों को भी जाने दिया जाता। वावा मौसी इस कला भवन की प्रबन्धक थी, साथ ही वह एक

अच्छी पिआनोवादक भी थी। उसके इसी गुण के कारण हमारे अनाथालय में वह संगीत-निर्देशिका नियुक्त की गई।

सन् इकतालीस के शिशिर से लेकर सन् बयालीस के बसन्त तक रूज़ा उसके आसपास के इलाकों में जर्मनों की टैंकों के दस्ते तैनात थे। ज़ाहिर है मेरा इन घटनाओं से, कोई सम्बन्ध नहीं था, मगर मेरे जन्म के समय और मुझ परित्यक्त के भाग्य के बीच कोई सम्बन्ध ज़रूर था। कम-से-कम इतना मैं बता सकता हूँ कि वावा मौसी इस पर अक्सर सोचा करती और मेरे साथ बातें करते समय, जब मैं किशोरावस्था में था, इस ओर इशारा किया करती। रूज़ा में लगभग छह महीनों तक जर्मनों के नियन्त्रण को उसने भोगा था और काफ़ी बातें उसे याद थीं। जब संगीत-कक्ष में मैं उसके साथ अकेला रह जाता, तो वह मुझे संगीत लिपि सिखाती, मगर हमारी बातचीत अक्सर संगीत के क्षेत्र से बाहर निकल जाती।

वावा, वावा! ओह, कितना चाहता था मैं, कि मेरी ऐसी ही माँ होती जो आँखों के सामने धीरे-धीरे वृद्धावस्था की ओर झुकती, मेरी आत्मा के निकट होती। और दिलचस्प बात यह थी कि मैंने हमेशा माँ की कमी को महसूस किया और वावा ने बच्चों की। कहना मुश्किल है कि इस महिला का भाग्य ऐसा क्यों बना, बच्चे होने में उसे क्या मुश्किल थी। अपने अकेलेपन के ही कारण तो वह अनाथ बच्चों से इतनी ममता नहीं करती थी?

"आन्द्रयूशा" वह मुझसे कहा करती "तुम इस बात से दुखी हो कि तुम परित्यक्त हो। मैं तुम्हारी मनोदशा समझ सकती हूँ। इस बारे में कैसे न सोचूँ। मगर इन ख़यालों से आराम तो नहीं मिलता। अपने आपको दूर से देखने की कोशिश करो। और तुम्हें एक अलग ही चीज़ नज़र आयेगी। अगर मैं ग़लत नहीं हूँ तो आन्द्रयूशा, ईश्वर ने तुम्हें कई महान् विशेषताएँ दी हैं। सच कहती हूँ। कभी मेरी बातों को याद करना। तुम्हारा सिर भूरा है, तुम बहुत योग्य बालक हो। संगीत को ही लो, तुम एक अच्छे संगीतकार बन सकते हो। मगर क्या बनोगे, यह तुम स्वयं ही निश्चय करना। संगीत अपने आनन्द के लिए सीखो, और लोगों की सेवा किसी अन्य प्रकार से कर सकते हो। स्कूली पढ़ाई ख़त्म करके आगे पढ़ने जाओगे और अपना जीवन खुद ही बनाओगे। तुम्हारी योग्यताओं के फलस्वरूप अपने सामने सभी द्वार खुले पाओगे। आन्द्रयूशा, कोई भी चीज़ तुम्हारी राह में नहीं आयेगी। चाहे तुम्हारी माँ के बारे में किसी को कुछ भी मालूम नहीं, और

तुम्हारे पिता कौन हैं—इस बारे में भी कोई कुछ नहीं जानता, और ऐसा कौन-सा कारण था जिसने माँ को अपने बेटे का त्याग करने पर और फ़िर ओट में चले जाने पर मजबूर किया, कहना कठिन है। मेरे ख़याल से तुम्हें उसे दोष नहीं देना चाहिए। नहीं, माँ से घृणा कभी नहीं करनी चाहिए, चाहे वह अपराधी ही क्यों न हो। गुस्सा मत करना, अगर मैं यह कहूँ कि तुम्हें उसका आभारी होना चाहिए। हाँ! तुम्हें यह बात अजीव लग रही है। मगर, ज़रा सोचो आन्द्रयूशा। ये बेहतरीन गुण, तुम्हें उसी से, तुम्हारे माता-पिता से ही मिले हैं। तुमने उन्हें विरासत के रूप में पाया है, माँ से पाया है, उसीसे और उसके माध्यम से। कोई नहीं जानता कि तुम्हारा यूँ त्याग करने में उसे कितनी पीड़ा हुई होगी। वह इस निर्णय तक पहुँची, इसका तात्पर्य यह है कि उसके सामने दूसरा कोई रास्ता न था। तुम्हारा जीवन बचाने का शायद यही एकमात्र उपाय था। क्यों, मैं यह नहीं कह सकती। नहीं जानती। और कोई भी नहीं जानता। मगर तुम्हारी माँ के सामने अन्य कोई उपाय न था और केवल इसी तरह वह तुम्हारा जीवन बचा सकती थी, इस बात पर मैं पूरी तरह विश्वास करती हूँ। हाँ, ख़तरा बहुत बड़ा था। मगर देखो, तुम जीवित हो और स्वस्थ हो। वरना, अनाथालय, हमारे देश में—मामूली बात नहीं है। अपने आपको देखकर ही अन्दाज़ा लगा सकते हो। और यह भी माँ की ही देन है, उसी के माध्यम से यह हुआ है कि तुम देखने-सुनने में ठीक-ठाक हो, और कद-काठी से भी अच्छे हो, कमज़ोर भी नहीं हो। प्रकृति ने यानी माँ ने तुम्हें काफ़ी कुछ दिया है। मैं तुम्हें सलाह देती हूँ कि इस बात को ध्यान में रखो, कि तुम्हारी माँ के सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं था। बड़े होगे, तो काफ़ी कुछ समझ जाओगे।"

जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वावा का इशारा किन्हीं ख़ास परिस्थितियों की ओर था, कुछ ऐसे कारण, जिन पर खुल्लमखुल्ला टिप्पणी नहीं की जा सकती थी। यह कहना कठिन था कि उसे स्वयं अपने इन सुझावों पर कितना विश्वास था। कुछ वर्षों बाद, जब मैं मॉस्को में, विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा था, तब वावा परलोक सिधार गई। और मेरे साथ ज़िन्दगी भर के लिए रह गई एक अनपेक्षित रूप से कही गई बात, प्रमाण रहित एक कथन, जो उसे सही या ग़लत साबित करता।

मैं तब नवीं कक्षा में पढ़ता था, जब हमारे पड़ोस की बस्ती माल्येव्का में एक बड़ी दुर्घटना हुई। एक महिला ने और उसकी सत्रह साल की बेटी

ने आत्महत्या कर ली। माँ ने खुद को फाँसी लगा ली और उसके बाद बेटी ने भी वही किया। वे अकेली ही रहती थीं। माँ संगीतज्ञों के कला भवन में सफ़ाई कर्मचारी थी। बेटी पढ़ रही थी। बड़ी हो रही थी, मगर सभी को मालूम था कि माँ ने बेटी को, जर्मन फ़ौजों के मॉस्को के निकट की बस्तियों से चले जाने के छह माह बाद जन्म दिया था, और यह कोई रहस्य की बात नहीं थी कि उसने बेटी को एक जर्मन सिपाही से सम्बन्धों के बाद जन्म दिया था, यानी कि आक्रमणकारी से, कब्ज़ा करनेवाले से, फ़ासिस्ट से, वगैरह; वगैरह। पड़ोसी उसे जीने नहीं देते थे, स्कूल में लड़की को ज्ञान नहीं मिलता था...उस दिन, इस शोकपूर्ण घटना से बुरी तरह विचलित होकर वावा, विचित्र बात कह बैठी, बिना यह ध्यान दिये कि क्या कह रही है, मगर मुझे उसके शब्द, पीड़ा पहुँचाते हुए, याद रहे "मैं स्वयं को सँभाल नहीं पा रही नतालिया," उसने एक अन्य परिचारिका से कहा। "कितनी भयंकर बात है! कैसी दर्दनाक मौत! माँ और बेटी अपने आपको ख़त्म कर लेती है...किस हद तक लोगों को लाया जा सकता है! और सोचो, किसलिए? हाँ, युद्ध तो युद्ध ही है, वह अपना हिसाब पूरा करता है। लड़ते हैं, मारते हैं। मगर कितना बुरा सलूक किया जाये, कितना अपमानित किया जाये, आँखों में उँगलियाँ गड़ाई जायें? जो होना था, हो गया, उस ग़रीब ने उस जर्मन से प्राप्त दुःख के बाद जन्म देकर दुर्भाग्य मोल लिया। सिर्फ़ दुःख ही पाती रही। मगर उससे ऐसा प्रतिशोध किसलिए, कितनी जंगली, कितनी क्रूर बात! और लड़की का क्या कसूर? आख़िर कोई अपने माँ और बाप का चुनाव तो नहीं कर सकता, हर व्यक्ति के माँ-बाप ईश्वर प्रदत्त होते हैं। उन्हें जीने क्यों नहीं दिया गया? इससे तो अच्छा होता कि माँ अपनी सन्तान को अनाथालय के द्वार पर छोड़ जाती, और खुद आँखों से ओझल हो जाती, इस तरह कि फिर उसकी कोई खोज-ख़बर न मिलती, जीते-जी मर जाती, जैसे जीवित क़ब्र में कूद गई हो, सिर्फ़ इसलिए कि उसका बच्चा वैसे ही जी सके, जैसे बाक़ी सब...

उस क्षण से मेरे दिमाग़ में यह ख़याल आया, जैसे निश्चित समय पर अण्डे से मुर्गी का बच्चा बाहर आता है : हो सकता है, मेरा बाप भी ऐसा ही रहा हो, कि माँ के सामने बच्चे को अनाथालय के द्वार पर छोड़ने के सिवाय कोई रास्ता न बचा हो, ताकि इसके बाद वह जल्द-से-जल्द वहाँ से भाग जाये, हमेशा के लिए, वापस न आने के लिए, कभी नहीं...

मैंने कल्पना करने की कोशिश की कि इस तरह की घटना क्यों और

किन परिस्थितियों में हुई होगी। हर तरह के ख़याल मन में आते रहे, अनेक हल ढूँढ़ता रहा। एक ख़ालीपन का, छिटक जाने का, फेंक दिये जाने का अहसास घर कर गया। शायद ऐसा मनुष्य तब महसूस करता है जब वह सागर में जहाज़ के तख्ते पर रह जाये...जहाज़ लुप्त हो जाता है, उसकी पुकार पर ध्यान न देते हुए, आसपास कोई भी नहीं है, लहरें, समुद्र। और किनारे भी नहीं हैं...मगर किसी ने उसे इस समुद्र में छोड़ दिया है? किसने?

जानने की इच्छा थी, इस सवाल का जवाब ख़ुद को देने की इच्छा थी, कभी समझ नहीं पाऊँगा कि मुझे यह जानना क्यों ज़रूरी था, क्या राज़ था इस इच्छा के पीछे। वैसे देखा जाये तो इससे मुझे क्या मिलता? कुछ भी नहीं। तीव्र इच्छा थी जानने की : अगर मेरा बाप सचमुच में जर्मन सिपाही था, तो बाद में उसका क्या हुआ? दिमाग़ में अचानक एक बचकाना-सा, बेवकूफ़ी भरा ख़याल आया—उसे मेरा जन्मदाता बनने की क्या ज़रूरत थी? किसने उससे कहा था ऐसा करने के लिए। किसने उसे पूरा यूरोप इसलिए पैदल घूमने की प्रार्थना की थी कि मुझे जन्म दे और गुमनामी के अँधेरे में धकेल दे? हाँ, अपना वंश इतिहास जानना चाहते हो, इच्छा है, मगर जान नहीं सकते और सोचते रहते हो। यह जानने का मन हुआ कि मुझे जन्म देनेवाली माँ आख़िर गई कहाँ? हाँ, मैं जानना चाहता था कि उस जर्मन सिपाही का, मेरे पिता का क्या हश्र हुआ, क्या वह जीवित रहा या मौत की गोद में सो गया; और मान लो, अचानक, वह ज़िन्दा हो, तन्दुरुस्त हो, जर्मनी में कहीं रहता हो और समझ ही नहीं रहा हो कि इस दुनिया में उसका एक बेटा है, जिसे सन् बयालीस में अनाथालय के द्वार पर फेंक दिया गया था...तो, मैं उसका बेटा हूँ। मगर उसे इससे कोई मतलब नहीं...और, मान लो अचानक किसी तरह पता चल जाये और वह वहाँ आ टपके? कहेगा, यह मैं हूँ, और मेरा बेटा कहाँ है? तब क्या? आगे क्या होगा? मगर ये सब ख़याली पुलाव क्यों? अगर यह सब सचमुच में ऐसा ही हुआ है, तो भी उसे, उस जर्मन को, यह भूली-बिसरी कहानी क्यों बताई जाये, उसे क्यों परेशान किया जाये?...

तो ऐसे वहशी, वाहियात ख़यालों ने मेरे भीतर जन्म लिया। मगर इस बारे में मैं चाहे कुछ भी क्यों न सोचता, लोगों के भाग्यों का कटाव या मिलन बिन्दु युद्ध ही प्रतीत होता। तब उन बच्चों के भाग्य की त्रासदी का ज्ञान हुआ जो युद्ध के कारण गर्भ में आये थे, जिनके माता-पिता जीवन की अचानक प्रकट हुई खाई में समा गये थे। उस खाई से ठण्ड की, अजनबीयत

की, बलात्कार की और घृणा की बू आती। और तब मेरे दिल में भावना जागी आन्तरिक विरोध की, उन सब के खिलाफ जिन्होंने सामान्य तरीके से जन्म लिया था, जैसा मेरे साथ नहीं हुआ था। उन्हें, सकुशल पृथ्वी पर अवतरित हुए लोगों को, मैं अपनी निर्विवाद सर्वोच्चता दिखाना चाहता था, मैं चाहने लगा कि समाज मुझमें एक असाधारण व्यक्तित्व को देखे, मुझमें एक 'जीनियस' को देखे, और मेरी असाधारण बुद्धिमत्ता का सिक्का मानने के लिए बाध्य हो जाये, हमेशा मैं ताक़त का जवाब ताक़त से देने के बारे में सोचता, बुराई का जवाब बुराई से देता...

इसी हवा के झोंके पर सवार मैं बड़ी दुनिया में आया। मुझे यह बात भूलती नहीं थी कि इस दुनिया में मैं अकेला हूँ, निपट अकेला। मेरे न माँ थी, न बाप, न भाई, न बहन, न मौसियाँ, न भतीजे, न चचेरे, न फुफेरे—कोई भी नहीं। जैसे मैं चाँद से टपका था। शायद, यही मेरे लिए ठीक था...हाँ, मैंने विज्ञान में सर्वोत्तम कैरियर बनाया, मैंने स्वयं को पूरी तरह विज्ञान को समर्पित कर दिया, जिसके कारण मैं कुछ मौलिक—मैं शरमाऊँगा नहीं—आविष्कार अपने क्षेत्र में कर सका। हाँ, ऐसा ही हुआ! मैंने विज्ञान की सेवा की, और विज्ञान ने मेरी, मेरी प्रसिद्धि की, मेरी आकांक्षाओं की, मेरे पद की, मेरे रसूख़ की...

इस सबकी परिणति हुई मेरी अन्तरिक्ष यात्रा में, कक्षा में स्थित स्टेशन पर, जहाँ मैंने खुद को अन्तरिक्ष पादरी घोषित कर दिया। यह, चाहे कितना ही विरोधाभास क्यों न हो, मेरे जीवन का सर्वोच्च ध्येय था। धरती पर मेरे लिए कोई स्थान नहीं है, यह मैं समझ गया था...

और सिर्फ़ यहीं, अन्तरिक्ष में ही, मैं समझ पाया कि भाग्य ने मुझे एक मौक़ा दिया है आपबीती लिखने का बिना कुछ छुपाये, जिसके कारण मैं अन्तरिक्ष में भाग सका। तब मैंने अपने आपसे कहा, तुम्हें स्वीकारोक्ति देनी होगी, उस सबकी जो हुआ है, औरों के सामने और स्वयं के सामने अपने गुनाह क़बूल करने होंगे। यही मेरी इस 'स्वीकारोक्ति' का सार है—अपने आप पर मैंने ज़रा भी दया नहीं दिखाई। सब कुछ कहा है—सब कुछ, आख़िर तक।

आरम्भ हुआ इस इतिहास का, शायद एक बड़ी छोटी-सी चीज़ से—चिकित्सा संस्थान में हुए एक सेमिनार से, जहाँ मेरा ध्यान आकर्षित किया गर्भधारण की विचित्रता और मानव के दुनिया में प्रकट होने के रहस्य के अध्ययन ने, शायद मेरे अवचेतन में छिपी परित्यक्तता की भावना के

वश, हालाँकि दैनन्दिन जीवन में मैं इस दुःख भरे विषय पर कभी किसी के साथ बहस नहीं करता था, फिर भी मैं बताना चाहूँगा कि मेरे निकट कभी इस विषय पर वार्तालाप हुआ भी नहीं।

सोचता हूँ कि मेरे सहकर्मियों के लिए मेरा वैज्ञानिक मार्गदर्शक, कठोर 'बॉस', निडर अफ़सर होना अधिक महत्त्व रखता था। मैं एक ऐसा अफ़सर था जिसे 'ऊपर' से निरन्तर समर्थन प्राप्त होता रहता था। और छिपाऊँ क्यों, मैं मानव जन्म के रहस्य से अनभिज्ञ भी नहीं था, प्रशंसा और सत्ता के लोभ से भी अनजान नहीं था। अपनी और औरों की दृष्टि में मैं हमेशा अपने अधिकार को, अपनी सत्ता को मजबूत करने की कोशिश में रहता। और जब मेरी पीठ पीछे फुसफुसाहट होती, 'हमारा गेनडिक'—मेरा मतलब है... इसका तात्पर्य 'हमारा जनरल डाइरेक्टर' नहीं होता था, बल्कि उनका इशारा था—'हमारा जीनियस डिक्टेटर'। मुझे तो इससे ज़रा भी बुरा नहीं लगता। यह समझाना मुश्किल है, मगर सत्ता की कभी न मिटनेवाली भूख—मानवता के अगम्य रहस्यों में से एक है, और मैं भी लालायित था शासन करने के लिए, अनुशासन की माँग करता था, अपनी 'गुप्त' प्रयोगशाला के सहकर्मियों का बिना शर्त समर्पण और वफ़ादारी चाहता था, और फिर संस्था का डाइरेक्टर बनने के बाद; लोगों का चयन करते समय मेरी नज़र में सिर्फ़ दो ही गुण अति वांछित प्रतीत होते थे—योग्यता एवं अनुशासन।

और इसी की बदौलत उस समय जब एक प्रयोगकर्त्ता के रूप में मैं आकर्षण का केन्द्र बन गया, जीव विज्ञान में एक नई, अप्रत्याशित धारा का धृष्ट जनक बन गया, मैं न केवल एक महान् वैज्ञानिक के रूप में प्रसिद्ध था, बल्कि मैंने एक अच्छे निदेशक की, संयोजक की ख्याति भी प्राप्त कर ली थी। हाँ, मेरा व्यावसायिक जीवन बड़ा सफल था, यह तो मैं बाद में समझ पाया कि ऐसा कुछ स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के तहत, बिना 'ऊपर' की मेहरबानी के नहीं हो सकता था, मगर यह एक अलग, विशेष विषय है; मैं तो, सफलता के उन्माद में वैज्ञानिक क्षेत्र के ऊपर उड़ान भर रहा था, एक मधुमक्खी के समान, जो शक्ति संचय करने के उपरान्त उन्मादपूर्ण उड़ान पर निकली हो; मैं उड़ रहा था एक अन्वेषण से दूसरे अन्वेषण पर, अपने आपको उन विचारों के कोलाहल से बहरा करते, जिनके बारे में पहले कभी किसी ने सोचा तक न था, अपने इस ज्ञान से इस चिरन्तनता के तन्त्र के रचनाकार को—स्वयं ईश्वर को—भी नीचा दिखाने चला था। क्योंकि मैंने स्वयं ही निश्चय कर लिया था कि जीवन का व्यापार वैज्ञानिक सीमा के

भीतर होना चाहिए, ईश्वर की इस दुनिया में किसे जन्म लेना है, कैसे जन्म लेना है, किन माता-पिता से, इस बात का विचार किये बगैर कि वे ऐसा चाहते भी हैं या नहीं, यदि उन्हें मालूम होता कि मैं उनके बीजों से किस चीज़ की रचना कर सकता हूँ...।

ताज़्जुब नहीं, यदि मैं अब अपने आप से कहूँ, यहीं से आरम्भ हुआ मेरे भीतर घमण्ड और शेख़ी का! मैं मानव की गर्भधारण एवं जन्म तक पर नियन्त्रण पाने की योग्यता से अन्धा, बहरा हो गया था।

कृत्रिम रूप से गर्भधारण के फलस्वरूप, अज्ञात रूप से मानव को जन्म देने की सम्भावना का विचार सर्वप्रथम मेरे दिमाग़ में घरेलू एवं कृषि योग्य पशुओं में कृत्रिम गर्भधान की प्रक्रिया को देखकर उत्पन्न हुआ। वहाँ अज़ायबघरों में यह समस्या हमेशा विद्यमान रही है। मनुष्य ने अपने स्वार्थों के अनुरूप पशुओं की नस्ल में परिवर्तन किये हैं।

कृत्रिम रूप से मानव को जन्म देने सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करते हुए, न केवल विज्ञान के हित में, अपितु इस उद्देश्य से कि मानव जन्म की प्रक्रिया पर नियन्त्रण किया जा सके, प्रयोगात्मक जीवशास्त्र ने कितनी प्रगति की है!

हाँ, अब मैं समझने की कोशिश कर रहा हूँ कि ऐसा कैसे सम्भव हो सका कि मैं विज्ञान की काली खोह से स्वयं को बहरा कर देनेवाले शोर में उड़ता रहा। विज्ञान के लिए तो स्वयं के सार के अलावा और किसी चीज़ का कोई मतलब नहीं, मगर तब मैं न सोच सका, सन्देह भी नहीं हुआ मुझे, कि मैं मानव-जाति के लिए हानिकारक इन प्रयोगों के लिए स्वयं को पूर्णरूप से समर्पित कर रहा हूँ, जो नैतिकता के सभी बन्धन तोड़ कर बहुत आगे निकल चुके हैं। तब मेरे लिए, नौजवान वैज्ञानिक के लिए, बस एक ही पैमाना था—वैज्ञानिक सर्वोच्चता। और विज्ञान की विजय की ख़ातिर मैं वहाँ घुस गया, जहाँ मुझसे पूर्व किसी ने भी क़दम तक रखने की हिम्मत तक नहीं की थी, उस क्षेत्र में जो सब धर्मों के लिए निषिद्ध है; मैंने चुनौतीपूर्ण अन्दाज़ में उस दरवाज़े पर पैर से ठोकर लगाई जिसकी दहलीज़ पर खड़े होकर ईश्वर के सम्मुख सिर झुकाना चाहिए।

कहाँ से कहाँ पहुँच गया था मैं! और जब एक बार मुझे संस्था के पार्टी समिति कार्यालय में बुलाकर बड़ी इज़्ज़त से, सहृदयता से, कुछ-कुछ ख़ुशामदी अन्दाज़ में, माफ़ी माँगते हुए सूचित किया गया कि मेरे आविष्कार अब से गुप्त समझे जाते हैं, और मेरे बहुमूल्य आविष्कारों से सम्बन्धित कोई

भी बात खुले आम नहीं छपनी चाहिए, विशेषकर विदेशों में, तव भी मैंने इसे कोई महत्त्व नहीं दिया। यह मेरी आत्मा का पहला परीक्षण था। भविष्य में ख़रीदारों ने मेरा मन चाहे आज्ञाकारी सेवक के रूप में परिवर्तित कर दिया था मगर मेरे लिए तो कोई और बात ही महत्त्वपूर्ण थी—"कार्य करो, विज्ञान के प्रगति पथ पर अग्रसर रहो।"

मानना पड़ेगा, मैं 'मेफ़िस्तोफेल' था जीव विज्ञान के क्षेत्र में। ठण्डा दिमाग़ विश्लेषणकारी पैठ—यही तो गुण हैं वैज्ञानिक के, जिन्हें मैं सबसे अच्छा समझता था। मैंने अपनी भूमिका का औचित्य नहीं ढूँढ़ा और न ही कोशिश की यह समझने की, कि मुझे इस निषिद्ध मार्ग पर इतनी ताक़त से, इतने जोश से चलने के लिए किसने प्रेरणा दी। कौन जान सकता था कि एक परित्यक्त शिशु शताब्दी का सर्वाधिक बुद्धिमान, सर्वाधिक योग्य व्यक्ति बनना चाहता था? वैज्ञानिक समस्याओं में पूरी तरह खोया हुआ मैं, अनजाने ही भलाई और बुराई से परे जा चुका था, लोगों की, अपने ही नियमों के निर्माता और गुलामों की, निरन्तर छटपटाहट को समझने की मैंने कभी कोशिश ही नहीं की। मैं जीवन का अर्थ ढूँढ़ने की कोशिश में सदियों से कष्ट उठाते उन प्राणियों के साथ बड़ी बेतकल्लुफ़ी से, बेरहमी से पेश आया। मुझे उनकी कोशिशों से कुछ लेना-देना नहीं था। और, मेरे ही देश के, मेरे समकालीन, महान् दार्शनिक लोसेव के कथन को, जो उसने मानवता के इतिहास में विज्ञान की भूमिका पर विचार करते हुए कहा था, मैंने अपने लिए ख़ास तौर से सोचा गया विचार समझकर ठुकरा दिया, मैं स्वयं से ही दूर हटता गया। बात निकली ही है तो बता दूँ कि लोसेव ने समाज और संस्कृति की अविरत प्रगति के बारे में नवयूरोपीय विचारधारा की नकारात्मकता के बारे में लिखा है; "यूरोपीय प्रणाली के अनुसार, किसी एक कालखण्ड का स्वयं में कोई महत्त्व नहीं है। वह स्वयं में परिपूर्ण नहीं है। वह आनेवाले कालखण्ड के लिए भूमि तैयार करता है। उसमें खाद डालता है और हर आनेवाले कालखण्ड का भी स्वयं में कोई महत्त्व नहीं है, और वह भी खाद और मिट्टी है किसी भावी कालखण्ड के लिए, सभी सम्भावित कालखण्डों के लिए; लक्ष्य तो निरन्तर और अवश्यम्भावी रूप से दूर, और दूर भागता जाता है, अनन्त की गोद में। इसी कारण सभी नई विचारधाराओं के प्रवर्तकों को भी सही ठहराया जाता है। मैंने लोसेव के इस गहन विचार का अर्थ अपने उद्देश्य के अनुरूप निकाला; उद्देश्य था हाथों की (कार्य करने की) स्वतन्त्रता सुनिश्चित करना, अपना उत्तरदायित्व आगामी पीढ़ियों पर

धकेलना। मैंने स्वयं को विश्वास दिलाया कि मेरा 'मिशन'—'विज्ञान की प्रगति' है, आविष्कार करना है, और उनके परिणामों का क्या किया जाये, यह दूसरे सोचेंगे। मेरा काम है—'इनक्यूवेटर' में जीवन का निर्माण करना, और कृत्रिम रूप से निर्मित इन लोगों का क्या होगा, इससे मुझे कोई मतलब नहीं।"

आधुनिक जीवन में यह वाक्य काफ़ी लोकप्रिय है : "ये मेरी नहीं आपकी समस्याएँ हैं।"

मगर मैं तो तब भी इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया करता था, कृत्रिम रूप से धारण गर्भों के भविष्य के बारे में अपने विरोधियों को जवाब देता। उन्हें खुद ही इस बारे में परेशान होने देता, उनकी व्यक्तिगत समस्याएँ उनके लिए छोड़ देना ही उचित है। सामाजिक दृष्टि से, ये 'एक्स-भ्रूण', उन्हीं परिस्थितियों में पैदा किये गये हैं, जिनमें अन्य बालकों ने जन्म लिया है। अतः इन्हें भी अपने बारे में स्वयं ही सोचना होगा, जैसे अन्य लोग सोचेंगे। विज्ञान से, मैं सोचता था, इस सबका कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। कृत्रिम प्रजनन के तन्त्र की सीमाओं से बाहर की कोई भी चीज़ मुझे परेशान नहीं करती थी।

हाँ, मैं ऐसा ही था। सम्भव है, कि मैं अपने वैज्ञानिक क्षेत्र में सचमुच महान् था, विश्वव्यापी महत्त्व के आविष्कार करने में सक्षम था और विज्ञान की भावी प्रगति के बारे में भविष्यवाणी करने के क़ाबिल था। मगर मेरे सभी कार्यों का संचालन वही परित्यक्त बालक किया करता था। मैंने कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया, मगर वही परित्यक्त बच्चा, जो कभी अनाथालय के द्वार पर फेंक दिया गया था, लगातार विश्व को दिखाने का प्रयत्न करता कि वह असम्भव को सम्भव बना सकता है—वह पूर्व निर्धारित गुणों के धारक लोगों के जन्म लेने की क्रिया पर नियन्त्रण कर सकता है। मैंने इन भाग्यों का निर्माण अपनी प्रयोगशाला में किया, मैंने वह किया जिसे कोई दूसरा नहीं कर सकता था, न ही करने की हिम्मत कर सकता था। मैंने अपने विचार और अपने कार्यचित्रों के आधार पर कृत्रिम रूप से निर्मित लोगों का निर्माण किया। मैं उन्माद की स्थिति में था, लोगों के ऊपर अपनी अदृश्य सत्ता के नशे में चूर था।

मगर हर बार मैं स्वयं को सही साबित करता रहा, इस वजह से कि भौगोलिक-राजनैतिक स्तर पर पूरी दुनिया बीसवीं सदी के तथाकथित दुनिया के अन्त की कल्पना से त्रस्त हो रही थी। भयानक आणविक अस्त्रों के

अन्तहीन आविष्कारों के सम्मुख, किसी ने भी विज्ञान के कुलाँचें भरते अश्व को रोकने की कोशिश नहीं की, उस क्षेत्र में कार्यरत एक भी वैज्ञानिक ने इस अश्व को पीछे मोड़ने की कोशिश नहीं की। अपना गला दबाने की कोशिश नहीं की जिससे कि विश्व को विनाश की ओर ले जानेवाले साधनों के निर्माण से मुँह मोड़ सके, जिनका नग्न-नृत्य ब्रह्माण्ड के जीवन के लिए ख़तरा बन सकता था। विज्ञान ठण्डे दिमाग़ से, बिना किसी भय के, आविष्कारों की मौलिकता एवं क्रियान्वयन की आपराधिकता के बीच सन्तुलन बनाये रखता है, सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आविष्कार करनेवाले अज्ञात वैज्ञानिकों को विश्वव्यापी प्रसिद्धि से अलंकृत करता है। मगर समय बीतने पर, एटम बम के आविष्कारक जीवन के अन्त को निकट पाकर अधिकाधिक दुःख पाते रहे—प्रसिद्धि से दूर, गुमनाम रहने की इच्छा करने लगे। और उनका विज्ञान आगे बढ़ता रहा। क्योंकि वैज्ञानिकों के लिए अणु के गर्भ में प्रवेश करना महत्त्वपूर्ण था, बिना किसी बात की परवाह किये, बिना किसी ओर देखे, शीघ्र ही उस शैतानी ताक़त पर क़ाबू पाना था, जो मानव के नन्हे-से भौतिक अस्तित्व के बावजूद उन्हें पूरी दुनिया में सर्वशक्तिमान होने का अहसास कराती थी। और जहाँ तक मृत्यु के ख़तरे का सवाल है, जो इन वैज्ञानिक विचारों के पागलपन से उत्पन्न होते हैं, जहाँ तक आणविक आविष्कारों के अवश्यम्भावी परिणामों का प्रश्न है, तो ये परेशानियाँ भावी पीढ़ियों के हिस्से में आई हैं। उन्हें अपने पूर्वजों के उन्मादपूर्ण आविष्कारों के फलस्वरूप दुःख उठाना होगा, उन्हें सोचना होगा और निर्णय लेना होगा कि क्या करना चाहिए? इस पूरे तामझाम का अपनी आवश्यकताओं और हित के लिए कैसे उपयोग किया जाये। वैसे फ़िलहाल सब कुछ ठीक-ठाक हो गया है...इसी बात का मुझे भी भरोसा था...

हाँ, मुझे पूरा विश्वास था : वैज्ञानिक अपने आविष्कारों के परिणामों के लिए वैसे ही जवाबदेह नहीं हैं, जैसे प्रकृति मानव के सम्मुख किसी भी तरह जवाबदेह नहीं होती। और कोई भी चीज़ मुझे विभ्रम में नहीं डाल सकती थी, मेरी दृढ़ता और अपने उद्देश्य के प्रति विश्वास को कोई भी डिगा नहीं सकता था।

हाँ मैं, उस आईने के पीछे की, दुनिया की नज़रों से बचाकर रखी गई विज्ञान की दुनिया का उगता हुआ तारा था। उसके बाद भी, जब मेरी पत्नी येव्गेनिया मुझे एक झटके में छोड़कर चली गई और ऐसे भागी जैसे प्लेग से दूर भाग रही हो, जिलों के थियेटरों में काम ढूँढ़ती रही, जहाँ उसे

दयनीय बूढ़ियों की ही भूमिकाएँ मिलीं। वह इतनी जल्दी बूढ़ी हो गई अचानक, उस सबके बाद जो उसने मेरे साथ रह कर जाना और भोगा, उसके भाग जाने के बाद भी मैं हताश नहीं हुआ, काँपा नहीं, अपने चारों ओर नहीं देखा, उसे पकड़ने नहीं दौड़ा, और सबसे महत्त्वपूर्ण यह कि उस सबको आलोचनात्मक दृष्टि से नहीं परखा, जो उसे इतना भयानक प्रतीत हुआ था। येव्गेनिया मेरे आविष्कारों के पीछे निहित कारण नहीं समझ पाई। यह जान नहीं पाई कि मेरे आविष्कारों का सार क्या है। वह वैज्ञानिक स्वार्थों से दूर थी, एक-दूसरी ही दुनिया में रहती थी—कला की दुनिया में, मगर वह मेरे निकट थी, और मैंने कई वर्ष उसके साथ गुज़ारे, उसने बड़ी समझदारी और सहनशीलता दिखाई, जब देखा कि मुझे सिर्फ़ अपने काम में दिलचस्पी है, और तब भी, जब मैं स्वयं लगातार उसमें गर्भपात कराता रहा, जिसके बारे में बाद में मुझे बहुत दुःख हुआ, जब मुझे समझ आया कि अपने पारिवारिक जीवन की टहनी ही मैंने काट दी है, जिसके कारण एक सामान्य स्त्री की अवश्यम्भावी घृणा ही मुझे मिली। मगर इन सबके बावजूद मैं रुका नहीं। मैंने यह सोचा नहीं न स्वयं को जवाब देने की कोशिश की—विज्ञान के प्रति पागलपन की हद तक आकर्षण की वजह से दूसरों की भावनाओं और विचारों के प्रति, और सबसे बढ़कर मुझे प्यार करनेवाली पत्नी की भावनाओं के प्रति उदासीन रहा। क्या यह उचित था? जब येव्गेनिया को मालूम हुआ कि मैं क्या करता हूँ किस निष्कर्ष तक वर्षों की मेहनत के बाद पहुँचा हूँ और इस सबके पीछे उद्देश्य क्या है, तो वह मेरे सामने घुटनों के बल गिरकर रोई। मुझे मनाती रही यब सब छोड़ने के लिए, मास्को से दूर, कहीं और जाकर, सुदूर पूर्व में बसने के लिए जहाँ वैज्ञानिक केन्द्रों में काम की कोई कमी नहीं है। जहाँ प्रोफ़ेसरों का बड़ा सम्मान होता है, उतना ही जितना मास्को में। पैसे भी अच्छे मिलते हैं, वहीं थियेटर में उसे भी अपनी पसन्द का काम मिल जाता, मिन्नतें करती रही एक नया जीवन शुरू करने के लिए, बच्चे पैदा करने के लिए, मगर मुझ पर उसकी विनतियों का कोई असर न हुआ। मुझ पर उसके बचकाने भय का कोई परिणाम न हुआ, जो उसके दिल में मेरे प्रयोगों के कारण समा गया था, उसकी भावुकता ने मुझे ज़रा भी विचलित नहीं किया। मैं अपने प्रिय काम को छोड़ने पर राज़ी नहीं हुआ। और बाद में चाहे मुझे कितना ही अफ़सोस क्यों न हुआ, कितना ही पश्चात्ताप क्यों न किया मैंने...बहुत देर हो चुकी थी...जीवन एक धुरी से दूसरी धुरी पर चला जाता है...।

मेरी प्रसिद्धि की भूख की कोई सीमा नहीं थी। येव्गेनिया चली तो गई, मगर मुझे लगा—ऐसे उदास होने से क्या फ़ायदा, दूसरी मिल जायेगी, काम से थोड़ी फ़ुरसत मिले तो सिर ऊपर उठाकर देखूँगा—चारों ओर कितनी ही औरतें है और, बेशक, अपनी पसन्द की कोई औरत चुन सकूँगा और, सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह होगी, कि नैतिकता सम्बन्धी कोई ग्रन्थियाँ न हों उसमें, और जो काम मैं कर रहा हूँ, उसके औचित्य के बारे में उसके मन में कोई अनावश्यक सन्देह न उठे। इस औरत को मैं लाकर रखूँगा। 'फ़्यूडल' बुलवारस्थित अपने शानदार बँगले में, जो कुछ गिने-चुने लोगों को ही मिलता है, आस पड़ोस में भी अणु वैज्ञानिकों के वैसे ही बँगले होंगे। मगर यह सब न हो सका, हालाँकि पूरी तरह सम्भव एवं प्राप्य प्रतीत होता था। और मुझे इस सबके लिए फ़ुरसत भी नहीं थी, क्योंकि कुछ ऐसी घटनाएँ हुईं, जिन्होंने मेरी आगामी ज़िन्दगी के रुख़ को सुनिश्चित कर दिया मुझे दूर अन्तरिक्ष में पृथ्वी की कक्षा में स्थित स्टेशन पर जाने और स्वयं को अन्तरिक्ष पादरी घोषित करने के लिए प्रेरित किया।

उस समय तक बौद्धिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में मैं काफ़ी प्रसिद्ध हो चुका था और उन राजनैतिक शाखाओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर चुका था जो वैज्ञानिक अनुसन्धानों पर कड़ी नज़र रखते थे। सच कहें तो इस दृष्टि से सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति अपेक्षित स्तर पर ही थी। मैं अपने अनुभवों से एक दो नहीं, अनेकों बार यह देख चुका था। केन्द्रीय समिति की सिफ़ारिशों के कारण ही मेरे संस्थान को, ख़ासकर मेरी सुप्रसिद्ध प्रयोगशाला को बिना किसी झंझट के, बड़ी आसानी से मनचाही आर्थिक एवं अन्य प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हो जाती थीं। ओह, मनुष्य कितनी जल्दी आदी हो जाता है सत्तासीन व्यक्तियों की मेहरबानियों का, दरबारी सम्मान का, दूसरों पर काम टालने की वृत्ति का। आज मैं स्वयं से पूछता हूँ कि क्या दुनिया में यह सब हमेशा से ऐसा ही था और क्या हमेशा ऐसा ही रहेगा? उदाहरणस्वरूप, कहीं दूर जाने की ज़रूरत न थी। विज्ञान अकादेमी का प्रमुख, जो एक महान् अणुवैज्ञानिक था, टेलीफ़ोन पर और व्यक्तिगत बातचीत में यह याद दिलाना नहीं भूलता था : "आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, भगवान् के लिए किसी भी सीमा में अपने को न बाँधो, किसी भी चीज़ की कमी महसूस न करो। विश्वास के साथ काम करो, देश तुम्हारे कार्यक्रम को हर सुविधा देने के लिए तैयार है। हर चीज़, जिसकी ज़रूरत है,—आयातित यन्त्र-उपकरण, रसायन, सहयोगियों के लिए आवास, वाहन,

संक्षेप में, वह सब जिसकी आवश्यकता है माँगिये, सकुचाइये मत। आप ऐतिहासिक दृष्टि से महान् कार्य कर रहे हैं..."

आधे विश्व में फैले इस विशाल देश द्वारा कहे गये इन प्रशंसात्मक उद्गारों से, दिल खोलकर दी गई सहायता से, मुझे अच्छा नहीं लगता था; मुझे इस बात से बुरा लगता था कि विशुद्ध वैज्ञानिक आविष्कारों की ओर वे कार्यकर्ता अधिकाधिक आकर्षित हो रहे हैं, जो मेरे चारों ओर यूँ चक्कर लगाते थे, जैसे बाज़ अपने शिकार पर झपटनेवाला हो, मगर मैं ख़ामोश रहा, नहीं, मैं अहसानों से दबकर उनके सामने रेंग नहीं रहा था, मगर मैंने विरोध भी नहीं किया, यह कहने की कोशिश भी नहीं कि मुझे किसी सनसनीख़ेज, सत्ताधारियों को इतने आकर्षक प्रतीत हो रहे कार्यक्रम पर अमल करनेवाले हुक्म के गुलाम जैसा न देखा जाये। हाँ, समय रहते स्वयं को रोक लेना चाहिए था, और जैसा कि बाद में स्पष्ट हुआ, अपनी निर्विवाद वफ़ादारी का विश्वास नहीं दिलाना चाहिए था...मगर मैं या तो कमज़ोर था, या सिद्धान्तहीन; या पद-प्रतिष्ठा और धन के विरुद्ध नहीं था, सत्ताधारियों के निकट बने रहना चाहता था और इसीलिए यह स्वाभाविक ही था कि मुझे ही उस वैज्ञानिक कार्यक्रम का प्रमुख बनाने का प्रस्ताव रखा गया, जो दुहरे अर्थवाला कार्यक्रम था। शीर्षक था, 'भ्रूण अवस्था में लिंग नियन्त्रण', मगर उसका मूल उद्देश्य था ऐसी प्रक्रिया ढूँढ़ निकालना जिससे अज्ञात रूप से व्यक्तियों को जन्म दिया जा सके।

विश्व में अब तक ऐसी बात नहीं हुई थी। और मैं उसमें ऐसे लिप्त हो गया जैसे प्रकृति की गति को छेदकर भागता हुआ कोई डाकू। 'क्ष-पीढ़ी' यानी अज्ञात रूप से पैदा किये गये बच्चों—अज्ञात माता से, अज्ञात माता-पिता से जन्म लेनेवाले शिशुओं का निर्माण ही मेरी अतिरहस्यमय प्रयोगशाला का मुख्य कार्य था।

'क्ष-पीढ़ी' मेरा सोचा हुआ नाम नहीं था। उसे पार्टी की विज्ञान सम्बन्धी शाखा के, संक्षिप्त शब्द बनाने में माहिर, कार्यकर्ताओं ने गढ़ा था—यह शीघ्र ही संकेत शब्द (कोड वर्ड) बन गया, क्रान्तिकारी शब्द, क्योंकि प्रयोगशाला में 'क्ष-पीढ़ी' के निर्माण का मुख्य लक्ष्य था एक नये प्रकार के मानव की रचना करना, जो विचारधारा का भावी बहादुर योद्धा हो। 'क्ष-पीढ़ी' को इक्कीसवीं शताब्दी का समर्पित, निःस्पृह क्रान्तिकारी बनना था। स्पष्ट रूप से, यही लक्ष्य था। पार्टी के शीर्षस्थ नेताओं को इसमें विश्वभर में मृतप्राय हो चली कम्युनिस्ट विचारधारा को पुनर्जीवित करने का

नया साधन दिखाई दे रहा था। और मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरे कान भी शीघ्र ही इस नये शब्द 'क्ष-पीढ़ी' के आदी हो गये और मेरी आत्मा को भी उस काम की आदत पड़ गई जिसमें मैं मशगूल था। मैंने स्वयं को किसी तरह विश्वास दिला दिया था कि मेरे प्रयोग—केवल विज्ञान हैं, और इनका परिणाम क्या होगा—यह मेरी समस्या नहीं है।

रुको! जल्दी न करो! यहाँ जो हम और-और का प्रयोग कर रहे हैं उस पर पूर्णविराम लगाने होंगे। हाँ, 'क्ष-पीढ़ी' .शब्द का प्रस्ताव इस तथ्य के तहत हुआ कि नई प्रकार की पीढ़ी के निर्माण का कार्यक्रम काफ़ी लम्बा चलेगा, काफ़ी दूर तक जायेगा। मगर, शुरू में कार्यक्रम के योजनाबद्ध लक्ष्यों के आरम्भिक निर्धारण के समय मैंने कोई आपत्ति नहीं की, इन्कार नहीं किया, असहमति जताने का प्रयत्न नहीं किया। मुझे इससे भी कोई संकोच नहीं हुआ कि मुझे नया डार्विन कहा जा रहा था और सभ्यता के इतिहास में अब तक अज्ञात, ऐसा यह कार्यक्रम मेरी सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक विश्लेषणों के फलस्वरूप, मेरी ही भविष्यवाणियों के परिणामस्वरूप सम्भव हो सका है।

और यह भी पूर्णतया स्वाभाविक ही था कि 'क्ष-पीढ़ी' के निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम के वैज्ञानिक निदेशक होने के प्रस्ताव पर मैं फ़ौरन सहमत नहीं हुआ, मैंने वादा किया कि इस बारे में सोचूँगा, मगर—इन्कार नहीं किया! मगर क्या यह उचित था, क्या इन्कार करना सम्भव था? मैदान में एक ही व्यक्ति तो योद्धा नहीं कहलाता, न! उस समय तक मैं, कहना पड़ेगा, उस शासकीय अनुबन्ध में इस हद तक पहुँच चुका था जहाँ सत्ताधारियों के किसी भी प्रस्ताव को स्पष्ट रूप से नकारने का प्रश्न ही नहीं उठता।

इस बात की पुष्टि भी हो गई। उसी दिन, जब मैंने विज्ञान अकादेमी के अध्यक्ष के प्रस्ताव पर सोचने का वादा किया था, मुझे पुराने चौक में आमन्त्रित किया गया, पोलित ब्यूरो के सदस्य और सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव वादिम पेत्रोविच कोन्युखानोव के पास जो विचारधारात्मक मामलों एवं अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन से सम्बद्ध थे।

पुराने चौक पर मैं अकसर जाया करता था। इतना अधिक भी नहीं, मगर सालभर में कई बार अनेक कारणों से यहाँ जाता था। और इस समय मैं अपनी, निदेशकवाली, काली 'वोल्गा' में जा रहा था, अपने दोनों ओर भागती कारों को, मास्को की सड़कों पर पैदल चलनेवालों की भीड़ को देखते हुए। अगर मुझे मालूम होता कि मैं कहाँ और क्यों जा रहा हूँ, तो इसमें

कोई भी वहशियत नहीं प्रतीत होती यदि वे मानव शृंखला बनाकर मेरा रास्ता रोक देते, मेरी कार के परखचे उड़ा देते और पत्थरों से मुझे मारते, भगवान् भी उन्हें इस उन्माद के लिए क्षमा कर देता।

हमेशा की तरह दोपहर के बाद का मॉस्को लोगों से खचाखच भरा था। विशेषकर शहर के केन्द्र में। पता नहीं उन्हें इसका गुमान था या नहीं, मगर इस समय उनके लिए जीवन की हर समस्या प्रकट हो रही थी कुछ ढूँढ़ने में, कुछ पाने की, कुछ हासिल करने की असंख्य विचार शृंखलाओं में, और इस सबसे जुड़े कार्यकलापों की कभी न समाप्त होनेवाली कड़ी में। मगर उनमें से किसी को भी, एक भी क्षण के लिए यह ख़याल नहीं आ सकता था कि दूर बैठा कोई व्यक्ति कुछ ऐसा काम सोच चुका है, जो सम्मिलित चुनौती होगी प्रकृति को, इतिहास को, ईश्वर को, लोगों को, सबको एक साथ, जिसके बाद दुनिया कुछ और ही हो जायेगी, मानो उसका पुनर्निर्माण हुआ हो। और वह व्यक्ति, जो इस विचार को सम्भावित मूर्त रूप दे सकता है, इस समय अपनी शानदार कार में बैठा हुआ उनके निकट से गुज़र रहा है और उस समय किसी ने भी यह अनुमान नहीं लगाया कि यह व्यक्ति इस बात का प्रयत्न कर रहा है कि ऐसा समय आये, जब परिवार, वंश, पीढ़ियों की आनुवंशिक धरोहर आदि मान्यताएँ इतिहास में जमा हो जायें, कहीं से भी, कोई भी इसके परिणामस्वरूप आरम्भ भी बन सकता है और अन्त भी—इस बात की ज़रा-सी भी कल्पना किये कि वह किनसे उत्पन्न हुआ है और उसने किसे जन्म दिया है। परिवार के स्थान पर इन्हीं कार्यकलापों की भेंट चढ़ानी है राज्य-पिता को...

मगर नहीं, यह मेरा कोई व्यक्तिगत विश्वव्यापी कार्यक्रम तो था नहीं। यह ख़याल मेरे दिमाग़ में नहीं, बल्कि औरों के दिमाग़ में कौंधा, अगर ऐसा भी है, तो भी मैंने उस दिशा में अपनी सेवाएँ प्रदान .कीं, मेरे विज्ञान ने ख़िदमत की, मेरे प्रयोगों ने आतंकवादी साम्राज्य की काली शक्तियों को इस विचार की ओर धकेला कि मेरे आविष्कारों का उपयोग अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करे। इस बारे में मैं अब बात कर रहा हूँ, सब कुछ हो जाने के बाद। मगर तब भी मुझे कुछ धुँधला-सा अहसास तो था कि मेरे आविष्कारों से कौन-से व्यावहारिक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं, मगर मैंने सोचा कि इसका मुझसे सीधा सम्बन्ध नहीं है, और मैंने इस बारे में न सोचने की, इस पर मनन न करने की कोशिश की। मगर पता चला कि एक ऐसी विशाल योजना बनी है जो आदर्शवादी राज्य की परिकल्पना से कोसों दूर

है, और वह, जो मैं कर रहा हूँ वह सत्ताधारियों द्वारा प्रोत्साहित प्रयोगकर्ता के वैज्ञानिक खेल मात्र नहीं हैं। इसे मैं समझ सका केन्द्रीय समिति में पहुँचने के बाद।

इस बार गलियारे में प्रवेश-द्वार के निकट कोन्युखानोव के सचिव ने मेरा स्वागत किया और वह व्यक्तिगत लिफ़्ट से, सभी सुरक्षा-चौकियों से बचाते हुए, सातवीं मंज़िल पर ले गया। कोन्युखानोव मेरा इन्तज़ार ही कर रहा था। उसने स्वयं दरवाज़ा खोलकर मुझे कक्ष में आमन्त्रित किया।

"आन्द्रेइ आन्द्रेयविच, आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई!" चश्मे की आड़ से चमकीली आँखों से देखते हुए उसने मेरा स्वागत किया। उसकी प्रसन्नता में ज़रा भी कृत्रिमता नहीं थी–"आइये! हमलोग जल्दी-जल्दी नहीं मिलते। तो, चलिए पहले कुछ बातें कर लें, जी हल्का करें। आपके इन्तज़ार में मैंने रोज़मर्रा की मीटिंग भी टाल दी है। हाँ, आप ठीक कहते हैं, अक्सर मिलते रहना चाहिए, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच। मगर हर चीज़ के लिए चाहिए समय, समय, समय! आइये!" और उसने सचिव को आगाह किया–"कोई भी टेलीफ़ोन–नहीं। मैं–नहीं हूँ।"

समझना पड़ा कि उनकी इस मुलाक़ात को विशेष महत्त्व दिया जा रहा है। हुआ भी ऐसा ही।

कोन्युखानोव शिष्टाचारपूर्ण व्यवहार करता रहा था। वह बातचीत करनेवाले को स्वयं से बाँधे रखता था। सज्जन था, ध्यान से सुनता था, सोच-समझकर बोलता था। सलीके से कपड़े पहने था : कड़क सूट, मिलते-जुलते रंग की टाई, बढ़िया जूते। शायद सीमा से अधिक न खाता था, न पीता था, शरीर सौष्ठव बनाये रखता आ रहा था। असाधारण पारदर्शी चश्मा उसके लम्बे, अनुशासित चेहरे पर बहुत फ़ब रहा था। "बकरे जैसी दाढ़ी चिपका दो, तो देरझिन्स्की की भूमिका कर सकेगा।" न जाने क्यों मेरे दिमाग़ में यह बात आयी।

केन्द्रीय समिति के इस सचिव के बारे में कोई बुरी राय प्रचलित नहीं थी। उल्टे, कुछ लोग तो उसके बारे में बड़ी अच्छी राय रखते थे। कहते थे कि वह एक अच्छा विचारक है। पोलित ब्यूरो के सदस्यों में वह सबसे नौजवान था, उम्र पचास से नीचे, और वह कार्यकुशल समझा जाता था। अपना 'कैरियर' कूटनीतिक विभाग से बनाया था, बहुत सोच-समझकर, और स्पष्ट दृष्टिकोण से उन देशों में जो हमारे लिए राजनीतिक दृष्टि से प्रथम स्थान पर है : वह सलाहकार रहा, और फिर राजदूत बना उत्तरी कोरिया,

वियतनाम, क्यूबा और चीन में। उसकी उपलब्धियों की काफ़ी सराहना की गई, और वहाँ से, उस महत्त्वपूर्ण विभाग से उसकी तरक्की कर दी गई जिसके वह योग्य था, और यह न्यायोचित भी था। और आगे अन्तर्राष्ट्रीय ओलिम्पिक में जाने से ठीक पहले–उसे बनाया गया संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थायी सदस्य, कोन्युखानोव को अचानक पार्टी निकायों में बुला लिया गया। उनकी सर्वोच्च समिति में, और तब से वह अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन के विचारधारा और विदेश नीति सम्बन्धी मामले देखा करता है।

कोन्युखानोव के बारे में मुझे यही मालूम था, मगर ऐसा मौक़ा आया जब मैंने उसका दूसरा रूप भी देखा।

साधारण रूप से कहे गये वाक्यों के बाद मुख्य बातचीत का आरम्भ उसने कुछ इस तरह किया :

"आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, शुरुआत मैं दूर से करूँगा। आप शायद समझ पायेंगे अगर मैं यह कहूँ, कि मानवता का इतिहास एक झटके से निर्मित होता है, उस क्षण, जब, मान लीजिए, किसी के दिमाग़ में कोई ख़याल बिजली की-सी तेज़ी से कौंध जाता है, जैसा कि ऐसे हालात में कहा जाता है, एक ख़ूबसूरत पल में, शायद, यही काफ़ी होगा। ज़ाहिर है–जीवन उस समय तक, उस पल तक, सब कुछ किन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर प्रगति करता रहता है। मगर कभी अचानक उत्पन्न हो जाती है–एक, कैसे कहूँ, क्रान्तिकारी स्थिति, संघर्षण होता है, जब कोई एक विचार, कोई एक ख़याल सचमुच में दुनिया को एकदम उलट-पुलट कर देता है। और इस समय वैसा ही क्षण आ पहुँचा है। सिर्फ़, भगवान् के लिए ऐसा न सोचिये कि इस विचार का स्रोत–यह नाचीज़ है। मैं तो राह में उड़ता पंछी हूँ।"

"तो इस हालत में मैं कैसा पंछी हूँ? मैं रोक न सका स्वयं को, यह जानने की कोशिश में कि मेरे साथ वार्तालाप करनेवाला व्यक्ति मुझे किस ओर ले जा रहा है।"

"थोड़ा धीरज रखिये। यह तो प्रस्तावना है। इसके बिना असली बात तक नहीं पहुँचा जा सकता। तो, मैं प्रस्तावना ही ज़ारी रखता हूँ। वह, जिसकी ओर मेरा इशारा है, वह है–ऐतिहासिक क़दम, क्रान्तिकारी विशेषताओं से सराबोर। उसमें फ्रांसीसी क्रान्ति की चिनगारी, हमारी, अक्तूबर क्रान्ति की लपट है, ऐसा मेरा ख़याल है। यह चिन्तन की समग्र स्वतन्त्रता का, घिसे-पिटे चिन्तन और व्यवहार से पूरी तरह छिटक जाने का परिणाम है, यह वही है, जिसको प्लेटो ने दृष्टिगत रखा–विचार का पदार्थ

पर प्रभाव एवं पदार्थ का सामाजिक-राजनतिक आदर्शो के रूप में परिवर्तन। मैं समझ रहा हूँ, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच कि आप बुरी तरह चौंक गये हैं, यह सब किसलिए, इस भाषण की क्या ज़रूरत है? मगर, माफ़ कीजिए, इस सवाल का आपसे, आपके विज्ञान से सीधा सम्बन्ध है। हाँ, हाँ! चौंकिये मत!"

मैं उसके निकट एक विशाल मेज़ पर बैठा था जहाँ सामूहिक विचार-विमर्श किया जाता है। सेक्रेटरी बेहद ख़ूबसूरत ट्रे में रख पतले-पतले गिलासों में चाय ले आई। मैं समझ गया कि मुझे यहाँ किसी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण काम के लिए बुलाया गया है, विशेष और महत्त्वपूर्ण, वरना यह सब किसलिए, इतना घुमा-फिरा कर बात पर आने की क्या ज़रूरत है? और मैं यह पकड़ने की कोशिश करता रहा कि मेरे उन अतिविशिष्ट वैज्ञानिक प्रयोगों में पार्टी की केन्द्रीय समिति को कौन-सा उपयोगी व्यावहारिक पहलू नज़र आया। धीरे-धीरे तस्वीर साफ़ होती गई। मुझे अपनी विराटता से चौंकाते हुए, सावधान करते हुए और साथ ही अपनी धृष्टता से मुझे गिरफ़्त में लेते हुए।

"तो, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, तो ख़ासतौर से मैं अपनी बातचीत उस तरफ़ ले जा रहा हूँ," कोन्युखानोव बोलता रहा। उसने सोच में डूबे हुए क्रिस्टल की ऐश ट्रे में सिगरेट का टुकड़ा मसला और सिर हिलाकर कहा—"मैं बेकार ही उलझा रहा हूँ," वह मुस्कुराया—"हर तरह की प्रस्तावना की आदत पड़ गई है। मगर आप तो हमारे अपने आदमी हैं, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच। हमोर अपने और इसलिए मैं साफ़-साफ़ कहूँगा और जितना भी सम्भव हो, संक्षेप में कहूँगा। यही मेरे लिए मुश्किल है। मगर...पहली चीज़ जो महत्त्वपूर्ण है, वह यह है कि पार्टी आप पर विश्वास करती है, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच। हाँ, विश्वास करती है। और वह कार्य जो इतिहास ने हमारे सम्मुख रखा है—हमारा साझा काम है। हाँ, मैं समझता हूँ कि विज्ञान और राजनीति, दो अलग-अलग चीज़ें हैं, मगर वर्गाधारित दृष्टिकोण हर जगह, हर क्षेत्र में आवश्यक है। इसी बात पर हम, मार्क्सवादी-लेनिनवादी, ज़ोर देते हैं, और, बेशक, यही हमारी ऐतिहासिक प्राथमिकता है। प्रस्तुत परिस्थिति में आपके आविष्कार, यदि ऐसा कहें, हस्तनिर्मित जैविकी के आविष्कार हैं। क्योंकि यह मानव की प्रकृति में दूर तक जानेवाली घुसपैठ है। विशेषतः, यह मानवीय व्यक्तित्व का पुनर्निर्माण है—उसके जन्म (उद्‌गम) का, स्थान का और समाज में उसकी भूमिका का, और भविष्य

में समूची मानवता का, साँचेबद्ध. एक समान, कृत्रिम जनन के परिप्रेक्ष्य में सम्भावित पुनर्निर्माण है। जैसा कहते हैं, आरम्भ करना ही कठिन है। कहाँ पहुँची है बीसवीं सदी की बैलगाड़ी!

मुझे आपको समझाने की ज़रूरत नहीं है। मगर मैं अपनी विज्ञान शाखा के इस मत का पूरी तरह समर्थन करता हूँ कि सृष्टि के आरम्भ से लेकर इस तरह की घटना अभी तक नहीं हुई। आपके रूप में विज्ञान ने सचमुच अभूतपूर्व, अद्वितीय सामर्थ्य प्राप्त कर ली है। जैसा कि कहते हैं—हम आपका आदर और सम्मान करते हैं! गर्भधारण और जन्म की अबूझ पहेली अब मानव द्वारा 'नियन्त्रित कार्य' होने जा रही है। इसीलिए यह विचार उत्पन्न हुआ : अगर यह बड़े पैमाने पर किया जाये तो? यह एक ऐसी क्रान्ति है, जिसे अभी तक नाम नहीं दिया गया है विशेष प्रकार के मानव के निर्माण से सम्बन्धित वास्तविक क्रान्ति! और जब ऐसा है, जब यह प्रक्रिया नियन्त्रित की जा सकती है, और जब यह सामाजिक जीवन के एक नये घटक के रूप में प्रकट होनेवाली है, इतिहास का नया क़दम बनने जा रही है, तो आप मुझसे सहमत होंगे, कि यह राजनैतिक वास्तविकता बन गई है। और आज हम, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, यहाँ आपसे एक 'पार्टनर' के रूप में बात कर रहे हैं। हमारी धारणा यह है कि पार्टी को मूकदर्शक नहीं बने रहना चाहिए। ख़ामोशी से ये रोचक प्रयोग देखने के बदले, बिना समय गँवाये, इस प्रक्रिया के सूत्र अपने हाथ में ले लेने चाहिए, उनका उचित मार्गदर्शन करके उन्हें हमारे समाज एवं हमारी विचारधारा के हित में मोड़ देना चाहिए। माफ़ कीजिए, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, मेरी ज़्यादा बोलने की आदत छूटती नहीं। मगर आप समझ रहे होंगे कि किस बारे में बात हो रही है। आप ठीक समय पर सब समझ जाते हैं, आप—बुद्धिमान व्यक्ति हैं। और आगे मैं कुछ और कहूँगा। हमें भूलना नहीं चाहिए, चाहे कोई भी बात हो—अन्तरिक्ष से सम्बन्धित आविष्कारों से लेकर प्रायोगिक जीवशास्त्र से सम्बन्धित आविष्कार, हमें अपने अन्तिम लक्ष्य के बारे में, विश्व-इतिहास में हमारी भूमिका के बारे में कदापि नहीं भूलना चाहिए। यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। अफ़सोस है कि हमारी केन्द्रीय समिति में कुछ विशिष्ट सुधारवादी लोग भी हैं, पार्टी की मुख्य समितियों में। मुझे आपसे कुछ भी छिपाना नहीं है, आप—हमारे हैं। कुछ साथी समाजवाद के अन्तर्गत किसी एक देश में ऐशोआराम की ज़िन्दगी बिताना चाहते हैं, यह भूल जाते हैं कि हमें सभी देशों के सर्वहारा वर्ग की चिन्ता करनी है!

पूँजीवाद के साथ हो रही प्रतियोगिता में हमें विजयी होना है। भले ही विश्वव्यापी क्रान्ति का नारा आजकल सुनाई न देता हो, इस ग्रह पर कम्युनिज़्म की विजय होगी! यह—हमारा लक्ष्य है, और हमें पूरी सामर्थ्य से, सभी साधनों से, इसके निकट पहुँचना है। अपने वैज्ञानिक प्रयोगों में आकण्ठ डूबे आप, शायद सन्देह भी नहीं कर सकते, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, कि प्रायोगिक जैविकी के क्षेत्र में आपकी अनूठी उपलब्धियाँ मानव जीवन के विस्तार में किसी ब्रह्माण्डीय सत्ता की भविष्यवाणी कर रही हैं। हाँ, हाँ! मैं यह पूरी संजीदगी से कह रहा हूँ। पहली नज़र में कल्पना करना कठिन है—क्योंकि इस सबका आरम्भिक बिन्दु होगा सिर्फ़ प्रयोगशाला में प्रस्थापित भ्रूण, एक बीज, जिसका प्रादुर्भाव होगा, एक परखनली में। मगर ख़ास बात यह है कि इसके परिणामस्वरूप जन्म लेनेवाला यह मनुष्य—हम इसे 'क्ष-पीढ़ी' कहेंगे—एक अज्ञात व्यक्ति होगा, यह किसी से सम्बन्धित न होगा, कृत्रिम तरीक़े से पैदा किया गया जीव। मैं कुछ ऐसा ही समझता हूँ। मैं यह बात, जिसे आप भली-भाँति जानते हैं, आपको समझाने की कोशिश क्यों कर रहा हूँ? बात यह है कि आपके लिए यह दिलचस्प प्रयोगों का विषय है, मगर हमारे लिए 'क्ष-पीढ़ी' मानव की एक नई क़िस्म है। और, हमारे अनुमान के मुताबिक़, 'क्ष-पीढ़ी' का दायित्व होगा पुरानी दुनिया को बदलना, उससे सर्वहारा वर्ग की रक्षा करना। यही तो ख़ास बात है। समय के साथ, वह, 'क्ष-पीढ़ी', ऐतिहासिक प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभायेगी!

शायद, मैं इस बारे में अत्यधिक उत्साह के साथ कह रहा हूँ। इसके लिए कारण भी हैं। क्योंकि 'क्ष-पीढ़ी' वाली यह अद्‌भुत घटना राजनीतिक स्तर पर काफ़ी वादे करती है। यह वो सर्वछेदक शक्ति है जो हमसे भिन्न है, बिना इधर-उधर देखे, बिना भय के, बिना सन्देह के समूचे विश्व में कम्युनिज़्म की जीत के लिए संघर्ष करती रहेगी। परिवार या इसी तरह के दूसरे सम्बन्ध, जो हिंसा पर आधारित विश्व की पुरातन संस्थाएँ हैं, इसी 'क्ष-पीढ़ी' द्वारा इतिहास के कूड़े-करकट में फेंक दी जायेंगी। व्यक्ति एवं आत्मा की अभूतपूर्व स्वतन्त्रता की धारक यह 'क्ष-पीढ़ी' मानवता के नये कालखण्ड तक जानेवाला मार्ग बनायेगी। दूसरी भविष्यवाणी हमारी क्रान्तिकारी शिक्षा काफ़ी पहले कर चुकी है। भविष्य में 'क्ष-पीढ़ी' न केवल पुराने विश्व के लिए विनाशक सिद्ध होगी, अपितु नये विश्व के निर्माता के रूप में जानी जायेगी। मुझे ज़रा भी सन्देह नहीं है कि 'क्ष-पीढ़ी' वाले समाज में महान् व्यक्ति 'जीनियस' व्यक्ति जितने सामान्य पुरातन समाज में पैदा

होते रहे हैं उससे कहीं अधिक पैदा होंगे आप ख़ुद ही समझते हैं—यहाँ पूरी आज़ादी है पारिवारिक एवं अन्य दैनन्दिन झंझटों एवं चिन्ताओं से। बच्चे पैदा किये जायेंगे कृत्रिम रूप से, अज्ञात रूप से, और उनका पालन-पोषण भी उसी तरह किया जायेगा। ख़ैर, समिति में कुछ साथियों ने इन अज्ञात रूप से जन्मे शिशुओं को 'स्बेकिट' नाम देने का प्रस्ताव रखा, ऐसा ऊँची क़िस्म के बड़े, विशाल प्राणी को कहते हैं, जिसकी वंशावली ज्ञात न हो, मगर मेरे विचार में, 'क्ष-पीढ़ी' कहीं बेहतर है और सटीक है।

अभी तो हम सिर्फ़ सिद्धान्तों के आधार पर इस रोचक विषय पर बहस कर रहे हैं, पूर्वानुमान कर रहे हैं, कि यह 'नव-मानव' जिसका अब तक कोई अता-पता नहीं है, कैसा होगा, मगर पूर्वानुमान करना आवश्यक है। हाथ पर हाथ रखकर बैठे नहीं रहना है, जब आधुनिक सभ्यता नई समस्याओं, नई घटनाओं, नई चेतना की लहरों से जूझ रही है। इतिहास, इस बात के लिए हमें कभी माफ़ नहीं करेगा। और इस सन्दर्भ में मैं यह कहना चाहता हूँ कि भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि ब्रह्माण्ड में हो रही लड़ाई में कौन सर्वोच्च स्थान पर होगा? विजयी वही होगा, जो समाज में नवमानवों के लिए 'क्ष-पीढ़ी' के लिए द्वार खोल देगा, जिसका मुख्य गुण यह होगा कि अज्ञात रूप से जन्मे ये प्राणी परिवार, रिश्तेदारी, जाति, देश आदि के बन्धनों से मुक्त होंगे, जिसके कारण पुरानी पड़ती नैतिकता के सदियों के बोझ को फेंक देना भी सम्भव होगा। राजनीतिक पहलू से—यह एक अनमोल उपहार होगा। 'क्ष-पीढ़ी' सामूहिकता और अन्तर्राष्ट्रीयता की आदर्श मिसाल बनेगी। वह कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीयता की प्रबल शक्ति होगी, और वही पश्चिमी देशों पर अन्तिम राजनैतिक मार करेगी!

यह सब, जैसा कि आप समझ रहे हैं, भविष्य की बात है, फिर भी एक सामान्य नीति निश्चित करके उस पर काम आरम्भ करना होगा। और पार्टी को इस बात में गहरी दिलचस्पी है कि आप जैसा वैज्ञानिक इस प्रश्न पर हमारी स्थिति को जाने और उससे सहमत हो। यही है हमारी आज की मुलाक़ात की ख़ास वजह। और मैं समझता हूँ कि हमारे विचार समान होंगे। इस प्रयोग में आप पर बहुत कुछ निर्भर करता है, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, आप 'क्ष-पीढ़ी' के उत्पादन की तकनीक के प्रणेता हैं। और हमारा उत्तरदायित्व भी कुछ कम नहीं है : विचाग्धारा पालों में भरी हुई हवा के समान है, यह शक्तिशाली हवा जहाज़ को गति प्रदान करती है, न कि पाल, ठीक है न? सम्बन्धित अधिकृत समितियाँ आपके कार्य को अत्यन्त दिलचस्पी से देख रही हैं, उनके पास इस सम्बन्ध में अनेक ठोस प्रस्ताव भी हैं।"

बातचीत चलती रही। केन्द्रीय समिति के सचिव के मुख से सुनी बात से भौचक्का हुआ मैं, वह छिपाने की कोशिश करता रहा, जो उस समय मुझे पीड़ा दे रहा था। यहाँ मैं इस बातचीत के बारे में अपने विचारों एवं उद्‌गारों के बारे में नहीं लिखूँगा, वे महत्त्वपूर्ण भी नहीं हैं, इसलिए कि उनमें केन्द्रीय समिति के विचारों से भिन्न कोई बात न थी, या कोन्युखानोव के मत पर बहस करने जैसी भी कोई बात न थी, मेरे उद्‌गारों को कुछ सावधानीवश उठाये गये सन्देहों की संज्ञा दी जा सकती थी।

बात क्या है, मैं अब इस बातचीत को याद करके भय से क्यों काँपने लगता हूँ? और अब, अन्तरिक्ष में बैठे-बैठे उस दिन को याद करके चीख़ता हूँ : कौन-सी खिचड़ी पक रही थी, 'क्ष-पीढ़ी' के बारे में क्या सोचा जा रहा था, किस बात की तैयारी हो रही थी? उस यादगार मुलाक़ात की निर्लिप्त भाव से कल्पना करूँ, तो मैं बता सकता हूँ कि क्या-क्या हुआ था, कैसे हुआ था, और अपने बारे में भी बता सकता हूँ कि उस समय मैं कैसा लग रहा था। मेरा बर्ताव, ज़ाहिर है, सम्मानजनक नहीं था। मगर तब, पुराने चौक पर किसी और तरह से व्यवहार किया ही नहीं जा सकता था—यह मैं अपने बचाव में नहीं कह रहा, मैं कोई 'हीरो' नहीं हूँ, और होना भी नहीं चाहता, मगर ईमानदारी से कहता हूँ, मैं यह ख़तरा उठाये बिना कोई अन्य प्रतिक्रिया प्रकट ही नहीं कर सकता था कि भविष्य में अपमानित किया जाऊँ, धीरे-धीरे अपने मुख्य प्रायोगिक विषय से अलग हटा दिया जाऊँ, जिसे मेरे ही सहयोगी, परखे गये पार्टी के जुझारू कार्यकर्ता लपक लेंगे—विज्ञान अकादेमी में ऐसे कितने ही उदाहरण मिलेंगे। निदेशक के पद और प्रभाव को खोना एक बड़ी दुर्घटना बन सकता था—जो वैज्ञानिक क्षेत्र में पद खो देने से कहीं अधिक भयानक सिद्ध होती। हाँ, मुझमें एक शानदार चापलूस, सत्ता का दास बोल रहा था जो अधिकांश तत्कालीन बुद्धिजीवियों का वास्तविक रूप था चाहे आज वह अपने बारे में कुछ ही क्यों न कहें!

एक और बात, व्यक्तिगत, मगर महत्त्वपूर्ण जो मुझे इस सम्बन्ध में परेशान कर रही थी...मैं समझता हूँ कि यह भी मेरे बचाव में नहीं है, मगर फिर भी...जैसे पेट में पाचन-रस की थैली शारीरिक अवयवों में लगातार किण्वन करनेवाले तत्त्व फेंकती रहती है उसी तरह मेरा लगातार पीछा कर रहा था, मुझे सदा उद्विग्न कर रहा था यह बीमार-सा ख़याल कि कोन्युखानोव मेरे अज्ञात वंश के बारे में क्या सोचता है? यह विचार मुझे सामान्य नहीं होने दे रहा था। वह मेरी हालत को समझ रहा था या नहीं,

या फिर अपने बौखलानेवाले विचारों एवं निष्कर्षों की रौ में वह पूरी तरह भूल गया था कि मैं कौन हूँ कि मेरा वंश कौन-सा है या फिर जान बूझकर मेरे जीवन के इस तथ्य का लाभ उठा रहा था—परित्यक्त के जीवन की सच्चाई का, जिसे कभी कम्बल में लपेटकर रूज़ा के अनाथालय के द्वार पर छोड़ दिया गया था। देखा जाये तो मैं भी 'क्ष-शिशु' ही था, चाहे मेरा जन्म प्राकृतिक तरीक़े से हुआ हो, मगर था तो मैं वही, बिना वंश का, बिना जाति का, कभी न झुकनेवाला, उत्तेजित न होनेवाला, पूरे व्यवहार में हृदयविहीनता का परिचय देनेवाला, अपने विषय का कठोर विशेषज्ञ, अपना समय एवं अपनी योग्यताएँ अपने कार्य के सिवा कहीं और केन्द्रित न करनेवाला। इन सारी बातों पर ध्यान दिया जाये तो पार्टी के विचारकों को यही बात उचित प्रतीत होती थी, ऐसा ही रूप देखना चाहते थे वे वास्तविक 'क्ष-पीढ़ी' का। मैं, भाग्यवश, 'क्ष-शिशु' के समान था। चाहे इस बारे में खुलकर कोई बात नहीं की जाती थी, मगर मैं अनचाहे ही जीती-जागती मिसाल बन गया था, एक प्रतिरूप-सा बन गया था...यह बात मैं समझता था...शायद यही स्पष्टीकरण हो उन विचित्र भावनाओं का जो उस दिन पुराने चौक में बने एक कमरे में मुझ पर हावी हो रही थीं।

मेरा विश्वास डगमगा रहा था—मैं स्वंय को अस्थिर, अस्पष्ट, डाँवाडोल महसूस कर रहा था : आत्मा मानो पिंजरे में फड़फड़ा रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो इस कमरे की चारदीवारी में मेरे भाग्य के ख़िलाफ़ षड्यन्त्र रचा जा रहा था। वैज्ञानिक प्रयोगों और अपराधों के बीच की सीमारेखा कहाँ से गुज़रती है, उस अस्पष्ट सीमा को कौन देख सकता है? दिल में सन्देह उठ रहे थे : और यदि यह षड्यन्त्र अनन्तकाल से स्थापित मानव के नैतिक मूल्यों के विरुद्ध हो जो पीढ़ियों की लम्बी शृंखला में ह्रास को प्राप्त होते जा रहे हैं, स्वयं मानवता के ख़िलाफ़ हों, जो भयानक और निरर्थक जीवन जीते हुए भी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी परिपूर्णता की कामना करती है, किसी चमत्कार की आशा करती है जिसके प्रभाव से युटोपिया विषयक विचार प्राप्त हो सकेंगे, पुरखों की इस आशा को जीवित रखती है कि यदि उन्हें नहीं तो उनके बच्चों को, पोतों को इच्छित सुख की प्राप्ति होगी... 'क्ष-पीढ़ी' को इतिहास के चक्र को रोकना होगा, पितृत्व को, मातृत्व को अन्तिम आहुति देनी होगी, उस सबको समाप्त करना होगा जो इस विश्व में सबके लिए और हर एक के लिए पीढ़ियों के अनुभव को निरन्तर गतिमान रखता है. ..स्थिति ऐसी है, जिसकी कल्पना शताब्दियों के इतिहास में कभी नहीं की

गई, अगम्य रही है : आदम और हव्वा के बाद दुबारा इस दुनिया से बाहर निकाला जा रहा है माता और पिता को, वह भी चुपचाप, ईश्वरीय शक्ति का कोपभाजन बने बग़ैर, बिना शाप के, हमेशा के लिए कलंकित हुए बिना, बड़ी स्वार्थपरता से निकाला जा रहा है—माता-पिता के उत्तरदायित्वों से मुक्त करके, भलाई की आड़ में छिपी बुराई का सहारा लेकर, धीरे-धीरे भ्रूणों के साथ कपट करके, और ऐसे निकाला जा रहा है, कि अब उनका कोई ठिकाना नहीं...और इस पूरे इतिहास में मैं अनचाहे ही मुख्य मोहरा बन गया, मातृत्व और पितृत्व को निष्कासित करनेवाला, अदृश्य जल्लाद...

मगर इसके साथ-साथ मुझे यह भी याद था कि मेरी भूमिका कितनी महान् हो जायेगी, मेरा महत्त्व, कितना बढ़ जायेगा, सौरमण्डल में मेरा स्थान कितना महत्त्वपूर्ण हो जायेगा। विश्व के शक्तिशाली लोगों को एक महान्, विशाल कार्य को मूर्त रूप देनेवाले व्यक्ति के रूप में मेरी आवश्यकता है।

मैंने परित्यक्तों की एक पूरी पौध का संग्रह किया। शायद यह विधिलिखित था, किसी शैतान द्वारा कल्पित दृश्य के अनुरूप—शायद मुझे दुनिया से ऐसे अविश्वसनीय ढंग से बदला लेने के लिए धकेला गया—मुझे जन्म से 'क्ष-शिशु' को, बुलाया गया अज्ञात रूप से जन्मे 'क्ष-शिशुओं' की पूरी जाति का निर्माण करने के लिए, मेरे ही द्वारा निर्मित तकनीक के द्वारा। परिस्थितियों का ऐसा मेल किसी के लिए बहुत फ़ायदेमन्द सिद्ध हुआ—एकदम सही वक़्त पर, इतिहास के इस मोड़ पर मैं उपस्थित हुआ।

विदा लेते समय कोन्युखानोव ने कहा, "आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, पता नहीं आपका क्या ख़याल है, मगर मुझे तो इस मुलाक़ात से बड़ा आनन्द मिला है..."

मैंने भी ऐसे ही प्यार से जवाब दिया। और तब अप्रत्याशित रूप से उसने बातचीत फिर शुरू कर दी।

"पता है, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, मैं आपको एक बात समझाना चाहता हूँ। आपके पास कमेटियों से साथी आयेंगे, वे कुछ-कुछ..." उसने यह वाक्य पूरा नहीं किया और आगे कहा, "उनके पास अपने प्रस्ताव होंगे कि आपके साथ सहयोग करेंगे। ये सब, बेशक, तकनीकी, संगठन सम्बन्धी प्रश्न हैं, उनसे आप परेशान न होइये। वे हर चीज़ पूरी तरह नाप-तौल कर कहते हैं, और इस परिस्थिति में, इस 'कार्य' के ज्ञान से सम्बन्धित..."

सच कहूँ, तो इस सूचना से मैं कुछ बेचैन हो गया।

"वादिम पेत्रोविच,"—मैं कोन्युखानोव से मुख़ातिब हुआ, "जब आपने

याद दिला ही दी है, जिसके लिए मैं आपका आभारी हूँ, तो क्या आपके मुँह से ही सुनना बेहतर नहीं होगा कि इन साथियों की सहयोग की पेशकश किस प्रकार की होगी। जिससे मैं उनसे होनेवाले सम्पर्कों के लिए उचित तैयारी कर सकूँ।"

"ठीक है," समझने के अन्दाज़ में मुस्कुराया कोन्युखानोव, "मैं ख़ुशी से तैयार हूँ, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच, यह उचित भी होगा, इससे भी मैं सहमत हूँ। मेरे पास जो सूचना है, वह है, हमारे विभाग से। बाक़ी सब बातें काम के दौरान खुद ही जान जायेंगे।"

आगे जो कुछ सुनने को मिला, शुद्ध कामकाजी अन्दाज़ से देखा जाये तो सचमुच अधिकाधिक तर्कसंगत प्रतीत हुआ। साथियों को मालूम था कि वे क्या चाहते हैं, और उन्होंने अच्छी तरह सोच-विचार कर लिया था, पूर्वानुमान लगा लिए थे।

मैं कार में इस बारे में विचार कर रहा था। एक बार फिर लोगों से भरी मास्को की सड़कें देखते हुए, मुझे कोन्युखानोव से हुई बातचीत हर विवरण के साथ याद आ रही थी, इस बात से भी मैं बुरी तरह चौंक गया था कि अचानक प्रयोगशाला के मेरे प्रयोग किस तरह विस्तृत होकर एक महान्, अतिरहस्यपूर्ण कार्यक्रम में परिवर्तित हो गये थे जिसका शासन के लिए काफ़ी महत्त्व था।

अधिकृत विभागों द्वारा निर्धारित परियोजना के अनुसार 'क्ष-पीढ़ी' का निर्माण दो चरणों में किया जाना निश्चित हुआ था। पहला चरण था भ्रूणीय विकास का—जो पूरी तरह मेरे संस्थान पर निर्भर था, मेरे उत्तरदायित्व में था, और, जिसके लिए मुझे योग्य साधन एवं अधिकार दिये गये थे। इस चरण की सबसे जटिल प्रक्रिया थी प्रयोगशाला में निर्मित अज्ञात भ्रूण की उद्भवन कक्ष ('इनक्यूबेटर') में प्रतिस्थापना, यानी उस महिला के गर्भ में प्रतिस्थापना जिसने अपना शरीर प्रतिस्थापित भ्रूण को धारण करने के लिए प्रस्तुत किया हो। यानी सामान्य नौ महीनों की गर्भावस्था की स्थिति के लिये समर्पित किया हो। जन्म के बाद आरम्भ होता था दूसरा चरण, माँ द्वारा दुग्धपान कराने का कालखण्ड। कार्यक्रम के इस भाग से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं था, 'क्ष-शिशुओं' के विकास एवं लालन-पालन से सम्बन्धित ज़िम्मेदारी विशेष बोर्डिंग स्कूलों को सौंपी जानेवाली थी। पार्टी अधिकारियों की दृष्टि में मौटे तौर से यही प्रारूप था 'क्ष-पीढ़ी' उत्पन्न करनेवाले उद्योग का।

समस्याएँ? जैसा हर जगह होता है, यहाँ भी अपनी समस्याएँ थीं। कैसा विरोधाभास था—इस पूरी तकनीक में सर्वाधिक पीड़ादायक समस्या भ्रूण की 'महिला-डोनर' के गर्भ में प्रतिस्थापना की नहीं थी, बल्कि व्यक्तिगत नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित थी, इन महिलाओं की मानसिकता से जुड़ी थी जिन्हें 'इनक्यूब' नाम दिये जाने का प्रस्ताव था। प्रयोगशाला में कृत्रिम रूप से निर्मित 'क्ष-शिशु' का आनुवंशिक दृष्टि से 'इनक्यूब' से कोई सम्बन्ध नहीं था। क्या ऐसा कहना उचित होगा कि लगभग हर औरत अपनी कोख को किराये पर देने के लिए तैयार हो जायेगी—झूठमूठ के मातृत्व के लिए तैयार हो जायेगी? इस बात पर समाज में बहुत बड़ा हंगामा हो सकता था। तब? विदेशों में कितना शोर मचेगा, संयुक्त राष्ट्र तक और अन्य मानवीय हित से सम्बन्धित संस्थानों तक यह बात पहुँचेगी, जो वैसे भी सदा किसी सनसनीख़ेज समाचार की ताक में रहते हैं! यहाँ हमारे सर्वव्यापी, सर्वद्रष्टा, तीन अक्षरोंवाली—के.जी.बी. की सतर्कता एवं सामर्थ्य की तारीफ़ करनी होगी। जब मुझे दरवाज़े तक छोड़ने आये हुए कोन्युखानोव ने सुयोग्य नेताओं के संचालन सम्बन्धी विचारों से मुझे अवगत कराया तो मैं एक गुफा में फँसे पंछी की तरह समझ गया कि बाहर निकलने का रास्ता सिर्फ़ एक ही है, मैं यह भी समझ गया कि हमारी प्रयोगशाला, हमारा संस्थान और स्वयं मैं भी काफ़ी समय से सुयोग्य नेताओं की निगरानी में थे—सब कुछ साफ़-साफ़ समझ में आ रहा था। के.जी.बी. के कार्यकर्ताओं ने समस्या के समाधान के लिए अपनी कार्यप्रणाली का प्रस्ताव रखा था और सहयोग की पेशकश भी की थी। प्रस्ताव इस प्रकार का था : 'इन्क्यूब' का चुनाव बड़ी गुप्तता से उन महिलाओं में से किया जायेगा जो घोषित अपराधी हैं और जो सज़ा भुगत रही हैं, और ऐसी महिलाओं की संख्या देश में काफ़ी थी। हज़ारों, लाखों की संख्या में, सभी सम्भव अपराधों की कठोर कारावास की, निष्कासन की सज़ा भुगत रही औरतें थीं महिलाओं की कालोनियों और बस्तियों में। इस दृष्टि से 'महिला-डोनरों' के 'इन्क्यूब' के चुनाव की सम्भावनाएँ अपरिमित थीं। बस, मेरी सहमति की आवश्यकता थी। मैंने वादा किया कि इस बारे में सोचूँगा।

इसके बाद मैंने अधिकृत समितियों के प्रस्तावों का जायज़ा लिया और फिर से इस विषय में उनके ज्ञान से एवं कार्य को अंजाम देने की अचूकता से हैरान रह गया। 'डोनरों' के रूप में ऐसी महिला बन्दियों को चुनने का निश्चय किया गया जिन्हें दस से पच्चीस वर्षों तक की सज़ा मिली हो।

यथोचित स्वास्थ्य परीक्षणों के बाद बन्दिनी को निम्नलिखित शर्तों पर 'डोनरशिप' प्रदान करने का निर्णय लिया गया।

(एक) 'क्ष-शिशु' को जन्म देने पर क़ैद की अवधि पचास प्रतिशत कम कर दी जायेगी, दूसरे 'क्ष-शिशु' के जन्म के बाद पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने का अधिकार मिल जायेगा;

(दो) 'बन्दिनी डोनर' को तीन माह तक 'क्ष-शिशु' को अपना दूध पिलाना होगा, तत्पश्चात् बिना किसी शर्त के उसे सरकारी शिशु गृह को सौंप देना होगा;

(तीन) प्रसवोपरान्त अवधि की समाप्ति पर 'बन्दिनी डोनर' को यातना शिविर या सुदूर बस्तियों में भेज दिया जायेगा;

(चार) 'बन्दिनी डोनर' को लिखित रूप से प्रतिज्ञा करनी होगी कि वह इस सम्बन्ध में अपनी भूमिका के बारे में, स्थान के बारे में, उसकी देखभाल कर रहे कर्मचारियों के बारे में कोई भी तथ्य प्रकट नहीं करेगी, इस लिखित प्रतिज्ञा का उल्लंघन करने पर 'बन्दिनी डोनर' पर दुबारा मुक़दमा चलाया जायेगा।

यह था मोटे तौर पर सुयोग्य नेताओं द्वारा तैयार किया गया प्रारूप—वन्दिनी-डोनरों के चयन के बारे में। मैं बड़ी देर तक सोचता रहा। यह नहीं कहूँगा, कि मुझे बड़ी खुशी हुई यह प्रारूप पढ़कर, मगर दूसरा कोई उपाय नहीं था। और मैं राज़ी हो गया।

मैंने अधिकृत विभाग के एक कार्यकर्ता से बात की वह संस्था में विचार-विमर्श के लिए आया था। काफ़ी बुद्धिमान था। जब मैंने महिला क़ैदियों में से 'डोनर' चुनने की नैतिकता के बारे में सन्देह प्रकट किया तो उसने जवाब दिया कि फ़िलहाल दूसरा कोई प्रावधान नहीं है, समय के साथ-साथ क़ैदियों की 'डोनर' के रूप में उपयोग करने की आवश्यकता नहीं रहेगी—'डोनरों' को उनकी सेवाओं के लिए मानदेय दिया जायेगा, वैसे ही, जैसे वेश्याओं को सेवाओं की कीमत चुकाई जाती है। और सम्भव है कि महिलाओं के एक वर्ग की नज़र में, अज्ञात भ्रूण के लिए अपनी कोख का 'इनक्यूब' के रूप में प्रयोग करने देना यह व्यवसाय काफ़ी आकर्षक व्यवसाय बन जाये। हमारी बातचीत बिलकुल सीधी, दो टूक, बग़ैर किसी लगाव-छिपाव के हो रही थी। वह दृढ़तापूर्वक कह रहा था, कि ऐसा समय आयेगा, जब 'इनक्यूबेटरशिप' को न केवल वैधता प्राप्त हो जायेगी, बल्कि बच्चे जनने की यह प्रक्रिया ज़्यादा लोकप्रिय सिद्ध होगी। और तब 'माँ',

'बाप' जैसी मान्यताएँ या तो लुप्त हो जायेंगी या उनका मात्र परिस्थितिजन्य महत्त्व ही बचा रहेगा।

इस तरह अधिकृत विभाग का 'विचार' धीरे-धीरे मूर्त रूप लेता गया और उनके भावी इरादे भी ज़ाहिर होने लगे—बिना मूल के भावी मनुष्य के उत्पादन को नियन्त्रित करने में उनकी विशेष दिलचस्पी धीरे-धीरे स्पष्ट होती गई। यह सुझाव दिया गया कि समय के साथ-साथ इस कार्यक्रम को विशाल पैमाने पर सफल बनाया जाये। भविष्य में व्यावसायिक जन्मदात्रियों द्वारा अज्ञात शिशुओं के जन्म की प्रक्रिया को अधिकाधिक प्रचलित करने की, क्ष-शिशुओं के संगठित रूप से विशेष शिशुगृहों में लालन-पालन की योजना बनाई गई, जिससे सन्तोनोत्पत्ति की अनिवार्यता से मुक्त जनता पूरी शक्ति से औद्योगिक उत्पादन में लग जाये, अन्य वास्तविक समस्याओं के समाधान में जुट जाये, सबसे पहले बेशक अटल विश्व क्रान्ति के कार्य में संलग्न हो जाये, इस ध्येय से कम्युनिस्ट पीछे नहीं हटना चाहते थे। 'क्ष-पीढ़ी' विश्व इतिहास को पूर्ण विराम लगायेगी और तब शुरू होगी समय की नई गिनती...

मुझसे वार्तालाप कर रहे मेरे उस अवलोकनकर्ता ने वाक्य भी चुनचुन कर नहीं कहे : 'क्ष-पीढ़ी' लगायेगी विराम, पूर्ण विराम, जिसकी काफ़ी समय से आवश्यकता थी। यह सब शोर सम्पूर्ण विश्व में शान्ति के लिए संघर्ष और ऐसी ही अन्य ख़ूबसूरत बातें भावुक प्रलाप है। और अगर आणविक प्रहार ही अन्तिम निर्णायक है तो उसका निर्माण करेगी 'क्ष-पीढ़ी'। उसके पास खोने के लिए कुछ हो ही नहीं, उसे कोई भी चीज़ किसी से भी बाँधकर नहीं रख सकती, वह व्यक्तित्वहीन है, उसकी मातृभूति—वह शासन प्रणाली है जिसने उसे परख नली में जन्म दिया। और जब बटन दबाने का समय आयेगा तो उसके हाथ नहीं काँपेंगे। सारी बात बस इतनी है कि पहल कौन करेगा, किसके द्वारा निर्मित 'क्ष-पीढ़ी' पहले आणविक प्रहार करेगी!

मॉस्को के निकटवर्ती वन में स्थित एक छोटा-सा स्वास्थ्य केन्द्र, जो पहले व्यावसायिक संगठनों के लिए प्रयोग किया जाता था, शीघ्र ही हमें सौंप दिया गया, ताकि वहाँ वैज्ञानिक अनुसन्धान का मुख्यालय स्थापित किया जा सके। अन्तःकक्षों के पुनर्निर्माण एवं उन्हें सुसज्जित करने में, 'वार्ड्स' बनाने, सुरक्षाकर्मियों और अन्य कर्मचारियों के लिए कमरे बनाने में आधा साल निकल गया।

मैंने भी ख़ास जल्दबाज़ी नहीं की। मगर काम आरम्भ करने का समय

आ ही गया। पहले ही बता देता हूँ कि मैं कुछ व्यथित मन से यह सब कर रहा था और शायद, इसीलिए, 'डोनरों' के बारे में उनके साथ भेजे गये काग़ज़ात से प्राप्त जानकारी के अलावा, मैं कुछ और नहीं जानना चाहता था। उनके साथ अफ़सरों जैसा कठोर सुलूक करता, रुखाई से, संक्षेप में, बातें करता।

उन्हें हमारे 'क्लीनिक' में एक-एक करके अकेले लाया जाता, हरेक को, निश्चित समय पर, बन्द कार में, सरकारी पोशाक में, और मेरे लिए वे सब एक जैसी थीं—'क्ष-भ्रूणों' को प्रतिस्थापित करने का माध्यम। उन्हें मैं बिना किसी नाम के सम्बोधित करता—कहता 'औरत' : 'नमस्ते, औरत! आप कैसा महसूस कर रही हैं, औरत? सावधानीपूर्वक, औरत, मुझे आपका परीक्षण करना है, कृपा हिलिए-डोलिए नहीं। बस इसी तरह।' इसी तरह मेरे लिए भी प्रयुक्त किया जाता—प्रोफ़ेसर। इसके अलावा और कुछ नहीं, इधर-उधर की कोई बात नहीं, सभी डोनर सिर्फ़ इसलिए महत्त्वपूर्ण थीं, कि उनकी कोखों को ख़रीदा गया था। उनमें से किसी का भी चेहरा मुझे याद न रहा, क्योंकि मुझे चेहरों से कोई मतलब न था।

बस, केवल एक, इस नियम का अपवाद सिद्ध हुई...मगर, इस बारे में कुछ देर में...इस बारे में बाद में ही...

और आ गया मैं किनारे पर, और आगे थी एक और नदी...

मैं दुखी था, बहाना ढूँढ़ रहा था, कोई भी बहाना, इन ख़यालों से दूर जाने का, उन्हें भूल जाने का। मगर इससे क्या होगा? क्या हर बार अपने आप से दूर भागने के प्रयत्न की निरर्थकता पर मुझे विश्वास नहीं हुआ। मरना सम्भव है, मगर स्वयं से भागना असम्भव। इस दृष्टि से मानव, नश्वर होते हुए भी अनश्वर है।

हे भगवान्, कहीं मैं 'वह' समझाने की कोशिश तो नहीं करने लगा, जिसे समझाया नहीं जा सकता, अपनी आत्मा के अतल गर्त में क्या उसे फेंक रहा हूँ, वह तो नहीं कहने चला जो शब्दों की सामर्थ्य से परे है, कम-से-कम मेरे शब्दों के बस में नहीं है?

मैं तो स्वयं को विशिष्ट शक्तिशाली व्यक्ति समझता था, और यह बड़े ताज़्जुब की बात होती, यदि मैं अपने आप पर काबू न रख पाता, खास कर तब जब यह किसी महान् उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वांछित था। मगर इस बार मैं स्वयं पर नियन्त्रण न रख सका ...उस बात का कोई पूर्वाभास भी तो नहीं था, जिससे मेरा सामना होनेवाला था, जैसे ब्रह्माण्ड में कोई

उल्का अचानक किसी अन्य उल्का से टकरा जाये। सब कुछ सिलसिलेवार ही हुआ।

यह घटना घटी अगले वर्ष के बसन्त में, जब 'बन्दिनी डोनरों' के पहले समूह में भ्रूण प्रतिस्थापित किये जा चुके थे और उनके स्वास्थ्य की उचित देखभाल की जा रही थी।

इस महिला को भी उस दिन परीक्षण हेतु लाया गया, अन्य महिलाओं की ही भाँति, सहायक डॉक्टर की देखरेख में—डोनरों के सुरक्षा कर्मियों को हम इसी पुराने नाम से पुकारते थे। जब सहायक डॉक्टर और नर्स उसे मेरे कक्ष में लाये, तो मैंने सरसरी नज़र से उसकी स्वास्थ्य सम्बन्धी जाँच की रिपोर्ट को देखा। सब कुछ सामान्य था—बाह्य शारीरिक एवं जननांगों के परिणाम सन्तोषजनक थे, मुझे बस इसी में दिलचस्पी थी—प्रतिस्थापित भ्रूण को ग्रहण एवं वहन करने की महिला की योग्यता को सुनिश्चित करना, बाक़ी अन्य ज़िम्मेदारियाँ विशेष कर्मचारियों की थीं, ये उनकी झंझटें थी। इस दृष्टि से काम ठीक-ठाक हुआ था, बिना किसी त्रुटि के, कोई समस्या नहीं थी। और वह होती भी कैसे? क्योंकि कारागृहों एवं वन्दी परिसरों में इच्छुक उम्मीदवारों का चुनाव सुयोग्य कर्मचारियों द्वारा किया गया था, जिन्होंने 'बन्दिनी डोनरों' की क्षमता का विशेष अध्ययन किया था, स्वयं 'बन्दिनी डोनर' जिन्होंने भ्रूण ग्रहण करने के लिए सहमति दी थी, सबसे ज़्यादा इस कार्य में दिलचस्पी ले रही थीं, वे हरसम्भव कोशिश कर रही थीं कि कहीं ऐसा कुछ न हो जाये, जिससे सज़ा की अवधि कम करने का यह अविश्वसनीय मौक़ा हाथ से निकल जाये; शिशु को गर्भ में धारण करने और तदुपरान्त उसे जन्म देने के पश्चात् सज़ा के अनेक वर्षों से बचना! हाँ, इस बात की तो किसी ने सपने में भी कल्पना नहीं की थी! ज़ाहिर है, वे हमारे क्लीनिक में आतीं, आशा एवं भय से काँपते, भगवान् को मनाते, कि उनके मार्ग में आये इस सुनहरे अवसर को कोई चीज़ नष्ट न कर दे। क्योंकि कुछ भी हो सकता था—विशेषज्ञ उनका चुनाव तो कर लें, मगर आख़िरी समय में कोई दोष निकालकर उन्हें वापस भेज दें : कहेंगे गर्भधारण के योग्य नहीं है। ज़ाहिर है, औरतें चिन्तित थीं।

नई 'बन्दिनी डोनर' को, जिसे सुरक्षित रूप से कमरे में लाया गया था, दरवाज़े के निकट पड़ी कुर्सी पर बिठाया गया। उसके 'नमस्ते' का संक्षिप्त जवाब देकर मैंने दुबारा उसके काग़ज़ात पर नजर डाली—बन्दिनी का व्यक्तिगत नम्बर और उस बन्दीगृह का कोड नम्बर जहाँ उसे रखा गया

था, उसके उपनाम पर दुबारा नज़र डाली, जिसे मैं तुरन्त भूल गया, शायद लोपातिना उपनाम था उसका। उपनाम अक्सर याद नहीं रहते—या तो वे बड़े कठिन होते हैं, या बड़े आसान। मगर इस महिला का नाम मुझे बड़ा विचित्र प्रतीत हुआ—रुना, क्या नाम है, उसमें कुछ प्राचीन लोक गीतों जैसा था, मैं मुस्कुराया और सिर उठाकर उसकी ओर देखा। पहली चीज़ जिस पर नज़र पड़ी वह यह थी कि इस महिला ने चश्मा पहन रखा था। हो सकता है, 'डोनरों' में एक ऐसी भी हो—चश्मेवाली। उसका चेहरा बुद्धिमानों जैसा था, और मुझे लगा कि क़ैदियोंवाले परिसर में उसे बहुत कष्ट हो रहा था, वहाँ, आमतौर से झगड़ा, हाथापाई, गाली-गलौज़, बाल पकड़कर खींचना वगैरह...और यह तो देखने में भी अच्छी-भली थी, शायद क़ैद होने से पहले और भी अच्छी लगती रही होगी, शायद, ख़ूबसूरत रही हो। मगर उसकी नज़र वैसी नहीं थी, जैसी उस परिस्थिति में पड़ी औरों की होती है—उसकी आँखों में थी एक दोषी की मुस्कुराहट, एक चेतावनी। चश्मे के शीशे के पीछे चमक रही भूरी आँखों में थी एक संयत उत्सुकता। यह अनुमान लगाना मुश्किल न था कि आज़ाद जीवन में वह अपना ध्यान रखती थी, भौंहें बनाती थी, पलकें रँगा करती थी, आईने के सामने बनती-सँवरती थी...मगर ऐसा उसे देखकर प्रतीत होता था, मगर वास्तव में उस पर लगाया गया जुर्म बड़ा संगीन था, यूँ ही तो उसे दस साल की सजा नहीं मिली थी, यूँ ही तो वह 'बन्दिनी डोनर' नहीं बनी थी...और अब निश्चय कर बैठी है 'क्ष-शिशु' को जन्म देने का, जिससे क़ैद की अवधि शीघ्रता से कम हो जाये।

"हाँ, तो औरत," मैंने कहा, "एक बार फिर नियन्त्रित विश्लेषण करने होंगे, दुबारा। तब पता चलेगा कि आगे क्या करना चाहिए।"

वह ख़ामोश रही।

"कोई शिकायत है?"

"आपका क्या मतलब है?" उसने कहा।

"स्वास्थ्य सम्बन्धी। और कुछ भी नहीं।"

"नहीं, फ़िलहाल कुछ भी नहीं।"

"तैयारी पूर्व की अवधि में दिये गये निर्देशों का सख़्ती से पालन करना होगा। इस बारे में तुम्हें बताया जायेगा। अगर सब कुछ ठीक-ठाक रहा, तो प्रतिस्थापना अगले सप्ताह के आरम्भ में की जायेगी, मंगलवार या बुधवार को, उससे पहले नहीं। मतलब यह कि इन्तज़ार करना होगा।"

"और मुझे भी कोई जल्दी नहीं है। यह सब मुझे ज़रा भी परेशान नहीं करता।"

उसके धृष्टतापूर्ण उत्तर से मैं हैरान रह गया। ऐसा तो यहाँ अब तक नहीं हुआ था। चश्मेवाली को ध्यान से देखने के बाद मैं मेज़ के पीछे से उठकर उसके निकट गया। वह भी खड़ी हो गई। और मैंने कठोरता से कहा कि उसे मुझसे इस लहज़े में बात नहीं करनी चाहिए थी।

"अगर जल्दबाज़ीवाली बात नहीं है, और यदि इस बात से तुम्हें कोई परेशानी नहीं होती, तो इतना नाटक करने की क्या ज़रूरत थी? तुम इसी इरादे से तो यहाँ आई हो, तुम जानती थीं कि कहाँ और किसलिए जा रही हो?"

"जानती थी। ज़ाहिर है, जानती थी।"

"तो फिर? मैं तुम से पूछता हूँ, औरत! तुम यहाँ किसलिए आई हो?"

"किसलिए? इसलिए, प्रोफ़ेसर कि आपको देख सकूँ और विश्वास कर सकूँ कि ये सब बच्चों की कहानियाँ नहीं हैं!"

"सिर्फ़ इसीलिए?"

"विश्वास कीजिए–सिर्फ़ इसीलिए। ताकि आपको देख सकूँ और आपके मुँह पर जो सच है वह कह सकूँ।"

"वह कैसे?" अनचाहे ही मेरे मुँह से निकला। और मैंने संक्षेप में और कठोरता से पूछा, "तुमने लिखित सहमति दी है?"

"हाँ, दी है।"

"तुम समझ रही हो न, तुम्हारा बर्ताव अनुबन्ध का उल्लंघन समझा जायेगा और तुम्हें एक और नई सज़ा भुगतनी पड़ेगी?"

"समझती हूँ।"

"क्या इस बात की बड़ी गम्भीर ज़रूरत है?"

"इस वार्तालाप की गम्भीर ज़रूरत है। यह आपके लिए आवश्यक है।"

"मेरे लिए? और हम क्या कोई समस्याएँ सुलझानेवाले हैं?"

"सुलझायेंगे। क्या जनसंख्या का विस्तार प्रकृति एवं ईश्वर की इच्छा से होगा, या शैतान की आज्ञा से, यही समस्या है?"

मैं चुप हो गया, मानो अचानक दीवार से टकरा गया। फिर अपने क्रोध पर मुश्किल से क़ाबू पाते हुए बोला; "इसके लिए मेरे पास मेरा अपना दिमाग़ है मैडम! हमें अलविदा कहना होगा। मुझे अफ़सोस है कि तुम्हारी

सज़ा की अवधि कम नहीं हो सकेगी, उल्टे बढ़ा रही हो तुम उसे। यह सब भूल जाओ।"

"वह, जो मैं कहना चाह रही थी, मैंने कह दिया है।"

"कहीं तुम अपने आपको तीसमार ख़ाँ तो नहीं समझ रही हो? भावनाओं के प्रवाह में बहक तो नहीं रही हो?"

"मैं बन्दिनी डोनर हूँ, आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच," उसने अप्रत्याशित रूप से मुझे अपने नाम से सम्बोधित किया, और वह जो दिन में सैकड़ों बार यन्त्रवत् सुनता था उसके मुख से सुनकर बड़ा अजीब लगा—"मैं केवल बन्दिनी डोनर हूँ—उसने दुहराया—और मुझे मालूम था कि मैं क्या करने जा रही हूँ। मैंने अपना वांछित ध्येय प्राप्त कर लिया है। मैं इसे अपना कर्तव्य समझती थी और मैंने यथासम्भव उसे पूरा कर दिया है। शायद यह वार्तालाप आपके भीतर 'कुछ' जगा दे, 'कुछ' सोचने पर मज़बूर करे। बस, इतना ही।"

"तुम यहाँ मुझे नैतिकता का पाठ मत पढ़ाओ!" मैं गुस्से में पागल हो गया, अच्छी तरह समझते हुए कि, कुछ अप्रत्याशित हो गया है, जो कभी-न-कभी भ्रूणों पर प्रयोग करते समय अवश्यम्भावी था। "तुम्हारे बदले दसियों इच्छुक महिलाएँ मिल जायेंगी!"

"यही सबसे भयानक बात है," वह बोली। "और इसकी ज़िम्मेदारी आपकी अन्तरात्मा पर है। पूरी तरह से, पूरी-की-पूरी आपकी अन्तरात्मा पर।"

"अन्तरात्मा... अन्तरात्मा में बहुत फ़र्क़ होता है!" मैंने उसे टोकते हुए कहा।

"यह तो मैं पहली बार सुन रही हूँ।"

"यह सब दार्शनिक वाद-विवाद उन्हीं लोंगों के लिए छोड़ दें जिनके पास इसके लिए फ़ुरसत है। तुम्हें यहाँ इसलिए नहीं लाया गया है। वापस चली जाओ। हमें तुमसे कोई बात नहीं करनी।"

मैंने घण्टी का बटन दबाया। उसे लेने आ गये।

"अलविदा," वह जाते-जाते बोली।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

दरवाज़ा धड़ाम् से बन्द हो गया। मैं वापस लिखने की मेज़ पर आ गया। दूसरे कामों में, दूसरी उलझनों में फँस गया।

मगर यह अप्रिय घटना दिमाग़ से जाने का नाम ही न ले रही थी।

यह आदेश देना था कि सत्यान्वेषी को हमेशा के लिए वहाँ भेज दिया जाए जहाँ से वह आई थी, बन्दियों की बस्ती में, शायद कोस्त्रोमा के निकट, और वह अपनी मर्ज़ी से चाहे जो करे। मगर मैंने इस विचार को कुछ देर के लिए टाल दिया। कामकाज के बीच, टेलीफ़ोन की घण्टियों के बीच, बातचीत के बीच इस 'बन्दिनी' को अनचाहे ही याद करता रहा, स्वयं को उसे भुलाने पर बाध्य न कर सका, मगर किसी को भी, एक भी कर्मचारी को, उनको भी नहीं, जिनके मैं क़रीब था—मैंने यह नहीं बताया कि मुझे ऐसी किसी चीज़ ने उद्विग्न किया है जो मेरी आत्मा को निरन्तर कचोट रही है।

मेरी हालत विचित्र थी, बड़ी ही विचित्र, मैं अपने आप को भी पहचान न पाया। मैंने निर्णय लिया कि उसकी 'केस' का अच्छी तरह, सूक्ष्मता से अध्ययन करूँगा। कहाँ से आई है वह? असल में वह है कौन? किसलिए सज़ा काट रही है? कौन-सी दण्ड धारा के अन्तर्गत? मानसिक रूप से असन्तुलित व्यक्तियों को तो बन्दियों की बस्तियों में नहीं रखा जा सकता। मगर, यह बेलगाम औरत थी कौन? नैराश्य की यह कैसी आँधी उसे धकेले जा रही थी, कैसे विचार एवं शब्द उसमें कूट-कूट कर भरे थे, अगर उसे मौक़ा दिया जाता है तो वह न जाने और क्या-क्या कहती, मेरी अन्तरात्मा पर कितनी निष्ठुरता से प्रहार करती, जिससे मैं लहूलुहान हो जाता, अपनी पीड़ा के रक्तरंजित निशान छोड़ते हुए घिसटता।

अन्तरात्मा का दावा करनेवालों के पास, सिवाय अपने दृढ़ दृष्टिकोण के और कुछ भी नहीं होता, और इसी में उनकी आक्रामक शक्ति निहित है। अन्तरात्मा के अस्तित्व के लिए, सर्वाधिक आवश्यकता है आन्तरिक स्वतन्त्रता की, वरना उसे किसी पुरानी चीज़ की तरह बाज़ार में ख़रीदा और बेचा जा सकता है। हाँ, और वैसे भी, 'अन्तरात्मा की समझ' से अधिक तुच्छ बात दुनिया में और कौन-सी हो सकती है? और यह 'बन्दिनी' आई थी यहाँ अमेरिका की खोज करने! अन्तरात्मा की बात करने के लिए सिर्फ़ यही बाक़ी बची थी—अपराधी, सज़ायाफ़्ता मुजरिम?

मगर यह सब सोचते-सोचते मुझे अपने आपसे घृणा होने लगी। मैं अपने से पूछने लगा तुम कौन-सी सफ़ाई देना चाहते हो, किसके सामने और किसलिए? कमज़ोर साबित हुए तुम। और यह तुम उसके बारे में लगातार सोचे क्यों जा रहे हो?

मैंने नये सिरे से उसकी फ़ाइल खोली। लोपातिना रुना फेदुलोव्ना को दफ़ा 158 के अन्तर्गत—यानी सोवियत विरोधी सामग्री रखने और बाँटने के

जुर्म में—सज़ा हुई थी...हाँ, तब सब कुछ स्पष्ट है, उड़ने के ढंग से ही पता चल जाता है कि यह पंछी कैसा है? ये लोग हमेशा क्यों कुछ करने पर उतारू होते हैं, हमेशा विरोध ही प्रकट करेंगे, अपने आप के बारे में बताने के लिए, इस बार भी अच्छी जगह ढूँढ़ी उसने नाक घुसेड़ने की...! पति नहीं है, तलाकशुदा है। ऐसी फूहड़ औरत के साथ रह भी कौन सकता है? कोई अचरज की बात नहीं है।

फिर मैं अन्य बातों में व्यस्त हो गया, और मैं देर तक दफ़्तर में ही रुक गया जिससे घर पर वे फ़ाइलें न ले जानी पड़े जिन्हें केवल दफ़्तर की अलमारियों में ही रखा जाता था। रुना लोपातिना की फ़ाइल आख़िर तक पढ़ गया, उसमें लिखा एक-एक शब्द पढ़ लिया। अन्त में मैं किस निष्कर्ष पर पहुँचा? सामान्य तौर से, यह एक अजीब-सी औरत थी, जीवन के प्रति एक निश्चित दृष्टिकोण रखनेवाली; ऐसे व्यक्ति उग्रवादी संगठनों में, नैतिक, राजनैतिक, शासन के विरोधी पक्ष में हमेशा देखे जा सकते हैं। उनके बीच हर तरह के लोग होते हैं। ऐसे भी होते हैं जो अपनी कल्पना में स्वयं को मसीहा मान बैठते हैं और उद्देश्य की ख़ातिर अपने अनुयायियों की भी बलि चढ़ा देते हैं...। मगर इस सब में रुना कहाँ से आ गई? सारी बातों पर ग़ौर करने से यह स्पष्ट होता था कि वह एकाकी और आदर्शवादी है। और फिर, उसे जानता कौन है? उसे सिर्फ़ एक बार देखकर, उसके मुख से केवल कुछ शब्द सुनकर मैं उसके बारे में कोई फ़ैसला कैसे कर सकता हूँ। हाँ, वह, बेशक, एक जटिल व्यक्तित्ववाली है, दुर्भाग्य की मारी, पहले पढ़ाया करती थी, फिर डॉक्यूमेण्ट्री सिनेमा के क्षेत्र में आ गई—सोवियत स्कूलों से सम्बन्धित डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्मों की पटकथाएँ लिखा करती, और स्कूल की समस्याएँ तो हमारे यहाँ हमेशा बड़ी जटिल ही हुआ करती थीं।

अचानक मुझे वावा की, वालेरिया वालेन्तिनोव्ना की, याद आ गई, जिसे मैं कभी भुला नहीं पाया था; काश उसे मालूम होता कि उसका होशियार विद्यार्थी आजकल किस कार्य में मग्न है! मगर, ये ख़याल तो यूँ ही आ गये। जहाँ तक रुना का सम्बन्ध है, तो सारी बातों पर ग़ौर करने से स्पष्ट होता था कि उस पर अपने भाई लोपातिन ईगोर फेदुलोविच की वजह से मुक़दमा चलाया गया था। वह तो व्यावसायिक सिनेमावाला था, सुप्रसिद्ध फ़िल्म इंस्टट्यूट से निकला था, और ज़ाहिर था, बग़ैर उसके प्रभाव एवं सहायता के रुना भी स्कूलों से जुड़े विषयों पर फ़िल्में नहीं बना सकती थी। कुछ और काग़ज़ात से स्पष्ट हुआ कि भूतपूर्व शिक्षिका रुना लोपातिना

जो गोर्की सिने स्टूडियो के शौकिया सिनेकर्मियों के विभाग से सम्बद्ध थी, सिनेप्रेमियों के बीच सैद्धान्तिक दृष्टि से सन्देहास्पद विचारों के प्रचार की दोषी पाई गई। ऐसे गवाह भी थे जिन्होंने इस बात की पुष्टि की कि वह, रुना, कला में पूर्वाग्रहवाद की समर्थक थी, ऐसे विषयों पर डॉक्यूमेण्ट्री बनाने के पक्ष में थी, जो सोवियत लोगों को और उनकी जीवन-प्रणाली को नकारात्मक ढंग से प्रस्तुत करती थीं। यह थी आरोप की प्रस्तावना।

इस अपराध में प्रमुख दोषी था उसका भाई ईगोर लोपातिन, जिस पर यह आरोप था कि सरकारी सिने ऑपरेटर होते हुए उसने सरकारी साधनों एवं मशीनरी का प्रयोग आपराधिक कार्यों के लिए किया—ऐसी डॉक्यूमेण्ट्री फ़िल्में बनाई जो सोवियत जीवन की बदनामी करनेवाली थीं, उसकी झूठी तस्वीर पेश करती थीं, सोवियत समाज एवं शासन प्रणाली की निन्दा करती थीं। ऐसा उसने पश्चिमी समाज को ग़लत जानकारी देने के उद्देश्य से किया। इस बात को ज़ोर देकर कहा गया था कि "आरोपी इस आपराधिक कार्य में किसी लाभ की आशा से ही लिप्त था, वह सोवियत राज्य की बदनामी करनेवाली फ़िल्में पैसों के लिए पश्चिमी देशों को बेचा करता था। वहाँ, विदेश में, जहाँ सिनेमाघरों में एवं टी.वी. चैनलों पर इन फ़िल्मों का प्रदर्शन किया जाता था, हमारे विशेषाधिकारियों ने इन फ़िल्मों के स्रोत का पता लगाया।"

ऐसी स्थिति में कहा जाता है कि वही पुराना गीत, वही पुरानी रागिनी; न जाने यह सब वास्तव में हुआ भी या नहीं, मगर हुआ चाहे जो भी हो दोष मढ़ा गया रुना लोपातिना के सिर पर। उसे भाई की प्रत्यक्ष रूप से मदद करने का दोषी पाया गया—वह उसे "बग़ैर इज़ाज़त खींची गई रीलें" देता, और वह उन्हें अपनी घनिष्ठ सहेली के घर में छिपा देती। इन कड़ियों का पता लगाया गया। कोई सुराग़ पाकर वहाँ पहुँचा। ईगोर को बन्दी बना लिया गया और जब रुना अपनी सहेली के फ़्लैट की ओर भागी, उसे सावधान करने के लिए तो यहाँ सम्बन्धित अधिकारी पहले से ही उसका इन्तज़ार कर रहे थे। यानी उसे रँगे हाथों पकड़ा गया। और इसके बाद जो हुआ वह अप्रत्याशित था—मुक़दमे के दौरान रुना ने भाई के भाग्य को सम्हालने की कोशिश की। उसने मुख्य आरोप का दोष अपने सिर पर ले लिया, यह घोषणा करके कि यह उसका विचार था—सोवियत लोगों के जीवन एवं जीवन प्रणाली की फ़िल्म बनाना, उसी ने इस सम्बन्ध में भाई को निर्देश दिये थे, कौन-सी तस्वीरें लेनी हैं, कैसे लेनी हैं, उसने स्वयं ये

फ़िल्में विदेशी संवाददाताओं को सौंपी थीं—धन के बदले में, और वास्तव में उसका छोटा भाई सिर्फ़ उसके विचारों को मूर्त रूप देता था।

तो ऐसा था यह क़िस्सा। एक और दिलचस्प बात : मुक़दमे के दौरान रूना के अमेरिकी संवाददाता से घनिष्ठ सम्बन्ध होने का आरोप लगाया गया जिसने स्वदेश वापस लौटने के बाद ही एक लेख लिखा था, जिसमें अपनी प्रियतमा के बारे में बड़े ऊँचे विचार लिखे थे, एवं सोवियत समाज के बारे में विशेष तौर से शत्रुतापूर्ण विचार प्रकट किये थे, यह मानो उस समय तक गिरफ़्तार हो चुकी प्रेमिका का प्रतिशोध लेने जैसा कार्य था। रुना इस बात से इनकार करती रही कि वह किसी अमेरिकी संवाददाता की प्रेमिका थी, उसने कहा कि वह उसे सिर्फ़ रूसी पढ़ाया करती थी...यानी, रसभरी नहीं बटोर रही थी। कौन जानता है, कि वहाँ क्या-क्या हुआ था, मगर हुआ चाहे जो हो, उसका अन्त रुना के लिए बड़ा दर्दनाक था...।

उस दिन मैं दफ़्तर से काफ़ी देर से निकला। कुछ और काम भी थे, और रुना लोपातिना के विगत से अच्छी तरह परिचित होने की विचित्र इच्छा ने भी मुझे वहाँ रोके रखा।

दरवाज़े के पास चौकीदार को आदत के मुताबिक़ सिर हिलाकार मैं उस्पेन्स्काया मार्ग की वृक्षवीथि में साँझ के झुटपुटे में बाहर निकला। मॉस्को जाती हुई कारों के काफ़िले में शामिल हो गया।

यहाँ के स्थान सर्दियों में भी बड़े ख़ूबसूरत प्रतीत होते हैं, जब जंगल और टीले बर्फ़ से ढँके होते हैं, जैसे आप कोई सपना देख रहे हों, और गर्मियों में, जब हरियाली अपनी चरम सीमा पर होती है, जब जंगल के पीछे केवल कुछ क्षणों के लिए एक अद्‌भुत नज़ारा दिखाई देता है—मॉस्को नदी का चमकता मोड़। जल, आकाश, और वन का नशीला जादू; मैं हमेशा कोशिश करता कि यह पल खो न दूँ, खिड़की के शीशे से उसे देखकर आगे बढ़ जाता, पीछे छूट गये दृश्य को नज़रों में समाते हुए।

यह विवरण मैं यूँ ही नहीं दे रहा हूँ। कितनी बार, अनगिनत बार मैं इन जगहों से गुज़रा हूँ कभी इधर-से-उधर, कभी उधर-से-इधर, कौन जानता था कि मेरा जीवन रास्ते के इन दृश्यों से ख़ून के रिश्ते से जुड़ा होगा?...और एक समय ऐसा भी आयेगा जब इस रास्ते से गुज़रने का साहस न बटोर पाऊँगा, एक दूसरा मोड़ लेकर आगे बढ़ूँगा...।

मगर इस बार मॉस्को के निकट पहुँचते हुए, मैं सोच रहा था कि क्या मुझे 'डोनर' बनने की उम्मीदवार, उस ज़िद्‌दी लड़की को, अगले दिन फिर

से क्लीनिक में लाने की आज्ञा देनी चाहिए थी। हाँ, मैंने ऐसी आज्ञा दे दी। मगर, मैंने ऐसा क्यों किया? और, मैं उससे कहूँगा क्या? क्या यह स्पष्ट नहीं है, कि जब उसने 'डोनर' बनने की सहमति दी थी, तब उसका उद्देश्य बिलकुल अलग था, हो सकता है, कि वह, यह रुना, विक्षिप्त हो, और यह भी हो सकता है कि उसके भीतर काल्पनिक न्याय के, विशिष्ट विवेक के और भले मानसों की दुनिया के अनेक भले ख़याल हिलोरें ले रहे हो। उसे परेशानी क्या है? उसे तो गर्दन पकड़ कर और दूर धकेल देना चाहिए, वह अपनी बन्दियों की बस्ती में टूट ही जानी चाहिए। किसकी अन्तरात्मा जगाने चली है, और वह खुद क्या है? "और तुम खुद क्या हो? और तुम?" —फ़ौरन स्वयं से मैं पूछ बैठा—निशाना लगाने के लिए वही मिली थी! सज़ायाफ़्ता, अधिकारों से वंचित 'बन्दिनी डोनर' और तुम उस पर तलवार तानने लगे! शाबाश, जवाब नहीं है, शाबाश!

दो बार मोड़ पर ब्रेक ही टूटते-टूटते बचा, पहिये इतनी कर्कशता से चीख़े कि पैदल चलते लोग किनारों पर हट गये, स्टीयरिंग ह्वील पकड़े-पकड़े सोच में डूब गया था, मेरा पीछा कर रहे ख़यालों को मन से निकाल न सका था। मगर, मैंने इस रुना को सिर्फ़ एक ही बार तो देखा था, फिर ऐसी क्या बात थी जो मुझे खाये जा रही थी? मुझे याद आया कि कैसे मैं मेज़ के पीछे से उठकर उसके निकट गया था, कैसे वह भी कुर्सी से उठकर खड़ी हो गई थी। और वह खड़ी थी मेरे सामने—डोनर, ख़ास पोशाक पहने, जो उसे विशेष रूप से पहनाई गई थी, शहर से बाहर स्थित क्लीनिक में, प्रोफ़ेसर की आँखों के सामने जाने के लिए—बोरे जैसा ढीला-ढाला भूरा ब्लाउज़ और लम्बी स्कर्ट जो न जाने कहाँ सिली थी; फूहड़ जूते। कभी, जब चीज़ें उसकी पसन्द और ख़ूबसूरती के अनुरूप हुआ करती थीं, वह सुन्दर दिखाई देती होगी। मैं उसकी आँखों के बारे में सोचने लगा, जो उत्तेजना, दृढ़ता और निडरता से मेरी ओर देख रही थीं। आँखें आत्मा का दर्पण कहलाती हैं, मगर, यह सच नहीं है। आँखें ही वास्तविक आत्मा हैं, उसका जीवन्त प्रतिरूप हैं। लड़कों जैसे नुकीले, पतले कन्धे अनचाहे ही सिकुड़ गये थे, और लचीले, पतले-पतले हाथों को बाँधे हुए वह खड़ी थी। उसे तो तन कर चलना चाहिए, उसे तो सहज होना चाहिए, उसे तो मुस्कुराना चाहिए, भीड़-भाड़ में शामिल होकर सड़क पर चलना चाहिए। विरोध प्रकट करने के लिए, असहमति दर्शाने के लिए वह नहीं बनी है, और मोटे तौर से कहूँ तो इस युग के लिए उसका निर्माण नहीं हुआ है। उसे तो पिछली शताब्दी की

साज-सज्जा चाहिए! कल्पना कर सकते हैं तब वह कैसी लगती...मगर, साथ ही, वह कैसी बकवास कर रही थी! विज्ञान को विवेक की सहायता से रोकना चाहती है?

हमेशा ऐसा ही होता है, आदमी हर जगह अपनी अन्तरात्मा, अपने विवेक के साथ घुस जाता है; चाहे कुछ भी हो जाये, उसे जवाब देना ही पड़ेगा—यह अन्तरात्मा की आवाज़ पर हुआ है या अन्तरात्मा को कुचल कर! और हर कोई अपने-अपने तरीक़े से इस अन्तरात्मा को अपने सीने से लगाये रखता है। और हर कोई इस पर गर्व करता है। और हर कोई भगवान् का नाम लेकर उसके बारे में घोषणा करता है!...मगर सिर्फ़ एक अन्तरात्मा के बल पर कितनी दूर जा सकते हो! बिरला ही कोई होगा जो ईश्वर के एवं उसकी अन्तरात्मा के विरुद्ध खड़ा होगा, जिसे उसी ने हमें बाँटा है और हमारे भीतर उसे समेटे रखा है। बिरला ही कोई होगा जो उसे पथभ्रष्ट कर सके, जब उसके सम्पूर्ण एकाधिकार से किसी वस्तु को छीनना हो—जैसे जनन पर उसके सम्पूर्ण एकाधिकार को। मृत्यु पर उसका एकाधिकार काफ़ी है, यह तो उससे कोई नहीं छीन रहा। और जहाँ तक जन्म का प्रश्न है, तो इस बात में मैं उसका प्रतिद्वन्द्वी बनकर खड़ा हूँ और मुझे अन्तरात्मा से कुछ भी लेना-देना नहीं है...। क्या रुना यह बात समझती है, नहीं, वह इसे नहीं समझ सकती। इसीलिए तो नायिका बन गई है, अन्तरात्मा के बारे में चिल्लानेवाली...बेहतर है कि अब वह अपने बारे में सोचे, कहाँ जायेगी, क्या होगा उसके साथ अब...

उस रात अपने बौद्धिक बँगले में, जो स्टालिन ने अपनी अणु बम वाली टीम को उपहारस्वरूप प्रदान किये थे, और जिस 'केक' का एक बड़ा टुकड़ा मुझे भी मिला था—मुझे प्रतीत हुआ कि यहाँ मेरे लिए कोई जगह नहीं है। मोटी-मोटी दीवारें, विशाल खिड़कियाँ, ऊँची-ऊँची छतें। मैं यहाँ किसलिए हूँ? और वैसे, मैं हूँ किसलिए, जी क्यों रहा हूँ मैं? उस रात मेरे भीतर परित्यक्त शिशु बोल रहा था। मैं अनचाहा हूँ, मैं 'क्ष-शिशु' हूँ, मैं मानवजाति का काला छिद्र हूँ। मुझसे इस दुनिया में किसे सुख प्राप्त हुआ है, मुझसे मिलकर किसने गर्मजोशी से जीवन को धन्यवाद दिया है, किस औरत ने? येव्गोनिया ने, जो बिना पीछे देखे भाग गई? मेरे साथ रहते-रहते वह अद्‌भुत कलाकार, क्या जान गई थी? ठण्डा दिमाग़, संवेदनहीनता, क्रूरता, गर्भपात, जो पति ने अपने हाथ से किये थे? हाँ, और वे औरतें भी, जो संयोगवश जीवन की राह में टकरा गई थीं, मुश्किल से ही उन मुलाक़ातों

को सुखद अनुभूति के रूप में याद रख पाई होंगी। मुझसे सम्बन्धित हर चीज़ उजाड़, बंजर, प्रसन्नताहीन सिद्ध हुई थी...

यहाँ से मेरे विचार फिर उसके इर्द-गिर्द घूमने लगे, आज की उस 'बन्दिनी डोनर' के, रुना के, उस औरत के जिसका नाम इतने प्राचीन काल से चला आया था। मगर मैं उसके बारे में क्यों सोच रहा हूँ? और इस समय उस पर क्या बीत रही होगी? शायद तड़प रही होगी? हो सकता है उसने अपने बालों में कंघी भी की हो, उन्हें खोल दिया हो, जिससे वे उन उदास विचारों से मुक्ति पा सकें, जो उसे पीड़ा दे रहे थे, उसके दिमाग़ में भर गये थे। शायद जब वह आज़ाद थी, तब दूसरे तरीक़े से बाल बनाया करती थी। तब उसके बाल नर्म और घुँघराले थे, और तब सिर के ऊपर उनका जूड़ा भी नहीं बनाना पड़ता था, जैसा कि बन्दी बस्तियों में किया जाता है। प्रोफ़ेसर की 'आँखें खोलने का' इरादा करके उसने स्वयं को बदतर स्थिति में पहुँचा दिया था, अपना जीवन और अधिक जटिल बना लिया था। कहीं वह इसके लिए तैयार तो नहीं थी? और वह हमारी आज की मुलाक़ात के बारे में क्या सोच रही होगी? शायद वह कुछ हद तक सही थी, मगर केवल अन्तरात्मा के बल पर, सिर्फ़ नेक इरादों से तो दुनिया को सन्तुष्ट नहीं किया जा सकता, उसका पेट नहीं भरा जा सकता, आदमी की वनचरों जैसी प्रवृत्ति को बदला नहीं जा सकता, जो सूरज तले अधिकाधिक स्थान हड़पने में लगा है; ऐसी हवस के फलस्वरूप जल्दी ही हरेक को सूरज भी नसीब नहीं होगा, मगर इससे भी भयंकर बात यह होगी कि वह, यानी आदमी, अपने समान व्यक्तियों पर अधिकाधिक अतृप्तता से अधिकार जता रहा है। इसीलिए आवश्यकता है नये लोगों की 'क्ष-पीढ़ी' की...। और वह, उनके रास्ते में आना चाहती है, उन्हें जीवन में, सत्ता में, युद्ध में आने से रोकना चाहती है। समझ में आता है, मगर ऐसी कोई शक्ति नहीं है, जिससे होनी को अनहोनी में बदला जा सके...

इसके बाद मैं अक्सर यूँही स्वयं से पूछ बैठता : उस शाम मैं अकेला रहा ही क्यों? क्यों उस दिन कोई मीटिंग, कोई क्रॉन्फ्रेंस, कोई मुलाक़ात, या अन्य कोई सामाजिक-राजनैतिक झंझट नहीं हुआ, जिसके कारण दूसरे दिनों में जीना मुश्किल हो जाता है...

मैं तड़पता रहा उस रात, और सो न पाया। उस बन्दिनी, रुना ने, मुझे लज्जित कर दिया था, रँगे हाथों मुझे अचानक दबोच लिया था—वैसे, मेरे चारों ओर स्थित किसी ने भी मेरे कार्य में सन्देह नहीं व्यक्त किया था, या शायद यह सिर्फ़ मेरा ख़याल था।

मगर उसने स्वयं को भी तो नहीं बख्शा, प्रकट रूप से अपना बलिदान दे दिया! कैसे सम्भव है? वह मुझे शिकारी और पब्लिक प्रोसेक्यूटर की भूमिका में क्यों देखना चाहती है? क्या वास्तव में सिर्फ़ इसीलिए कि मेरे मुँह पर मुझे दोषी ठहरा सके, क्या उसने अन्य कई वर्षों के लिए अपनी स्वतन्त्रता को गिरवी रखने का निश्चय कर लिया है? हालाँकि उसकी स्थिति भी समझ में आती है—अपनी स्थिति, अपने सत्य को प्रकट करने का निश्चय करने के पश्चात् उसके पास केवल यही तो एकमात्र उपाय रह गया था। खुल्लमखुल्ला, सार्वजनिक रूप से कहने की उसके पास कोई संभावना नहीं है—न तो सड़क पर, न किसी सभा में, और न ही विदेशी सम्वाददाताओं के सम्मुख। बन्दी बस्ती में उसे चिन दिया गया है...और अब, उस पर मँडरा रही है नई सजा...यह तो अच्छा हुआ कि हम दोनों के बीच जो कुछ हुआ उसका ज्ञान किसी को नहीं है, यह भी अच्छा ही हुआ कि मैंने किसी से एक शब्द भी नहीं कहा, यह भी ठीक रहा कि मैंने उसे दुबारा बुलाने की आज्ञा दे दी। हाँ कल, क़रीब दो बजे दिन में उसे यहाँ लाया जायेगा। अभी भी सब कुछ खो नहीं गया है, सारे रास्ते बन्द नहीं हुए हैं। हो सकता है, नये मुक़दमे से उसे बचाना सम्भव हो सके।

मैं इन्हीं विचारों में अधिकाधिक खोता गया, उसकी सुरक्षा करने की, उसे सज़ा से बचाने की इच्छा मज़बूत होती गई, और अपने इस निश्चय में मैंने कुछ ऐसा पाया, जिसे मेरी आत्मा ने पहली बार महसूस किया था, मैंने बिना जाने स्वयं को ढूँढ़ लिया था। यह मुझे हुआ क्या था? एक औरत को समझने और उसकी रक्षा करने के उद्देश्य से प्रेरित होकर, मैं धीरे-धीरे इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अगर रुना लोपातिना मुझे चुनौती दे गई है, बदले में अपने लिए यन्त्रणा लेकर, तो क्या यह ऊपरवाले की आज्ञा से हुआ है, कहीं यह उस परम कृपालु का स्वयं की रक्षा करने का प्रतीक तो नहीं?... पहले मैं समझ नहीं पाया था कि परम कृपालुता क्या होती है, वह किसमें निहित है और किस प्रकार प्रकट होती है, और सिर्फ़ अभी अचानक समझ गया था : यदि मैं वह हूँ जो आत्मसन्तुष्टि के मद में भ्रूणों में गड़बड़ी करके, स्वयं ईश्वर को किनारे धकेल रहा हूँ, तो क्या रुना उसकी दूत नहीं हो सकती, उसकी महानता एवं कृपा का प्रतीक नहीं हो सकती?...कहीं यह मुझमें छिपी भलमनसाहत की परीक्षा तो नहीं?

ऐसे विचारों से मुझे दुःख भी हुआ और भला भी लगा। मैंने अपने हृदय में उसके लिए आभार की एक लहर महसूस की, इस बन्दिनी डोनर

के लिए, जिसने मुझे आँखें खोलने पर मजबूर किया था, अपने आप पर सन्देह करने के लिए बाध्य किया था, मेरी धृष्टता एवं ज़िद्दीपन को महसूस कराया था। मैंने अनुभव किया कि मैं उसके सामने कुछ और दिखाई देना चाहता हूँ। कितने अफ़सोस की बात है कि फ़ौरन रुना को फ़ोन नहीं कर सकता था, वहाँ, उस विशेष अलग-थलग कमरे में, जहाँ उसको अस्थायी रूप से रखा गया था। कितना कुछ मैं उससे कहना चाहता था, कितना कुछ उससे सुनना चाहता था। काश, इतनी रात को कार में बैठकर उस जगह जा सकता और उसे ढूँढ़कर उससे बातें करता! मगर यह ख़याल भी सपना ही बन कर रह गया। मेरे बस में सिर्फ़ एक ही चीज़ थी, कल की मुलाक़ात का इन्तज़ार करना, अपनी कल्पना में मैं इस मुलाक़ात की तस्वीर बनाता रहा। जब रुना लाई जायेगी और मेरे कक्ष में विचार-विमर्श के लिए छोड़ दी जायेगी, मैं उसके निकट जाऊँगा और हाथ मिलाकर उसका अभिवादन करूँगा।

"माफ़ करना, प्लीज़, रुना, हमें अपनी बातचीत ज़ारी रखनी होगी। मैं आपके विचारों को पूरी संजीदगी से सुनने के लिए तैयार हूँ, आपसे भी अपनी बात सुनने की विनती करूँगा। मेरी क़ैफियत भी तो सुनिये।"

"बहुत अच्छा!" वह जवाब देगी और खुले दिल से स्वीकार करेगी और, प्रोफ़ेसर साहब, मैं सोचती थी कि अब आपको फिर कभी देख न पाऊँगी। मैं तो यह अपेक्षा कर रही थी कि सुबह मुझे वापस अपने खूँटे से बाँध देंगे, धकेलेंगे, कलंकिता की तरह, वापस बस्ती में भेज देंगे, मुझ पर मुक़दमा चलायेंगे और, और आगे साइबेरिया या अल्ताई भेज देंगे, मगर अचानक चौकीदार आकर कहता है कि मुझे फिर से प्रोफ़ेसर आन्द्रेइ आन्द्रेयेविच क्रील्त्सोव के पास बुलाया गया है। और, लीजिए, मैं हाज़िर हूँ..."

"हे पवित्र ईश्वर! यह कैसी बेवकूफ़ी मुझे आज सूझ रही है?" मैं बदहवासी से फुसफुसाया। "क्या बचपना है, मुझे सँभालो, मैं तो मानो फिर से बच्चा बन गया!"

हाँ, शायद, यही सच है कि महानता और मूर्खता के बीच सिर्फ़ एक ही क़दम का फ़ासला है; मगर ठीक है, मुझे बेवक़ूफ ही रहने दो, मैं निर्मल मन से कुछ भी करने को तैयार हूँ, ताकि सब कुछ ठीक वैसा ही हो जाये, जैसा उस रात मैंने सपने में देखा था। अगर सब कुछ ऐसा ही रहता तो भी वांछित मूर्खता के इन्तज़ार में कितना सुख है!

मेरे मन को अचानक व्याप्त करनेवाली इन तरंगों में, क्षितिज पर उमड़ आये काले बादल के समान एक पीड़ादायक सन्देह ने जन्म लिया—क्या वास्तव में, मुझे अधिकार था बन्दिनियों के गर्भ में 'क्ष-पीढ़ी' के निर्माण करने का? मेरे इस कार्य का समर्थन कौन से महान् उद्देश्य कर सकते थे? मैं अपने आपसे झूठ नहीं बोलूँगा, इस प्रकार की शंकाएँ मेरे मन में सदा से छिपी थीं, मगर न तो मैंने, न ही मेरे साथियों ने उन्हें कभी प्रकट किया। विज्ञान की उपलब्धियों ने हमें न केवल अपनी नज़र में, अपितु समाज की भी नजर में ऊँचा उठाया था। मगर यह ढूँढ़ने के लिए कि विज्ञान और अन्तःकरण एक-दूसरे से कितने विपरीत हैं, और विज्ञान तथा अपराध एक-दूसरे पर कितना निर्भर करते हैं, बीसवीं शताब्दी में ज़्यादा दूर जाने की ज़रूरत नहीं है।

और वह घड़ी आ ही गई जब मेरी अन्तरात्मा बोल पड़ी, जिसे उस क़ैदी औरत ने झकझोरकर जगा दिया था। अज्ञात माता-पिता की अज्ञात सन्तान का निर्माण, पृथ्वी पर 'डोनरों' की सहायता से उनका आगमन कितना अमानवीय है इसे सोचने के लिए मुझे रुना ने मज़बूर किया था।

उसे मेरे पास कौन-सी शक्ति लाई थी, मृत्यु की दहलीज तक मुझे उससे किस चीज़ ने बाँधे रखा, यह तो भाग्य ही जाने...मैं न्याय नहीं कर सकता...

उस रात चरम क्षण आ पहुँचा। मैं उस स्त्री से क्षमा माँगने के लिए तैयार था, जिसने अपने अद्‌भुत आत्मत्याग से, अनबूझे व्यवहार से मुझे चौंका दिया था। मैं उसके सम्मुख घुटनों के बल झुकने को तैयार था, जिससे उस बुराई को नकार दूँ, जो मैंने मानव जाति को दी थी। और यदि वह मेरा प्रेम स्वीकार करती और अपना प्रेम भी प्रदर्शित करती, तो मैं उसका हाथ माँग लेता...हाँ, हाँ!

मैं कल्पना भी न कर पाया कि यह कैसे सम्भव होता, क्योंकि उसे तो अनेक वर्षों तक कारावास में रहना है, मगर, यदि वह 'हाँ' कहती, तो मैं यह भी करता, कि उसके साथ कहीं भाग जाता—जंगल में, पहाड़ों में, सागर के पार, जहाँ सम्भव हो, सिर्फ़ इसलिए कि हम साथ रह सकें...और नया जीवन शुरू करें, चाहे बंजारों जैसा ही क्यों न हो, मेरे लिए यह होगा मेरे पापी विगत का प्रायश्चित्त...।

और, एक बार इस बारे में सोचने के बाद मैं अपने आपको रोक न सका। मेरी कल्पना की कोई सीमा न थी। मेरे भीतर क्रान्ति हो चुकी थी,

निर्मम, पीछे मुड़कर न देखनेवाली। और सपनों में खो गया मैं। मेरा नया जीवन कल से ही आरम्भ होना चाहिए उस क्षण से जब रुना को मेरे पास लाया जायेगा और हम अकेले रह जायेंगे। मैं उसे समझाने की कोशिश करूँगा कि मेरे भीतर क्या कुछ हो चुका है, उस उथल-पुथल के बारे में बताऊँगा जिसे मैंने महसूस किया है, विश्वास दिलाऊँगा उसे, कि मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। बस, वह सिर्फ़ 'हाँ' कह दे, सिर्फ़ मेरे भीतर 'उसे देख ले जिससे वह प्यार कर सकेगी। बस, वह सिर्फ़ मेरी ईमानदारी पर भरोसा करे, सिर्फ़ यही विश्वास कर ले कि हमारा एक साथ रहना बेहद ज़रूरी है...

रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी, दीवान पर लेटे-लेटे ही मेरी आँख लग गई। सुबह आकाश में फट पड़ा तूफ़ान सुनाई दिया। छत पर बिजली कड़क रही थी, खिड़कियों के बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। आँखें खोले बिना भी मैं देख रहा था कि प्रकृति में क्या हो रहा है। मानो इस तूफ़ान का निर्माण मैंने ही किया हो। मैंने आधे आकाश को आलोकित करती बिजलियों को देखा, मैंने देखा, कैसे पेड़ों की शाखाएँ बारिश के थपेड़ों से झुक गई हैं, मैंने देखा, कैसे पक्षियों का भयभीत झुण्ड तूफ़ानी परिसर में भटक रहा है, भागने का मार्ग खोजते हुए...।

और मैं स्वयं भी उसी तूफ़ानी दिगन्त में उड़ रहा था। मैं रोशनदान से होकर खिड़की से बाहर की ओर उड़ा, छतों के ऊपर उठ गया, और रास्तों पर और पार्क के ऊपर से उड़ता रहा। आँखें मूँद कर उड़ता रहा, अन्दाज़ से ही बादलों और बिजलियों के मध्य से गुज़रता रहा—कहीं तो धरती पर था वह कारागार जहाँ इस तूफ़ान के शोर को वह भी सुन रही होगी, वह औरत जिसने 'डोनर' होने से इन्कार कर दिया था... "रुना! रुना!"—मैं चीख़ा "यह मैं हूँ! मैं तुम्हें ढूँढ़ रहा हूँ!" उस तूफ़ानी घड़ी में, जब मैं आसमान से उसे पुकार रहा था, वह क्या सोच रही होगी?...

अगले दिन मुझे काफ़ी प्रयत्न करना पड़ा अपने आप पर नियन्त्रण रखने में यह दिखाने के लिए कि मैं काम कर रहा हूँ जिससे हमारे क्लीनिक का कामकाज यथावत् चलता रहे। और सब कुछ हमेशा की तरह चलता रहा। और मेरा कोई भी सहयोगी, कोई भी व्यक्ति यह न जान सका कि अब मैं वह नहीं हूँ...।

मैं अपने पल का इन्तज़ार कर रहा था। समय बड़े दर्दनाक ढंग से धीमे-धीमे सरक रहा था।

मैं सबकी आँखों के सामने था, मैं हमेशा की तरह अपना कर्तव्य निभा रहा था। मगर अब यह 'मैं' नहीं था...

लम्बा खिंच गया समय पीड़ादायक प्रतीत हो रहा था।

वह तय समय निकट आ रहा था। मैं हर पल रुना का इन्तज़ार कर रहा था...अभी, अभी...मगर उसे ला ही नहीं रहे थे।

और पन्द्रह मिनट बीत गये। मगर—नहीं। मैंने आज्ञा दी कि टेलीफ़ोन करके मुझे बताया जाये कि कार उसे लेकर कब निकली थी...सेक्रेटरी ने फ़ोन नम्बर मिलाया, उसे बताया गया कि कार ठीक समय पर ही निकली थी।

मैं परेशान होने लगा। क्या हुआ होगा? और अगर अचानक रास्ते पर दुर्घटना हुई हो तो?

घड़ी की सुइयाँ तीन के अंक के निकट आ रही थीं। कब आयेगी? मैं खुद ही फ़ोन करता हूँ। मुझसे कहा जाता है कि कार के साथ कोई गड़बड़ हुई है। इसी समय सेक्रेटरी भागकर अन्दर आती है। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

"क्या हुआ है?" मैं चीख़ता हूँ।

"मरीज़ मर गई!"

"कैसे मर गई? कौन-सी मरीज़?"

"वही जिसका हम इन्तज़ार कर रहे थे। अभी-अभी रास्ते से टेलीफ़ोन किया है।"

"दुर्घटना?"...

"नहीं, दुर्घटना नहीं। वह भाग रही थी..."

"भाग रही थी?... और फिर?..."

"उसे मार डाला।"

"समझ में नहीं आ रहा!"

"कह रहे थे, अभी आकर बतायेंगे...

हाँ, कल दी गई मेरी आज्ञानुसार बन्दिनी लोपातिना आर.एफ : नम्बर ए-6-87 को कार में लाया जा रहा था ताकि वह क्लीनिक में ठीक वक़्त पर पहुँच सके।

शहर के बाहर, उस जगह, जहाँ रास्ता मॉस्को नदी के किनारे-किनारे जंगल से होते हुए गुज़रता है, डोनर शिकायत करने लगी कि उसका जी मिचल रहा है, और वह आगे नहीं जा सकती, वह प्रार्थना करने लगी और

निर्मम, पीछे मुड़कर न देखनेवाली। और सपनों में खो गया मैं। मेरा नया जीवन कल से ही आरम्भ होना चाहिए उस क्षण से जब रुना को मेरे पास लाया जायेगा और हम अकेले रह जायेंगे। मैं उसे समझाने की कोशिश करूँगा कि मेरे भीतर क्या कुछ हो चुका है, उस उथल-पुथल के बारे में बताऊँगा जिसे मैंने महसूस किया है, विश्वास दिलाऊँगा उसे, कि मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। बस, वह सिर्फ़ 'हाँ' कह दे, सिर्फ़ मेरे भीतर 'उसे देख ले जिससे वह प्यार कर सकेगी। बस, वह सिर्फ़ मेरी ईमानदारी पर भरोसा करे, सिर्फ़ यही विश्वास कर ले कि हमारा एक साथ रहना बेहद ज़रूरी है...

रात आधी से ज़्यादा गुज़र चुकी थी, दीवान पर लेटे-लेटे ही मेरी आँख लग गई। सुबह आकाश में फट पड़ा तूफ़ान सुनाई दिया। छत पर बिजली कड़क रही थी, खिड़कियों के बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। आँखें खोले बिना भी मैं देख रहा था कि प्रकृति में क्या हो रहा है। मानो इस तूफ़ान का निर्माण मैंने ही किया हो। मैंने आधे आकाश को आलोकित करती बिजलियों को देखा, मैंने देखा, कैसे पेड़ों की शाखाएँ बारिश के थपेड़ों से झुक गई हैं, मैंने देखा, कैसे पक्षियों का भयभीत झुण्ड तूफ़ानी परिसर में भटक रहा है, भागने का मार्ग खोजते हुए...।

और मैं स्वयं भी उसी तूफ़ानी दिगन्त में उड़ रहा था। मैं रोशनदान से होकर खिड़की से बाहर की ओर उड़ा, छतों के ऊपर उठ गया, और रास्तों पर और पार्क के ऊपर से उड़ता रहा। आँखें मूँद कर उड़ता रहा, अन्दाज़ से ही बादलों और बिजलियों के मध्य से गुज़रता रहा—कहीं तो धरती पर था वह कारागार जहाँ इस तूफ़ान के शोर को वह भी सुन रही होगी, वह औरत जिसने 'डोनर' होने से इन्कार कर दिया था... "रुना! रुना!"—मैं चीख़ा "यह मैं हूँ! मैं तुम्हें ढूँढ़ रहा हूँ!" उस तूफ़ानी घड़ी में, जब मैं आसमान से उसे पुकार रहा था, वह क्या सोच रही होगी?...

अगले दिन मुझे काफ़ी प्रयत्न करना पड़ा अपने आप पर नियन्त्रण रखने में यह दिखाने के लिए कि मैं काम कर रहा हूँ जिससे हमारे क्लीनिक का कामकाज यथावत् चलता रहे। और सब कुछ हमेशा की तरह चलता रहा। और मेरा कोई भी सहयोगी, कोई भी व्यक्ति यह न जान सका कि अब मैं वह नहीं हूँ...।

मैं अपने पल का इन्तज़ार कर रहा था। समय बड़े दर्दनाक ढंग से धीमे-धीमे सरक रहा था।

मैं सबकी आँखों के सामने था, मैं हमेशा की तरह अपना कर्तव्य निभा रहा था। मगर अब यह 'मैं' नहीं था...

लम्बा खिंच गया समय पीड़ादायक प्रतीत हो रहा था।

वह तय समय निकट आ रहा था। मैं हर पल रुना का इन्तज़ार कर रहा था...अभी, अभी...मगर उसे ला ही नहीं रहे थे।

और पन्द्रह मिनट बीत गये। मगर—नहीं। मैंने आज्ञा दी कि टेलीफ़ोन करके मुझे बताया जाये कि कार उसे लेकर कब निकली थी...सेक्रेटरी ने फ़ोन नम्बर मिलाया, उसे बताया गया कि कार ठीक समय पर ही निकली थी।

मैं परेशान होने लगा। क्या हुआ होगा? और अगर अचानक रास्ते पर दुर्घटना हुई हो तो?

घड़ी की सुइयाँ तीन के अंक के निकट आ रही थीं। कब आयेगी? मैं खुद ही फ़ोन करता हूँ। मुझसे कहा जाता है कि कार के साथ कोई गड़बड़ हुई है। इसी समय सेक्रेटरी भागकर अन्दर आती है। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

"क्या हुआ है?" मैं चीख़ता हूँ।

"मरीज़ मर गई!"

"कैसे मर गई? कौन-सी मरीज़?"

"वही जिसका हम इन्तज़ार कर रहे थे। अभी-अभी रास्ते से टेलीफ़ोन किया है।"

"दुर्घटना?"...

"नहीं, दुर्घटना नहीं। वह भाग रही थी..."

"भाग रही थी?... और फिर?..."

"उसे मार डाला।"

"समझ में नहीं आ रहा!"

"कह रहे थे, अभी आकर बतायेंगे...

हाँ, कल दी गई मेरी आज्ञानुसार बन्दिनी लोपातिना आर.एफ : नम्बर ए-6-87 को कार में लाया जा रहा था ताकि वह क्लीनिक में ठीक वक़्त पर पहुँच सके।

शहर के बाहर, उस जगह, जहाँ रास्ता मॉस्को नदी के किनारे-किनारे जंगल से होते हुए गुज़रता है, डोनर शिकायत करने लगी कि उसका जी मिचल रहा है, और वह आगे नहीं जा सकती, वह प्रार्थना करने लगी और

ज़िद करने लगी कि कार रोक दी जाये और उसे बाहर निकलने दिया जाये, उसे उल्टी होने ही वाली है...

आख़िर रुकना ही पड़ा। डोनर बाहर निकली, सड़क से दूर कुछ कदम चली और झाड़ियों के पीछे छिपती-छिपाती अचानक भागने लगी। साथ आई सुरक्षाकर्मी उसे पकड़ने के लिए दौड़ी। उसने उसे रुकने की आज्ञा दी। मगर वह भागती ही रही। सुरक्षाकर्मी ने चिल्लाकर कहा कि वह उस पर गोली चलायेगी। चेतावनी के लिए दो बार हवा में फ़ायर किये। और फिर भी पकड़ने की कोशिश करती रही, ताकि उसे ज़िन्दा पकड़ सके। और तब सामने दिखाई दिया मुड़ती हुई मॉस्को नदी का किनारा, और बन्दिनी फ़ौरन पानी में कूद पड़ी। सुरक्षाकर्मी के पास उसे गोली मारने के अलावा और कोई चारा ही न था।

बन्दिनी मर गई। उसका शरीर पानी से बाहर निकाला गया...

इसके बाद मैंने हज़ारों बार अपने आप से पूछा—उसने ऐसा क्यों किया? क्यों? किसलिए? यह क्या है? कोई मार्ग न दिखाई देने का परिणाम? भय? वितृष्णा? घृणा? या यह विरोध का ही एक रूप था?

कोई भी जवाब नहीं देता...चली गई वैसे ही, जैसे आई थी...वह हमारे परीक्षणों की पहली शिकार थी।

देर रात तक मैं अपने कक्ष से बाहर नहीं निकला। बैठा रहा, दरवाज़ा बन्द करके। और कोई भी अनुमान नहीं लगा सका कि मुझे क्या हो रहा था। ओह, अगर वह इतने भयंकर तरीक़े से उसका सत्यानाश न करती, जिसे करने के लिए मैं तैयार था! कितने दुःख की बात है कि वह मर गई, कितनी पीड़ादायक है यह बात कि वह चली गई, बिना यह जाने कि मैं उससे कहना चाहता था कि सत्य उसी के पक्ष में है, कि विज्ञान की उपलब्धियाँ निरन्तर परिपूर्णता की ओर अग्रसर हो रही हैं, विज्ञान की उन्नति, कभी न समाप्त होनेवाली वस्तु है, अन्तरात्मा की आवाज़ के मुक़ाबले में उसका कोई महत्त्व नहीं है। और आत्मा की किसी भी चीज़ से तुलना नहीं हो सकती, उसमें निहित है अनन्त का सार एवं उसका विकास...

अपने कक्ष में बैठा मैं सिसकियाँ ले रहा था। उस औरत के लिए कराह रहा था, रो रहा था, जिसे केवल एक बार देखा था...मैं समझ रहा था कि उसके बग़ैर शेष जीवन में मैं सुख नहीं पा सकूँगा...

शाम को राजमार्ग पर जा रहा था, उस स्थान के निकट आने पर, जहाँ यह दुर्घटना हुई थी, मॉस्को नदी के जंगल के पीछे के मोड़ के निकट, मैं रुका और वापस मुड़ गया। यह उसकी मृत्यु का स्थान था, इन झाड़ियों से वह भाग रही थी और फिर नदी में कूद गई...मैं लम्बा मोड़ लेकर चला गया...

और अगर उसकी कोई सीमा है, तो उसी सीमा की पराकाष्ठा तक अपनी मार्गहीनता की, मुक्ति की राह न पाने की स्थिति को अनुभव करता रहा। यह मेरे अपराधों का दण्ड ही तो नहीं था? रात में, अपने घर के अँधेरे में मैं पूरी ताक़त से चिल्लाता रहा, ज़ोर-ज़ोर से कराहता राह...अब वह नहीं रही। वह कभी भी न जान पायेगी कि मैं उससे क्या कहना चाहता था, किन गुनाहों को मान लेनेवाला था। वह आख़िरी पल तक मुझे एक विकृत मस्तिष्क का व्यक्ति समझती रही, जो अपने वैज्ञानिक आविष्कारों का उपयोग 'क्ष-पीढ़ी' के निर्माण में कर रहा था...ह्विस्की से भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ, हालाँकि मैं पीता ही जा रहा था और सीधे बोतल से ही पी रहा था। संगीत सुनने को मन कर रहा था, ऐसा संगीत जो, शायद, मेरी थोड़ी मदद करता, मगर ऐसा संगीत कहीं था ही नहीं...

यह संगीत, जो शायद हमेशा से मेरे ही भीतर सोया पड़ा था, मैंने अकस्मात् कई वर्षों के बाद सुना, जापान सागर में जहाज़ पर जा रहा था। शाम की बात है। द्वीपों की काली आकृतियाँ, जो तारों भरे आकाश के नीचे निश्चल खड़ी थीं, सागर के भीतर से इधर-उधर हुई रहस्यमय आकृतियों के समान प्रतीत हो रही थीं, समय और स्थान के सम्मिश्रण का आभास दे रही थीं। ख़ामोशी छाई थी, ठण्डक थी, अदृश्य लहरों का हल्का-सा संगीत सुनाई दे रहा था...हम कई लोग थे, सोवियत वैज्ञानिक, जो नागोय में कॉन्फ्रेंस के लिए गये थे। मेरे सहयोगी एवं अनुवादक बार में ही रुक गये। और मैं डेक पर टहल रहा था, निर्जन एवं रहस्यपूर्ण द्वीपों को जी भरकर देख रहा था। किनारे की रोशनियाँ बहुत दूर थीं और मुश्किल से नज़र आ रही थीं। हम उन्हीं की ओर जा रहे थे। जहाज़ पर निरन्तर रॉक संगीत गूँज रहा था, जो उछलने-कूदने का निमन्त्रण दे रहा था। मगर रॉक अचानक थम गया। और सुनाई पड़ा एक मर्मस्पर्शी गीत। यह एक जापानी गीत था, प्रियतमा से बिछुड़ने की पीड़ा लिए, उसको पुकारता हुआ, मनाता हुआ, उससे रूठता हुआ, उसकी राह देखता हुआ, उससे विदा लेता हुआ...और मैं सोच रहा था कि वह यहीं कहीं आसपास ही है, हो सकता है वहाँ हो,

नन्हे-से द्वीप पर, और वह भी यह गीत सुन रही है और यह भी जानती है कि मैं उसी के बारे में सोच रहा हूँ...

और मैं समझ गया कि मुझे इन सबसे और इस सबसे दूर चले जाना चाहिए...

'पेरेस्त्रोइका' के वर्षों में 'क्ष-पीढ़ी' के निर्माण पर रोक लगाना सम्भव हो सका। गोर्बाचोव के पास गया था। और छह महीनों बाद अन्तरिक्ष में चला गया, कक्षा में स्थित केन्द्र पर। यहाँ मैं अन्तरिक्ष पादरी फ़िलोफ़ेइ बन गया। तटस्थता से देखने पर यह अजीब-सा लगेगा मगर मेरे लिए यह ज़रा भी अजीब नहीं है...

मेरा अतीत मुझे चैन नहीं लेने देता, निरन्तर मेरा पीछा किये जाता है। और, गले में अटकी हड्डी के समान वह प्रश्न अभी भी अनिर्णित है—कि उन 'क्ष-शिशुओं' का क्या होगा जो जन्म ले चुके हैं और अब बड़े हो रहे है?...फिर, उनका वंश भी अज्ञात है, रहस्यपूर्ण है, इस बारे में कोई भी नहीं जानता। सच कहूँ, तो कुछ लोग जानते हैं—मेरे भूतपूर्व सहयोगी जानते हैं। मैं अनुमान लगा सकता हूँ कि वे मेरे बारे में क्या सोचते होंगे—विश्वासघाती, अन्तरिक्ष में भाग गया, पलायन कर गया...मगर उनकी प्रतिक्रिया मुझे विचलित नहीं करती। ज़रा भी चिन्तित नहीं करती। कोई भी नहीं जानता कि मैं स्वयं अपने आपको कितना कोसता हूँ, कैसे स्वयं को 'बेचारा आत्मपीड़क' कहता हूँ; कुत्ते का पिल्ला कहता हूँ! मुझे तो इस समय पृथ्वी पर रह कर उन नन्हे मुन्नों की आँखों में देखना चाहिए था, जो हमारी प्रयोगशाला के प्रयोगों के परिणामस्वरूप पैदा हुए हैं!...मैं यह सब क्यों लिख रहा हूँ? हाँ, इसलिए कि, वह, जो हम कर चुके हैं—सुधारा नहीं जा सकता। जन्म से ही अभिशप्त इन लोगों का क्या होगा? मगर कल तो वे समझ ही जायेंगे कि वे कौन हैं। तब वे समाज को क्या देंगे? क्या समय के साथ 'क्ष-पीढ़ी' में मानवता से प्रतिशोध लेने की तीव्र इच्छा उत्पन्न नहीं होगी, पूरी दुनिया के टुकड़े-टुकड़े करके कुत्तों के सामने डालने की इच्छा नहीं होगी? और यह भी बड़ी अजीब बात है कि मैं यहाँ अन्तरिक्ष में हूँ और वे पृथ्वी पर कष्ट पा रहे हैं। दूसरा कोई शब्द ही नहीं है मेरे पास। मैं अपने आपसे यह तो कह सकता था कि उनके भविष्य की ज़िम्मेदारी तो मैंने कभी भी नहीं ली थी, मैं तो केवल उनके जन्म से सम्बन्धित वैज्ञानिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ता रहा। मगर क्या यह क़ैफ़ियत सही है? वे उन अपराधियों को कहाँ ढूँढ़ें, जिन्होंने चौपड़ तो बिछाई, मगर बाज़ी पलटते देख

कर सब कुछ छोड़-छाड़ कर भाग गये। के.जी.बी. भी समाप्त हो गया। मगर, हो सकता है, न भी हुआ हो...मगर, वह भाड़ में जाये...

यहाँ पर फ़िलोफ़ेइ का आत्मनिवेदन बीच ही में छूट गया था।

पापस्वीकृति का यह लेख, फ़िलोफ़ेइ से प्राप्त अन्तिम समाचार, एन्थोनी यूंगेर को सर्दियों के आरम्भ में प्राप्त हुआ।

अजीब थी यह दास्तान, कोई ऐसा सोच भी न सकता था, सर्दियों की उस सुबह कार चलाते हुए, खिड़की के शीशों के पार हवा में उड़ते हुए बर्फ़ के श्वेत कणों को देखते हुए वह दुखी मन से सोच रहा था। वह रात में पढ़े हुए फ़िलोफ़ेइ द्वारा लिखित पापस्वीकृति के लेख के प्रभाव में था।

आश्चर्य की बात है, कोई भी ऐसे नहीं मरा था। और इस समय फ़िलोफ़ेइ अन्तरिक्ष में कहीं अन्तरिक्षीय 'ममी' बनकर उड़ रहा होगा, इस ग्रह की सीमाओं से परे आत्महत्या की पहली मिसाल बनकर। ख़ामोशी में ही चैन पाया उसने। और अब, वह फिर अपनी याद दिला रहा है...

और सीधे-सीधे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है—कोई गहन अर्थ छिपा होगा इस तथ्य में कि उसका जीवन एक सबक बन जाये। हाँ। मगर, किस कीमत पर?

मगर इस राह पर कीमत तो हमेशा बहुत ऊँची रही है। आख़िर चुकानी ही पड़ती है। था तो एक महान् **सबक** सबके लिए, एक बार बहुत बड़ा सबक तो मिला ही था सदा के लिए। इसकी कीमत चुकाई जानी थी **सूली** पर चढ़कर। हरेक की अपनी कीमत होती है। इसने अपना मूल्य चुकाया अन्तरिक्ष में।

शायद अन्तरिक्ष में भी उसे अपनी माँ के पैरों तले चरमराती बर्फ़ की आवाज़ सुनाई दी होगी जब वह उसे अनाथालय के द्वार की ओर ले जा रही थी? कहीं अन्तरिक्ष में भी उसे अपनी माँ के दिल की तेज़ धड़कन सुनाई दी होगी, जो उसे आख़िरी बार अपने सीने से चिपटाये ले जा रही थी?...

□□